मुहूर्त

परम्परागत एवं आधुनिक

लेखकः
के. के. जोशी

हिन्दी अनुवादः
पवन बल्लभ थपलियाल

दिग्दर्शनः
श्री के. एन. राव

सागर पब्लिकेशन्स

मुहूर्त
परम्परागत एवं आधुनिक

लेखकः
के. के. जोशी

हिन्दी अनुवादः
पवन बल्लभ थपलियाल

दिग्दर्शनः
श्री के. एन. राव

प्रकाशकः
सागर पब्लिकेशन
72, वेद मेंशन, जनपथ, नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 23320648, 23328245
वेबसाईटः www.sagarpublications.com
ई–मेलः s.sagarpublications@gmail.com

प्रथम संस्करण, 2008
द्वितीय संस्करण, 2008
पुनर्मुद्रण, 2016, 2020, 2022

© के. के. जोशी

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in retrieval system or transmitted, in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying or otherwise, without the prior permission of the author.

Printed by:
Saurabh Sagar for Sagar Publications New Delhi-110001

Printed at:
The Artwaves, New Delhi, E-mail: theartwaves@gmail.com

आभार

इस पुस्तक के लेखन में सामयिक प्रेरणा, सुझाव एवं सहायता के लिए मैं इन का आभारी हूं:

(1) आदरणीय श्री के. एन. राव जी जिनके मार्गदर्शन एवं प्रेरणा के बिना यह कार्य संभव नहीं था।

(2) श्री विनय आदित्य, श्री राजीव झांझी एवं डा. के. एस. चरक जिन्होंने अंग्रेजी में इस पुस्तक के लेखन, संशोधन में सहायता की।

(3) श्री ई. एस. आइसक एवं श्री जी. के. पराषर जिन्होंने कुछ उदाहरण इस पुस्तक के लिये उपलब्ध कराए।

(4) श्री पवन बल्लभ थपलियाल जिन्होंने अथक मेहनत एवं लगन से इस पुस्तक का हिन्दी अनुवाद किया जो शायद उनके प्रयास के बिना संभव नहीं होता।

(5) सागर पब्लिकेशन जिन्होंने इस हिन्दी अनुवाद को लाने की पहल की और द्रुत गति से यह कार्य सम्पन्न किया।

(6) अपने परिवार के सदस्यों के प्रति जिनका अमूल्य सहयोग मुझे जीवन के हर क्षेत्र में प्राप्त हुआ।

(7) सबसे बढ़कर उस अचिंत्य शक्ति के लिए जिसके अनुग्रह के बिना कुछ भी संभव नहीं।

त्वम् वैष्णवी शक्ति अनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजम् परमासिमाया।
सम्मोहितम् देवि समस्तमेतत् त्वम् वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतु।

भूमिका

मूहूर्त की अंग्रेजी की पुस्तक के बाद पाठकों की अत्यधिक मांग पर यह हिन्दी अनुवाद निकालते हुए मैं यहां विशेष रूप से इस पुस्तक के अनुवादक **श्री पवन बल्लभ थपलियाल** का धन्यवाद करना चाहता हूं जिन्होंने अपना कीमती समय देकर, अपने अथक परिश्रम से यह कठिन कार्य सम्पन्न किया है। सर्वप्रथम मैं इनका संक्षिप्त परिचय पाठकों से कराना चाहूंगा। श्री पवन बल्लभ थपलियाल मूलरूप से उत्तराखण्ड से संबंधित हैं, हिन्दी, अंग्रेजी के अतिरिक्त संस्कृत का ज्ञान रखते हैं और वर्तमान में भारत मौसम विज्ञान विभाग में कार्यरत हैं। पारिवारिक पृष्ठभूमि होने के उपरान्त भी शिक्षा पूर्ण करने के बाद इन्होंने आधुनिक रीति से भारतीय विद्या भवन से ज्योतिष सीखा और उतराखण्ड की देवभूमि में इधर–उधर बिखरे ज्योतिष के ज्ञान को समेटने, उसको आधुनिक रीति से संकलित करके जन–जन तक पहुंचाने में प्रयासरत हैं।

इस पुस्तक में मुख्य रूप से निम्नलिखित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए प्रयास है:

(1) मुहूर्त से संबधित सूचना को व्यवस्थित एवं सरल शब्दों में एक ज्योतिष विद्यार्थी के समक्ष रखना,

(2) मुहूर्त के घटकों का तुलनात्मक महत्व प्रस्तुत करना,

(3) कुछ नए विचारों से परिचय जिन्हें आमतौर पर मुहूर्त चयन में उपेक्षित कर दिया जाता है–जैसे दशा, अष्टकवर्ग एवं ताजिक योगों का मुहूर्त में प्रयोग,

(4) आवश्यकता पड़ने पर कम समय के अंदर कैसे मुहूर्त का चयन किया जाए।

यह पुस्तक पाठकों की रूचि और उपयोगिता का कितना ख्याल रख पाई यह तो पाठक ही तय करेंगे। विज्ञ पाठकों के बहुमूल्य सुझावों का सदा स्वागत है।

कृष्ण कुमार जोशी

विषय सूची

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	आभार	iii
	भूमिका	v
	पुस्तक के बारे में	xiii
1	परिचय मुहूर्त क्या है, मुहूर्त की उपयोगिता	1
2	मुहूर्त के आधारभूत अंग तिथि, तिथियों का वर्गीकरण, तिथि क्षय, तिथि वृद्धि, पक्ष रन्ध्र तिथियां, तिथि गण्डात, तिथियों के स्वामी, तिथियों का स्वभाव, पर्व तिथियां, गलग्रह तिथियां, अनध्याय, प्रदोष, मन्वादी और युगादि तिथियां, नक्षत्र, अभिजित नक्षत्र, नक्षत्रों का वर्गीकरण, नक्षत्रों से सम्बन्धित अन्य विवरण, तारा, नक्षत्र गण्डांत, विषघटी, दिन अथवा वार, होरा, योग, करण, भद्रा, भद्रा–निवास, भद्रा का मुख और पुच्छ, मासः, क्षय मास, अधिक मास, उत्तरायण और दक्षिणायन, लग्न।	3
3	सामान्य शुभाशुभ योग सिद्धि योग, मृत्यु योग, कक्रच योग, संवर्तक योग, दग्ध योग, विष योग, हुताषन योग, अमृत सिद्धि योग, सर्वार्थसिद्धि योग, दग्ध योग, यमंघण्ट योग, मास–शून्य तिथियां, मास–शून्य नक्षत्र, मास–शून्य राशि, तिथि–शून्य नक्षत्र, तिथि–शून्य लग्न, अट्ठाईस	31

अध्याय विवरण पृष्ठ संख्या

शुभ और अशुभ योग, त्रिपुष्कर योग, द्विपुष्कर योग, पंचक, बाणः, होलाष्टक, आडल योग, विडाल योग, रवि योग, ग्रहण, अशुभ/पापी ग्रहों द्वारा पीड़ित नक्षत्र, बृहस्पति–शुक्र का अस्त होना, सिंहस्थ बृहस्पति, मकर रांशि में बृहस्पति का गोचर, संक्रान्ति।

4 ग्रहों का गोचर 53

गोचर के सूर्य की शुभ स्थितियां और उसके वेध स्थानः गोचर के चन्द्रमा की शुभ स्थितियां और उसके वेध स्थान, गोचर के मंगल, शनि, राहु एवं केतु की शुभ स्थितियां और उनके वेध स्थान, गोचर के बुध की शुभ स्थितियां और इसके वेध स्थान, गोचर के बृहस्पति की शुभ स्थितियां और इसके वेध स्थान, गोचर के शुक्र की शुभ स्थितियां एवं इसके वेध स्थान।

5 विवाह से पूर्व के संस्कार 58

गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जातकर्म संस्कार, नामकरण संस्कार, निष्क्रमण संस्कार, दोलारोहणं, षष्टी पूजन, अन्नप्राशन संस्कार, भूमि–उपवेशन, कर्णवेध संस्कार, चूड़ाकरण संस्कार, अक्षरारम्भ, उपनयन संस्कार, वेदारम्भ, केशान्त संस्कार, समावर्तन संस्कार।

6 विवाह 77

विवाह के प्रकारः विवाह के लिए मुहूर्त, दस त्याज्य दोष–लत्ता, पात, युति, वेध, जामित्र, मृत्यु पंचक अथवा बाण, एकार्गल अथवा खार्जूर दोष, उपग्रह दोष, क्रान्ति साम्य, दग्धा तिथि, दग्धा तिथि, अन्य त्याज्य दोष, विवाह के लिए उपयुक्त मास नक्षत्र आदि, विवाह लग्न के लिए मिश्रित विचार, त्रिबल शुद्धि, अन्य विचार–विमर्श, गोधूलि मुहूर्त, वर–वरण मुहूर्त, कन्या–वंरण

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	मुहूर्त, प्रेम विवाह के लिए मुहूर्त, वधू प्रवेश, द्विरागमन, विवाह के लिए मिलान, कूट मिलान वर्ण मिलान, वश्य मिलान, तारा मिलान, योनि मिलान, ग्रहमैत्री मिलान, गण मिलान, भकूट मिलान, नाड़ी मिलान, वर्ग मिलान, स्त्री–दूर मिलान।	
7	**दाह–संस्कार**	111
	दाह–संस्कार जब मृत शरीर उपलब्ध हो, दाह–संस्कार जब मृत शरीर उपलब्ध न हो।	
8	**शिक्षा सम्बन्धित मुहूर्त**	114
	सामान्य शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए मुहूर्त, गणित की शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए, वेद–व्याकरण आदि की शिक्षा के लिए, धर्म–शास्त्र और दर्शन–शास्त्र के लिए, धनुर्विद्या अथवा हथियार और युद्ध से सम्बन्धित शिक्षा के लिए, चिकित्सा–औषधी सम्बन्धित शिक्षा, संगीत–नृत्य–नाटक सम्बन्धित शिक्षा के लिए, जैन धर्म की शिक्षा के लिए, उर्दू, पारसी, अरबी भाषाओं में शिक्षा, शिल्प विद्या, कानूनी शिक्षा, व्यायाम, खेल आदि के गुर सीखने के लिए, चित्रकारी।	
9	**आजीविका संबंधी मुहूर्त**	120
	वस्तुएं बेचने के लिए मुहूर्त, दुकान खोलने का मुहूर्त, घोड़ों का क्रय–विक्रय, प्रशिक्षण, सवारी, हाथियों का क्रय–विक्रय आदि, बकरियों, भेंसों आदि का क्रय–विक्रय, पालतू पशुओं के लिए, पालतू पशुओं के लिए, भूमि का क्रय–विक्रय, धन सम्बन्धित लेन–देन, ऋण लेने और देने में त्याज्य, सरकारी सेवा प्रारम्भ करना, खेत जुताई, बीज बुआई, फसल कटाई, हाथ से अथवा मशीनों द्वारा अन्न निकालना, मुर्गी पालन, मछली पालन, बन्दरों और हिरणों को पालतू बनाने हेतु, हिंसक जानवरों को पालतू	

अध्याय विवरण पृष्ठ संख्या

बनाने हेतु, गाय अथवा गाय के दूध सम्बन्धित व्यवसाय हेतु, भैंस, भेड़, बकरी आदि से सम्बन्धित व्यवसाय हेतु, ऊंटों, घोड़ों, गधों और चिड़ियों सम्बन्धित व्यवसाय हेतु, वृक्षारोपण, बागवानी हेतु, फलों, फूलों, अनाज और अन्य कृषि उत्पादों के भण्डारण हेतु, सामान्य रुप से सभी कृषि सम्बन्धित कार्यों हेतु, सामान्य रुप से सभी व्यवसायिक कार्यों हेतु, वाहनों सम्बन्धित कार्यों हेतु, बहुमूल्य रत्नों सम्बन्धित कार्यों हेतु, स्वर्ण एवं स्वर्ण आभूषणों सम्बन्धित कार्यों हेतु, लेखकों के लिए, नाईयों के लिए, मालियों के लिए, कुम्हारों के लिए, कपड़ा बनाने हेतु, चित्रकारी के लिए, ऐसे कार्य जिनमें चमड़े का प्रयोग होता है, उन सभी कार्यों के लिए जिनमें जानवरों, पक्षियों आदि को मारना शामिल होता है, उन सभी कार्यों के लिए जिनमें पत्थर, ईंट आदि का शामिल होते है, चोरी, डकैती और इसी प्रकार के कार्यों हेतु, मदिरा बनाने और बेचने हेतु, हथियार एवं गोला–बारुद बनाने और बेचने हेतु, नृत्य कर्म हेतु, झूठ पकड़ने वाली मशीन में लोगों के परीक्षण हेतु।

10 गृह निर्माण और गृह–प्रवेश 132

घर का शुभ और अशुभ स्वभाव, नींव रखने के लिए खुदाई, नींव रखनाः निर्माण प्रारम्भ करना, द्वार की दिशा के आधार पर अनुमोदित मास, नक्षत्र, तिथि आदि, निर्माण के मुहूर्त से सम्बन्धित कुछ अन्य शुभाशुभ योग, छत डालना, द्वार की दिशा और द्वार स्थापन, ऊपरी तल, नव–निर्मित घर में प्रवेश, पुराने घर में प्रवेश के लिए, पुराने घर में प्रवेश के लिए।

11 यात्रा 150

सभी प्रकार की यात्राओं के लिए सामान्य विचार, यात्रा के लिए नक्षत्र, नक्षत्र शूल तिथि, योग, वार, करण वार शूल, योग, अशुभ योग, चन्द्र–निवास, सम्मुख शुक्र, परिघ–दण्ड, योगिनी निवास,

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	यात्रा में राहु का विचार, काल–पाश का विचार, अयन का विचार, व्यक्ति विशेष के लिए विचार, यात्रा के लिए लग्न, किस घटक को अधिक महत्व दिया जाना चाहिए, यात्रा विशेष के लिए विचार, युद्ध, विवादादि हेतु यात्रा, कुल–अकुल–कुलाकुल नक्षत्र, तिथियां और वार, आक्रमण करने वाले अथवा वादी पक्ष की विजय हेतु मुहूर्त में योग, प्रस्थान अथवा यात्रा की सांकेतिक शुरूआत।	
12	**राज्याभिषेक और उससे सम्बन्धित मुहूर्त**	168
	राज्याभिषेक, शपथ ग्रहण समारोह, राजा अथवा वरिष्ठ अधिकारियों से भेंट, प्रचलित मुद्रा के नोट, टकसाल के सिक्के आदि छापने के लिए, शत्रुओ और विरोधियों को दण्डित करने के लिए, कवच धारण करने के लिए, सेना के शिविर के लिए, मिसाइलों को सेना में शामिल करने और प्रयोग के लिए तैयार रखने हेतु, सेना के आगे बढ़ने की योजना बनाने के लिए।	
13	**अन्य मुहूर्त**	172
	वस्त्र और आभूषण पहनना, दवाई खाने के लिए, रोगमुक्त स्नान, विभिन्न नक्षत्रों में रोगोत्पति का फल, शान्ति कर्म समझौते–सन्धि के लिए, पत्राचार, आय–व्यय के ब्यौरा आदि के लिए, बच्चा गोद लेने के लिए, जमीन–जायदाद के बंटवारे के लिए, नौकरी, पार्टी टिकट आदि के लिए आवेदन, उच्च अधिकार सम्पन्न व्यक्तियों से भेंट के लिए, कुंआ, ट्यूबवैल, टंकी आदि को खोदने के लिए, अग्निहोत्र अथवा 'हवन', यज्ञादि के लिए।	
14	**दशा, अष्टकवर्ग और ताजिक योगों का प्रयोग**	179
	अष्टकवर्ग, दशा, प्रारम्भिक दशा/अन्तर्दशा का प्रयोग, आने वाली दशाओं का प्रयोग, ताजिक योगों का प्रयोग।	

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
15	मुहूर्त का चयन कैसे करें मुहूर्त निर्णय–जब पर्याप्त समय हो, मुहूर्त निर्णय–जब पर्याप्त समय न हो, तत्काल मुहूर्त, अभिजित मुहूर्त का प्रयोग।	190
16	घटनाओं का अध्ययन	195
17	निष्कर्ष सीमायें, एक जातक को क्या नहीं भूलना चाहिए।	213

पुस्तक के बारे में[1]

जब मैंने के. के. जोशी से मुहूर्त पर एक पुस्तक लिखने को कहा तो मैंने उन्हें कहा कि ज्योतिष के शास्त्रीय पक्ष पर समझौता किये बिना एक ऐसी पुस्तक लिखें जो आधुनिक परिपेक्ष में आसानी से समझ आ सके और जिसमें कुछ पुराने सिद्धान्तों को सरलीकृत करके प्रस्तुत किया गया हो। यह याद रखना चाहिये कि मनुष्य के पास **'क्रियमाण कर्म'** के रूप में कुछ स्वतंत्रता है जो मेरी पुस्तक **"एस्ट्रालॉजी एंड कर्मा"** में वर्णित है। मुहूर्त का प्रयोग करके व्यक्ति कई क्षेत्रों में अपनी भाग्यवृद्धि कर सकता है एवं कई अन्य क्षेत्रों में ग्रहों के दुष्प्रभाव को कम कर सकता है।

के. के. जोशी से पुस्तक लिखने के लिये कहने का एक कारण उनका कुंमाऊं (उत्तराखण्ड) से संबंध था जहां ज्योतिष विद्या की पुरातनता एवं पवित्रता अभी भी सुरक्षित है। जोशी मूलतः महाराष्ट्र एवं गुजरात से संबंध रखते हैं जो मुगल काल में धर्मान्तरण से बचने के लिए हिमालय क्षेत्र में बस गए। 'जोशी' शब्द ज्योतिषी का अपभ्रंश है अतः जोशी अपने पीछे ज्योतिष की एक पूरी परंपरा रखते थे जो समय के साथ थोड़ी बिखर गई। के. के. जोशी दिल्ली विश्वविद्यालय के एक कालेज में वाणिज्य के प्रवक्ता हैं। उन्होंने आधुनिक रीति से भारतीय विद्या भवन से ज्योतिष सीखा, प्रथम स्थान लेकर परीक्षा उत्तीर्ण की और उसके बाद एक शिक्षक के रूप में हमारी शिक्षण संस्था में आए। अन्य विषयों में अलावा उन्हें मुहूर्त पढ़ाने के लिए दिया गया जिस पर एक "टैक्स्ट बुक" (विद्यार्थी के लिए उपयोगी व्यवस्थित पुस्तक) का अभाव था। प्रस्तुत पुस्तक उस कमी को पूरा करती है।

अब मैं इस पुस्तक की कुछ खूबियों की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना चाहूंगा।

---

1. श्री के.एन. राव जी के द्वारा इस पुस्तक के अंग्रेजी संस्करण के लिए लिखे गए प्राक्कथन का हिन्दी अनुवाद

1. व्यवस्थित प्रस्तुतीकरण

पुस्तक सर्वप्रथम मुहूर्त के घटकों की व्याख्या करती है। विषनाड़ी जैसे दोष को ग्रहों के भोगांश के आधार पर बताना पुराने सिद्धांतों को एक नए तरीक से प्रस्तुत करने का प्रयास है। इसी प्रकार आज के भागदौड़ के जीवन में वैकल्पिक मुहूर्तों का सुझाव (जैसे दिन की जगह होरा का प्रयोग, अशुभ योगों में भी त्याज्य अधिक अशुभ समय का विवरण) आदि कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्होंने पुस्तक को सरल एवं उपयोगी बनाने में मदद की है।

लग्न का महत्वः

सारी व्याख्या करने के बाद वो बताते हैं कि मुहूर्त का लग्न सबसे महत्वपूर्ण घटक है। लोगों को भारतीय स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त 1947 के बारे में बताते हैं जब अंग्रजों ने भारत को स्वतंत्रता देने के लिये 15 अगस्त का दिन निश्चित किया। उस समय श्री हरदेव जी और पं. सूर्यनारायण व्यास जी ने बाबू राजेन्द्र प्रसाद जी (जो बाद में भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने) को बताया कि ये दिन शुभ नहीं है। लेकिन अंग्रेज दिन बदलने को तैयार नहीं थे, हां, समय का चुनाव करने की उन्होंने स्वतंत्रता दे दी। श्री हरदेवजी ने रात के 12 बजे का समय सुझाया जिसके पीछे तीन कारण थेः

(1) उस समय चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में होगा जो एक अतिशुभ नक्षत्र है तथा बंगाल में जिसे महानक्षत्र कहा जाता है।

(2) जैसे दोपहर के बारह बजे एक अतिशुभ अभिजित मुहूर्त होता है वैसे ही रात्रि के बारह बजे के आसपास का मुहूर्त अतिशुभ होता है।

(3) उस वक्त वृषभ लग्न का उदय होगा जो स्थिर लग्न है जो एक स्थाई स्वाधीनता के लिए शुभ था।

"सर वुडरो व्याट"* ने लिखा है कि भारतीय स्वतंत्रता के समय का चयन

* Sir Woodrow Wyatt wrote in May, 1988 an article on the central pge of The Times, London, "Who Does Not Consult the Stars" and defended Ronald Regan, the U.S. president for consulting astrologers. There he revealed that the Indian astrologers has chosen the time of Indian Independence and that the subsequent history of India was somewhat more successful than Pakistan's which got dismembered.

ज्योतिषीय आधार पर हुआ था। जिन ज्योतिषियों ने इसकी सलाह दी थी वो थे श्री हरदेव शर्मा त्रिवेदी और पं. सूर्यनारायण व्यास। लेकिन किसी भारतीय ज्योतिषी ने इनका नाम नहीं लिया जो दुर्भाग्यपूर्ण है।

लग्न के महत्व को दर्शाता एक उदाहरण मैं अपने जीवन से भी देता हूं। सन् 1985 में जहां मुझे एक ऐसी जगह कार्यभार संभालना था जो अनुशासनहीनता एवं स्टाफ यूनियन के दुर्व्यवहार के लिए बदनाम थी। मेरे पास दिन का चुनाव नहीं था और मुझे 15 मई 1985 को ज्वाइन करना था। मैंने एसे लग्न और नवांश का चुनाव किया जो मुझे अनुशासन एवं सद्भावना, दोनों बनाए रखने में मददगार रहा। कुंडलियां नीचे दी गई हैं:

चं. (10°20") शु.(19°1")	बु.(8°9") रा. (24°28")	सू.(0°43") मं. (19°21")	
	15–05–1985 11:59 प्रातः 20उ14 80पू50		
बृह. (22°39")			लगन (4°43")
	शनि (व) (1°13")	केतू (24°28")	

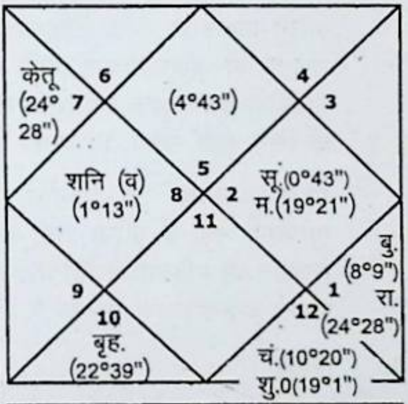

		लग्न के.	बु. मं.
	नवांश		श. बृ.
सू.			
शु.	रा.	चं.	

मैंने सूर्य–मंगल दशम स्थान में रखे ताकि कडी प्रशासनिक कार्यवाही की जा सके। सूर्य–शनि की परस्पर दृष्टि यहां स्टाफ यूनियन से संघर्ष दिखाती है।

बृहस्पति का दसवें भाव को देखना, अंत में गलती करने वालों को माफ करने में मददगार होगा यदि वह सुधर जाएँ तो। यह बृहस्पति नीच का है अतः इसे शुभ फल देने के लिए नवांश में बली होना पडेगा। सब कुछ योजना के अनुसार चला। तीन बार संघर्ष की स्थिति पैदा हुई लेकिन जब मैंने कड़े निर्णय लेने की तैयारी की तो स्टाफ यूनियन को झुकना पड़ा और उसके बाद सब सुचारू रूप से चला।

2. सतर्कता बरतनाः

कुछ मान्यताओं के बारे में वह सतर्क रहने के लिये भी कहते हैं। जैसे पंचक में शव दाह, यह एक गहन शोध व परीक्षण का विषय है। ऐसे ही अलग प्रकार से पंचक निकालना (बाण पंचक आदि), महाराष्ट्र में पंचक गणना का अलग प्रकार आदि का भी जोशी ने वर्णन किया है। यदि ज्योतिषी इतनी बातें ध्यान में रख सके, जो कि मुश्किल है, तो हर कार्य के लिये सही समय का चुनाव हो सकता है।

ग्रहण का प्रभाव, गुरू–शुक्रास्त, सिंहस्थ या मकरस्थ गुरू, ये केवल हिन्दू मान्यताऐं नहीं हैं बल्कि सभी पर इनका प्रभाव है। जो किसी कार्य व संस्कार की पवित्रता में विश्वास करता हो वह मूहूर्त चयन में इनका ध्यान रखना चाहेगा। इस पुस्तक में जोशी ने इनका सुन्दर वर्णन किया है।

3. विवाहः

यह एक महत्वपूर्ण अध्याय है जिसमें विवाह से संबंधित ज्योतिषीय तथ्यों का वर्णन है। हमारे ऋषियों द्वारा जो विवाह के आठ प्रकार बताए गए थे वह आज के अमेरिकी नागरिक के वैवाहिक और बिना विवाह संबंध में सत्य घटित होते दीखते हैं। प्रेम विवाह का मुहूर्त भी अलग से दिया गया है। अध्याय के अंत में मिलान संबंधी ज्योतिषीय नियम दिये हैं। इस अध्याय का अंतिम भाग एक परिपक्व विवेक का परिचायक है।

4. चक्रों का प्रयोगः

जोशी, जैसा मैंने बताया, हिमालय क्षेत्र से हैं जहां ज्योतिष के कुछ राज अभी भी सुरक्षित हैं। चक्रों का प्रयोग उनमें से एक है। सप्तशलाका चक्र, वास्तु चक्र आदि का इस पुस्तक में बडा सरल प्रस्तुतीकरण है। चंद्रवास, योगिनी निवास व परिघ दंड जैसे कुछ ज्योतिषीय तथ्यों को जोशी ने बडे सरल तरीके से प्रस्तुत किया है।

5. नयापनः

जोशी को बिना शास्त्रीयता छोडे कुछ आधुनिक विकल्प सुझाने के लिये मैंने प्रोत्साहित किया था जो उन्होंने इस पुस्तक में पूरे किये हैं। अंतिम कुछ अध्यायों में अष्टकवर्ग व ताजिक के मुहूर्त में प्रयोग पर चर्चा है। उन्होंने नकारात्मकता पर जोर न देने की बात की है साथ ही समय कम होने पर वैकल्पिक मुहूर्त की बात की है।

यह सारी बातें कहने के बाद वह सही कहते हैं कि अपना प्रारब्ध स्वयं बनाने की (मुहूर्त द्वारा) भी अपनी सीमाऐं हैं। एक व्यक्ति अपना भविष्य विध ााता हो सकता है बशर्ते वह जानता हो कि उसकी क्या सीमाऐं हैं। के. के. जोशी का इस पुस्तक द्वारा यही सुझाव है – सही मुहूर्त का चुनाव करो।

– के. एन. राव

अध्याय 1

परिचय

'काल' अर्थात समय प्रारब्ध का जनक है। समय ही प्रारब्ध के फलों का भी जनक है। जब भी कोई जीवन प्रारम्भ होता है तो समय के गर्भ में, उस जीव के निश्चित अन्त से पूर्व, घटने वाली अनगिनत शुभ अथवा अशुभ उन घटनाओं की सूचना होती है जिनका सामना उस जीव को अपने जीवनकाल में करना पड़ता है। जीव की उत्पत्ति के समय अथवा जन्म लेने के समय पर, व्यक्ति का कोई नियत्रंण नहीं है। इसी प्रकार किसी भी व्यक्ति को अपने जीवनकाल में शुभ अथवा अशुभ घटनाओं का सामना इसलिए करना पड़ता है क्योंकि उसका जीवन एक समय विशेष में प्रारम्भ होता है जो कि उसके नियत्रंण में नहीं है। जीवन प्रारम्भ होने के समय के अनुसार ही, किसी भी कार्य के प्रारम्भ होने के समय में भी उस कार्य के लिए कुछ शुभाशुभ संभावनायें होगीं। मुहूर्त का अध्ययन, "प्रारम्भ करने के उस समय विशेष" का ही अध्ययन है।

मुहूर्त क्या है

मुहूर्त का शाब्दिक अर्थ है दो घटी अथवा अड़तालिस मिनट का समय। लेकिन यथार्थ रुप से मुहूर्त का अभिप्राय समय के उस क्षण विशेष से है, जो क्षण, ग्रहों की स्थिति विशेष के प्रभाव के कारण किसी भी कार्य, प्रक्रिया अथवा जीवन के प्रारम्भ होने के लिए कुछ संभावनाएं रखता है। मुहूर्त का अध्ययन, उन प्रभावों का ही अध्ययन है। पहले उस क्षण विशेष में किसी कार्य विशेष को करने की योग्यता अथवा अयोग्यता का निर्णय एवं उसके पश्चात व्यक्ति विशेष के लिए उस क्षण की अनुकूलता अथवा प्रतिकूलता का निर्णय किया जाता है। यह समय की विभिन्न स्थितियों का अध्ययन है। इसमें सूर्य एवं चन्द्रमा और उनकी परस्पर स्थितियों का अधिक महत्व है। मुहूर्त के विभिन्न घटक, जैसे कि अयन, मास, नक्षत्र, तिथि, वार, योग, लग्न आदि सभी अलग–अलग भी और एक–दूसरे के सम्बन्ध में भी, सूर्य एवं चन्द्रमा की गति पर आधारित हैं। अन्य ग्रह भी अपनी

विभिन्न स्थितियों के अनुसार महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। मुहूर्त के प्रयोग करने वाले के संदर्भ में मुहूर्त का अर्थ वह समय है जो किसी कार्य विशेष के लिए शुभ होता है।

मुहूर्त की उपयोगिताः

जब किसी समय विशेष में जन्म लेने के कारण उस व्यक्ति विशेष का प्रारब्ध निश्चित हो जाता है और उसकी स्वतंत्रता के क्षेत्र प्रतिबन्धित होते हैं, तो निश्चित रुप से मुहूर्त चयन की उपयोगिता के विषय में प्रश्न खड़ा होता है। किसी भी कार्य विशेष को प्रारम्भ करने के लिए सही समय का चुनाव किस सीमा तक किसी जातक के नियत्रंण में है, यह विवाद का विषय है।

मुहूर्त की उपयोगिता को स्वनिर्मित अल्पकालिक प्रारब्ध के संदर्भ में देखा जा सकता है, जो जीवन के किसी क्षेत्र विशेष पर ही लागू होता है। इस स्वयं द्वारा रचित प्रारब्ध की निश्चित रुप से कुछ न कुछ अभिव्यक्ति होगी बशर्ते इस स्वयं द्वारा रचित प्रारब्ध की दीर्घ कालीन प्रारब्ध (जन्म पत्रिका) के साथ अनुरुपता हो। मुहूर्त की उपयोगिता उस अर्थ में भी होती है जिसके द्वारा जातक स्वयं को समष्टि के अनुकूल बनाता है। नैसर्गिक बल के विरुद्ध जाने की अपेक्षा यह अधिक अच्छा होता है कि तब किसी कार्य की शुरुआत की जाए जब अलौकिक शक्ति भी अनुकूल हो। मुहूर्त का अध्ययन इन अनुकूल क्षणों की जांच करने अथवा खोज करने में सहायता करता है।

इस पुस्तक में मुहूर्त से सम्बन्धित सभी सूचनाओं को सुनियोजित तरीके से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। मूहूर्त के विभिन्न अंगों, इन अंगों द्वारा निर्मित शुभाशुभ योगों, विभिन्न संस्कारों, शिक्षा एवं व्यवसायिक क्रियाकलापों, निर्माण, यात्रा और जीवन के अन्य महत्वपूर्ण क्षणों के लिए मुहूर्त के विभिन्न प्रकारों की चर्चा क्रमबद्ध तरीके से अलग–अलग अध्यायों में की गई है। इसके अतिरिक्त इसकी भी चर्चा की गई है कि ज़ब कोई व्यक्ति अनुकूल मुहूर्त के चयन के लिए लम्बे समय तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता है तो उस समय मुहूर्त का चयन कैसे करें। अन्त में, मुहूर्त चयन में कुछ नये क्षेत्रों, जैसे कि अष्टकवर्ग और विंशोत्तंरी दशा के प्रयोग का संक्षिप्त विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

अध्याय 2

मुहूर्त के आधारभूत अंग

समय को मापने के लिए विभिन्न तरीके हैं। पंचांग के पांच अंगः तिथि, नक्षत्र, वार, योग एवं करण के साथ–साथ कुछ अन्य घटक जैसे कि– सौर एवं चन्द्र मास, लग्न (अर्थात पूर्वी क्षितिज में उदय होने वाली राशि) आदि। ये अपनी विभिन्न स्थितियों और युतियों द्वारा किसी भी कार्य विशेष के लिए शुभ अथवा अशुभ स्थिति का निर्माण करते हैं। इस अध्याय में इन सभी घटकों को वर्णित किया गया है, जो समय के चक्र में समन्वित करने पर अपनी स्थिति विशेष द्वारा किसी भी कार्य विशेष के लिए शुभ अथवा अशुभ स्थिति का निर्माण करते हैं।

(अ) तिथिः

सूर्य एवं चन्द्रमा द्वारा निर्मित विभिन्न कोणीय दूरियों को तिथि का नाम दिया गया है। जब सूर्य एवं चन्द्रमा एक ही अंश में होते हैं अर्थात उनकी कोणीय दूरी शून्य होती है तो यह अमावस्या कहलाती है। जैसे ही चन्द्रमा सूर्य से 12 अंश दूर जाता है एक नई तिथि हो जाती है। गणितीय गणना करके इसे निम्नलिखित तरीके से ज्ञात किया जा सकता है।

तिथि = (चन्द्रमा का भोगांश – सूर्य का भोगांश) / 12

इस प्रकार कुल 30 तिथियां होती हैं। 15 तिथियां शुक्ल पक्ष की होती हैं जब चन्द्रमा सूर्य से दूर जाता है और 15 तिथियां कृष्ण पक्ष की होती हैं ज़ब चन्द्रमा, सूर्य की ओर आता है। सूर्य एवं चन्द्रमा की कोणीय दूरी के आधार पर निर्मित होने वाली इन तिथियों को नीचे तालिका संख्या 2.1 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 2.1 चन्द्रमा एवं सूर्य के भोगांशों में अन्तर

चन्द्रमा – सूर्य	संख्या	तिथि नाम (शुक्ल पक्ष)	चन्द्रमा– सूर्य	तिथि नाम (कृष्ण पक्ष)
0° – 12°	1	प्रतिपदा	180° – 192°	प्रतिपदा
12° – 24°	2	द्वितीया	192° – 204°	द्वितीया
24° – 36°	3	तृतीया	204° – 216°	तृतीया
36° – 48°	4	चतुर्थी	216° – 228°	चतुर्थी
48° – 60°	5	पंचमी	228° – 240°	पंचमी
60° – 72°	6	षष्ठी	240° – 252°	षष्ठी
72° – 84°	7	सप्तमी	252° – 264°	सप्तमी
84° – 96°	8	अष्टमी	264° – 276°	अष्टमी
96° – 108°	9	नवमी	276° – 288°	नवमी
108° – 120°	10	दशमी	288° – 300°	दशमी
120° – 132°	11	एकादशी	300° – 312°	एकादशी
132° – 144°	12	द्वादशी	312° – 324°	द्वादशी
144° – 156°	13	त्रयोदशी	324° – 336°	त्रयोदशी
156° – 168°	14	चतुर्दशी	336° – 348°	चतुर्दशी
168° – 180°	15	पूर्णिमा	348° – 360°	अमावस्या

एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक का समय एक चन्द्र मास कहलाता है। कई स्थानों में यह गणना पूर्णिमा के चन्द्रमा से की जाती है।

तिथियों का वर्गीकरणः

मुहुर्त के उद्देश्य के लिए तिथियों का निम्नलिखित पांच समूहों में वर्गीकरण किया गया हैः

1. नन्दा तिथि – दोनों पक्षों की प्रथमा, षष्ठी एवं एकादशी तिथि
2. भद्रा तिथि – दोनों पक्षों की द्वितीया, सप्तमी एवं द्वादशी तिथि
3. जया तिथि – दोनों पक्षों की तृतीया, अष्टमी एवं त्रयोदशी तिथि

4. रिक्ता तिथि – दोनों पक्षों की चतुर्थी, नवमी एवं चतुर्दशी तिथि
5. पूर्णा तिथि – दोनों पक्षों की पंचमी, दशमी और पूर्णिमा एवं अमावस्या तिथि

शुक्लपक्ष की प्रथम चक्र की तिथियों (पहली पांच तिथियां) को अशुभ माना जाता है (चन्द्रमा के निर्बल होने के कारण), दूसरे चक्र (अगली पांच तिथियां) को मध्यम बली और तीसरे चक्र (अगली पांच तिथियां) को पूर्ण बली माना जाता है। कृष्णपक्ष में इसके विपरीत है– अर्थात प्रथम पांच तिथियां बली, अगली पांच मध्यम बली तथा अंतिम पांच निर्बल।

सामान्यतः रिक्ता तिथियों को अशुभ माना जाता है।

तिथि क्षयः

यदि एक तिथि सूर्य उदय के पश्चात प्रारम्भ होकर अगले सूर्य उदय के पूर्व ही समाप्त हो जाती है तो उस तिथि का क्षय कहा जाता है और इसे सभी शुभ कार्यों के लिए त्यागना चाहिए। तिथि क्षय का अर्थ यह है कि कोई तिथि सूर्य उदय के समय नहीं थी।

तिथि वृद्धिः

यदि कोई तिथि दो सूर्य उदयों के समय मौजूद होती है अथवा दूसरे शब्दों में यदि कोई तिथि एक सूर्य उदय से पूर्व प्रारम्भ होकर अगले दिन के सूर्य उदय के पश्चात समाप्त होती है तो यह तिथि वृद्धि कहलाती है और इसे भी सभी शुभ कार्यों के लिए त्यागना चाहिए।

पक्ष रन्ध्र तिथियांः (कुछ और अशुभ तिथियां)

दोनों पक्षों अर्थात शुक्लपक्ष और कृष्णपक्ष की निम्नलिखित तिथियां पक्ष रन्ध्र तिथियां मानी जाती हैं और सभी शुभ कार्यों के लिए इन्हें त्यागना चाहिए।

चतुर्थी तिथि की प्रथम 8 घटी (3 घण्टे और 12 मिनट का समय)

षष्टी तिथि की प्रथम 9 घटी (3 घण्टे और 36 मिनट का समय)

अष्टमी तिथि की प्रथम 14 घटी (5 घण्टे और 36 मिनट का समय)

नवमी तिथि की प्रथम 25 घटी (10 घण्टे का समय)

द्वादशी तिथि की प्रथम 10 घटी (4 घण्टे का समय)

चतुर्दशी तिथि की प्रथम 5 घटी (2 घण्टे का समय)

ऊपरोक्त तिथियों के शेष समय में शुभ कार्य प्रारम्भ किया जा सकता है।

तिथि गंडांतः

पूर्णा तिथियों (5,10,15,30) की अन्तिम एक घटी (24 मिनट) और नन्दा तिथियों (1,6,11) की प्रारम्भिक एक घटी (24 मिनट) का समय सन्धि अथवा तिथि गण्डात कहलाता है और इसे सभी शुभ कार्यों में त्यागना चाहिए।

तिथियों के स्वामीः

प्रतिपदा से लेकर विभिन्न तिथियों के स्वामी इस प्रकार हैंः प्रतिपदा–अग्नि, द्वितीया–ब्रह्मा, तृतीया–गौरी, चतुर्थी–गणेश, पंचमी–नाग, षष्ठी–कार्तिकेय, सप्तमी–सूर्य, अष्टमी–शिव, नवमी–दुर्गा, दशमी–यम अर्थात मृत्यु का देवता, एकादशी–विश्वेदेव, द्वादशी–विष्णु, त्रयोदशी–कामदेव, चतुर्दशी–शिव, पूर्णिमा–चन्द्रमा और अमावस्या–पितृ अर्थात पूर्वज।

जिस तिथि का जो स्वामी होता है वह तिथि उस इष्ट की पूजा प्राणप्रतिष्ठा आदि के लिए अनुकूल होती है।

तालिका संख्या 2.2

तिथि	स्वभाव	स्वामी
प्रतिपदा	वृद्धिप्रदायक	अग्नि
द्वितीया	शुभदा	ब्रह्मा
तृतीया	बलप्रदायक	गौरी
चतुर्थी	खला	गणेश
पंचमी	लक्ष्मीप्रदा (सम्पति)	नाग
षष्ठी	यशप्रदा अर्थात प्रसिद्धि देने वाली	कार्तिकेय
सप्तमी	मित्रवत, मित्रा	सूर्य

अष्टमी	द्वन्द्वदायी	शिव
नवमी	उग्र अर्थात आक्रमता देने वाली	दुर्गा
दशमी	सौम्य अर्थात शान्त	यम
एकादशी	आनन्दप्रदा अर्थात सुख देने वाली	विश्वेदेव
द्वादशी	यशप्रदा	विष्णु
त्रयादशी	जयप्रदा अर्थात विजय देने वाली	कामदेव
चतुर्दशी	उग्र अर्थात आक्रामकता देने वाली	शिव
पूर्णिमा 15वीं तिथि	सौम्या	चन्द्रमा
अमावस्या 30वीं तिथि	–	.पितर (पूर्वज)

तिथियों का स्वभावः

प्रतिपदा को वृद्धिप्रदा अथवा उत्थान देने वाली कहा जाता है, द्वितीया, मंगलप्रदा अथवा शुभ घटनायें देने वाली है, तृतीया बलप्रदा या शक्ति देने वाली है, चतुर्थी खल है, पंचमी लक्ष्मीप्रदा अथवा सम्पति देने वाली है, षष्टी यशप्रदा अथवा प्रसिद्धि देने वाली है, सप्तमी मित्र है, अष्टमी द्वन्द्व अथवा विरोध देने वाली है, नवमी उग्र अथवा उत्तेजना देने वाली है, दशमी सौम्य अथवा शान्त है, एकादशी आनन्दप्रदा अथवा सुख देने वाली है, द्वादशी यशप्रदा अथवा प्रसिद्धि देने वाली है, त्रयोदशी जयप्रदा अथवा विजय देने वाली है, चतुर्दशी उग्र अथवा उत्तेजना देने वाली है, पूर्णिमा सौम्य अथवा शान्त है और अमावस्या पूर्वजों को दर्शाती है।

पर्व तिथियांः

कृष्णाष्टमी (कृष्णपक्ष की 8वीं तिथि), चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा एवं जो तिथि संक्रान्ति के दिन होती है वह तिथियां पर्व तिथियां कहलाती हैं और शुभ मुहूर्त के चयन में इनको त्यागना चाहिए।

गलग्रह तिथियांः

कृष्णपक्ष की चतुर्थी और दोनों पक्षों की 7/8/9/13/14/15/30/1 तिथियां गलग्रह तिथियां कहलाती हैं। इन तिथियों को विशेषकर उपनयन और

शिक्षा सम्बन्धित मुहूर्त के चयन के समय त्यागना चाहिए।

अनध्यायः आषाढ़ शुक्ल दशमी, ज्येष्ठ शुक्ल द्वितीया, पौष शुक्ल एकादशी एवं माघ मास की शुक्ल द्वादशी तिथियां, ये चार तिथियां तथा किसी भी मास की चतुर्दशी, अमावस्या/पूर्णिमा, प्रथमा, अष्टमी और सक्रान्ति का दिन अनध्याय कहलाते हैं। इनको भी विशेषकर उपनयन और शिक्षा सम्बन्धित मुहूर्त के चयन के समय त्यागना चाहिए।

प्रदोषः यदि द्वादशी तिथि अर्धरात्री से पहले, षष्टमी तिथि रात्रि के ड़ेढ प्रहर (एक प्रहर रात्रिमान के एक चौथाई हिस्से के बराबर होता है) से पहले और तृतीया तिथि रात्रि के एक प्रहर से पहले समाप्त होती है तो ये प्रदोष कहलाता है। इसको भी विशेषकर शिक्षा सम्बन्धित मुहूर्त के चयन के समय त्यागना चाहिए।

मन्वादी और युगादि तिथियांः

जो तिथियां चार युगों (सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग एवं कलियुग) के प्रारम्भ के समय चल रही थी उनको युगादि तिथियां कहते हैं। कार्तिक शुक्ल 9 (सतयुग के प्रारम्भ का समय), वैशाख शुक्ल 3 (त्रेतायुग के प्रारम्भ का समय), माघ (कृष्णा 30) की अमावस्या (द्वापरयुग के प्रारम्भ का समय) और भाद्रपद कृष्णा 13 (कलियुग के प्रारम्भ का समय) युगादि तिथियां कहलाती हैं।

प्रत्येक प्रलय के बाद जिस तिथि को पुनः सृष्टि का प्रारम्भ हुआ था वह तिथियां मन्वादि तिथियां कहलाती हैं। चूंकि यह चौदह बार होना है अतः यहां 14 मनु हैं और 14 ही मन्वादि तिथियां हैं। विभिन्न मनुओं के नाम और मन्वादि तिथियों को आगे तालिका संख्या 2.3 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 2.3

क्र.सं.	मनु का नाम	मन्वन्तर के प्रारंभ की तिथि
1	स्वायम्भुव	चैत्रशुक्ल की तृतीया
2	स्वारोचिष	चैत्रशुक्ल की पूर्णिमा
3	औत्तम, उत्तम	कार्तिक शुक्ल की पूर्णिमा
4	तामस	कार्तिक शुक्ल की द्वादशी
5	रैवत	आषाढ़ शुक्ल की द्वादशी

6	चाक्षुष	आषाढ़ शुक्ल की पूर्णिमा
7	वैवस्वत	ज्यैष्ठ शुक्ल की पूर्णिमा
8	सावर्णि	फाल्गुन शुक्ल की पूर्णिमा
9	दक्षसावर्णि	आश्विन शुक्ल की नवमी
10	ब्रह्मसावर्णि	माघ शुक्ल की सप्तमी
11	धर्मसावर्णि	पौष शुक्ल की त्रयोदशी
12	रुद्रसावर्णि	भाद्रपद शुक्ल की तृतीया
13	देवसावर्णि	श्रावण कृष्ण की अमावस्या
14	इन्द्रसावर्णि	श्रावण कृष्ण की अष्टमी

वर्तमान में हम वैवस्वत मन्वन्तर में हैं।

ऊपरोक्त सभी युगादि और मन्वादि तिथियों को उपनयन, शिक्षा प्रारम्भ, विवाह, घर के निर्माण एवं गृहप्रवेश तथा यात्रा आदि के मुहूर्त चयन में त्यागना चाहिए। इन तिथियों को पवित्र नदियों में स्नान करने, हवन करने, दान देने आदि श्रेष्ठ धार्मिक कार्यों के लिए शुभ माना जाता है।

(आ) नक्षत्रः

आकाश मण्डल में रविमार्ग के दोनों ओर 8–8 अंश की दूरी पर एक काल्पनिक वृत्त बनायें तो सभी सातों ग्रह इसके अन्दर ही दृष्ट होते हैं। इनके पीछे तारों के पुंज दृष्टिगोचर होते हैं जो एक निश्चित आकृति बनाते हैं। तारों के इन समूह को नक्षत्र कहते हैं। इनको अपने–अपने तारों के समूह के आधार पर 27 भागों में बांटा गया है, जो 27 नक्षत्रों के नाम से जाने जाते हैं।

यदि निरयण राशि चक्र को 27 समान भागों में विभक्त करें तो एक भाग का मान 13 अंश 20 कला आता है जो एक नक्षत्र का मान होता है। प्रत्येक नक्षत्र को भी 4 समान भागों में बांटा गया है जो नक्षत्र के चरण या पद कहलाते हैं। नक्षत्र के एक चरण का मान 3 अंश 20 कला होता है। निरयण मेष राशि के प्रथम बिन्दु से प्रारम्भ करके 27 नक्षत्रों का क्रमशः नाम इस प्रकार से हैं:

1. अश्विनी	10. मघा	19. मूल
2. भरणी	11. पूर्वा फाल्गुनी	20. पूर्वाषाढ़ा
3. कृत्तिका	12. उत्तरा फाल्गुनी	21. उत्तराषाढ़ा
4. रोहिणी	13. हस्त	22. श्रवण
5. मृगशिरा	14. चित्रा	23. धनिष्ठा
6. आर्द्रा	15. स्वाति	24. शतभिषा
7. पुनर्वसु	16. विशाखा	25. पूर्वा भाद्रपद
8. पुष्य	17. अनुराधा	26. उत्तरा भाद्रपद
9. आश्लेषा	18. ज्येष्ठा	27. रेवती

जब चन्द्रमा किसी 13 अंश 20 कला के भाग विशेष में गोचर करता है तो उस भाग विशेष का नक्षत्र, उस समय विशेष का नक्षत्र कहलाता है। मुहूर्त चयन में जब हम यह कहते हैं कि उस समय विशेष का मृगशिरा नक्षत्र है तो इससे हमारा अर्थ होता है कि उस समय चन्द्रमा मृगशिरा नक्षत्र में स्थित है। किसी भी कार्य के मुहूर्त चयन में पंचांग के पांचों अंगों में से नक्षत्र को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है।

अभिजित नक्षत्रः

कभी–कभी हम 28 नक्षत्रों का प्रयोग करते हैं। उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के अन्तिम पद और श्रवण नक्षत्र की प्रथम 4 घटी (श्रवण नक्षत्र का 1/15वां भाग) अभिजित नक्षत्र कहलाता है। इस प्रकार मकर राशि में 6अंश 40 कला से 10 अंश 53 कला 20 विकला (मकर 6°40′ से मकर 10°53′ 20″) तक अभिजित नक्षत्र का मान होता है।

नक्षत्रों का वर्गीकरणः

अभिजित नक्षत्र को मिलाकर सभी 28 नक्षत्रों को सात वर्गों में विभाजित किया गया है। इन वर्गों को और जिन विभिन्न कार्यों के लिए ये वर्ग अनुकूल होते हैं, उनको नीचे दिया गया है।

1. ध्रुव–स्थिरः

उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद, रोहणी और रविवार इस वर्ग में रखे गए हैं। स्थिर स्वभाव के कार्य जैसे कि मकान की नींव रखना, कुआं खोदना, मकान का निर्माण, उपनयन, कृषि सम्बन्धित कार्य, नौकरी प्रारम्भ करना आदि कार्य इन नक्षत्रों में किए जाते हैं। महर्षि वशिष्ठ के मतानुसार जो कार्य मृदु नक्षत्रों में किए जा सकते हैं उनको इन नक्षत्रों में भी किया जा सकता है।

2. चर–चलः

स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज और सोमवार इस वर्ग में रखे हैं। सभी चर स्वभाव के कार्य–कलाप जैसे कि वाहन की सवारी करना, घुड़सवारी या हाथी की सवारी करना, यात्रा करना आदि ऐसे सभी कार्य जिनमें गति की आवश्यकता होती है इन नक्षत्रों में किए जा सकते हैं। महर्षि वशिष्ठ के मतानुसार जो कार्य क्षिप्र–लघु नक्षत्रों में किए जा सकते हैं उन कार्यों को इन नक्षत्रों में भी किया जा सकता है।

3. उग्र–क्रूरः

पूर्वा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वा भाद्रपद, भरणी, मघा और मंगलवार आक्रामक स्वभाव के हैं और ये हत्या, विश्वासघात, अग्नि से सम्बन्धित अशुभ कार्य, चोरी, विष देना, विष सम्बन्धित दवाइयों पर खोज, शल्य चिकित्सा, हथियारों का क्रय–विक्रय अथवा प्रयोग आदि क्रूर प्रकृति के सभी कार्यों के लिए अनुकूल होते हैं। यहां भी महर्षि वशिष्ठ के मतानुसार जो कार्य तीक्ष्ण–दारुण नक्षत्रों में किए जा सकते हैं उन कार्यों को इन नक्षत्रों में भी किया जा सकता है। ये नक्षत्र आमतौर पर शुभ कार्यों में वर्जित हैं।

4. मिश्र–साधारणः

विशाखा एवं कृत्तिका नक्षत्र और बुधवार मिश्र एवं साधारण स्वभाव के हैं। ये अग्नि सम्बन्धित कार्यों, धातुओं को गरम करके अथवा गलाकर ढालने, गैस सम्बन्धित कार्यों, सजाने–सवांरने, दवा निर्माण आदि के लिए अच्छे होते हैं।

5. **क्षिप्र–लघुः**

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित नक्षत्र और गुरुवार क्षिप्र एवं लघु हैं तथा ये दुकान के निर्माण एवं प्रारम्भ करने, विक्रय करने, शिक्षा का प्रारम्भ करने, गहने–जवाहरात बनाने एवं पहनने, मैत्री या साझेदारी करने, कला सीखने एवं दिखाने, नए कार्य को सीखने आदि के लिए अनुकूल होते हैं। जिन कार्यों को चर–चल नक्षत्रों में किया जा सकता हैं, उन सभी कार्यों को भी इन नक्षत्रों में किया जा सकता है।

6. **मृदु–मैत्रः**

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा नक्षत्र और शुक्रवार मृदु एवं मैत्र हैं। गायन, संगीत सीखने, वस्त्र सिलवाने एवं पहनने, क्रीड़ा, खेल की सूक्ष्मताओं को सीखने, मित्र बनाने, गहने–जवहरात बनाने एवं पहनने आदि कार्य इनमें किये जा सकते हैं। जिन कार्यों को ध्रुव–स्थिर नक्षत्रों में किया जा सकता है उन सभी कार्यों को भी इन नक्षत्रों में किया जा सकता है।

7. **तीक्ष्ण–दारुणः**

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, ये चार नक्षत्र और शनिवार तीक्ष्ण–दारुण कहलाते हैं तथा तान्त्रिक क्रियाओं (दूर से दूसरे को हानि पहुंचाने का कार्य), हत्या, काला जादू, आक्रमक एवं मृत्यु तुल्य कृत्यों, जानवरों को प्रशिक्षण देने एवं अपने वश में करने, साधना जैसे कि हठ योग आदि कार्यों के लिए अच्छे होते हैं।

ऊपरोक्त वर्गीकरण के अतिरिक्त नक्षत्रो को उनकी दृष्टि के अनुसार ऊर्ध्वमुखी, अधोमुखी एवं तिर्यङ् मुखी इन तीन वर्गों में भी बांटा गया है जो अपने नामानुसार इंगित कार्यों के लिए अनुकूल होते हैं।

1. **ऊर्ध्वमुखी नक्षत्रः**

आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी को ऊर्ध्वमुखी नक्षत्र कहते हैं। ये नक्षत्र बहुमंजिले भवन, घर, मन्दिर निर्माण एवं उद्यान सम्बन्धित कार्यों के साथ–साथ ऐसे सभी कार्यों के लिए अनुकूल होते हैं जिनमें ऊपर की ओर देखना पड़ता है।

2. **अधोमुखी नक्षत्रः**

मूल, आश्लेषा, विशाखा, कृत्तिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी और मघा नक्षत्रों को अधोमुखी नक्षत्र कहते हैं। भूमि से जुड़े कार्य जैसे कि कुएं, तालाब के लिए भूमि खोदने, नींव रखने के लिए भूमि खोदने, भूमि के नीचे निर्माण कार्य के लिए, खदान के लिए, भूमि के अन्दर गन्दे पानी की निकासी के कार्य की खुदाई आदि इन सभी कार्यों के लिए ये नक्षत्र अनुकूल होते हैं जिनमें नीचे की ओर देखना पड़ता है।

3. तिर्यङ् मुखीः

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, स्वाति, पुनर्वसु, अश्विनी और ज्येष्ठा नक्षत्र का मुख सीधा होता है अर्थात इनकी दृष्टि सामने की ओर है तथा ये नक्षत्र यात्रा एवं यात्रा सम्बन्धित कार्य जैसे कि वाहन चलाना, वाहन में चढ़ना, सड़क निमार्ण आदि एसे सभी कार्यों के लिए अनुकूल होते हैं जिनमें सामने देखने की आवश्यकता होती है।

नक्षत्रों से सम्बन्धित अन्य विवरणः

प्रत्येक नक्षत्र की एक विशिष्ट आकृति, विशिष्ट तारों की संख्या और निश्चित स्वामी होता है। नक्षत्रों की यह विशेषता उनकी विभिन्न कार्यों के लिएं अनुकूलता का निर्णय करती है। नक्षत्रों की इन विशेषताओं को आगे तालिका संख्या 2.4 में बताया गया है।

तालिका संख्या 2.4

क्र. सं.	नक्षत्र	तारों की संख्या	आकृति	स्वामी
1	अश्विनी	3	घोड़े का मुंह	अश्विनी कुमार
2	भरणी	3	योनि	यम (मृत्यु का देवता)
3	कृत्तिका	6	चाकू	अग्नि
4	रोहिणी	5	बैलगाड़ी, शकट	ब्रह्मा (सृजन का देवता)
5	मृगशिरा	3	हिरण का मुंह	चन्द्रमा, सोम
6	आर्द्रा	1	मणि	रुद्र

7	पुनर्वसु	4	घर	अदिति (देवताओं की माता)
8	पुष्य	3	तीर	बृहस्पति
9	आश्लेषा	5	पहिया, चक्र	सर्प
10	मघा	5	घर	पितृ या पितर (पूर्वज)
11	पूर्वाफाल्गुनी	2	मंच	भग (सूर्य का नाम)
12	उत्तराफाल्गुनी	2	चारपाई	अर्यमा (सूर्य का नाम)
13	हस्त	5	हाथ	सूर्य
14	चित्रा	1	मोती	विश्वकर्मा (देवताओं का शिल्पकार)
15	स्वाति	1	मूंगा	वायु
16	विशाखा	4	तोरण	इन्द्र/अग्नि–पूर्वार्ध का इन्द्र, उत्तरार्ध का अग्नि
17	अनुराधा	4	पिण्ड	मित्र (सूर्य का नाम)
18	ज्येष्ठा	3	कुण्डल	इन्द्र
19	मूल	11	मंच	राक्षस
20	पूर्वाषाढ़ा	2	हाथी दांत	जल
21	उत्तराषाढ़ा	2	मंच	विश्वेदेव
22	अभिजित	3	त्रिकोण	ब्रह्मा
23	श्रवण	3	वामन, त्रिचरण	विष्णु
24	धनिष्ठा	4	मृदंग	वसु
25	शतभिषा	100	वृत	वरुण
26	पूर्वाभाद्रपद	2	मंच	अजचरण (रुद्र का नाम)
27	उत्तराभाद्रपद	2	जुड़वा	अहिर्बुध्न्य (रुद्र का नाम)
28	रेवती	32	मृदंग	पूषा (सूर्य का नाम)

तारा:

तारा संख्या में नौ होते हैं, (1) जन्म, (2) सम्पत, (3) विपत, (4) क्षेम, (5) प्रत्यरि, (6) साधक, (7) वध, (8) मैत्र और (9)अतिमैत्र।

जन्म नक्षत्र से किसी दिन विशेष के नक्षत्र तक गिनने पर प्राप्तांक को 9 से भाग देने पर प्राप्त शेषफल तुल्य उस दिन विशेष का तारा कहलाएगा। अथवा

किसी दिन विशेष का नक्षत्र किस वर्ग का होगा इसका ज्ञान करने के लिए जन्म नक्षत्र से उस दिन के नक्षत्र तक गिनने पर जो संख्या आती है यदि उसे 9 से भाग देगें तो शेषफल तारा संख्या बताता है।

यदि किसी जातक का जन्म नक्षत्र मृगशिरा है तो उसके लिए तारों का चक्र आगे दी गई तालिका के अनुसार होगा:

	जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यरि	साधक	वध	मैत्र	अतिमैत्र
प्रथम चक्र	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वा–फाल्गुनी	उत्तरा–फाल्गुनी	हस्त
द्वितीय चक्र	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वा–षाढ़ा	उत्तरा–षाढ़ा	श्रवण
तृतीय चक्र	धनिष्ठा	शतभिषा	पूर्वा–भाद्रपद	उत्तरा–भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी

तारा अपने नामानुसार ही परिणाम देता है। विपत, प्रत्यरि एवं वध तारा सभी कार्यों के लिए पूर्णरुप से अशुभ होते हैं। जन्म तारा कुछ कार्यों के लिए शुभ होता है और कुछ अन्य कार्यों के लिए अशुभ होता है।

प्रथम चक्र के विपत, प्रत्यरि एवं वध तारा पूर्णरुप से अशुभ होते हैं। द्वितीय चक्र के विपत तारा का प्रारम्भिक एक तिहाई भाग, प्रत्यरि तारे का अन्तिम एक तिहाई भाग और वध तारे का बीच का एक तिहाई भाग त्यागना चाहिए। तृतीय चक्र के विपत, प्रत्यरि एवं वध तारा पूर्णरुप से शुभ होते हैं।

ऊपरोक्त तालिका में मृगशिरा में जन्म लेने वाले जातक को पुनर्वसु, आश्लेषा एवं पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रों को पूर्णरुप से त्यागना चाहिए। विशाखा का प्रारम्भिक एक तिहाई भाग, ज्येष्ठा का अन्तिम एक तिहाई भाग और पूर्वाषाढ़ा के बीच का एक तिहाई भाग त्यागना चाहिए। मृगशिरा में जन्मे जातक के लिए शेष सभी तारे चुनना शुभ है।

उपनयन, अन्नप्राशन, मुण्डन, राजतिलक, द्वितीय गर्भ से उत्पन्न लड़का अथवा लड़की के विवाह आदि के लिए जन्मतारा शुभ होता है।

जन्म तारा को गर्भाधान और यात्रा के लिए विशेष रुप से त्यागना चाहिए। प्रथम गर्भ से उत्पन लड़का या लड़की अर्थात ज्येष्ठ लड़का या लड़की के विवाह के लिए भी जन्म तारा त्यागना चाहिए। प्रथम आवृति की 3/5/7 तारा विशेष रुप से अशुभ हैं।

यदि अशुभ तारा में कोई शुभ कार्य प्रारम्भ करना अतिआवश्यक हो तो इनकी अशुभता को कम करने के लिए निम्नलिखित दान करना किया जा सकता है:

वध तारा	–	स्वर्ण का दान करें
विपत तारा	–	गुड़ का दान करें
प्रत्यरि तारा	–	नमक का दान करें
जन्म तारा	–	सब्जियों का दान करें

यदि कोई व्यक्ति किसी कार्य को प्रारम्भ करने के लिए प्रतीक्षा नहीं कर सकता है और अनुकूल नक्षत्र भी उपलब्ध न हो तो वह अपना कार्य दिन के उस भाग में प्रारंभ कर सकता है जो भाग उस अनुकूल तारा को आंबटित किया गया है।

दिनमान (सूर्य उदय से सूर्यास्त तक का समय) को 15 समान भागों में बांटने और रात्रिमान (सूर्यास्त से दूसरे सूर्य उदय तक का समय) को भी 15 समान भागों में बांटने पर हम दिन के 15 मुहूर्त और रात्रि के 15 मुहूर्त प्राप्त करते हैं। इन मुहूर्तों का स्वामित्व विभिन्न नक्षत्रों को दिया गया है। मुहूर्तों और उनके स्वामियों को नीचे तालिका संख्या 2.5 में दिया गया है।

तालिका संख्या 2.5

मुहूर्त्त संख्या	दिन का स्वामी नक्षत्र	रात्रि का स्वामी नक्षत्र
1	आर्द्रा	आर्द्रा
2	आश्लेषा	पूर्वाभाद्रपद
3	अनुराधा	उत्तराभाद्रपद
4	मघा	रेवती

5	धनिष्ठा	अश्विनी
6	पूर्वाषाढ़ा	भरणी
7	उत्तराषाढ़ा	कृतिका
8	अभिजित	रोहिणी
9	रोहिणी	मृगशिरा
10	ज्येष्ठा	पुनर्वसु
11	विशाखा	पुष्य
12	मूल	श्रवण
13	शतभिषा	हस्त
14	उत्तराफाल्गुनी	चित्रा
15	पूर्वाफाल्गुनी	स्वाति

यदि हम दिन एवं रात को 12–12 घण्टों के बराबर लेते हैं तो एक मुहूर्त का भोग्यकाल 48 मिनट होगा।

यदि कोई व्यक्ति अगले दो–तीन दिनों के अन्दर नौकरी आरम्भ करना चाहता है, इन दो–तीन दिनों में कोई स्थिर नक्षत्र उपलब्ध नहीं है और ताराबल के कारण वह उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में ही नौकरी आरम्भ करना चाहता है, लेकिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र 20 दिनों के पश्चात आएगा और वह इतने दिनों तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता है तो ऐसी स्थिति में उसके लिए यह उपयुक्त होगा कि वह किसी भी दिन के 7वें मुहूर्त में नौकरी प्रारम्भ करे क्योंकि दिन का 7वां मुहूर्त का स्वामी उत्तराषाढ़ा नक्षत्र होता है।

टिप्पणीः यात्रा के मुहूर्त के लिए यदि किसी दिशा विशेष के लिए कोई नक्षत्र विशेष त्याज्य हो तो उस दिशा में यात्रा करने के लिए दिन का वह मुहूर्त भी त्यागना चाहिए जिसका स्वामित्व उस नक्षत्र विशेष के पास होता है।

नक्षत्र गण्डांतः

आश्लेषा, ज्येष्ठा एवं रेवती नक्षत्रों की अन्तिम 2 घटी (48 मिनट) और अश्विनी, मघा एवं मूल नक्षत्रों की प्रारम्भिक 2 घटी (48 मिनट) का समय नक्षत्र गण्डांत कहलाता है, जिसे सभी अच्छे कार्यों में त्यागना चाहिए।

विषघटी:

रेवती, पुनर्वसु, कृतिका एवं मघा की 30वीं से 34वीं घटी, आश्लेषा की 32वीं से 36वीं घटी, अश्विनी की 50वीं से 54वीं घटी, उत्तराफाल्गुनी एवं शतभिषा की 18वीं से 22वीं घटी, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, उत्तराषाढ़ा एवं पुष्य की 20वीं से 24वीं घटी, विशाखा, स्वाति, मृगशिरा एवं ज्येष्ठा की 14वीं से 18वीं घटी, आर्द्रा एवं हस्त की 21वी से 25वीं घटी, पूर्वाभाद्रपद की 16 से 20वीं घटी, उत्तरा भाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा एंव भरणी की 24वीं से 28वीं घटी, अनुराधा, ज्येष्ठा एवं श्रवण की 10वीं से 14वीं घटी और मूल की 56वीं सक 60वीं घटी, विषघटी अर्थात विषयुक्त समय कहलाता है, जिसे सभी शुभ कार्यों में त्यागना चाहिए।

इसको सरल बनाने के लिए इन घटियों को अंश एवं कला में परिवर्तित किया जा सकता है और इस अशुभ अन्तराल को नीचे तालिका संख्या 2.6 में दिए गये चन्द्रमा के भोगांशों के आधार पर अभिव्यक्त किया जा सकता है।

तालिका संख्या 2.6

विष घटी– जब चन्द्रमा निम्नलिखित भोगाशं में होता है तो वह समय सभी शुभ कार्यों में त्यागना चाहिए।

राशियां	विषनाड़ी दोष के कारण चन्द्रमा का त्याज्य भोगांश
मेष	11°06′40″ से 12° (अश्विनी 50वीं घटी से 54वीं घटी)
मेष	18°40′ से 19° 33′20″ (भरणी 24वीं घटी से 28वीं घटी)
वृषभ	03°20′ से 04°13′20″ (कृतिका 30वीं घटी से 34वीं घटी)
वृषभ	18°53′20″से 19°46′40″ (रोहिणी 40वीं घटी से 44वीं घटी)
वृषभ	26°26′40″ से 27°20′ (मृगशिरा 14वीं घटी से 18वीं घटी)
मिथुन	11°20′ से 12°13′20″ (आर्द्रा 21वीं घटी से 25वीं घटी)
मिथुन	26°40′ से 27°33′20″ (पुनर्वसु 30वीं घटी से 34वीं घटी)
कर्क	07°46′40″ से 08°40′ (पुष्य 20वीं घटी से 24वीं घटी)
कर्क	23°46′40″ से 24°40′ (आश्लेषा 32वीं घटी से 36वीं घटी)
सिंह	06°40′ से 07°33′20″ (मघा 30वीं घटी से 34वीं घटी)

सिंह	17°46'40" से 18°40' (पूर्वाफाल्गुनी 20वीं घटी से 24वीं घटी)
कन्या	00°40' से 01°33'20" (उत्तराफाल्गुनी 18वीं घटी से 22वीं घटी)
कन्या	14°40' से 15°33'20" (हस्त 21वीं घटी से 25वीं घटी)
कन्या	27°46'40" से 28°40' (चित्रा 20वीं घटी से 24वीं घटी)
तुला	09°46'40" से 10°40' (स्वाति 14वीं घटी से 18वीं घटी)
तुला	23°06'40" से 24° (विशाखा 14वीं घटी से 18वीं घटी)
वृश्चिक	05°33'20" से 06°26'40" (अनुराधा 10वीं घटी से 14वीं घटी)
वृश्चिक	19°46'40" से 20°40' (ज्येष्ठा 14वीं घटी से 18वीं घटी)
धनु	12°26'40" से 13°20' (मूल 56वीं घटी से 60वीं घटी)
धनु	18°40' से 19°33'20" (पूर्वाषाढ़ा 24वीं घटी से 28वीं घटी)
मकर	01°06'40" से 02° (उत्तराषाढ़ा 20वीं घटी से 24वीं घटी)
मकर	12°13'20" से 13°06'40" (श्रवण 10वीं घटी से 14वीं घटी)
मकर	25°33'20" से 26°26'40" (धनिष्ठा 10वीं घटी से 14वीं घटी)
कुंभ	10°40' से 11°33'20" (शतभिषज 18वीं घटी से 22वीं घटी)
कुंभ	23°23'20" से 24°26'40" (पूर्वाभाद्रपद 16वीं घटी से 20वीं घटी)
मीन	08°40' से 09°33'20" (उत्तराभाद्रपद 24वीं घटी से 28वीं घटी)
मीन	23°20' से 24°13'20" (रेवती 30वीं घटी से 34वीं घटी)

(इ) दिन अथवा वारः

एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय का समय, एक दिन होता है। प्रत्येक दिन एक ग्रह को आबंटित किया गया है जैसे कि सूर्य को रविवार, चन्द्रमा को सोमवार, मंगल को मंगलवार, बुध को बुधवार, बृहस्पति को गुरुवार, शुक्र को शुक्रवार और शनि को शनिवार।

ऊपरोक्त वारों में से मंगलवार और शनिवार पूर्णरुप से अशुभ हैं तथा रविवार आंशिक रुप से अशुभ होता है। इनको भी नक्षत्रों के समान सात वर्गों में वर्गीकृत किया गया है।

रविवार	–	ध्रुव–स्थिर
सोमवार	–	चर–चल
मंगलवार	–	उग्र–क्रूर
बुधवार	–	मिश्र–साधारण
गुरुवार	–	क्षिप्र–लघु
शुक्रवार	–	मृदु–मैत्र
शनिवार	–	तीक्ष्ण–दारुण

अपने स्वभाव के अनुसार प्रत्येक वार भी उन कार्यों के लिए अनुकूल होता है जिन कार्यों के लिए उसके वर्ग का नक्षत्र अनुकूल होता है। उदाहरणतः स्थिर स्वभाव के कार्यों के लिए रविवार अनुकूल होता है, जिन कार्यों में गति की आवश्यकता होती है उनके लिए सोमवार अनुकूल होता है तथा इसी प्रकार सभी वारों को देखा जाता है।

होराः

यदि दिनमान (सूर्योदय* से सूर्यास्त) के समय को 12 बराबर भागों में विभक्त करें और इसी प्रकार रात्रिमानं (सूर्यास्त से अगला सूर्योदय) के समय को भी 12 भागों में विभक्त करें तो एक दिन के 24 भाग प्राप्त होते हैं जिन्हे होरा कहते हैं। ये 12 होरा दिन की होती हैं और 12 ही होरा रात की होती हैं। किसी भी दिन की प्रथम होरा का स्वामी ग्रह उस दिन का स्वामी ग्रह होता है, दूसरी होरा का स्वामी ग्रह उससे 6वें दिन का स्वामी ग्रह, तीसरी होरा का स्वामी ग्रह दूसरे से 6वें दिन का स्वामी ग्रह होता है और इसी प्रकार प्रत्येक होरा का स्वामी ज्ञात किया जाता है। सप्ताह के सातों दिनों के प्रत्येक होरा के स्वामी को आगे तालिका संख्या 2.7 में दर्शाया गया है।

*यहां सूर्योदय का अर्थ स्थानीय सूर्योदय से है। इससे अलग–अलग स्थानों में दिनारम्भ अलग–अलग समय होगा और इसी प्रकार होरा भी होंगी।

तालिका संख्या 2.7
(विभिन्न दिनों में होरा स्वामी)

होरा संख्या	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
1	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
2	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
3	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल
4	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य
5	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र
6	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध
7	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा
8	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
9	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
10	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल
11	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य
12	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र
13	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध
14	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा
15	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
16	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
17	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल
18	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य
19	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र
20	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध
21	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा
22	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
23	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति
24	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल

यदि किसी जातक को कोई कार्य विशेष, किसी दिन विशेष में प्रारम्भ करना है और वह जातक उस दिन तक प्रतीक्षा नहीं कर सकता है तो वह कार्य उस दिन के स्वामी ग्रह की होरा में प्रारम्भ किया जा सकता है। उदाहरणतः यदि किसी कार्य के लिए शुक्रवार ही आवश्यक है लेकिन उसको तुरन्त ही रविवार को करना है तो ऐसी स्थिति में वह कार्य रविवार को शुक्र की होरा (2,9,16,23 होरा) में प्रारम्भ किया जा सकता है।

यदि कोई दिन विशेष किसी दिशा विशेष में यात्रा करने के लिए शुभ नहीं है तो उस दिन के स्वामी ग्रह की होरा भी उस यात्रा के लिए अनुकूल नहीं होगी।

(ई) योगः

भचक्र में सूर्य एवं चन्द्रमा की एक–दूसरे से स्थिति के अनुसार योग का निर्माण होता है। गणितीय गणना के अनुसार इसे इस प्रकार से समझा जा सकता हैः

(चन्द्रमा का भोगांश, सूर्य का भोगांश) / 13° 20″ = योग संख्या

यह हमें योग की संख्या देगा। योग संख्या में 27 होते हैं। योगों की क्रम संख्या और नाम आगे दिए गये हैं।

1. विष्कुम्भ	10. गण्ड	19. परिघ
2. प्रीति	11. वृद्धि	20. शिव
3. आयुष्मान	12. ध्रुव	21. सिद्ध
4. सौभाग्य	13. व्याघात	22. साध्य
5. शोभन	14. हर्षण	23. शुभ
6. अतिगण्ड	15. वज्र	24. शुक्ल
7. सुकर्मा	16. सिद्धि	25. ब्रह्म
8. धृति	17. व्यतीपात	26. इन्द्र
9. शूल	18. वरीयान	27. वैधृति

योग के नामानुसार ही उसका स्वभाव होता है। अशुभ योगों, संख्या 1 (विष्कुम्भ), 6 (अतिगण्ड), 9 (शूल), 10 (गण्ड), 13 (व्याघात), 15 (वज्र), 17

(व्यतीपात), 19 (परिघ) और 27 (वैधृतिं) को विशेष रुप से शुभ कार्यों में त्यागना चाहिए।

इन अशुभ योगों में भी कुछ ऐसी घटियां होती हैं जो विशेष अशुभकारी होती हैं और जिनको सभी शुभ कार्यों में त्यागना चाहिए। व्यतीपात और वैधृति योग पूर्णरुप से अशुभ योग हैं। विष्कुम्भ एवं वज्र योगों की प्रथम 3 घटियां (1घण्टा 12 मिनट), परिघ योग का प्रारम्भिक आधा भाग, शूल योग की प्रारम्भिक 5 घटियां (2 घण्टे), गण्ड एवं अतिगण्ड योगों की प्रारम्भिक 6 घटियां (2 घण्टे 24 मिनट) और व्याघात योग की प्रारम्भिक 9 घटियां (3 घण्टे 36 मिनट) अत्यधिक अशुभ हैं और इनको सभी शुभ कार्यों में त्यागना चाहिए। ये घटियां योग के औसतन मान 60 घटी (24 घण्टे) को लेकर ली गई हैं और किसी दिन विशेष में योग द्वारा भोगे जाने वाले ठीक–ठीक समयानुसार ही इनको अर्थात त्याज्य समय को औसतन कम या अधिक किया जाना चाहिए। आगे दी गई तालिका संख्या 2.8 देखें।

तालिका संख्या 2.8

योग संख्या	योग का नाम	अशुभ समय घटी में	अशुभ समय घण्टा–मिनट में
1	विष्कुम्भ	प्रारम्भिक 3 घटी	प्रारम्भिक 1 घण्टा 12 मिनट
6	अतिगण्ड	प्रारम्भिक 6 घटी	प्रारम्भिक 2 घण्टा 24 मिनट
9	शूल	प्रारम्भिक 5 घटी	प्रारम्भिक 2 घण्टे
10	गण्ड	प्रारम्भिक 6 घटी	प्रारम्भिक 2 घण्टा 24 मिनट
13	व्याघात	प्रारम्भिक 9 घटी	प्रारम्भिक 3 घण्टा 36 मिनट
15	वज्र	प्रारम्भिक 3 घटी	प्रारम्भिक 1 घण्टा 12 मिनट
17	व्यतीपात	पूर्ण 60 घटी	पूर्ण 24 घण्टे
19	परिघ	प्रारम्भिक 30 घटी	प्रारम्भिक 12 घण्टे
27	वैधृति	पूर्ण 60 घटी	पूर्ण 24 घण्टे

यदि किसी दिन विष्कुम्भ योग का भोग्यकाल 25 घण्टे है तो त्याज्य अशुभ काल इस प्रकार से होगाः

$(3x25)/24 = 75/24 =$ 3 घटी 7.5 विघटी या पल

(ए) करणः

करण किसी भी तिथि का आधा भाग होता है। कुल ग्यारह करण होते हैं जिनमें चार स्थिर और सात चर करण होते हैं। चार स्थिर करण (1) शकुनि, (2) चतुष्पद, (3) नाग और (4) किन्तुघ्न हैं। कृष्णपक्ष की चतुर्दशी का उत्तरार्ध भाग शकुनि करण को, अमावस्या के पूर्वार्ध चतुष्पद करण को, उत्तरार्ध नाग करण को और शुक्लपक्ष की प्रथमा का पूर्वार्ध किन्तुघ्न करण को आबंटित किया गया है। यह चारों करण ही अशुभ माने जाते हैं।

सात चर करण (1) बव, (2) बालव, (3) कौलव, (4) तैतिल, (5) गर, (6) वणिज और (7) विष्टि हैं। शुक्ल पक्ष की प्रथमा तिथि के उत्तरार्ध से प्रारम्भ होकर चर करणों की एक निश्चित क्रम में पुनरावृत्ति होती है और एक चन्द्रमास में प्रत्येक करण की आठ बार पुनरावृत्ति होती है। सभी करणों और उनके द्वारा शासित तिथियों के भाग को आगे तालिका संख्या 2.9 में दिया गया है।

तालिका संख्या 2.9 (करण)

शुक्लपक्ष			कृष्णपक्ष		
तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध	तिथि	पूर्वार्ध	उत्तरार्ध
1	किन्तुघ्न	बव	16	बालव	कौलव
2	बालव	कौलव	17	तैतिल	गर
3	तैतिल	गर	18	वणिज	विष्टि
4	वणिज	विष्टि	19	बव	बालव
5	बव	बालव	20	कौलव	तैतिल
6	कौलव	तैतिल	21	गर	वणिज
7	गर	वणिज	22	विष्टि	बव
8	विष्टि	बव	23	बालव	कौलव
9	बालव	कौलव	24	तैतिल	गर
10	तैतिल	गर	25	वणिज	विष्टि
11	वणिज	विष्टि	26	बव	बालव
12	बव	बालव	27	कौलव	तैतिल
13	कौलव	तैतिल	28	गर	वणिज

14	गर	वणिज	29	विष्टि	शकुनि
15 पूर्णिमा	विष्टि	बव	30 अमावस्या	चतुष्पद	नाग

भद्राः

जब विष्टि करण चल रहा होता है तो यह भद्रा कहलाता है और यह समय अशुभ होता है। ऊपरोक्त तालिका संख्या 2.9 से स्पष्ट है कि प्रत्येक चन्द्रमास की 4थी, 11वीं, 18वीं, 25वीं तिथियों के उत्तरार्ध में और 8वीं, 15वीं, 22वीं एवं 29वीं तिथियों के पूर्वार्ध में विष्टि करण का स्वामित्व होता है, अतः भद्रा होती है।

भद्रा–निवासः

जब चन्द्रमा कर्क, सिंह, कुंभ एवं मीन राशियों में गोचर करता है और उसी समय भद्रा भी प्रभाव में हो तो यह कहा जाता है कि भद्रा का निवास पृथ्वी (मृत्युलोक) में होता है। जब चन्द्रमा मेष, वृषभ, मिथुन एवं वृश्चिक राशियों में गोचर करता है और उसी समय भद्रा भी प्रभाव में हो तो यह कहा जाता है कि भद्रा का निवास स्वर्गलोक में होता है। जब चन्द्रमा कन्या, तुला, धनु एवं मकर राशियों में गोचर करता है और उसी समय भद्रा भी प्रभाव में हो तो यह कहा जाता है कि भद्रा का निवास पाताल लोक में होता है। यह कहा जाता है कि भद्रा का निवास जिस लोक में होता है वह केवल उसी लोक के लिए अशुभ फलदायक होती है। अतः इससे यह स्पष्ट है कि जब चन्द्रमा कर्क, सिंह, कुंभ एवं मीन राशियों में गोचर करता है और उसी समय भद्रा भी हो तो ही यह अशुभ होगी क्योंकि तभी इसका निवास मृत्युलोक अर्थात पृथ्वी में होगा।

भद्रा का मुख और पुच्छः

भद्रा के मुख एवं पुच्छ को ज्ञात करने के लिए यदि हम विष्टि करण को चार समान भागों में बांटे और प्रत्येक भाग को प्रथम चरण, द्वितीय चरण, तृतीय चरण एवं चतुर्थ चरण के नाम से नामांकित करें तो निम्नलिखित तरीके से भद्रा के मुख का निर्णय कर सकते हैं।

(1) **शुक्ल चतुर्थी और कृष्ण चतुर्दशी** को विष्टि करण के प्रथम चरण की प्रारम्भिक 5 घटियां (2 घण्टे) भद्रा का मुख होती हैं।

(2) **शुक्ल अष्टमी और कृष्ण दशमी** को विष्टि करण के द्वितीय चरण की प्रारम्भिक 5 घटियां (2 घण्टे) भद्रा का मुख होती हैं।

(3) **शुक्ल एकादशी और कृष्ण सप्तमी** को विष्टि करण के तृतीय चरण की प्रारम्भिक 5 घटियां (2 घण्टे) भद्रा का मुख होती हैं।

(4) **पूर्णिमा और कृष्ण तृतीया** को विष्टि करण के चतुर्थ चरण की प्रारम्भिक 5 घटियां (2 घण्टे) भद्रा का मुख होती हैं।

भद्रा मुख को अशुभ माना जाता है।

भद्रा के पुच्छ को ज्ञात करने के लिए भी इसी प्रकार विष्टि करण को चार चरणों में बांटने की आवश्यकता है और निम्नलिखित नियम लागू होते हैं:

(1) **शुक्ल चतुर्थी और कृष्ण चतुर्दशी** को विष्टि करण के अन्तिम चरण की अन्तिम 3 घटियां (1घण्टा 12मिनट) भद्रा की पूंछ होती हैं।

(2) **शुक्ल अष्टमी और कृष्ण दशमी** को विष्टि करण के प्रथम चरण की अन्तिम 3 घटियां (1घण्टा 12मिनट) भद्रा की पूंछ होती हैं।

(3) **शुक्ल एकादशी और कृष्ण सप्तमी** को विष्टि करण के द्वितीय चरण की अन्तिम 3 घटियां (1घण्टा 12मिनट) भद्रा की पूंछ होती हैं।

(4) **पूर्णिमा और कृष्ण तृतीया** को विष्टि करण के तृतीय चरण की अन्तिम 3 घटियां (1घण्टा 12मिनट) भद्रा की पूंछ होती हैं।

टिप्पणीः भद्रा के मुख एवं पुच्छ की ऊपरोक्त 5 घटियों एवं 3 घटियों का मान एक तिथि के औसत मान अर्थात 60 घटी के अनुसार है। यदि तिथि के मान कम अथवा अधिक होता है तो उसी अनुपात में भद्रा के मुख एवं पुच्छ के मान में भी परिवर्तन करना होगा।

भद्रा कब शुभ होती हैः

भद्रा सभी कार्यों के लिए अशुभ नहीं होती है। जातकर्म संस्कार, अदला–बदली का व्यापार, भोजन बनाने, यज्ञ, राजा को भेंट देने, शिव–पार्वती की अराधना अथवा पूजन करने, हडतालिका पूजन और होलिका के लिए यह

शुभ मानी जाती है।

भद्रा का जन्म महादेव के शरीर से हुआ था। अतः भद्रा के दोष को त्यागने के लिए भगवान शिव के पूजन–अराधना की सहायता लेनी चाहिए।

तालिका संख्या 2.10

भद्रा का मुख एवं पुच्छ

(भद्रा के प्रभाव में रहने का औसतन 12 घण्टे का समय मानकर)

तिथि	शुक्ल चतुर्थी कृष्ण चतुर्दशी	शुक्ल अष्टमी कृष्ण दशमी	शुक्ल एकादशी कृष्ण सप्तमी	शुक्ल पूर्णिमा कृष्ण तृतीया
भद्रा का मुख	विष्टि करण के प्रारम्भिक 2 घण्टे	3रे घण्टे से 5वें घण्टे तक	6वें घण्टे से 8वें घण्टे तक	9वें घण्टे से 11वें घण्टे तक
भद्रा की पुंछ	अन्तिम 1 घण्टा 12 मिनट	1घण्टा 48 मिनट से 3रे घण्टे तक	4घण्टे 48 मिनट से 6वें घण्टे तक	7घण्टा 48 मिनट से 9वें घण्टे तक

(ऐ) मासः

सामान्यतः चार प्रकार के मासों का प्रयोग किया जाता है।

1. सौरमासः यह निरयण सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश के ऊपर आधारित है। यह एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति के समय तक प्रभाव में रहता है। सूर्य जिस राशि में प्रवेश करता है वह मास उसी राशि के नाम से जाना जाता है। सूर्य के मेष राशि में प्रवेश से प्रारम्भ करने पर विभिन्न सौरमासों के नाम इस प्रकार से हैंः मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

   सभी षोडश संस्कारों, यज्ञ, ऋण लेने अथवा देने आदि कार्यों में सौर मास का प्रयोग होता है।

2. चन्द्रमासः भारतवर्ष में दो प्रकार के चन्द्रमास का प्रयोग होता है। प्रथम शुक्लादि चन्द्रमास–एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या तक, और द्वितीय कृष्णादि चन्द्रमास–एक पूर्णिमा से दूसरी पूर्णिमा तक। यद्यपि प्रथम प्रकार का चन्द्रमास मुख्य है लेकिन भौगोलिक स्थितियों के अनुसार दोनों प्रकार के मासों को प्रयोग प्रचलन में है। चन्द्रमासों के नाम इस प्रकार हैंः चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन।

नववर्ष, चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा (चैत्र मास के शुक्लपक्ष की प्रथम तिथि) से प्रारम्भ होता है। जो शुक्लादि पद्धति को मानते हैं उनका चैत्र शुक्लपक्ष के पश्चात चैत्र कृष्णपक्ष आता है और उसके पश्चात वैशाख का शुक्लपक्ष और फिर इसी तरह सभी चन्दमास क्रमशः आते हैं। जो कृष्णादि चन्द्रमास पद्धति को मानते हैं उनका नववर्ष चैत्र मास की शुक्लपक्ष प्रतिपदा से ही प्रारम्भ होता है लेकिन इसके बाद वैशाख कृष्णपक्ष प्रारम्भ होता है, इसके पश्चात वैशाख शुक्लपक्ष प्रारम्भ होता है और इसी प्रकार सभी चन्द्रमास चलते हैं। कृष्णादि चन्द्रमास पद्धति में चैत्रमास का कृष्णपक्ष पिछले वर्ष में आता है।

व्रत के प्रारम्भ, श्राद्ध, नवगृह निमार्ण एवं गृहप्रवेश और अन्य सभी तिथि से सम्बन्धित मामलों (जैसे कि जन्मदिन मनाना) में चन्द्रमास का प्रयोग होता है।

3. **सावन माहः** एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय के बराबर एक दिन का मान लेने पर एक सावन मास कुल 30 दिनों का होता है। आयुनिर्णय, गर्भकाल गणना, प्रायश्चित कर्म आदि कार्यों में इसका प्रयोग होता है।

4. **नक्षत्र मासः** चन्द्रमा द्वारा सभी 27 नक्षत्रों के ऊपर गोचर करने में लिये जाने वाला समय नक्षत्र मास कहलाता है और इसका प्रयोग नक्षत्र शान्ति, यज्ञ विशेष तथा नक्षत्रों से सम्बन्धित कुछ विशेष गणनाओं के लिए किया जाता है।

क्षय मासः

जब एक चन्द्रमास अर्थात एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या के बीच दो सूर्य संक्रान्ति होती हैं तो यह क्षय मास कहलाता है। इस प्रकार की घटना बहुत ही कम होती है।

अधिक मासः

जब एक अमावस्या से दूसरी अमावस्या के बीच कोई भी संक्रान्ति नहीं होती है तो एक चन्द्रमास की पुनरावृत्ति होती है जो अधिक मास कहलाता है। यह तीन वर्ष के अन्तराल पर हर बार होता है। उदाहरणतः यदि भाद्रपद मास में कोई संक्रान्ति नहीं है तो इसमें पहले भाद्रपद मास का शुक्लपक्ष आएगा, उसके

पश्चात भाद्रपद कृष्णपक्ष अधिक, उसके पश्चात भाद्रपद शुक्लपक्ष अधिक और उसके पश्चात भाद्रपद कृष्णपक्ष आयेगा। अतः इस प्रकार से एक ही नाम के दो मास होगें जिनके बीच में अधिक मास पडेगा। यह मास मलमास भी कहलाता है।

क्षय और अधिक मास के प्रयोग से हम वास्तव में चन्द्र–सौर वर्ष (Luni-Solar year) जिसका मुहूर्त के लिए सर्वाधिक प्रयोग होता है, जिसके लिए चन्द्रवर्ष का तारतम्य सूर्य की गति के साथ बिठाते हैं।

क्षय और अधिक मास सामान्य कार्यकलापों, गर्भधान सम्बन्धित संस्कारों, तीर्थ स्नान, नित्य दान, प्रथम वार्षिक एवं मासिक श्राद्ध, सरकार की सेवा में शामिल होने आदि के लिए त्याज्य नहीं हैं।

वह सारे कार्य जो बृहस्पति और शुक्र दोनों अथवा किसी एक के भी अस्त होने की स्थिति में त्याज्य होते हैं, क्षय और अधिक मास में भी त्याज्य होते हैं, जैसे कि अन्नप्राशन संस्कार के बाद के सारे संस्कार, नवनिर्माण कार्य, नवगृहप्रवेश, महादान, तीर्थ स्थानों की प्रथम यात्रा अथवा विदेश यात्रा, व्रतों का प्रारम्भ, देव–प्रतिष्ठा और द्वितीय वार्षिक श्राद्ध आदि।

उत्तरायण और दक्षिणायनः

भचक्र में सूर्य की स्थिति के अनुसार उत्तरायण और दक्षिणायन का निर्णय होता है। सूर्य का मकर राशि में प्रवेश से लेकर कर्क में प्रवेश तक का समय अर्थात मकर राशि से मिथुन राशि भोगने का 6 मास का समय उत्तरायण कहलाता है। सभी शुभ कार्यों के लिए उत्तरायण का समय अनुकूल होता है।

सूर्य का कर्क राशि में प्रवेश से लेकर मकर राशि में प्रवेश अर्थात कर्क राशि से लेकर धनु राशि भोगने का 6 मास का समय दक्षिणायन कहलाता है। सामान्यतः दक्षिणायन का समय मंगलकारी कार्यों को प्रारम्भ करने के लिए प्रतिकूल माना जाता है।

(ओ) लग्नः

मुहूर्त के सभी विचारणीय विषयों में लग्न सबसे महत्वपूर्ण एवं आवश्यक विषयों में से एक है जिस पर व्यवहारिक प्रयोग में अधिक ध्यान नहीं दिया जाता है। मूहूर्त चिन्तामणी में राम दैवज्ञ स्पष्ट कहते हैं कि यदि अन्य अनुकूल स्थितियां उपलब्ध न हों तो भी सही तरीके से चुना हुआ लग्न, मुहूर्त में अशुभ योगों द्वारा

उत्पन्न दोष को दूर करने में सक्षम होता है। अतः किसी भी कार्य के प्रारम्भ होने के समय उदित लग्न के संदर्भ में ग्रहों की विभिन्न भावों की स्थिति का ध्यानपूर्वक अवलोकन अतिआवश्यक है।

उचित लग्न का चुनाव और ग्रहों की स्थिति प्रारम्भ होने वाले कार्यानुसार बदलेगी लेकिन निम्नलिखित सामान्य बातों का ध्यान रखना आवश्यक है।

1. राशि का स्वभावः

   कार्य का स्वभाव लग्न में उदय होने वाली राशि के स्वभाव से मिलना चाहिए। स्थिर प्रकृति के कार्यों जैसे कि निर्माण, राजतिलक, गृहप्रवेश, विवाह आदि कार्यों के लिए स्थिर राशियों (2 5 8 11) के लग्न का चयन करें, ऐसे कार्य जिनकी चर प्रकृति होती है जैसे कि यात्रा, सवारी, वाहन चालन, व्यवसाय का प्रारम्भ आदि.के लिए चर राशियों (1,4,7,10) के लग्न का चयन करें और इसी प्रकार अन्य कार्यों के लिए भी उनके स्वभावानुसार उचित लग्न का चयन करें।

   इसी प्रकार गर्भाधान, पुंसवन आदि ऐसे कार्यों के लिए अथवा उन कार्यों के लिये जहां आक्रामकता की आवश्यकता होती है पुरुष राशियों (विषम राशियों) के लग्न को वरीयता देनी चाहिए। स्त्री राशि के लग्न का चयन शान्त प्रकृति के कार्यों जैसे कि कला, वस्त्रों एवं आभूषणों के सिलवाने व पहनने आदि के लिए करना चाहिए। इसके अतिरिक्त राशियों के शीर्षोदय एवं पृष्ठोदय और अग्नि, पृथ्वी, वायु, आकाश गुण का भी विचार करना चाहिए।

   इसको संक्षेप में कहें तो – लग्न की राशि का स्वभाव कार्य के स्वभाव से मिलना चाहिए।

2. मुहूर्त लग्न के केन्द्र एवं त्रिकोण भावों में शुभ ग्रह और त्रिषडाय (3/6/11) भावों में पापी ग्रह स्थित होना मंगलकारी माना जाता है।

3. लग्न और कार्य से सम्बन्धित भाव विशेष का बली होना आवश्यक होता है।

अध्याय 3
सामान्य शुभाशुभ योग

पूर्व के अध्याय में पंचांग के पांचों अंगों की विस्तृत चर्चा की गई है। इस अध्याय का उद्देश्य कार्य प्रारम्भ करने के लिए सटीक समय चयन हेतु पंचांग के अलग–अलग अंगों की युतियों से बनने वाले शुभ एवं अशुभ य़ोगों की चर्चा और अन्य ध्यान में रखने वाले सामान्य विचारणीय विषयों की चर्चा की गई है।

तिथि एवं वार से बनने वाले योगः

सिद्धि योगः

यदि शुक्रवार को नन्दा तिथि (1,6,11), बुधवार को भद्रा तिथि (2,7,12), मंगलवार, को जया तिथि (3,8,13), शनिवार को रिक्ता तिथि (4,9,14) और गुरूवार को पूर्णा तिथि (5,10,15,30) हो तो, तिथि एवं वार की यह युति सिद्धि नाम का शुभ योग बनाती है।

मृत्यु योगः

यदि नन्दा तिथियों की युति रविवार अथवा मंगलवार से हो, भद्रा तिथियों की युति सोमवार अथवा शुक्रवार से हो, जया तिथियों की युति बुधवार से हो, रिक्ता तिथियों की युति गुरूवार से हो और पूर्णा तिथियों की युति शनिवार से हो तो तिथि एंवं वार की यह युति मृत अथवा मृत्यु नाम का अशुभ योग बनाती है जिसे सभी शुभ कार्यों में और विशेषकर यात्रा में त्यागना चाहिए।

कक्रच योगः

शनिवार को षष्टी तिथि, शुक्रवार को सप्तमी तिथि, गुरूवार को अष्टमी तिथि, बुधवार को नवमी तिथि, मंगवार को दशमी तिथि, सोमवार को एकादशी तिथि, रविवार को द्वादशी तिथि हो तो तिथि एवं वार की यह युति कक्रच नाम

का अशुभ योग बनाती है। दूसरे शब्दों में जब वार की संख्या और तिथि की संख्या का योग 13 आता है तो यह योग बनता है जिसे सभी शुभ मंगलकारी कार्यों में त्यागना चाहिए।

संवर्तक योगः

यदि बुधवार को प्रथमा तिथि और रविवार का सप्तमी तिथि हो तो तिथि एवं वार की यह युति एक अशुभ योग बनाती है जो संवर्तक योग कहलाता है।

दग्ध योगः

रविवार एवं द्वादशी तिथि, सोमवार एवं एकादशी तिथि, मंगलवार एवं पंचमी तिथि, बुधवार एवं तृतीया तिथि, गुरूवार एवं षष्टी तिथि, शुक्रवार एवं अष्टमी तिथि, शनिवार एवं नवमी तिथि, अपनी युति से दग्ध नाम का अशुभ योग बनाती है जिसे सभी अच्छे कार्यों में औंर विशेषकर यात्रा के लिए त्यागना चाहिए।

विष योगः

यदि रविवार को चतुर्थी तिथि, सोमवार को षष्टी तिथि, मंगलवार को सप्तमी तिथि, बुधवार को द्वितीया तिथि, गुरूवार को अष्टमी तिथि, शुक्रवार को नवमी तिथि और शनिवार को सप्तमी तिथि हो तो तिथि एवं वार की यह युति विष नाम का अशुभ योग बनाती है जिसे सभी शुभ कार्यों में और विशेषकर यात्रा में त्यागना चाहिए।

विशेषः बुधवार एवं द्वितीया तिथि की युति सिद्धि (शुभ योग) और विष (अशुभ योग) नाम के दोनों ही योग बनाती है। जब किसी शुभ योग के साथ–साथ अशुभ योग भी बन रहा हो तो शुभ योग का परिणाम ही प्रबल होता है। (मूहूर्त्त चिन्तामणि – अध्याय 1, श्लोक 42)

हुताशन योगः

यदि रविवार को द्वादशी तिथि, सोमवार को षष्टी तिथि, मंगलवार को सप्तनी तिथि, बुधवार को अष्टमी तिथि, गुरूवार को नवमी तिथि, शुक्रवार को दशमी तिथि और शनिवार को एकादशी तिथि हो तो तिथि एवं वार की यह युति

हुताशन नाम का अशुभ योग बनाती है जिसे सभी शुभ कार्यों में और विशेषकर यात्रा में त्यागना चाहिए।

विशेषः रविवार एवं द्वादशी तिथि की युति कक्रच एवं दग्ध, दोनों योग बनाती है, सोमवार एवं षष्टी तिथि की युति विष एवं हुताशन योगों को बनाती है, मंगलवार एवं सप्तमी तिथि की युति विष एवं हुताशन, दोनों योग बनाती है, बुधवार एवं अष्टमी तिथि की युति हुताशन के साथ ही साथ मृत्यु योग भी बनाती है और गुरुवार एवं नवमी तिथि की युति हुताशन एवं मृत्यु नाम के दोनों योग बनाती है।

तिथि एवं वारी युति से बनने वाले ऊपरोक्त विभिन्न शुभाशुभ योगों को आगे तालिका संख्या 3.1 में तालिकाबद्ध करके दर्शाया गया हैः

तालिका संख्या 3.1

वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्धि योग	—	—	जया तिथि (3,8,13)	भद्रा तिथि (2,7,12)	पूर्णा तिथि (5,10, 15,30)	नन्दा तिथि (1,6,11)	रिक्ता तिथि (4,9,14)
मृत्यु योग	नन्दा तिथि (1,6,11)	भद्रा तिथि (2,7,12)	नन्दा तिथि (1,6,11)	जया तिथि (3,8,13)	रिक्ता तिथि (4,9,14)	भद्रा तिथि (2,7,12)	पूर्णा तिथि (5,10, 15,30)
कक्रच योग	द्वादशी	एकादशी	दशमी	नवमी	अष्टमी	सप्तमी	षष्टमी
संवर्तक योग	सप्तमी	—	प्रथमा	—	—	—	—
दग्ध योग	द्वादशी	एकादशी	पंचमी	तृतीया	षष्टी	अष्टमी	नवमी
विष योग	चतुर्थी	षष्टी	सप्तमी	द्वितीया	अष्टमी	नवमी	सप्तमी
हुताशन योग	द्वादशी	षष्टी,	सप्तमी	अष्टमी	नवमी	दशमी	एकादशी

वार और नक्षत्र से बनने वाले योगः

अमृत सिद्धि योगः

यदि रविवार को हस्त, सोमवार को मृगशिरा, मंगलवार को अश्विनी, बुधवार को अनुराधा, गुरूवार को पुष्य, शुक्रवार को रेवती और शनिवार को रोहिणी नक्षत्र हो तो वार एवं नक्षत्र का यह संयोग शुभ योग बनाता है। इन शुभ योगों में गुरूवार एवं पुष्य नक्षत्र के संयोग से बनने वाला गुरू–पुष्य योग विशेषरूप से सराहनीय होता है। इन योगों में प्रारम्भ कार्य बिना किसी रुकावट के निश्चित सफलता प्राप्त कराता है।

विशेषः मंगलवार एवं अश्विनी नक्षत्र का संयोग गृहनिर्माण एवं गृह प्रवेश के मुहूर्त में त्यागना चाहिए। शनिवार एवं रोहणी नक्षत्र का संयोग यात्रा में त्यागना चाहिए और इसी प्रकार गुरूवार एवं पुष्य नक्षत्र का संयोग विवाह में त्यागना चाहिए।

इसके अतिरिक्त यदि पंचमी तिथि के दिन रविवार एवं हस्त नक्षत्र हो, षष्टी तिथि के दिन सोमवार एवं मृगशिरा नक्षत्र हो, सप्तमी तिथि के दिन मंगलवार एवं अश्विनी नक्षत्र हो, अष्टमी तिथि के दिन बुधवार एवं अनुराधा नक्षत्र हो, नवमी तिथि के दिन गुरूवार एवं पुष्य नक्षत्र हो, दशमी तिथि के दिन शुक्रवार एवं रेवती नक्षत्र और एकादशी तिथि के दिन शनिवार एवं रोहिणी नक्षत्र भी हो तो वार, नक्षत्र एवं तिथि का यह संयोग, मधुसर्पिश (शहद एवं विष का संयोग) नाम का अशुभ योग बनाता है, जिसे सभी शुभ कार्यों में त्यागना चाहिए।

ऊपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि जब वार एवं नक्षत्र के संयोग से अमृतसिद्धि योग बनता है, यदि उस दिन उपर्युक्त तिथि विशेष भी होती है तो शुभ योग के स्थान पर मधुसर्पिश नाम का अशुभ योग बनता है।

सर्वार्थसिद्धि योगः

निम्नलिखित वार एवं नक्षत्रों का संयोग, सर्वार्थसिद्धि नामक योग बनाता है जो सभी उद्देश्यों के लिए शुभ योग होता है और इस योग में प्रारम्भ कार्य निश्चित सफल होता है।

वार	नक्षत्र
रविवार	हस्त, मूल, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, पुष्य, आश्लेषा
सोमवार	श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा
मंगलवार	अश्विनी, उत्तराभाद्रपद, कृतिका, आश्लेषा
बुधवार	रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृतिका, मृगशिरा
गुरूवार	रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य
शुक्रवार	रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण
शनिवार	श्रवण, रोहिणी, स्वाति

ऊपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जिस दिन अमृतसिद्धि योग बनता है उस दिन सर्वार्थसिद्धि योग भी बनता है। अमृतसिद्धि योग, सर्वार्थसिद्धि योगों में से ही एक उत्कृष्ट योग है।

दग्ध योगः

यदि रविवार को भरणी, सोमवार को चित्रा, मंगलवार को उत्तराषाढ़ा, बुधवार को धनिष्ठा, गुरूवार को उत्तराफाल्गुनी, शुक्रवार को ज्येष्ठा और शनिवार को रेवती नक्षत्र हो तो वार एवं नक्षत्र का यह संयोग, दग्ध नाम का अशुभ योग बनाता है जिसे सभी शुभ कार्यों में और विशेषकर यात्रा में त्यागना चाहिए।

यमघण्ट योगः

यदि रविवार को मघा, सोमवार को विशाखा, मंगलवार को आर्द्रा, बुधवार को मूला, गुरूवार को कृतिका, शुक्रवार को रोहिणी और शनिवार को हस्त नक्षत्र हो तो वार एवं नक्षत्र का यह संयोग यमघण्ट नाम का अशुभ योग बनाता है जिसे सभी शुभ कार्यों में और विशेषकर यात्रा में त्यागना चाहिए।

पाठकों की सुविधा के लिए वार, नक्षत्र एवं तिथि के संयोग से बनने वाले इन शुभाशुभ योगों को आगे तालिका संख्या 3.2 में तालिकाबद्ध करके दिखाया गया है।

तालिका संख्या 3.2

वार योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
अमृतसिद्धि योग	हस्त	मृगशिरा	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थसिद्धि योग	हस्त, मूल, उत्तरा–फाल्गुनी, उत्तरा–षाढ़ा, उत्तरा–भाद्रपद, पुष्य, आश्लेषा	श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, अनुराधा	अश्विनी, उत्तरा–भाद्रपद, कृतिका, आश्लेषा	रोहिणी, अनुराधा, हस्त, कृतिका, मृगशिरा	रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, पुष्य	रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु, श्रवण	श्रवण, रोहिणी, स्वाति
दग्ध योग	भरणी	चित्रा	उत्तरा–षाढ़ा	धनिष्ठा	उत्तरा–फाल्गुनी	ज्येष्ठा	रेवती
यमघण्ट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृतिका	रोहिणी	हस्त
मधुसर्पिश योग	हस्त एवं पंचमी तिथि	मृगशिरा एवं षष्टी तिथि	अश्विनी एवं सप्तमी तिथि	अनुराधा एवं अष्टमी तिथि	पुष्य एवं नवमी तिथि	रेवती एवं दशमी तिथि	रोहिणी एवं एकादशी तिथि

तिथि एवं मास द्वारा बनने वाला अशुभ संयोग (मास–शून्य तिथियां):

मास एवं तिथि का निम्नलिखित संयोग अशुभ योग बनाता है जिसे सभी शुभ कार्यों में त्यागना चाहिए। यह संयोग मास–शून्य तिथि कहलाता है। विभिन्न मासों की इन अशुभ तिथियों को आगे तालिका संख्या 3.3 में तालिकाबद्ध करके दिखाया गया है।

तालिका संख्या 3.3

मास का क्रम	मास का नाम	शुक्लपक्ष की अशुभ तिथि	कृष्णपक्ष की अशुभ तिथि
1	चैत्र	8/9	8/9
2	वैशाख	12	12
3	ज्येष्ठ	13	14
4	आषाढ़	7	6
5	श्रावण	3/2	3/2
6	भाद्रपद	1/2	1/2
7	आश्विन	10/11	10/11
8	कार्तिक	14	5
9	मार्गशीर्ष	7/8	7/8
10	पौष	4/5	4/5
11	माघ	2	5
12	फाल्गुन	3	4

मास एवं नक्षत्र द्वारा बनने वाला अशुभ संयोगः

निम्नलिखित मास एवं नक्षत्रों का संयोग अशुभ योग बनता है और यदि इन्हे किसी कार्य के लिए चुना जाता है तो उस कार्य के परिणाम स्वरुप सम्पति की हानि होगी। इन अशुभ संयोगों को मास–शून्य नक्षत्र भी कहते हैं। मास विशेष में इस अशुभ योग को बनाने वाले नक्षत्र विशेष को आगे तालिका संख्या 3.4 में तालिकाबद्ध करके दिखाया गया है।

तालिका संख्या 3.4

मास	अशुभ योग बनाने वाले नक्षत्र
चैत्र	अश्विनी, रोहिणी
वैशाख	चित्रा, स्वाति
ज्येष्ठ	उत्तराषाढ़ा, पुष्य
आषाढ़	पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा
श्रावण	उत्तराषाढ़ा, श्रवण
भाद्रपद	शतभिषा, रेवती
मास	अशुभ योग बनाने वाले नक्षत्र
आश्विन	पूर्वाभाद्रपद
कार्तिक	कृतिका, मघा
मार्गशीर्ष	चित्रा, विशाखा
पौष	आर्द्रा, अश्विनी
माघ	श्रवण, मूल
फाल्गुन	भरणी, ज्येष्ठा

मास एवं चन्द्रराशि द्वारा बनने वाला अशुभ संयोगः

किसी मास विशेष में जब चन्द्रमा किसी राशि विशेष में गोचर करता है तो वह मास–शून्य राशि नाम का अशुभ योग बनाता है। प्रत्येक मास में इस योग को बनाने वाली राशि को आगे तालिका संख्या 3.5 में तालिकाबद्ध करके दिखाया गया है।

तालिका संख्या 3.5

मास	चन्द्रमा की गोचरस्थ राशि
आश्विन	वृश्चिक
कार्तिक	तुला
मार्गशीर्ष	धनु
पौष	कर्क
माघ	मकर
फाल्गुन	सिंह

मास	चन्द्रमा की गोचरस्थ राशि
चैत्र	कुंभ
वैशाख	मीन
ज्येष्ठ	वृषभ
आषाढ़	मिथुन
श्रावण	मेष
भाद्रपद	कन्या

सभी मंगलकारी कार्यों के लिए मास एवं चन्द्रराशि की इस युति को छोडना ही श्रेयकर होता है अन्यथा ऐसा कार्य सम्पति के अतिरिक्त जातक के परिवार पर भी अशुभ प्रभाव डालता है।

तिथि एवं नक्षत्र द्वारा बनने वाला अशुभ संयोगः

प्रतिपदा एवं उत्तराषाढ़ा, द्वितीया एवं अनुराधा, तृतीया एवं उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा अथवा उत्तराभाद्रपद, पंचमी एवं मघा, षष्टी एवं रोहिणी, सप्तमी एवं हस्त अथवा मूल, अष्टमी एवं पूर्वाभाद्रपद, नवमी एवं कृतिका, एकादशी एवं रोहिणी, द्वादशी एवं आश्लेषा ओर त्रयोदशी एवं चित्रा अथवा स्वाति का संयोग तिथि–शून्य नक्षत्र कहलाता है तथा अशुभ माना जाता है।

तिथि नक्षत्र के इस अशुभ संयोग को नीचे तालिकाबद्ध करके दिया गया है।

तिथि	नक्षत्र
प्रतिपदा	उत्तराषाढ़ा
द्वितीया	अनुराधा
तृतीया	उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा अथवा उत्तराभाद्रपद
पंचमी	मघा
षष्टी	रोहिणी
सप्तमी	हस्त अथवा मूल
अष्टमी	पूर्वाभाद्रपद
नवमी	कृतिका
एकादशी	रोहिणी
द्वादशी	आश्लेषा
त्रयोदशी	चित्रा अथवा स्वाति

तिथि और लग्न द्वार बनने वाला अशुभ संयोगः

निम्नलिखित तिथियों और लग्नों का संयोग तिथि–शून्य लग्न नाम से जाना जाता है और जिसे सभी मंगलकारी कार्यों में त्यागना चाहिए।

तिथि	लग्न
प्रतिपदा	तुला एवं मकर लग्न
तृतीया	सिंह एवं मकर लग्न
पंचमी	मिथुन एवं कन्या लग्न
सप्तमी	धनु एवं कर्क लग्न
नवमी	कर्क एवं सिंह लग्न
एकादशी	धनु एवं मीन लग्न
त्रयोदशी	वृषभ एवं मीन लग्न

टिप्पणीः 'मास–शून्य तिथि' और 'तिथि–शून्य लग्न' केवल 'मध्यदेश' अर्थात उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्याचल, पूर्व में प्रयाग और पश्चिम में सरस्वती नदी (राजस्थान) के मध्य में पडने वाले क्षेत्र विशेषों में अशुभ है। राजस्थान, दिल्ली, प्रयाग के दक्षिण में आने वाला उत्तर प्रदेश का कुछ हिस्सा, पंजाब, हिमाचय और मध्य प्रदेश का कुछ भाग इसके अर्न्तगत आता है।

अट्ठाईस शुभ और अशुभ योगः

वार एवं नक्षत्रों के विभिन्न संयोग से 28 शुभाशुभ योग बनते हैं। इन योगों के नाम और स्वभाव को नीचे दिया गया है।

1. आनन्द (शुभ)	11. छत्र (शुभ)	21. अमृत (शुभ)
2. कालदण्ड (अशुभ)	12. मित्र (शुभ)	22. मुसल (अशुभ)
3. धूम्र (अशुभ)	13. मानस (शुभ)	23. गद (अशुभ)
4. धाता (शुभ)	14. पद्म (अशुभ)	24. मातंग (अशुभ)
5. सौम्य (शुभ)	15. लुम्ब (अशुभ)	25. राक्षस (अशुभ)
6. ध्वंस (अशुभ)	16. उत्पात (अशुभ)	26. चर (शुभ)
7. केतु (शुभ)	17. मृत्यु (अशुभ)	27. सुस्थिर (शुभ)
8. श्रीवत्स (शुभ)	18. काण (अशुभ)	28. प्रवर्धमान (शुभ)
9. वज्र (अशुभ)	19. सिद्धि (शुभ)	
10. मुदगर (अशुभ)	20. शुभ (शुभ)	

इन योगों की गणना अलग–अलग वारों के लिए अलग–अलग क्रम से होती है। जैसे किः

रविवार को क्रमशः अश्विनी नक्षत्र से,

सोनवार को क्रमशः मृगशिरा नक्षत्र से,

मंगलवार को क्रमशः आश्लेषा नक्षत्र से,

बुधवार को क्रमशः हस्त नक्षत्र से,

गुरूवार को क्रमशः अनुराधा नक्षत्र से,

शुक्रवार को क्रमशः उत्तराषाढ़ा नक्षत्र से,

शनिवार को क्रमशः शतभिषज नक्षत्र से।

आनन्द आदि योग अपने क्रमानुसार आते हैं। उदाहरण के लिए बुधवार को हमें हस्त नक्षत्र से प्रारम्भ करना होगा। बुधवार एवं हस्त आनन्द योग बनायेगा, बुधवार एवं चित्रा कालदण्ड योग बनायेगा और बुधवार एवं स्वाति धूम्र योग बनायेगा और इसी प्रकार सभी योग क्रमशः बनेंगे। पाठकों की सुविधा हेतु इन योगों के बनने के लिए आवश्यक विभिन्न घटकों को आगे तालिका संख्या 3.6 में तालिकाबद्ध करके दिखाया गया है।

तालिका संख्या 3.6
(शुभाशुभ युतियां)

क्रम	योग	स्वभाव	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
1	आनन्द	शुभ	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषज
2	कालदण्ड	अशुभ	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्रपद
3	धूम्र	अशुभ	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फाल्गु.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भाद्रपद
4	धाता	शुभ	रोहिणी	पुष्य	उ.फाल्गु.	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती
5	सौम्य	शुभ	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषज	अश्विनी
6	ध्वंश	अशुभ	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्रपद	भरणी
7	केतु	शुभ	पुनर्वसु	पू.फाल्गु.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भाद्रपद	कृतिका
8	श्रीवत्स	शुभ	पुष्य	उ.फाल्गु.	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
9	वज्र	अशुभ	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषज	अश्विनी	मृगशिरा
10	मुदगर	अशुभ	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्रपद	भरणी	आर्द्रा
11	छत्र	शुभ	पू.फाल्गु.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु

12	मित्र	शुभ	उ.फाल्गु.	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
13	मानस	शुभ	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषज	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा
14	पदम	अशुभ	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा
15	लुम्ब	अशुभ	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फाल्गु.
16	उत्पात	अशुभ	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फाल्गु.
17	मृत्यु	अशुभ	अनुराधा	उ.षाढ़ा	शतभिषज	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त
18	काण	अशुभ	ज्येष्ठा	अभिजित	पू.भाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
19	सिद्धि	शुभ	मूल	श्रवण	उ.भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फाल्गु.	स्वाति
20	शुभ	शुभ	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फाल्गु.	विशाखा
21	अमृत	शुभ	उ.षाढ़ा	शतभिषज	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा
22	मुसल	अशुभ	अभिजित	पू.भाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
23	गद	अशुभ	श्रवण	उ.भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फाल्गु.	स्वाति	मूल
24	मातंग	शुभ	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फाल्गु.	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा
25	राक्षस	अशुभ	शतभिषज	अश्विनी	मृगशिरा	आश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षाढ़ा
26	चर	शुभ	पू.भाद्रपद	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित
27	सुस्थिर	शुभ	उ.भाद्रपद	कृतिका	पुनर्वसु	पू.फाल्गु.	स्वाति	मूल	श्रवण
28	प्रवर्धमान	शुभ	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फाल्गु.	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा

तिथि, वार एवं नक्षत्र के संयोग से बनने वाले योग:

(अ) त्रिपुष्कर योग:

यदि भद्रा तिथि (2,7,12 तिथियां) रविवार, मंगलवार अथवा शनिवार को हो और त्रिपाद नक्षत्र अर्थात विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पुनर्वसु, कृतिका अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र भी उस समय हो तो तिथि, वार एवं नक्षत्र का यह संयोग त्रिपुष्कर नाम का योग बनाता है। कोई भी शुभ अथवा अशुभ कार्य इस योग में प्रारम्भ हो तो उस कार्य की तीन बार पुनरावृत्ति होने की प्रवृत्ति होती है। अतः यह योग ऐसे सभी कार्यों में त्यागना चाहिए जिनको पुनः–पुनः करना मंगलकारी न हो।

(आ) द्विपुष्कर योग:

भद्रा तिथि (2,7,12 तिथिया), क्रूर वार (रविवार, मंगलवार अथवा शनिवार) और द्विपाद नक्षत्र (धनिष्ठा, चित्रा अथवा मृगशिरा) का संयोग होने पर द्विपुष्कर नाम का योग बनता है। शुभाशुभ किसी भी प्रकार का कार्य इस योग में प्रारम्भ

होता है तो उस कार्य की दो बार पुनरावृत्ति होने की संभावना होती है।

ऊपरोक्त दोनों प्रकार के योगों में दो घटक, भद्रा तिथि और क्रूर वार, एक समान हैं। त्रिपुष्कर योग में त्रिपाद नक्षत्रों (बृहस्पति एवं सूर्य के सभी नक्षत्रों के तीन पद एक राशि में और एक पद दूसरी राशि में होता है) की और द्विपुष्कर योग में द्विपाद नक्षत्रों (मंगल के सभी नक्षत्रों के दो पद एक राशि में और दूसरे दो पद दूसरी राशि में होते हैं) की आवश्यकता होती है।

सूर्य एवं चन्द्रमा द्वारा अपनी स्थिति और एक–दूसरे की संयुक्त स्थिति से बनने वाले योगः

1. **पंचकः** जब चन्द्रमा, कुभं और मीन राशियों (धनिष्ठा के उत्तरार्ध, शतभिषज, पूर्वभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद एवं रेवती नक्षत्रों) में गोचर करता है तो यह पंचक कहलाता है। दाह संस्कार, दक्षिण दिशा की यात्रा, चारपाई को बुनना, लकडी एवं घास एकत्रित करना और छत डालना, इन पांच कार्यों में पंचक त्यागना चाहिए।

   यदि किसी मृत शरीर का दाह संस्कार पंचक में किया जाता है तो उचित ढंग से पंचक शान्ति करनी चाहिए अन्यथा यह कहा जाता है कि यह उसी परिवार अथवा नजदीकी संबंधियों में पांच व्यक्तियों को मृत्यु की ओर अग्रसर करता है।'

2. **बाणः** यह भी पंचक कहलाता है लेकिन यह सूर्य के भोगांश पर आधारित होता है। रोग, अग्नि, नृप, चोर और मृत्यु, ये पांच प्रकार के बाण होते हैं। बाण की गणना आगे दिए गए तरीके से की जाती है।

   रोग बाणः सूर्य के अंशों में 6 जोडकर प्राप्तांक को 9 से भाग करें। यदि शेषफल 5 प्राप्त होता है तो यह रोग बाण कहलाता है।

   अग्नि बाणः सूर्य के अंशों में 3 जोडकर प्राप्तांक को 9 से भाग करें। यदि शेषफल 5 प्राप्त होता है तो यह अग्नि बाण कहलाता है।

   नृप बाणः सूर्य के अंशों में 1 जोडकर प्राप्तांक को 9 से भाग करें। यदि शेषफल 5 प्राप्त होता है तो यह नृप बाण कहलाता है।

---

*इसका परीक्षण होना आवश्यक है लेकिन हमने यह पाया है कि ऐसी स्थितियों में परिवार में कुछ अशुभ घटनायें अवश्य होती हैं जिसमें कुछ घटनाओं में करीबी सम्बन्धी की मृत्यु भी शामिल

चोर बाणः सूर्य के अंशों में 8 जोडकर प्राप्तांक को 9 से भाग करें। यदि शेषफल 5 प्राप्त होता है तो यह चोर बाण कहलाता है।

मृत्यु बाणः सूर्य के अंशों में 4 जोडकर प्राप्तांक को 9 से भाग करें। यदि शेषफल 5 प्राप्त होता है तो यह मृत्यु बाण कहलाता है।

यदि इस को सरल शब्दों में कहें तो यदि सूर्य किसी भी राशि में

यदि 8, 17 या 26 अंश में स्थित है तो यह रोग बाण है,

यदि 2, 11, 20 या 29 अंश में स्थित है तो अग्नि बाण है,

यदि 4, 13 या 22 अंश में स्थित है तो नृप बाण है,

यदि 6, 15 या 24 अंश में स्थित है तो चोर बाण है, और

यदि 1, 10, 19 या 28 अंश में स्थित है तो मृत्यु बाण है। उपर्युक्त अंश गतअंश हैं (completed degrees)।

रोग बाण, उपनयन संस्कार में रविवार को रात्रि के समय विशेषरुप से त्यागना चाहिए। अग्नि बाण, गृहनिर्माण में मंगलवार को पूरे दिन ही त्यागना चाहिए। नृप बाण, सरकारी सेवा में शामिल होने के लिए शनिवार को दिन के समय त्यागना चाहिए। चोर बाण, यात्रा में मंगलवार को रात्रि के समय त्यागना चाहिए। मृत्यु बाण, विवाह संस्कार के लिए, बुधवार को और संध्या के समय त्यागना चाहिए।

ऊपरोक्त गणना को सुविधापूर्वक समझने के लिए आगे तालिका में तालिका बद्ध करके दिखाया गया है।

तालिका

बाण	रोग	अग्नि	नृप	चोर	मृत्यु
सूर्य के गतअंश	8,17,26	2,11,20,29	4,13,22	6,15,24	1,10,19,28
वर्जित वार	रविवार	मंगलवार	शनिवार	मंगलवार	बुधवार
वर्जित समय	रात्रिकाल	पूर्ण वार	दिवाकाल	रात्रिकाल	संध्या काल
वर्जित कार्य	उपनयन	गृहनिर्माण	सरकारी सेवा	यात्रा	विवाह

महाराष्ट्र में विवाह के समय विभिन्न बाणों की गणना अलग विधि से की जाती है। तिथि एवं विवाह के लग्न को जोडकर प्राप्तांक को 9 से भाग

देने पर यदि शेषफल 8 आता है तो यह रोग बाण, यदि शेषफल 2 आता है तो अग्नि बाण, यदि शेषफल 4 आता है तो नृप बाण, यदि शेषफल 6 आता है तो चोर बाण और यदि शेषफल 1 आता है तो मृत्यु बाण है। उदाहरणतः यदि विवाह दशमी तिथि को धनु लग्न में होता है तो 10 एवं 9 का योग करना है जिसको करने पर हमें 19 प्राप्त होता है, जिसे 9 से भाग देने पर हमें शेषफल 1 प्राप्त होता है। अतः यह मृत्यु बाण है जो विवाह के लिए शुभ नहीं होता है। गणना का यह विशिष्ट तरीका केवल महाराष्ट्र में ही अपनाया जाता है और अन्य स्थानों के लिए नहीं देखना चाहिए।(मूहूर्त चिन्तामणि श्लोक संख्या 72 अध्याय 6)

3. होलाष्टकः व्यास, रावी एवं सतलुज नदियों (सभी पंजाब में हैं) के तट और पुष्कर (अजमेर) के क्षेत्र में होलिका दहन से आठ दिन पहले से, अर्थात फाल्गुन मास की शुक्लपक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तिथि तक के आठ दिनों को विवाह एवं अन्य शुभ कार्यों में त्यागना चाहिए। यह होलाष्टक कहलाता है।

4. आडल योगः यदि किसी दिन चन्द्रमा का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से 2रा, 7वां, 9वां, 14वां, 16वां, 21वां, 23वां अथवा 28वां हो तो यह आडल योग कहलाता है जिसे सैनिक कार्यवाई, कृषि सम्बन्धित कार्यों और पत्थर सम्बन्धित कार्यों के लिए त्यागना चाहिए, लेकिन यह दोष विवाह एवं अन्य संस्कारों के लिए हानिकारक नहीं होता है। नक्षत्रों की इस गणना में अभिजित नक्षत्र को भी शामिल करके गिनती होगी।

   उदाहरणतः यदि सूर्य रोहिणी नक्षत्र में है तो चन्द्रमा का मृगशिरा (2रा), मघा (7वां) उत्तराफाल्गुनी (9वां), अनुराधा (14वां), मूल (16वां), धनिष्ठा (21वां), पूर्वाभाद्रपद (23वां) और कृतिका (28वां) नक्षत्रों में गोचर आडल योग बनायेगा।

5. विडल योगः किसी दिन सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र (अभिजित नक्षत्र को भी शामिल करके) को गिनने पर प्राप्तांक को 7 से भाग देने पर यदि शेषफल 3 या 6 आता है तो उस दिन विडल नाम का अशुभ योग होता है और इस योग में किए गये कार्यों में असफलता मिलती है।

   उदाहरण के लिए माना सूर्य रोहिणी नक्षत्र में है और चन्द्रमा हस्त नक्षत्र में है। सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर हमें 10 प्राप्त होता

हैं, इसको 7 से भाग देने पर शेषफल 3 प्राप्त होता है, जिसका यह अर्थ है कि उस दिन विडल योग है।

इसको दूसरे शब्दों में कहें तो यदि चन्द्रमा का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से 3रा, 6वां, 10वां, 13वां, 17वां, 20वां, 24वां अथवा 27वां है तो यह विडल योग बनायेगा।

6. रवि योगः यदि चन्द्रमा का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से 4था, 6वां, 9वां, 10वां, 13वां अथवा 20वां है तो यह रवि नाम का शुभ योग बनाता है जो सभी अशुभ प्रभावों को समाप्त करने में सक्षम होता है।

यदि हम ऊपरोक्त योगों को सूक्ष्मता से देखते हैं तो जब चन्द्रमा का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से 9वां नक्षत्र होता है तो आडल योग (अशुभ) के साथ ही साथ रवि नाम का शुभ योग भी होता है। इसी प्रकार जब चन्द्रमा का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से 6वां, 10वां, 13वां अथवा 20वां नक्षत्र होता है तो विडल नाम के अशुभ योग के साथ रवि नाम का शुभ योग भी होता है। मूहूर्त चिन्तामणि में स्पष्ट कहा है कि जिस दिन शुभाशुभ दोनों योग बनते हों तो उस दिन केवल शुभ योग ही प्रबल होगा। (मुहूर्त चिन्तामणि, अध्याय 1, 42वां श्लोक)

कुछ अन्य विचारणीय विषयः

ग्रहणः

जिस नक्षत्र में पूर्ण सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण होता है उस नक्षत्र को अगले छः मास तक किसी भी मंगलकारी कार्य के चयन में त्यागना चाहिए। इसी प्रकार जिस नक्षत्र में अर्ध सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण होता है उस नक्षत्र को अगले तीन मास तक, जिस नक्षत्र में एक चौथाई अर्थात आंशिक सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण होता है उस नक्षत्र को अगले एक मास तक किसी भी मंगलकारी कार्य में त्यागना चाहिए।

यदि ग्रस्त सूर्य अथवा चन्द्रमा अस्त हो जाए तो ग्रहण से पूर्व के तीन दिन और यदि ग्रस्त सूर्य अथवा चन्द्रमा उदय हो जाए तो ग्रहण से अगले तीन दिन, सभी मंगलकारी कार्यों के लिए त्यागने चाहिए।

यदि ग्रहण किसी अन्य समय होता है (अर्थात ग्रस्तास्त या ग्रस्तोदय नहीं होता) तो ग्रहण से पूर्व के तीन दिनों को और ग्रहण से अगले तीन दिनों को सभी मंगलकारी कार्यों के लिए त्यागना चाहिए।

अशुभ/पापी ग्रहों द्वारा पीड़ित नक्षत्रः

जिस नक्षत्र में अशुभ/पापी ग्रह गोचर करके निकला हो, वह नक्षत्र, जिसमें अशुभ/पापी ग्रह गोचर कर रहा हो और वह नक्षत्र जिसमें अशुभ/पापी ग्रह गोचर करने वाला हो अर्थात जिसमे गोचर करने के लिए अग्रसर हो, सभी मंगलकारी कार्यों के लिए त्यागने चाहिए। उदाहरण के लिए यदि मंगल मृगशिरा नक्षत्र में गोचर कर रहा हो तो मृगशिरा के साथ–साथ रोहिणी एवं आर्द्रा नक्षत्रों को सभी मंगलकारी कार्यों के लिए त्यागना चाहिए। ये नक्षात्र तभी अशुभता के प्रभाव से मुक्त होगें जब चन्द्रमा पुनः इन पर गोचर करेगा।

इसी प्रकार जिस नक्षत्र में ग्रहयुद्ध हो रहा हो, जो नक्षत्र पंचशलाका अथवा सप्तशलाका चक्र में अशुभ ग्रहों के वेध से पीड़ित हो, उनको भी सभी मंगलकारी कार्यों के लिए त्यागना चाहिए। (इन चक्रों के लिए विवाह का अध्याय देखें)

बृहस्पति–शुक्र का अस्त होनाः

जब बृहस्पति और शुक्र सूर्य के निकट आते हैं तो ये सूर्य के तेज से अस्त हो जाते हैं और वह समय कुछ विशेष कार्यों के लिए शुभ नहीं माना जाता है। बृहस्पति एवं शुक्र के अस्त होने की स्थिति में निम्नलिखित कार्यों को त्यागना चाहिएः

1. गृहनिर्माण और नव निर्मित घर में गृह–प्रवेश,
2. कुआं, तालाब, टैंक, सिंचाई के लिए पंप से पानी निकालने के लिए कुआं आदि खोदना,
3. बगीचा लगाना,
4. व्रतारंभ और व्रतोत्सर्ग,
5. दस महादान (ऐसे दान जो बहुत अधिक पवित्र माने जाते हैं), कूर्म पुराण के अनुसार सोना, घोडा, तिलपात्र, नाग, सेवक, वाहन, भूमि, भवन, कन्या

और गाय, इन दस चीजों का दान महादान की श्रेणी में आता है। जब बृहस्पति एवं शुक्र अस्त हों तो ये नहीं करने चाहिए।

6. सोम यज्ञ,

7. प्राण प्रतिष्ठा,

8. दीक्षा (गुरु से मंत्र लेना),

9. अन्नप्राशन के बाद के सभी संस्कार अर्थात कर्णवेध, मुंण्डन, उपनयन, केशान्त, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह आदि।

10. बृहस्पति एवं शुक्र के अस्त होने का विचार अन्नप्राशन के पूर्व के संस्कारों जैसे कि जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन आदि, जो कि एक निश्चित आयु में करने होते हैं, के लिए नहीं किया जाता है। लेकिन यदि किसी कारणवश अन्नप्राशन के पूर्व का कोई संस्कार निश्चित समय पर नहीं किया गया हो तो उसको बाद में करने के लिए बृहस्पति एवं शुक्र के अस्त का समय त्यागना चाहिए।

11. राज्याभिषेक। आधुनिक समय में यह कहा जा सकता है कि नई सरकार का पद ग्रहण अथवा मंत्रिमण्डल में पद ग्रहण करना।

12. राजा से प्रथम भेंट।

13. पवित्र तीर्थ स्थानों की प्रथम यात्रा।

14. किसी भी देश की प्रथम यात्रा।

15. हवन, यज्ञ।

ऊपरोक्त कार्य बृहस्पति एवं शुक्र के अस्त होने के साथ–साथ क्षय मास अथवा अधिकमास में भी नहीं करने चाहिए।

इसके साथ ही साथ अस्त होने से कुछ दिन पूर्व और उदय होने के कुछ दिन तक ग्रह बलहीन होता है। कोई ग्रह अस्त होने से कितने दिन पूर्व और उदय होने के कितने दिन तक बलहीन होता है इस विषय में मतान्तर हैं। कम से कम बृहस्पति एवं शुक्र के अस्त होने से तीन दिन पूर्व और उदय होने के बाद के तीन दिनों को भी उन सभी कार्यों के लिए त्यागना चाहिए जो बृहस्पति एवं शुक्र के अस्त होने की स्थिति में त्याज्य हैं क्योंकि इन दिनों ग्रह वृद्ध व्यक्ति अथवा नवजात शिशु की तरह होते हैं।

सिंहस्थ बृहस्पतिः

कुछ ज्योतिषाचार्यों का मत है कि जो कार्य बृहस्पति एवं शुक्र के अस्त होने के समय वर्जित हैं वे सभी कार्य बृहस्पति के सिंह राशि में गोचर के समय भी छोडने चाहिए।

जब बृहस्पति सिंह राशि में मघा नक्षत्र और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र के प्रथम चरण (सिंह राशि में 0 अंश से 16 अंश 40 कला तक) में गोचर करता है तो वह समय विशेष अधिक अशुभ माना जाता है।

बृहस्पति का सिंह राशि में गोचर उन स्थानों के लिए विशेष अशुभ माना जाता है जो स्थान गंगा और गोदावरी नदियों के बीच में अर्थात गंगा के दक्षिण एवं गोदावरी के उत्तर में आते हैं।

जब सूर्य मेष राशि में गोचर करता है (अप्रैल के मध्य से मई के मध्य तक) तो उस समय बृहस्पति के सिंहस्थ होने का अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाता है।

सभी प्रदेशों में सिंह राशि और सिंह नवमांश के बृहस्पति (अर्थात सिंह राशि के 13अंश 20मिनट से 16अंश 40 कला तक) को विवाह एवं अन्य सभी मंगलकारी कार्यों के लिए त्यागना चाहिए।

मकर राशि में बृहस्पति का गोचरः

बृहस्पति का मकर राशि, जो उसकी नीच राशि है, में होना सामान्यतः अशुभ माना जाता है। मकरस्थ बृहस्पति का अशुभ प्रभाव मगध क्षेत्र (दक्षिणी बिहार), कोंकण (कन्नड़, रतनगिरी, कोलाबा, मुम्बई, थाने आदि), गोध क्षेत्र (मध्य बंगाल एवं उडीसा) और आधुनिक मुम्बई में अधिक होगा। अन्य स्थानों के लिए बृहस्पति का मकर राशि में गोचर मध्यम माना जाता है।

मकरस्थ बृहस्पति को कुआं खोदने, तालाब एवं जलाशय आदि बनाने के लिए अशुभ नहीं माना जाता है।

संक्रान्तिः

जब सूर्य किसी भी एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश करता है तो यह संक्रान्ति कहलाती है। जब सूर्य द्विस्वभाव राशियों अर्थात मिथुन, कन्या, धनु और मीन राशियों में प्रवेश करता है तो यह संक्रान्ति **षड्शीत्यायन** कहलाती है। जब सूर्य मेष एवं तुला राशि में प्रवेश करता है तो यह संक्रान्ति **विषुव**, जब मकर में

प्रवेश करता है तो **सौम्यायन**, जब कर्क में प्रवेश करता है तो याम्यायन और जब स्थिर राशियों (2,5,8,11 राशियों) में प्रवेश करता है तो संक्रान्ति विष्णुपद संक्रान्ति कहलाती है।

जब सूर्य किसी भी राशि में प्रवेश करता है तो संक्रान्ति से 16 घटी (6 घण्टे एवं 24 मिनट) पूर्व को समय और संक्रान्ति से 16 घटी (6 घण्टे एवं 24 मिनट) बाद का समय पुण्य काल कहलाता है जिसे सभी कार्यों में त्यागना चाहिए।

पुण्यकाल के विशेष नियमः

1. यदि सूर्य कर्क राशि में रात्रि के समय प्रवेश करता है तो संक्रान्ति का पुण्यकाल, पहले दिन अपरान्ह अर्थात दोपहर के पश्चात सूर्यास्त तक होता है।
2. यदि सूर्य मकर राशि में रात्रि के समय प्रवेश करता है तो संक्रान्ति का पुण्यकाल अगले दिन पूर्वान्ह अर्थात दोपहर से पहले होता है।
3. यदि सूर्य अन्य राशियों (1/2/3/5/6/7/8/9/11/12) में सूर्यास्त के पश्चात लेकिन अर्धरात्रि से पूर्व प्रवेश करता है तो संक्रान्ति का पुण्यकाल पहले दिन अपरान्ह अर्थात दोपहर के पश्चात होगा। यदि सूर्य इन राशियों में अर्धरात्रि के बाद प्रवेश करता है तो पुण्यकाल अगले दिन पूर्वान्ह अर्थात दोपहर से पहले होगा।
4. यदि सूर्य किसी भी नई राशि में ठीक अर्धरात्रि के समय प्रवेश करता है तो पुण्यकाल पिछले दिन के अपरान्ह से अगले दिन के पूर्वान्ह अर्थात पहले दिन के दोपहर के बाद से दूसरे दिन के दोपहर तक होगा।
5. सूर्योदय से तीन घटी (1 घण्टा एवं 12 मिनट) पहले और सूर्यास्त से तीन घटी (1 घण्टा एवं 12 मिनट) बाद का समय सन्ध्या काल कहलाता है। यदि सूर्य कर्क राशि में सूर्योदय से तीन घटी पूर्व प्रवेश करता है तो पुण्यकाल अगले दिन होगा। यदि सूर्य मकर राशि में सूर्यास्त से तीन घटी के बाद (सूर्यास्त के संध्याकाल में) प्रवेश करता है तो पुण्यकाल पिछले दिन होता है। यह नियम ऊपर दिए गये नियम संख्या 1 एवं 2 का अपवाद हैं।

पुण्यकाल का समय अशुभ माना जाता है इसे किसी भी सांसारिक कार्य के प्रारंभ में त्यागना चाहिए। पुण्यकाल का समय विशेषरुप से दान, प्रार्थना, हवन आदि धार्मिक कार्यों के लिए शुभ माना जाता है।

विशेष पुण्यकालः

जब सूर्य वृषभ, कर्क, सिंह, वृश्चिक एवं कुंभ राशियों में प्रवेश करता है तो पुण्यकाल संक्रान्ति से से पूर्व 16 घटी तक होता है। जब सूर्य मेष एवं तुला राशियों में प्रवेश करता है तो पुण्यकाल संक्रान्ति से 8 घटी पूर्व प्रारम्भ होकर 8 घटी बाद तक होता है और जब सूर्य मिथुन, कन्या, धनु, मकर एवं मीन राशियों में प्रवेश करता है तो पुण्यकाल संक्रान्ति से 16 घटी बाद तक होता है। यह नियम तब लागू होता है जब संक्रान्ति दिन के समय होती है अर्थात जब पहले बताये गये 1 से 5 नियम लागू नहीं होते हैं।

अध्याय 4
ग्रहों का गोचर

मुहूर्त चयन में शुभाशुभ ग्रहों का विभिन्न राशियों में गोचर एक महत्वपूर्ण और विचारणीय विषय है। यह गोचर सामान्यतः जातक विशेष के जन्म चन्द्रमा अर्थात जन्म राशि से देखा जाता है। इस अध्याय में प्रत्येक ग्रह की विभिन्न गोचरस्थ शुभ स्थितियों के साथ–साथ वेध स्थिति की विवेचना की गई है।

गोचर के सूर्य की शुभ स्थितियां और उसके वेध स्थानः

जन्म चन्द्रमा से 3/6/10/11 भावों में सूर्य का गोचर शुभ माना जाता है बशर्ते शनि के अतिरिक्त कोई अन्य ग्रह वेध स्थान अर्थात जन्म चन्द्रमा से क्रमशः 9/12/4/5 भावों से इसका वेध न कर रहा हो।

जन्म चन्द्रमा से शुभ भाव	3	6	10	11
जन्म चन्द्रमा से वेध भाव	9	12	4	5

टिप्पणीः सूर्य एवं शनि के बीच कोई वेध नहीं होता है।

सूर्य के गोचर का विचार उन सभी मुहूर्तों में किया जाता है जिनमें राजा अथवा शासन का सम्बन्ध होता है जैसे कि राज्याभिषेक, शपथ ग्रहण, राजा से प्रथम भेंट और ऐसे ही अन्य अवसरों पर। सूर्य का गोचर विवाह के लिए भी विचारणीय होता है।

सूर्य का अन्य भावों में गोचर तब ही अशुभ होता है जब वह ऐसे भाव में गोचर करता है जो उसकी नीच राशि, शत्रु राशि और अष्टकवर्ग में कमजोर राशि होती है। गोचरस्थ किसी भी ग्रह के बल का आंकंलन करते समय इन बातों को भी महत्व देना चाहिए।

गोचर के चन्द्रमा की शुभ स्थितियां और उसके वेध स्थानः

गोचर का चन्द्रमा जब जन्म के चन्द्रमा से 3/6/10/11/1/7 भावों में गोचर करता है तो शुभ परिणाम देता है बशर्ते कि उसके वेध स्थानों अर्थात जन्म चन्द्रमा से क्रमशः 9/12/4/8/5/2 भावों से बुध के अतिरिक्त गोचर का कोई अन्य ग्रह वेध न कर रहा हो।

जन्म चन्द्रमा से शुभ भाव	3	6	10	11	1	7
जन्म चन्द्रमा से वेध भाव	9	12	4	8	5	2

टिप्पणीः चन्द्रमा एवं बुध के मध्य वेध नहीं होता है।

शुक्लपक्ष का चन्द्रमा, जन्म चन्द्रमा से 2/5/9 भावों में गोचर करने पर भी मंगलकारी परिणाम देता है बशर्ते यह क्रमशः 6/4/8 भावों से बुध के अतिरिक्त किसी अन्य ग्रह के वेध से पीड़ित न हो रहा हो।

शुक्लपक्ष में अतिरिक्त शुभ भाव	2	5	9
वेध स्थान	6	4	8

अन्य स्थितियों जैसे कि उच्च राशि, स्वराशि, मित्र की राशि और बली अष्टकवर्ग की स्थिति का भी विचार करना चाहिए।

सभी प्रकार के चयनों में चन्द्रमा का गोचर सर्वाधिक महत्वपूर्ण होता है।

टिप्पणीः अब इसके पश्चात जब कभी भी इस पुस्तक में 'चन्द्र–शुद्धि' शब्द का प्रयोग होगा उसका अर्थ होगा कि गोचर में चन्द्रमा निश्चित रूप से बली है।

चन्द्रशुद्धि से सम्बन्धित एक अन्य शब्द 'तारा–शुद्धि' कहलाता है। तारा शुद्धि के विषय में विस्तृत चर्चा अध्याय 2 में की जा चुकी है।

सभी मुहूर्तों के लिए सही चन्द्र–शुद्धि और तारा–शुद्धि अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। जब पूर्णिमा का चन्द्रमा होता है अथवा पूर्णिमा के निकट होता है तो चन्द्र–शुद्धि को अधिक महत्ता दी जाती है। इसी प्रकार जिन दिनों चन्द्रमा अमावस्या से निकला होता है अर्थात जब नव चन्द्रमा होता है, तो तारा–शुद्धि को अधिक महत्ता दी जाती है। यदि कोई चन्द्रबल एवं ताराबल को पूर्णरुप से सुनिश्चित कर सकता है तो यह सबसे श्रेष्ठ स्थिति होती है।

गर्भावस्था सम्बन्धित सभी मुहूर्तो (अर्थात जन्म से पूर्व के संस्कारों), विवाह, ऋतुस्राव आदि के लिए स्त्री का चन्द्रबल देखना चाहिए। अन्य स्थितियों में जहां

युगल साथ–साथ रहता हो तो जातिका के पति के चन्द्रबल का विचार करना चाहिए। अन्य सभी स्थितियों में कर्ता अर्थात जिसके द्वारा कार्य किया जा रहा है उसका चन्द्रबल देखा जाता है। गृह–निर्माण एवं नये घर में गृह–प्रवेश के लिए यद्यपि गृहस्वामी के चन्द्रबल का विचार आवश्यक है लेकिन साथ ही साथ परिवार के अन्य सदस्यों के चन्द्रबल को भी वरीयता देनी चाहिए।

गोचर के मंगल, शनि, राहु एवं केतु की शुभ स्थितियां और उनके वेध स्थानः

मंगल, शनि, राहु एवं केतु, जन्म चन्द्रमा से 3/6/11 भावों में गोचर करते समय शुभ परिणाम देते हैं बशर्ते कि इनके वेध स्थान क्रमशः 12/9/5 भावों से गोचर का कोई अन्य ग्रह इनका वेध न कर रहा हो।

शुभ भाव स्थितियां	3	6	11
वेध स्थितियां	12	9	5

टिप्पणीः शनि एवं सूर्य के बीच में वेध नहीं होता है।

ग्रह विशेष की उच्चराशि, स्वराशि, मित्र की राशि, बली नवमांश और बली अष्टकवर्ग की स्थिति भी उस ग्रह विशेष को बली बनाएगी।

उन सभी कार्यों में, जहां बल का प्रयोग होता है जैसे कि युद्ध, विवाद, न्यायालय सम्बन्धित कार्य आदि, के लिए मंगल का बल आवश्यक माना जाता है। दीक्षा (गुरू से मंत्र लेना) के लिए शनि का बली होना आवश्यक है। अतः कार्य के अनुसार सम्बन्धित ग्रह का बल निश्चित रुप से होना चाहिए।

गोचर के बुध की शुभ स्थितियां और इसके वेध स्थानः

जन्म चन्द्रमा से 2/4/6/8/10/11 भावों में बुध गोचर करते समय मंगलकारी परिणाम देगा बशर्ते कि इसके वेध स्थानों क्रमशः 5/3/9/1/8/12 भावों से गोचर का चन्द्रमा को छोड़ कोई अन्य ग्रह इसका वेध न कर रहा हो।

जन्म चन्द्रमा से शुभ स्थितियां	2	4	6	8	10	11
वेध स्थितियां	5	3	9	1	8	12

बुध की उच्चराशि, स्वराशि, मित्र की राशि, बली नवमांश और बली अष्टकवर्ग की स्थिति, इसके बल में वृद्धि करेगी।

शिक्षा सम्बन्धित सभी मुहूर्तों और लेखन, गृहनिर्माण विद्या सम्बन्धित सभी मुहूर्तों में बुध के गोचर का विचार करना चाहिए।

गोचर के बृहस्पति की शुभ स्थितियां और इसके वेध स्थानः

जन्म चन्द्रमा से 2/5/7/9/11 भावों में बृहस्पति का गोचर मंगलकारी माना जाता है बशर्ते कि इसके वेध स्थानों क्रमशः 12/4/3/10/8 में गोचर का कोई अन्य ग्रह इसका वेध न कर रहा हो।

जन्म चन्द्रमा से शुभ स्थितियां	2	5	7	9	11
वेध स्थितियां	12	4	3	10	8

अष्टकवर्ग में बली स्थिति अथवा उच्चराशि, स्वराशि, मित्रराशि और बली नवमांश की स्थिति बृहस्पति के बल में भी वृद्धि करेगी।

बृहस्पति का गोचर विवाह, उपनयन, वेदारम्भ (आधुनिक काल में शिक्षा प्रारम्भ) और शिक्षा से सम्बन्धित सभी संस्कारों में विचारणीय होता है।

गोचर के शुक्र की शुभ स्थितियां एवं इसके वेध स्थानः

जन्म चन्द्रमा से 1/2/3/4/5/8/9/11/12 भावों में शुक्र का गोचर मंगलकारी माना जाता है बशर्ते कि इसके वेध स्थानों क्रमशः 8/7/1/10/9/5/11/3/6 से कोई अन्य गोचर का ग्रह इसका वेध न कर रहा हो।

जन्म चन्द्रमा से शुभ स्थितियां	1	2	3	4	5	8	9	11	12
वेध स्थितियां	8	7	1	10	9	5	11	3	6

अष्टकवर्ग में बली स्थिति, उच्चराशि, स्वराशि, मित्रराशि और बली नवमांश की स्थिति से प्राप्त होने वाला बल भी, बल आंकलन में विचारणीय होता है।

शुक्र का गोचर यात्रा के लिए विशेष विचारणीय होता है। इसके अतिरिक्त संगीत, नाटक, वस्त्र एवं आभूषण पहनने आदि के मुहूर्तों में भी इसको देखा जा सकता है।

यदि कोई ग्रह जन्म चन्द्रमा से अशुभ भावों में गोचर कर रहा हो लेकिन अन्य स्थितियों के कारण जैसे कि उच्चराशि, स्वराशि, मित्रराशि, बली नवमांश की स्थिति के कारण अथवा अष्टकवर्ग में बली हो तो उसकी अशुभता कम अथवा समाप्त भी हो जाएगी। इसी प्रकार यदि कोई ग्रह शुभ स्थानों में गोचर कर रहा हो लेकिन अन्य स्थितियों जैसे कि नीच राशि, शत्रुराशि, निर्बल नवमांश की स्थिति अथवा अष्टकवर्ग में निर्बल स्थिति के कारण बलहीन हो तो इसकी शुभता में कमी आ जाती है अथवा अशुभ प्रभाव के स्तर के अनुरुप शुभता पूर्ण रुप से समाप्त भी हो जाती है।

जो ग्रह अशुभ/पापी ग्रहों से पीड़ित हो अथवा उनके बीच में फंसा हो, तो वह प्रतिकूल परिणाम देगा। किसी भी ग्रह के गोचर का अनुकूल अथवा प्रतिकूल स्वभाव का निर्णय करने से पहले ऊपरोक्त सभी बिन्दुओं को पूरा महत्त्व देना चाहिये।

अध्याय 5

विवाह से पूर्व के संस्कार

संस्कार का अर्थ होता है एक ऐसी धार्मिक प्रक्रिया जिसके द्वारा व्यक्ति का शुद्धिकरण किया जाता है। इसमें उन सभी धार्मिक कार्यों और प्रक्रियाओं का सम्मिश्रण होता है जिनसे एक व्यक्ति को बाहरी एवं आन्तरिक, शारीरिक एवं बौधिक शुद्धता प्राप्त होती है और जो किसी भी व्यक्ति को क्रूर पशु से शुद्ध एवं विकसित सामाजिक प्राणी बनाते हैं।

हिन्दू धर्म में प्रत्येक जातक के लिए उसके अपनी मां के गर्भ में आने से लेकर मृत्यु और दाह–संस्कार तक कई संस्कार बताये गये हैं। इनमें से प्रमुख सोलह संस्कार जो षोडश संस्कार के नाम से जाने जाते हैं, निम्नलिखित हैं:

जन्म से पूर्व के संस्कार

1. गर्भाधान
2. पुंसवन
3. सीमन्तोन्नयन

बचपन के संस्कार

4. जातकर्म
5. नामकरण
6. निष्क्रमण
7. अन्नप्राशन
8. चूड़ाकर्ण या मुण्डन
9. कर्णवेध

शिक्षा के संस्कार

10. विद्या आरम्भ (अक्षरारंभ)
11. उपनयन
12. वेदारम्भ
13. केशान्त
14. समावर्तन

अन्य संस्कार

15. विवाह
16. दाह–संस्कार

इस अध्याय में विवाह से पूर्व के संस्कारों की चर्चा की गई है।

जन्म से पूर्व के संस्कार

1. गर्भाधानः

यह संस्कार सुनिश्चित करता है कि गर्भाधान अर्थात किसी भी बच्चे का मां के गर्भ में आना अचानक नहीं होना चाहिए अपितु यह पूर्वनियोजित होना चाहिए और एक सुयोग्य सन्तति की प्राप्ति के उद्देश्य के लिए पति–पत्नि का मिलन, किसी शुभ समय में धार्मिक प्रक्रिया से शुद्धिकरण होने के पश्चात होना चाहिए। यह संस्कार गर्भाधान एवं प्रजनन सम्बन्धित सभी अशुद्धियों को दूर करता है और एक स्वस्थ एवं भाग्यवान सन्तान के जन्म को सुनिश्चित करता है।

गर्भाधान के लिए मुहूर्तः

समयः ऋतुस्राव होने के चौथी से सोलहवीं रात्रि के मध्य गर्भाधान होना चाहिए। यदि गर्भाधान ऋतुस्राव से गिनने पर सम संख्या की रात्रि (4,6,8,10,12,14,16) को होता है तो ऐसे गर्भाधान से पुत्र सन्तान होती है जबकि ऋतुस्राव से विषम संख्या की रात्रि का गर्भाधान होने पर कन्या सन्तान होती है। ऋतुश्राव के दिन से 8वीं, 9 वीं, 10वीं, 12वीं, 14वीं, 15वीं

और 16वीं रात्रि का गर्भाधान विशेष शुभ माना जाता है।

नक्षत्रः गर्भाधान के लिए सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) के अतिरिक्त मृगशिरा, अनुराधा, हस्त, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषज श्रेष्ठ नक्षत्र हैं।

सभी क्रूर नक्षत्रों (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा), तीक्ष्ण नक्षत्रों (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा और आश्लेषा), रेवती और कृतिका नक्षत्र को विशेषकर त्यागना चाहिए। अन्य नक्षत्र मध्यम माने जाते हैं।

तिथिः 1/2/3/5/7/10/12/13 तिथियां अच्छी होती हैं। रिक्ता तिथियां (4/9/14) षष्टी, अष्टमी, एकादशी तिथियां, अमावस्या और पूर्णिमा वर्जित हैं। भद्रा का भी त्याग करना चाहिए।

वारः बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार, अच्छे हैं जबकि सोमवार मध्यम है।

लग्नः गर्भाधान के लग्न के केन्द्र एवं त्रिकोण में शुभ ग्रह और 3/6/11 भावों में सभी क्रूर ग्रह स्थित होने चाहिए। लग्न, पुरुष ग्रहों (सूर्य, मंगल एवं बृहस्पति) से दृष्ट होना चाहिए और चन्द्रमा विषम नवांश में होना चाहिए।

त्याज्यः व्यतीपात, वैधृति और परिघ योग का प्रथम आधा भाग त्यागना चाहिए। भद्रा, अशुभ वार, अशुभ तिथि, तिथि गण्डांत, अशुभ नक्षत्र, नक्षत्र गण्डांत और लग्न गण्डांत भी त्यागना चाहिए।

पूर्णा तिथियों (5/10/15/30 तिथियों) की अन्तिम एक घटी (24 मिनट) और नन्दा तिथियों (1/6/11 तिथियों) की प्रारंम्भिक एक घटी (24 मिनट), तिथि गण्डांत कहलाती है।

कर्क, वृश्चिक एवं मीन लग्नों की अन्तिम आधी घटी (12 मिनट) और मेष, सिंह एवं धनु लग्नों की प्रारंम्भिक आधी घटी (12 मिनट), लग्न गण्डांत कहलाती है।

ज्येष्ठा, रेवती एवं आश्लेषा नक्षत्र की अन्तिम दो घटी (48 मिनट) और अश्विनी, मघा एवं मूल नक्षत्र की प्रारंम्भिक दो घटी (48 मिनट), नक्षत्र गण्डांत कहलाती है।

सूर्य और चन्द्र ग्रहण का दिन, दिन का समय, पति–पत्नी दोनों के ही जन्म एवं वध तारा (जन्म नक्षत्र से 1ला, 10वां, 19वां, 7वां, 16वां,और 25वां नक्षत्र), पत्नी का जन्मदिन, चर लग्न और पापी एवं अशुभ ग्रहों द्वारा युक्त लग्न त्यागना चाहिए।

चन्द्र और/अथवा तारा बलः पति–पत्नी दोनों के लिए उचित चन्द्र और तारा शुद्धि भी करनी चाहिए।

इसी से सम्बन्धित निषेक अर्थात प्रथम संबंध शुभ तिथि, शुभवार को रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, उत्तराभाद्रपद और रेवती नक्षत्र में रात्रि के प्रथम तीन घण्टों के पश्चात आनन्दित चित्तवृत्ति से मैत्री पूर्ण वातावरण में करना चाहिए।

2. **पुंसवनः**

पुसंवन संस्कार गर्भ में स्थित सन्तति को पुत्र के रुप में प्राप्त करने और गर्भपात को रोकने के उद्देश्य से किया जाने वाला संस्कार है। सामान्यतः यह गर्भावस्था के दूसरे अथवा तीसरे मास में किया जाता है। इस संस्कार को करने के लिए उचित समय के निर्णय हेतु निम्नलिखित का विचार आवश्यक होता है।

(अ) **गर्भावस्था के मास का स्वामीः** गर्भावस्था के मास का स्वामी ग्रह (उच्च राशि, स्वराशि, मित्र की राशि में स्थिति अथवा बली नवांश के कारण) गोचर में बली होना चाहिए।

गर्भावस्था के प्रत्येक मास के स्वामी इस प्रकार हैंः प्रथम मास–शुक्र, द्वितीय मास–मंगल, तृतीय मास–बृहस्पति, चतुर्थ मास–सूर्य, पंचम मास–चन्द्रमा, षष्टम मास–शनि, सप्तम मास–बुध, अष्टम मास–गर्भधारण लग्न का स्वामी, नवम मास–चन्द्रमा और दशम मास–सूर्य।

(आ) **नक्षत्रः** मृगशिरा, पुष्य, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, हस्त और सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) अच्छे माने जाते हैं।

(इ) **तिथियांः** दोनों पक्षों की प्रथमा, द्वितीया, तृतीया, पंचमी, सप्तमी, दशमी, एकादशी और त्रयोदशी तिथियां अच्छी मानी जाती हैं।

(ई) वारः पुरुष वार अर्थात रविवार, मंगलवार और गुरूवार अच्छे होते हैं।

(ओ) लग्नः पुरुष राशियों (1/3/5/7/9/11) का लग्न और नवांश जिनमें शुभ ग्रह केन्द्र एवं त्रिकोण में और अशुभ ग्रह 3/6/11 भावों में हों मंगलकारी माना जाता है।

(औ) चन्द्र शुद्धिः गर्भवती स्त्री के लिए चन्द्र और तारा शुद्धि करना आवश्यक है।

3. सीमन्त–उन्नयन संस्कारः

इस संस्कार का उद्देश्य गर्भवती स्त्री को दुष्ट प्रभाव से बचाना है। साथ ही साथ यह संस्कार गर्भवती स्त्री के प्रसन्नचित्त रहने (जैसे कि इसमें एक कार्य यह होता है कि पत्नी के बालों को पति द्वारा संवारा जाता है) की आवश्यकता के महत्व को बताना होता है, जिसका गर्भ में पल रहे शिशु पर अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त इस संस्कार में कुछ अन्य धार्मिक क्रियायें भी की जाती हैं जो गर्भावस्था के अन्तिम दो–तीन मास में स्त्री की सही देखभाल की आवश्यकताओं के महत्व को बताते हैं।

सीमान्त संस्कार गर्भावस्था के 6वें अथवा 8वें मास में, पुंसवन संस्कार के लिए निर्देशित नक्षत्र, तिथि, वार एवं लग्न में ही उस समय किया जाता है जब मास का स्वामी गोचर में बली होता है।

इसी संस्कार से सम्बन्धित एक अन्य प्रक्रिया, विष्णु पूजा है। गर्भावस्था के 8वें मास में श्रवण, रोहिणी अथवा पुष्य नक्षत्र एवं 2/3/4/6/7/9/12 राशियों के लग्न में, जब शुभ ग्रह लग्न में और अष्टम भाव रिक्त होता है, विष्णु पूजा की जाती है। गर्भ में पल रहे शिशु की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विष्णु पूजा करनी चाहिए।

जन्म से पूर्व के ऊपरोक्त तीनों संस्कारों के विषय में मतान्तर है कि क्या ये क्षेत्र (अर्थात स्त्री के प्रजनन अंगों के संस्कार) के संस्कार हैं अथवा गर्भ संस्कार (अर्थात गर्भस्थ शिशु के संस्कार) हैं। जिनके मतानुसार यह क्षेत्र संस्कार हैं उनका मानना है कि ऊपरोक्त संस्कार प्रथम गर्भ के समय करने चाहिए क्योंकि स्त्री के क्षेत्र अर्थात प्रजनन अंगों के लिए इनकी एक बार ही आवश्यकता होगी। जो इसको गर्भस्थ शिशु का संस्कार मानते हैं

उनका मानना है कि प्रत्येक गर्भ के समय इन संस्कारों को करने की आवश्यकता होती है।

बचपन के संस्कार

1. जातकर्म संस्कारः

जात कर्म संस्कार शिशु के जन्म के तुरन्त बाद लेकिन नाभि–बन्धन (अर्थात शिशु को मां से अलग करने से पहले) से पहले किया जाता है, अतः इसके लिए मुहूर्त चयन की आवश्यकता नहीं होती है। केवल तब जब यह नाभि–बन्धन (नाल काटने) से पूर्व नहीं किया जाता है तो इसको नामकरण के साथ ही किया जाता है जिसमें मुहूर्त चयन करना पड़ता है।

इस संस्कार में प्रथम कार्य **'मेधाजनन'** (जिसका शाब्दिक अर्थ बुद्धिमता पैदा करना है) कहलाता है। इसमें पिता निम्नलिखित मंत्र कहते हुए अपनी अनामिका अंगुली से शिशु को शहद और घी चटाता है।

ऊँ भूस्त्वयि दधामि ऊँ भुवः स्त्वयि दधामि ऊँ स्वस्त्वयि दधामि।
ऊँ भू भुर्वः स्वः सर्व त्वयि दधामि।।

भावार्थः जो इस धरा और आकाश में है मैं तुझे वह सब देता हूं।

इसी समय शिशु के कान में उसका पिता एक नाम उच्चारित करता है जिसे गुप्त रखा जाता है।

इस संस्कार में दूसरा कार्य यह होता है कि शिशु का पिता दीर्घायु चीजों के नाम उच्चारित करता है और इसके द्वारा नवजात शिशु को लम्बी आयु का आशीर्वाद देता है। इसके पश्चात पिता, शिशु के लम्बे, सुख–समृद्ध और अच्छे जीवन के लिए प्रार्थना करता है। उसके पश्चात नाल को काटकर शिशु को उसकी मां से अलग किया जाता है।

स्तनपानः यदि स्तनपान जातकर्म के तुरन्त बाद ही शुरु कर दिया जाता है तो मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती है। लेकिन यदि किसी भी कारणवश शिशु का प्रथम स्तनपान जातकर्म के समय नहीं हो पाता है तो यह पांचवें दिन अथवा व्यतीपात, वैधृति, भद्रा और रिक्ता तिथियों को छोड़कर किसी भी शुभ तिथि और वार को प्रारम्भ करवाना चाहिए।

2. नामकरण संस्कारः

यदि जातकर्म समय पर नहीं किया गया है तो इसे नामकरण संस्कार के साथ करना चाहिए। ये दोनों संस्कार एक साथ 11वें अथवा 12वें दिन अथवा परिवार की परम्परा के अनुसार करने चाहिए। यदि ऐसा किया जाता है तो इसके लिए भी मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती है।

यदि किसी कारणवश ऊपरोक्त दोनों संस्कार समय पर नहीं किये गये हों तो सही मुहूर्त चयन करने के लिए निम्नलिखित विचारणीय होता है।

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) को जातकर्म एवं नामकरण संस्कार के लिए अच्छा माना जाता है।

वारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार, अच्छे होते हैं।

तिथिः 1/2/3/5/7/10/11/12/13 तिथियां अच्छी होती हैं।

लग्नः वृषभ, सिंह, वृश्चिक, कुंभ, मिथुन, कन्या, तुला अथवा धनु राशिं का लंग्न एवं नवांश जो शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो और अशुभ ग्रहों के प्रभाव से मुक्त हो, अच्छा माना जाता है।

वर्जितः व्यतीपात, वैधृति, भद्रा, संक्रान्ति का दिन और रिक्ता तिथि को त्यागना चाहिए।

इसके साथ ही साथ नवजात शिशु के लिए सही चन्द्र और/अथवा तारा बल सुनिश्चित करना चाहिए (अर्थात जन्म राशि से 4/8/12 में चन्द्र न हो और 3/5/7 तारा न हो)।

नवजात शिशु को पांच प्रकार के नाम दिये जाते हैं।

प्रथम नाम परिवार के कुल देवता के नाम से सम्बन्धित होता है।

दूसरा नाम जिस मास में जन्म हुआ हो उस मास के स्वामी से सम्बन्धित होता है। प्रत्येक मास के देवता इस प्रकार से हैंः मार्गशीर्ष – कृष्ण, पौष – अनन्त, माघ – अच्युत, वैशाख – जनार्दन, ज्येष्ठ – उपेन्द्र, आषाढ़ –

यज्ञपुरुष, श्रावण – वासुदेव, भाद्रपद – हरि, आश्विन – योगीश, कार्तिक – पुण्डरीकाक्ष।

तृतीय नाम उस नक्षत्र के पदानुसार होता है जिस नक्षत्र में शिशु का जन्म हुआ हो।

चतुर्थ नाम, प्रसिद्ध नाम होता है अर्थात जिस नाम के द्वारा उसको जाना जाएगा। यदि नवजात शिशु लड़का है तो उसका नाम में दो अथवा चार अक्षर और यदि कन्या है तो उसके नाम में तीन अथवा पांच अक्षर होने चाहिए। नाम उच्चारण में सरल होना चाहिए, सुनने में मधुर होना चाहिए, लैंगिग भेद बताने वाला होना चाहिए और उसका अर्थ भी अच्छा होना चाहिए। कन्या का नाम नक्षत्र, नदी, पेड, पक्षी, पर्वत, सर्प के नाम पर नहीं होना चाहिए और भय उत्पन्न करने वाला भी नहीं होना चाहिए।

पंचम नाम घर का नाम अर्थात परिवार के सदस्यों द्वारा घर में पुकारा जाने वाला नाम होता है।

सूतिका स्नान मुहूर्तः

सामान्यतः नामकरण संस्कार के समय मां और शिशु दोनों ही स्नान करते हैं लेकिन यदि किसी कारणवश नामकरण संस्कार संभव नहीं हो पाता है तो ऐसी स्थिति में निम्नलिखित बातों का विचार करते हुए सही मुहूर्त का चयन करके सूतिका स्नान (अर्थात सन्तान जनने के कारण हुई अशुद्धता से शुद्ध होने के लिए स्नान) करवाया जा सकता है।

सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी), मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, अश्विनी, हस्त एवं स्वाति नक्षत्र और रविवार, मंगलवार एवं गुरुवार सूतिका स्नान के लिए सबसे अच्छे माने जाते हैं।

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, आश्लेषा, ज्येष्ठा एवं धनिष्ठा नक्षत्र और सोमवार एवं शुक्रवार मध्यम माने जाते हैं। शेष नक्षत्रों और वारों को त्यागना चाहिए। षष्टी, अष्टमी द्वादशी एवं रिक्ता तिथि को भी त्यागना चाहिए।

सूतिका अर्थात मां के लिए सही चन्द्र और तारा शुद्धि भी आवश्यक रुप से करनी चाहिए।

3. निष्क्रमण संस्कारः

यह संस्कार नवजात शिशु के पहली बार घर से बाहर, खुले में आने से सम्बन्धित है। यह संस्कार शिशु जन्म के 12वें दिन से लेकर चार महीने का होने तक, किसी भी समय किया जा सकता है। नामकरण संस्कार के साथ ही इस संस्कार को करने का प्रचलन अधिक है। यदि नामकरण संस्कार के साथ ही यह संस्कार नहीं हो पाता है तो मंगलवार, शनिवार, रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां), भद्रा, अमावस्या और अशुभ योगों के दिनों को छोड़कर इसे जन्म के 3रे अथवा 4थे मास में किया जा सकता है। श्रवण, मृगशिरा, हस्त, अनुराधा, पुष्य, पुनर्वसु, अश्विनी, रेवती और धनिष्ठा नक्षत्र इस संस्कार के लिए शुभ होते हैं। चूंकि यह नवजात शिशु की प्रथम यात्रा होती है, अतः यात्रा के मुहूर्त चयन में विचारणीय सभी स्थितियां भी इसमें लागू होती हैं।

कुछ अन्य उप–संस्कारः

दोलारोहणः यह जन्म से 10वें, 12वें, 16वें, 18वें या 32वें दिन अथवा किसी शुभ दिन (बुधवार, सोमवार, गुरूवार या शुक्रवार), स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) में करना चाहिए।

सूर्य द्वारा युत नक्षत्र से आगे के पांच नक्षत्र और पीछे के सात नक्षत्र मंगलकारी माने जाते हैं।

षष्टी पूजनः यह पूजा नवजात शिशु के अरिष्ट दूर करने के लिए जन्म से 6वें दिन, 6वीं दुर्गा (देवी दुर्गा के नव रुपों में से 6वां रुप कात्यायनी देवी का है) को प्रसन्न करने के लिए की जाती है।

4. अन्नप्राशन संस्कारः

यह संस्कार नवजात शिशु को मां के दूध के अतिरिक्त पहली बार ठोस आहार देते समय किया जाता है। यह संस्कार नवजात शिशु की सही देखभाल और अच्छे भोजन की आवश्यकता के महत्व को दर्शाता है।

समयः यदि नवजात शिशु लड़का है तो 6वें, 8वें अथवा 10 वें मास में और यदि लड़की है तो 5वें, 7वें, 9वें अथवा 11वें मास में अन्नप्राशन संस्कार होता है।

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) मंगलकारी माने जाते हैं।

तिथिः रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां), नन्दा तिथियों (1/6/11 तिथियां), अष्टमी, अमावस्या और द्वादशी तिथियों को छोड़कर सभी तिथियां अच्छी होती हैं। इस प्रकार 2/3/5/7/10/13/15 तिथियां शुभ हैं।

वारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार, अन्नप्राशन संस्कार के लिए शुभ वार हैं।

लग्नः मेष, वृश्चिक, मीन लग्न को त्यागना चाहिए। शिशु की जन्म राशि से अष्टम भाव की राशि का लग्न भी त्यागना चाहिए। शेष सभी लग्न, जिनके केन्द्र–त्रिकोण में शुभ ग्रह औरं 3/6/11 भावों में अशुभ ग्रह हों, मंगलकारी माने जाते हैं। लग्न से दशम भाव में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए और चन्द्रमा 1/6/8 भाव में नहीं होना चाहिए।

शिशु के लिए ठीक चन्द्र और तारा शुद्धि होना भी आवश्यक है।

भूमि–उपवेशनः

यह संस्कार उस समय से सम्बन्धित है जब शिशु पहली बार भूमि में बैठता है। शिशु के जन्म से 5वें मास में जब गोचर में मंगल बली हो, रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां) और अशुभ वार को छोड़कर, स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), लघु नक्षत्रों (हस्त, ..श्विनी, पुष्य एवं अभिजितद्ध, मृगशिरा, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र में किया जाता है। भगवान वाराह (भगवान विष्णु के एक अवतार) और मां स्वरुप भूमि की पूजा की जाती है और शिशु की कमर में सूत का धागा बांध कर उसे भूमि पर बैठाया जाता है। यह संस्कार

कटि–सूत्र–धारण संस्कार (अर्थात कमर पर सूत का धागा धारण करना) भी कहलाता है। शिशु के सामने बहुत सारी वस्तुएं जैसे कि पुस्तक, कलम, औजार, कपड़े, विभिन्न प्रकार के खिलौने, अनेक जीविका साधन प्रतीक वस्तुएं आदि रखे जाते हैं और ऐसा माना जाता है कि शिशु जिस वस्तु की ओर आकर्षित होकर उसे प्रसन्नता से छूता है, बड़ा होकर उस वस्तु से सम्बन्धित कार्य से अपनी आजीविका अर्जित करता है।

टिप्पणीः यहां तक वर्णित संस्कारों (अर्थात अन्नप्राशन संस्कार तक) को करने के लिए बृहस्पति एवं शुक्र का अस्त होना, बाल एवं वृद्ध अवस्था में होना, सिंहस्थ बृहस्पति, सूर्य का दक्षिणायन होना, क्षय अथवा अधिकमास होना आदि का विचार करने की आवश्यकता नहीं होती है। अर्थात इन स्थितियों में भी अन्नप्राशन संस्कार तक के सारे संस्कार किए जा सकते हैं लेकिन अन्नप्राशन संस्कार के बाद के सभी संस्कारों के लिए ऊपरोक्त सभी अशुभ योगों को त्यागना चाहिए।

5. कर्णवेध (कर्ण छेदन) संस्कारः

कर्णवेध अर्थात कान छेदना, आभूषणादि पहनने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि कर्णवेध शिशु को आंतों सम्बन्धित रोगों और अण्डकोषों की सूजन से बचाता है।

> शंखोपरि च कर्णान्ते त्यक्त्वा यत्नेन सेवनीम्।
> व्यत्यासाद्वा शिरां विंध्येद् अन्त्रवृद्धिनिवृत्तये।।

समयः कर्णवेध जन्म से 10वें, 12वें या 16वें दिन, अथवा 6वें, 7वें या 8वें महीने अथवा आंयु के विषम वर्षों में किया जाना चाहिए। आजकल सामान्यतः इसको चूड़ाकरण अथवा उपनयन संस्कार के साथ करना अधिक प्रचलन में है।

नक्षत्रः सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), श्रवण, धनिष्ठा और पुनर्वसु नक्षत्र अच्छे माने जाते हैं।

वारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

तिथिः रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां) और अमावस्या के अतिरिक्त सभी तिथियां अच्छी होती हैं।

त्याज्यः खर मास (जब सूर्य धनु और मीन राशियों में हो), तिथि क्षय, हरिशयन (आषाढ़ शुक्लपक्ष की एकादशी से कार्तिक मास की शुक्लपक्ष की एकादशी तिथि तक का समय), जंन्ममास, जन्म तारा और आयु के सम वर्षों को त्यागना चाहिए।

लग्नः कर्णवेध के लग्न से केन्द्र–त्रिकोण में शुभ ग्रह एवं 3/6/11 भावों में अशुभ ग्रह होने चाहिये और अष्टम भाव में कोई ग्रह नही होना चाहिए। बृहस्पति अथवा शुक्र की राशियों (2/7/9/12 राशियां) के लग्न को, जिसमें बृहस्पति लग्न में हो, प्राथमिकता देनी चाहिए ।

सभी की तरह इसमें भी शिशु के लिए ठीक चन्द्र एवं तारा बल होना आवश्यक है।

यदि शिशु लड़का है तो पहले दाहिने कान का छेदन करना चाहिए और उसके पश्चात बायें कान का। यदि शिशु लड़की है तो पहले बायें कान का छेदन करना चाहिए और उसके पश्चात दाहिने कान का छेदन करना चाहिए।

6. चूड़ाकरण संस्कारः

यह संस्कार 'चौल', 'मुण्डन' आदि के नाम से भी जाना जाता है। इस संस्कार का मुख्य उद्देश्य बालों को पहली बार काटने से है जिससे जातक का व्यक्तित्व मनोहर हो और वह भाग्यशाली एवं दीर्घायु हो।

पौष्टिकं दीर्घमायुष्यं शुचिरुपम् विराजनम्।
केश श्मश्रु नखादीनां कर्तनम् संप्रसाधनम्।।
– 'चरक'

बाल काटने के बाद, बालों को गाय के गोबर के साथ मिलाया जाता है और गोशाला में गाड़ा जाता है अथवा किसी नदी में प्रवाहित किया जाता है क्योंकि ये बाल बुरी इच्छा से किये जाने वाले अभिचार कर्म करने के लिए प्रयोग हो सकते हैं। सिर के बीच में बालों का एक छोटा सा गुच्छा छोड़ा जाता है जिसे शिखा कहते हैं। इसके विषय में सुश्रुत ने कहा है किः

मस्तकाभ्यन्तरोपरिष्टात शिरासंबंधिसन्निपातो।
रोमावर्तो अधिपति स्तत्रापि सद्यो मरणम् ।।
– 'सुश्रुत'

अर्थात सिर के मध्य में एक बहुत ही मर्म स्थान होता है और यदि इस स्थान पर प्रहार किया जाये तो जातक तुरन्त ही मृत्यु का ग्रास हो जाता है, अतः इस स्थान की सुरक्षा के लिए शिखा रखी जाती है।

समयः जन्म से 3रे अथवा 5वें वर्ष में मुण्डन संस्कार मंगलकारी माना जाता है लेकिन यह 7वें वर्ष अथवा उपनयन संस्कार के साथ भी किया जा सकता है। कुछ विद्वान प्रथम वर्ष में ही चूड़ाकरण अथवा मुण्डन अधिक मंगलकारी मानते हैं। चूड़ाकरण अथवा मुण्डन संस्कार में आयु के सम वर्षों (2रे, 4थे, 6वें आदि) को त्यागना चाहिए।

जब सूर्य वृषभ राशि में गोचर करता है उस समय सबसे बडे बालक अथवा बालिका का चूड़ाकरण नहीं करना चाहिए। यदि बच्चे की आयु पांच वर्ष के कम हो और उसकी मां पांच मास से अधिकं समय की गर्भवती हो तो भी चूड़ाकरण नहीं करवाना चाहिए।

चूड़ाकरण के लिए मकर, कुंभ, मेष, वृषभ और मिथुन सौरमास मंगलकारी माने जाते हैं।

नक्षत्रः सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), मृगशिरा, रेवती, चित्रा और ज्येष्ठा नक्षत्रों को मंगलकारी माना जाता है।

तिथिः 2/3/5/7/10/11/13 तिथियां मंगलकारी होती हैं।

वारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार मंगलकारी माने जाते हैं।

लग्नः जन्मराशि एवं जन्मराशि से अष्टम भाव की राशि के लग्न को त्यागना चाहिए। ऐसा लग्न चुनना चाहिए जिसके केन्द्र–त्रिकोण (1/4/7/10/5/9 भावों) में शुभ ग्रह और 3/6/11 भावों में अशुभ ग्रह हों। अष्टम भाव में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए।

इसमें भी शिशु के लिए चन्द्र एवं तारा बल होना आवश्यक है। यहां चन्द्रशुद्धि को अधिक महत्व दिया जाता है।

जो तिथियां, नक्षत्र आदि चूड़ाकरण संस्कार के लिए निर्देशित किए गये हैं वे सभी बाल कटवाने, दाढी बनवाने और नख काटने के लिए मंगलकारी होते हैं। लेकिन जो जातक सरकारी सेवा में होते हैं, अभिनय, नाटक आदि क्षेत्रों से सम्बन्धित होते हैं और विवाह, यज्ञ, सम्बन्धी की मृत्यु, जेल

से आने अथवा जाने उनके लिए, राजा अथवा ब्राह्मण की आज्ञा से इन कार्यों हेतु मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती है।

शिक्षा से सम्बन्धित संस्कार

1. अक्षरारम्भ (वर्णों से प्रथम परिचय):

'अक्षर' का शाब्दिक अर्थ है जिसका क्षरण या विनाश नहीं होता, यदि ऐसे माध्यम द्वारा ज्ञान दिया जाता है तो यह अविनाशी हो जाता है। अतः शिशु का इन अक्षरों से परिचय एक महत्त्वपूर्ण संस्कार है।

भगवान गणेश, गुरु, विद्या की देवी सरस्वती और परिवार के इष्ट देवी–देवताओं का पूजन करके शिशु का परिचय अक्षरों से कराया जाता है। गुरू (अध्यापक अथवा उपदेशक) पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठता है और शिशु पश्चिम दिशा की ओर मुख करके बैठता है। बाद में गुरू को वस्त्राभूषण और इसी तरह की अन्य वस्तुएं भेंट की जाती है और गुरू शिशु को आर्शीवाद देता है।

समयः पांच वर्ष की आयु में और उत्तरायण के समय अक्षरारम्भ किया जा सकता है।

नक्षत्रः सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, रेवती, चित्रा, अनुराधा और ज्येष्ठा नक्षत्र मंगलकारी माने जाते हैं।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां अच्छी होती हैं।

वारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार अच्छे माने जाते हैं।

लग्नः 2/3/6/9/12 राशियों के लग्न (अर्थात शुभ ग्रहों की चर राशियों को छोड़कर शेष राशियों का लग्न) जिसके सप्तम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रह बली होकर स्थित हों और अष्टम भाव में कोई ग्रह नहीं हो।

ठीक प्रकार से चन्द्र और तारा शुद्धि होना, एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। आज के समय में बच्चे को स्कूल भेजने के लिये इस मुहूर्त का उपयोग किया जा सकता है।

2. उपनयन संस्कारः

यह 'यज्ञोपवीत संस्कार' भी कहलाता है। इस संस्कार में गुरू अथवा उपदेशक द्वारा ब्रह्मचारी को गायत्री उपदेश (एक ऐसा मंत्र जो प्रत्येक व्यक्ति के लिए सबसे अधिक मंगलकारी माना जाता है) दिया जाता है। गुरू अथवा आचार्य ब्रह्मचारी को वेदों के विषय में और ब्रह्मचर्य आश्रम में रहने हेतु उचित बर्ताव एवं नियमों को बताता है। उपनयन के पश्चात जातक द्विज अर्थात पुनः जन्मा कहलाता है। यह कहा जाता है कि इस संस्कार के द्वारा आचार्य के गर्भ से समाज के एक विश्वस्त और अनुशासित व्यक्ति के रुप में बालक का पुनः जन्म होता है। इस संस्कार के पश्चात जातक सदैव सूत के तीन धागों से निर्मित एक पवित्र धागा पहनता है जो उसे इस बात का आभास कराते हैं कि उसे पितृ ऋण, ऋिषि ऋण और देव ऋण, ये तीन ऋण उतारने हैं। अन्य तीन धागें भी इसके साथ होते हैं जो उसके परिवार किसी कुल अथवा वंश विशेष से सम्बन्ध यह दर्शाते हैं। यह संस्कार विद्यार्थी के रुप में उसके जीवन के नये चरण को भी सूचित करता है।

समयः गर्भधान से अथवा जन्म से आयु गिनने पर इस संस्कार हेतु 5वां अथवा 8वां वर्ष ब्राह्मण के लिए, 6वां अथवा 11वां वर्ष क्षत्रिय के लिए और 8वां अथवा 12वां वर्ष वैश्य के लिए निश्चित किया गया है। इस संस्कार को करने की अधिकतम आयु ब्राह्मण के लिए 16 वर्ष, क्षत्रिय के लिए 22 वर्ष और वैश्य के लिए 24 वर्ष है।

हरिशयन (आषाढ़ शुक्लपक्ष की एकादशी से कार्तिक मास की शुक्लपक्ष की एकादशी तिथि तक का समय) को छोड़कर मकर, कुंभ, मीन, मेष, वृषभ और मिथुन सौरमास इसके लिए अच्छे माने जाते हैं। जब सूर्य वृषभ राशि में संचारित कर रहा हो तो उस समय ज्येष्ठ पुत्र का उपनयन नहीं करना चाहिए। मिथुन का सूर्य क्षत्रिय और वैश्यों के लिए अच्छा होता है। चैत्र सौर मास (जब सूर्य मीन राशि में संचारित करता है) उपनयन के लिए बहुत मंगलकारी होता है।

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और सभी लघु नक्षत्र (हस्त,

अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) मंगलकारी होते हैं लेकिन पुनर्वसु नक्षत्र ब्राहमणों के लिए शुभ नहीं माना जाता है।

वेदों की विभिन्न शाखाओं के लिए नक्षत्रः

ऋगवेदियों के लिए मृगशिरा, आर्द्रा, आश्लेषा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र मंगलकारी माने जाते हैं।

यजुर्वेदियों के लिए रेवती, हस्त, अनुराधा, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी नक्षत्र शुभ होते हैं।

सामवेदियों के लिए अश्विनी, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, आर्द्रा और श्रवण नक्षत्र शुभ होते हैं।

अथर्ववेदियों के लिए मृगशिरा, रेवती, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अनुराधा, धनिष्ठा और पुनर्वसु नक्षत्र शुभ होते हैं।

तिथियांः शुक्लपक्ष की 2/3/5/10/11/12 तिथियां और कृष्णपक्ष की 2/3/5 तिथियां उपनयन संस्कार के लिए मंगलकारी मानी जाती हैं। आषाढ़ शुक्लपक्ष की दशमी, ज्येष्ठ शुक्लपक्ष की द्वितीया, पौष शुक्लपक्ष की एकादशी, माघ शुक्लपक्ष की द्वादशी, रिक्ता तिथियां (4/9/14 तिथियां), गलग्रह तिथियां (13/14/15/30/1/4/7/8/9) और संक्रान्ति के दिन त्यागने चाहिए।

वारः मंगलवार और शनिवार को छोड़कर सभी वार शुभ होते हैं। सामवेदियों के लिए मंगलवार भी शुभ होता है।

दिन का भाग विशेषः दिनमान के कुल समय को तीन भागों में विभक्त करें। उपनयन संस्कार दिन के प्रथम भाग में करना मंगलकारी माना जाता है जबकि तीसरे भाग में अशुभ माना जाता है।

लग्नः उपनयन संस्कार के लिए लग्न से केन्द्र–त्रिकोण में शुभ ग्रह और 3/6/11 भावों में अशुभ ग्रह होना अच्छा माना जाता है।

बृहस्पति, शुक्र, चन्द्रमा एवं लग्नेश की 6वें अथवा 8वें भाव की स्थिति त्यागनी चाहिए, चन्द्रमा एवं शुक्र की 12वें भाव की स्थिति त्यागनी चाहिए और 5वें अथवा 8वें भाव में अशुभ ग्रहों की स्थिति भी त्यागनी चाहिए।

लग्न में पूर्ण चन्द्रमा, उच्चराशि अथवा स्वराशी का चन्द्रमा अतिमंगलकारी माना जाता है।

उपनयन का लग्न और चन्द्रमा, बुध, बृहस्पति अथवा शुक्र के नवांश में होना चाहिए। चन्द्रमा का श्रवण अथवा पुनर्वसु नक्षत्र के 4वें चरण की स्थिति में अपने नवांश में होना शुभ माना जाता है अन्यथा अशुभ माना जाता है।

इसके अतिरिक्त बृहस्पति, शुक्र और चन्द्रमा की युति अशुभ ग्रहों से नहीं होनी चाहिए।

वर्ण स्वामी और शाखा स्वामी का महत्वः

ब्राह्मणों के लिए बृहस्पति एवं शुक्र, क्षत्रियों के लिए सूर्य एवं मंगल, वैश्यों के लिए चन्द्रमा, शूद्रों के लिए बुध और इन जातियों से बाहर के जातकों के लिए शनि, वर्ण स्वामी होते हैं। उपनयन संस्कार में वार एवं लग्न का वर्ण स्वामियों से सम्बन्धित होना मंगलकारी माना जाता है। इसके अतिरिक्त वर्ण स्वामी का बल भी निश्चित करना चाहिए। उदाहरणतः ब्राह्मणों के लिए गुरूवार एवं शुक्रवार और 2/7/9/12 राशियों के लग्न अच्छे होते हैं क्योंकि ये वर्ण स्वामियों से सम्बन्धित होते हैं। इसी प्रकार उपनयन के समय बृहस्पति एवं शुक्र का बली होना भी आवश्यक है।

ऋगवेदियों के लिए बृहस्पति, यजुर्वेदियों के लिए शुक्र, साभवेदियों के लिए मंगल और अथर्ववेदियों के लिए बुध शाखा स्वामी होते हैं। बली 'शाखा स्वामी', 'शाखा स्वामी' का दिन, 'शाखा स्वामी' का लग्न, उपनयन संस्कार के लिए मंगलकारी माना जाता है। इसके साथ ही साथ उपनयन के समय गोचर में शाखा स्वामी का बली होना भी आवश्यक है। उदाहरणतः यजुर्वेदियों के लिए, गोचर में बली शुक्र, शुक्रवार और वृषभ अथवा तुला लग्न उपनयन संस्कार के लिए मंगलकारी माने जाते हैं।

चन्द्रमा और वृहस्पति का बलः

जन्म चन्द्रमा से गोचर के बृहस्पति का 2/5/7/9/11 भावों में स्थित होना शुभ माना जाता है, जबकि 4/8/12 भावों में अशुभ माना जाता है। अन्य स्थितियां मध्यम होती हैं। उपनयन संस्कार में बृहस्पति का बल महत्वपूर्ण रुप से विचारणीय होता है। वृहस्पति का उच्च राशि, स्वराशि,

मित्र की राशि और बली नवांश में स्थित होने कारण प्राप्त होने वाले बल के अनुसार उसकी बली स्थिति का भी विचार अवश्य करना चाहिए। इसके अतिरिक्त यदि बृहस्पति अष्टकवर्ग में बली है तो यह स्थिति उसके कई दोषों का परिहार कर देती है।

गोचर का चन्द्रमा जब जन्म चन्द्रमा से 3/6/10/11/1/7 भावों में होता है तो शुभ और जब 4/8/12 भावों में संचारित करता है तो अशुभ माना जाता है। बल के आंकलन के लिए चन्द्रमा की उच्च राशि, स्वराशि, मित्र की राशि में स्थिति अथवा नवांश और अष्टकवर्ग के बल का भी विचार अवश्य करना चाहिए। उपनयन संस्कार में, ऊपरोक्त वर्णित विधि के अनुसार बृहस्पति और चन्द्रमा की शुद्धि अनिवार्य है।

विशेषः चैत्र सौरमास (अर्थात जब सूर्य मीन राशि में हो) और जन्म नक्षत्र को उपनयन संस्कार में विशेष रुप से मंगलकारी माना जाता है।

3. वेदारम्भः

यह संस्कार तब किया जाता है जब जातक वेद सीखना प्रारम्भ करता है। इसको उपनयन संस्कार के साथ अथवा अलग से भी किया जा सकता है। उपनयन संस्कार के साथ करना इस बात पर निर्भर है कि उपनयन संस्कार किस आयु में किया जा रहा है।

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरा भाद्रपद एवं रोहिणी), चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) और आर्द्रा शुभ माने जाते हैं।

इसके अतिरिक्त वेद विशेष को सीखने के लिए, उन नक्षत्रों को भी शुभ माना जाता है जिनको उस वेद विशेष के अनुयायियों के उपनयन संस्कार में वेदानुसार शुभ बताया गया है।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां अच्छी होती हैं।

वारः रविवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार अच्छे होते हैं।

लग्नः लग्न के केन्द्र–त्रिकोण में शुभ ग्रह और 3/6/11 भावों में अशुभ ग्रह होने चाहिए। अष्टम भाव में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए।

चन्द्रमा और तारा की ठीक प्रकार से शुद्धि आवश्यक है।

4. केशान्त संस्कारः

यह संस्कार गोदान संस्कार भी कहलाता है। यह संस्कार 16वें वर्ष की आयु में किया जाता है जो जातक के युवावस्था में प्रवेश को भी इंगित करता है। दाढी कटवाने के पश्चात बालों को उसी तरह से गोशाला में दबाया जाता है अथवा नदी में प्रवाहित किया जाता है जिस प्रकार से चूड़ाकरण संस्कार में सिर के बालों को किया जाता है। इस अवसर पर गुरू अथवा आचार्य को दान स्वरुप गाय भेंट की जाती है।

केशान्त संस्कार उन्ही नक्षत्रों, तिथियों और लग्नों में किया जा सकता है जिनकी अनुशंसा चूड़ाकरण के लिए की गई है।

5. समावर्तन संस्कारः

समावर्तन का अर्थ है कि जातक का विद्या अध्ययन पूर्ण करके गुरूकुल (गुरू के घर से) से अपने घर लौटना। दूसरे शब्दों में यह संस्कार यह इंगित करता है कि जातक ने अपनी शिक्षा एवं युवावस्था पूर्ण कर ली है। यह विवाह करने का 'अनापत्ति प्रमाण पत्र' जैसा है। इस संस्कार में जातक के स्नान करने एवं गुरु–दक्षिणा देने के बाद उसका परिचय सभी संसारिक भोग्य चीजों से कराया जाता है और उसकी ब्रह्मचर्य आश्रम की सभी वस्तुओं को नदी में प्रवाहित कर दिया जाता है।

आजकल लोग इन संस्कारों को उचित समय और अनुशंसित तरीके से नहीं करते हैं। यहां तक कि जहां कहीं इन संस्कारों को किया भी जाता है वहां इन संस्कारों के पीछे के सही अर्थ एवं उद्देश्य को समझे बिना केवल दिखावटी रुप से किया जाता है (जैसे कि विवाह से एक दिन पहले अथवा विवाह के दिन उपनयन संस्कार करते हैं)।

अध्याय 6

विवाह

विवाह सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्कारों में से एक माना जाता है और यह अपने आप में यज्ञ के रुप में देखा जाता है जिसके बिना कोई भी जातक धर्म अर्थात सही व्यवहार, अर्थ अर्थात आर्थिक उन्नति, काम अर्थात शारीरिक भोग और मोक्ष अर्थात पापों से अन्तिम मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकता है। विवाह ही एक ऐसा मार्ग है जिसके द्वारा जातक सन्तान को जन्म देकर और उनका पालन–पोषण करके उन्हें बड़ा करके पितृ ऋण से मुक्त हो सकता है। विवाह, मात्र कामवासना की पूर्ति के लिए ही आवश्यक नहीं माना जाता है अपितु सन्तति की वृद्धि, मानवता के स्वनियत्रंण एवं स्वत्याग जैसे उच्च मूल्यों को आगे बढ़ाने, व्यक्तित्त्व के सही परिपक्व होने और व्यक्तिगत जीवन में भ्रष्ट आचरण को रोकने के लिए अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है।

हिन्दू धर्मशास्त्र में विवाह संस्कार के महत्त्व को समझाते हुए, इसकी श्रेष्ठता एवं पवित्रता इस विषय पर विस्तार से चर्चा की है।

ब्रह्मादयुद्वहसम्भूतः पितृणां तारकः सुतः ।
विवाहस्य फलं त्वेतत् व्याख्यातः परमर्षिभिः ।।
–स्मृति संग्रह

अर्थात केवल ब्रह्म आदि पवित्र विवाह सम्बन्धों से उत्पन्न पुत्र ही पितृगणों की आत्मा को मुक्ति प्रदान करा सकता है क्योंकि वही पितृऋण के लिये तर्पण कां अधिकारी है। विवाह के बाद ही पुत्र प्राप्ति होती है और पुत्र प्राप्ति पर ही सदगति प्राप्त होती है। दूसरे शब्दों में विवाह ही वह एक संस्कार है जिसके ऊपरान्त ही जातक सन्तान उत्पति करने का अधिकारी है और सन्तान का पालन–पोषण करके, पितृ ऋण से मुक्ति प्राप्त करता है।

विवाह के प्रकारः

हिन्दुओं के धर्मशास्त्र में आठ प्रकार के विवाहों को बताया है जो निम्नलिखित हैं:

(1) **पैशाचः** किसी कन्या का सोई हुई अथवा बेहोशी की अवस्था में छलपूर्वक बलात्कार 'पैशाच' कहलाता है। इस प्रकार का विवाह सबसे अधिक निन्दनीय विवाह माना गया है।

(2) **राक्षसः** किसी कन्या का, उसकी इच्छा के विरूद्ध और उसके सम्बन्धियों की इच्छा के विरूद्ध बलपूर्वक अपहरण 'राक्षस' कहलाता है। इस प्रकार का विवाह भी स्त्री एवं पुरूष के मध्य नैसर्गिक आकर्षण से रिक्त होता है और यह भी अच्छा नहीं माना जाता है।

'राक्षस विवाह' का परिवर्तित नाम 'हरण' विवाह है। 'हरण' में कन्या का अपहरण उसकी इच्छा से किया जाता है जबकि उसके सम्बन्धियों की इच्छा नहीं होती है। महाभारत काल में रूक्मिणी और सुभद्रा का विवाह इस प्रकार के विवाह के उदाहरण है। मनु के अनुसार क्षत्रियों में ऐसा विवाह मान्य है।

(3) **गन्धर्वः** इस विवाह का आधुनिक नाम प्रेम विवाह है। जब कोई स्त्री और पुरूष कामवासना के वशीभूत एक–दूसरे के प्रति आकर्षित होकर एक–दूसरे की सहमति से विवाह करते हैं तो ऐसा विवाह 'गन्धर्व विवाह' कहलाता है। इस प्रकार के विवाह में कामवासना अथवा शारीरिक आकर्षण मुख्य निर्णायक बिन्दु होता है, अतः इस प्रकार के विवाह की सफलता में शंका है। इसके अतिरिक्त यह विवाह, धार्मिक कर्म–काण्ड से हीन होता है।

(4) **आसुरीः** जब किसी कन्या के पिता अथवा उसके सम्बन्धियों को धन देने के पश्चात उससे विवाह किया जाता है तो ऐसा विवाह आसुरी कहलाता है। यह एक प्रकार से कन्या को खरीदना जैसा है अतः इस प्रकार का विवाह भी निन्दनीय होता है। **'बौधायन धर्मसूत्र'** के अनुसार जो व्यक्ति अपनी कन्या को बेचता है तो वह बहुत बड़ा पाप कर्म करता है और अपनी अगली और पिछली सात–सात पीढ़ियों के पुण्यों को समाप्त करता है।

(5) **प्रजापतिः** इस प्रकार के विवाह में इच्छुक पुरूष भगवान प्रजापति (सृष्टि का रचनाकार) के ऋण से मुक्त होने हेतु सन्तान उत्पन्न करने और

उनको पालपोस कर बड़ा करने के लिए कन्या के पिता से उसकी कन्या के साथ सीमित समय के लिए अनुबन्ध में बंधने की इच्छा प्रगट करता है।

(6) आर्षः कन्या का पिता किसी जातक से एक या दो गाय दान में लेकर उसे अपनी कन्या से विवाह करने की अनुमति देता है तो यह 'आर्ष' कहलाता है। गाय या गायों का दान यज्ञ करने के लिए ही लिया जाता है। यद्यपि इस प्रकार के विवाह हेतु भी कुछ लेन–देन होना विचारणीय है परन्तु वह कन्या का मोल नहीं होता है।

(7) दैवः इस प्रकार के विवाह में कन्या का पिता अपनी कन्या उस ब्राह्मण को दान में देता है जिसने उसके लिए यज्ञ किया होता है। कन्या दक्षिणा के रुप में ब्राह्मण को दी जाती है। आजकल, इस प्रकार का विवाह प्रचलन में नहीं है।

(8) ब्राह्मः यह सबसे अधिक प्रचलित एवं श्रेष्ठ विवाह का प्रकार है जिसमें वधु का पिता वर को अपने घर में आमन्त्रित करता है और वर से कुछ भी स्वीकार किये बिना, धार्मिक एवं पारंपरिक रीति–रिवाजों के अनुसार अपनी कन्या का विवाह वर से करता है। इस प्रकार के विवाह में यह शुद्ध रूप से कन्या–दान कहलाता है।

ऊपरोक्त आठ प्रकार के विवाहों में से आजकल केवल गन्धर्व और ब्राह्म विवाह ही अधिक प्रचलन में हैं।

हमारा 'धर्मशास्त्र' भी विवाह हेतु वर और वधू की निम्नलिखित विभिन्न योग्यताएं और अयोग्यतायें निर्देशित करता है।

वधू की योग्यताएंः दिखने में सुन्दर, सुडौल, मृदुभाषिणी, शारीरिक व्याधियों से मुक्त, मर्यादायुक्त एवं मधुर नाम वाली, कुंवारी, मां बनने में समर्थ, वर से आयु में कम और सभ्य और सुसंस्कृत परिवार से सम्बन्धित होनी चाहिए।

वधू की अयोग्यताएंः जिस कन्या के भूरे बाल हों, शरीर में अतिरिक्त बाल हों, शरीर की बनावट में खोट हो, शरीर के अंग सुडौल नहीं हों, आंखें पीली हों और बिमारियों से ग्रस्त हो वह मंगलकारी नहीं होती है। जिस स्त्री की आवाज कठोर हो, जो अपमानित करने वाले सुर में बात करती हो, शारीरिक बनावट सुडौल न हो अथवा अंग ठीक न हो, अत्यधिक लम्बी अथवा छोटी हो, उसे त्यागना चाहिए।

बहुतों का यह मत भी है कि वह कन्या, जिसका नाम पेड, पर्वत, नदी, नक्षत्रों, पक्षी, सर्प के नाम जैसा हो अथवा भय पैदा करने वाला हो, विवाह के लिए नहीं चुननी चाहिए। जिस कन्या का भाई न हो, वर के गोत्र की हो अथवा वर की जाति से अलग जाति की हो तो उस कन्या को भी प्राथमिकता नहीं दी जाती थी।

टिप्पणीः ऊपरोक्त योग्यताओं और क्षमताओं का महत्व समय के साथ–साथ बदल गया है क्योंकि समय के साथ–साथ समाज की मान्यतायें और आवश्यकतायें भी बदलती हैं। इसके अतिरिक्त देश, काल और पात्र के अनुसार भी विचार करना चाहिए कि उस समय विशेष में, उस स्थान विशेष में और उस पात्र विशेष के लिए क्या उचित है और क्या अनुचित।

वर की योग्यताएंः वर को कुंवारा, शिक्षा को पूर्ण किया हुआ, उपनयन एवं समावर्तन संस्कारों से संस्कारित, विवाह के योग्य आयुवाला, बुद्धिमान, धनवान, सुन्दर और चरित्रवान होना चाहिए। वह सामर्थ्यवान होना चाहिए और अच्छे परिवार से सम्बन्धित होना चाहिए।

वर की अयोग्यताएंः कन्या के गोत्र के एवं अलग जाति के वर का परित्याग करना चाहिए। जो बहुत कमजोर, नपुंसक, मिर्गी, लकुवा एवं कोढ से ग्रस्त, कमजोर दृष्टिवाला हो और जिसको कम सुनाई देता है, ऐसे वर को अच्छा नहीं माना जाता है। वशिष्ठानुसार श्ऐसा पुरुष जो कन्या के घर से बहुत दूर अथवा बहुत नजदीक रहता हो, शारीरिक रुप से अत्यधिक निर्बल अथवा मजबूत हो, अल्प बुद्धिवाला हो, बहुत वृद्ध हो, दिखने में बहुत भद्दा, मोटे पेटवाला और आय के साधन से हीन हो, विवाह के लिए नहीं चुनना चाहिए।

विवाह के लिए मुहूर्तः

विवाह के लिए सही समय का चयन करने कीं प्रक्रिया बहुत ही जटिल है। यहां इसकी चर्चा पांच स्तरों में की गई है।

स्तर 1ः विवाह में त्याज्य दस दोष।

स्तर 2ः जितना संभव हो सके अन्य दोष अथवा अशुभ युतियां, जिनको त्यागना चाहिए।

स्तर 3ः विवाह के लिए मास, वार, नक्षत्र, तिथियां, लग्न और लग्न–शुद्धि।

स्तर 4ः त्रिबल शुद्धि अथवा सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति के गोचर बल को

सुनिश्चित करना।

स्तर 5: अन्य विचार–विमर्श।

स्तर 1: दस त्याज्य दोष:

विवाह में त्याज्य दस दोष अर्थात दस अशुभ युतियां इस प्रकार से हैं: (1) लत्ता, (2) पात, (3) युति, (4) वेध, (5) जामित्र, (6) मृत्युपंचक, (7) एकार्गल, (8) उपग्रह, (9) क्रान्तिसाम्य और (10) दग्धा तिथि। इसी क्रम में इनकी विवेचना आगे की गई है।

(1) लत्ता:

बुध, राहु, पूर्ण चन्द्रमा और शुक्र, जिन–जिन नक्षत्रों में स्थित होते हैं वहां से पीछे की ओर के क्रमशः 7वें, 9वें, 22वें और 5वें नक्षत्र को लात मारते हैं। उदाहरणतः यदि बुध पुनर्वसु नक्षत्र में स्थित हो तो वह अश्विनी नक्षत्र (जो पुनर्वसु नक्षत्र से पीछे की ओर गिनने पर 7वां नक्षत्र है) को लात मारता है।

इसी प्रकार गोचर में सूर्य, शनि, बृहस्पति और मंगल जिन–जिन नक्षत्रों में होते हैं वहां से आगे की ओर गिनने पर क्रमशः 12वें, 8वें, 6वें और 3रे नक्षत्र को लात मारते हैं। उदाहरणतः यदि गोचर में बृहस्पति, अश्विनी नक्षत्र में है तो वह आर्द्रा नक्षत्र (जो अश्विनी नक्षत्र से आगे की ओर गिनने पर 6वां नक्षत्र है) को लात मारेगा।

यदि विवाह के नक्षत्र को कोई भी ग्रह लात मारता है तो यह लत्ता दोष कहलाता है जिसको विवाह में त्यागना चाहिए।

तालिका 6.1

ग्रह	सूर्य	पूर्ण चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु
नक्षत्र	12वां	22वां	3रा	7वां	6वां	5वां	8वां	9वां
लात की दिशा	आगे	पीछे	आगे	पीछे	आगे	पीछे	आगे	पीछे
परिणाम	सम्पति की हानि	डर	मृत्यु	डर	सम्बन्धी की हानि	कार्यों में असफलता	परिवार की हानि	मृत्यु

यदि लात मारने वाला ग्रह और लात खाने वाला ग्रह (चन्द्रमा), दोनों एक ही चरण में हों तो अशुभ प्रभाव अधिक होता है। उदाहरणतः यदि सूर्य अश्विनी नक्षत्र में गोचर कर रहा है तो वह उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र को लात दोष देगा। यदि सूर्य अश्विनी नक्षत्र के प्रथम चरण में स्थित है और चन्द्रमा उत्तराफाल्गुनी के प्रथम चरण में है तो यह लता दोष अधिक अशुभ होगा क्योंकि यह लात चरण से चरण को है।

(2) पातः

जिन नक्षत्रों में हर्षण, वैधृति, साध्य, व्यतीपात, गण्ड और शूल योग समाप्त होते हैं वह नक्षत्र पात दोष से पीड़ित होते है। चूंकि ये योग सूर्य और चन्द्रमा की एक दूसरे से दूरी के आधार पर बनते हैं अतः पात दोष को विवाह के समय सूर्य और चन्द्रमा द्वारा अधिष्ठित नक्षत्रों के आधार पर बताया जा सकता है, जैसे कि आगे तालिका संख्या 6.2 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 6.2

विवाह का नक्षत्र	सूर्य द्वारा गृहीत नक्षत्र
रोहिणी	आर्द्रा, पुनर्वसु, शतभिषज, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा और मूल
मृगशिरा	मृगशिरा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, मघा और हस्त
मघा	अश्विनी, मृगशिरा, ज्येष्ठा, पुष्य, हस्त और रेवती
उत्तराफाल्गुनी	कृतिका, आर्द्रा, विशाखा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद
हस्त	भरणी, मृगशिरा, शतभिषज, पूर्वाभाद्रपद, स्वाति और मघा
स्वाति	कृतिका, श्रवण, धनिष्ठा, पुष्य, हस्त और रेवती
अनुराधा	अश्विनी, आर्द्रा, उत्तराषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा और पूर्वाभाद्रपद
मूल	रोहिणी, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, आश्लेषा, मूल, उत्तराभाद्रपद
उत्तराषाढ़ा	भरणी, पुनर्वसु, शतभिषज, विशाखा, अनुराधा और उत्तराषाढ़ा
उत्तराभाद्रपद	भरणी, शतभिषज, विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, मूल, पूर्वाफाल्गुनी
रेवती	अश्विनी, मघा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, स्वाति और पूर्वाफाल्गुनी

टिप्पणीः यदि सूर्य तालिका के दायीं ओर दिए नक्षत्रों में स्थित हो तो उस नक्षत्र के सामने बाईं ओर दिया हुआ विवाह का नक्षत्र पात दोष से पीड़ित होगा।

यदि पात दोष देने वाले ग्रह (अर्थात सूर्य एवं चन्द्रमा) अपने–अपने नक्षत्रों के समान चरणों में स्थित हों तो पात दोष अधिक हानिकारक होता है।

(3) युतिः

यदि विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह स्थित हो तो यह युति दोष कहलाता है। यदि युति दोष देने वाला ग्रह सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु और शुक्र है तो युति दोष का अशुभ प्रभाव अधिक होता है।

युति दोष का अशुभ प्रभाव निम्नलिखित स्थितियों में कम हो जाता हैः

अ. यदि चन्द्रमा उच्च, स्वगृही हो अथवा मित्रगृही हो।

ब. यदि चन्द्रमा वर्गोत्तम होकर बृहस्पति से दृष्ट हो अथवा बृहस्पति केन्द्र में स्थित हो।

स. यदि चन्द्रमा और पापी ग्रह एक ही नक्षत्र में स्थित हों लेकिन अलग–अलग राशियों में स्थित हों।

(4) वेधः

विवाह और विवाह से सम्बन्धित सभी कार्यों के लिए वेध, पंचशलाका चक्र से देखा जाता है।

यदि कोई ग्रह एक नक्षत्र विशेष में स्थित है तो वह पंचशलाका चक्र में अपने सामने सीधी रेखा में पडने वाले नक्षत्र को वेध करता है।

पंचशलाका चक्र

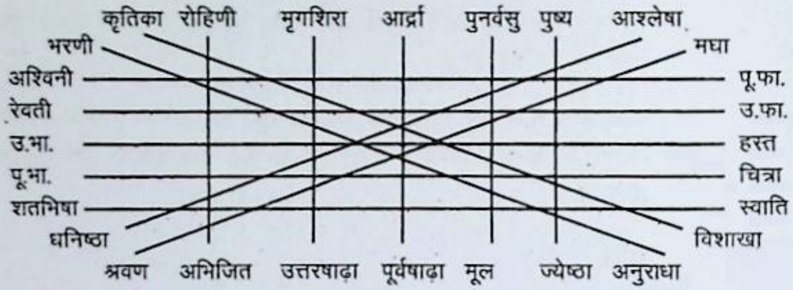

उदाहरणतः यदि कोई ग्रह श्रवण नक्षत्र में स्थित है तो वह मघा नक्षत्र को वेध करेगा, अतः मघा नक्षत्र विवाह के लिए नहीं चुना जाना चाहिए। इस प्रकार विवाह के विभिन्न नक्षत्र वेध से इस प्रकार से पीड़ित होते हैं:

अभिजित से रोहिणी, उत्तराषाढ़ा से मृगशिरा, श्रवण से मघा, रेवती से उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद से हस्त, शतभिषज से स्वाति, भरणी से अनुराधा, पुनर्वसु से मूल, मृगशिरा से उत्तराषाढ़ा, हस्त से उत्तराभाद्रपद और उत्तराफाल्गुनी से रेवती।

चौथे चरण में स्थित ग्रह पहले चरण को वेध देता है और इसी प्रकार पहला वाला चौथे चरण को। जो ग्रह दूसरे चरण में स्थित होता है वह तीसरे चरण को और तीसरे चरण वाला दूसरे चरण को वेध देता है। यदि चरण वेध होता है अर्थात चरण से चरण को वेध होता है तो यह अधिक अशुभ माना जाता है और विशेष रुप से वर्जित है।

वेध दोष का अशुभ प्रभाव बहुत कम हो जाता है यदि (1) कोई शुभ ग्रह विवाह के लग्न में स्थित हो, (2) विवाह का लग्नेश एकादश भाव में स्थित हो और शुभ ग्रहों ये युत अथवा दृष्ट हो, (3) विवाह शुभ होरा में हो और (4) चन्द्रमा बली हो।

इसके अतिरिक्त वेध दोष विंध्याचल के निकट के स्थानों के लिए अधिक अशुभ माना जाता है और अन्य स्थानों के लिए नहीं माना जाता है। अशुभ/पापी ग्रहों से उत्पन्न वेध, विशेष रुप से अशुभ माना जाता है।

अन्य सभी कार्यों (अर्थात विवाह और विवाह से सम्बन्धित सभी कार्यों के अतिरिक्त) के लिए वेध दोष सप्तशलाका चक्र से देखा जाता है। इसमें भी वेध देखने का नियम पंचशलाका चक्र के अनुसार ही होता है अर्थात सीधी रेखा के एक ओर का ग्रह दूसरे ओर के नक्षत्र को वेध दोष देता है।

सप्तशलाका चक्र

उदाहरणतः जो ग्रह भरणी में स्थित होगा वह मघा को वेध देगा।

(5) **जामित्रः**

यदि विवाह लग्न अथवा चन्द्रमा से सप्तम भाव में कोई ग्रह स्थित हो तो यह जामित्र दोष कहलाता है। यदि वह ग्रह, विवाह लग्न अथवा चन्द्रमा से 55वें नवांश में स्थित हो तो जामित्र दोष का सूक्ष्म और अधिक अशुभ प्रभाव होता है। जैसे कि यदि विवाह का लग्न मिथुन राशि के तीसरे नवांश में है और कोई ग्रह, धनु राशि के तीसरे नवांश में स्थित हो। पापी ग्रहों द्वारा उत्पन्न होने वाला जामित्र दोष विशेष अमंगलकारी होता है।

यदि, चन्द्रमा बली हो और जामित्र दोष उत्पन्न करने वाला ग्रह शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जामित्र दोष का अशुभ प्रभाव कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त चन्द्रमा और बृहस्पति बली होकर विवाह लग्न के सप्तम भाव में स्थित हों तो ये जामित्र दोष नहीं देते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा से सप्तम भाव में स्थित बुध शुभ परिणाम देता है।

स्तर 2: अन्य त्याज्य दोषः

विवाह में त्याज्य मुख्य दस दोषों के अतिरिक्त जितना संभव हो सके निम्नलिखित दोषों को भी त्यागना चाहिए।

(1) तिथियों–वारों–नक्षत्रों की युतियों से बनने वाले अशुभ योगों को, जिनकी चर्चा अध्याय 3 में की गई है।

(2) बृहस्पति अथवा शुक्र के अस्त रहने का वह समय जिसके विषय में अध्याय 3 में विस्तार से चर्चा की गई है। यह एक महत्वपूर्ण घटक है जिसका सामान्यतः विचार किया जाता है।

(3) तिथि क्षय, तिथि वृद्धि, नक्षत्र गण्डांत, लग्न गण्डांत और तिथि गण्डांत।

(4) संक्रान्ति का दिन

(5) भद्रा

(6) मुहूर्त के लग्नेश अथवा नवांशेश का अस्त होना

(7) मुहूर्त लग्न में अशुभ ग्रहों का षडवर्ग

(8) **कर्तरीः** विवाह की कुण्डली में लग्न और सप्तम भाव को अशुभ ग्रहों के मध्य में नहीं होना चाहिए। अर्थात लग्न एवं सप्तम भाव अशुभ कर्तरी में नहीं होने चाहिए। यदि द्वितीय भाव में स्थित ग्रह वक्री हो और 12वें भाव में स्थित ग्रह मार्गी हो तो यह कर्तरी दोष अधिक अशुभ होगा।

(9) **दिन का अशुभ अर्धयामः** दिनमान के समय को आठ से भाग देने पर हमें दिन के आठ भाग प्राप्त होते हैं। रविवार को चौथा, सोमवार को सातवां, मंगलवार को दूसरा, बुधवार को पांचवां, गुरुवार को आठवां, शुक्रवार को तीसरा और शनिवार को छठा भाग अशुभ अर्धयाम का होता है जिसको त्यागना चाहिए।

अशुभ अर्धयाम

वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
त्याज्य अर्धयाम	4	7	2	5	8	3	6

(10) **कुलिक दोष अथवा कुलिक मुहूर्तः** यदि दिनमान को 15 से भाग करें तो हमें एक दिन के 15 मुहूर्त प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार रात्रिमान को 15 से

भाग करने पर हमें रात्रि के 15 मुहूर्त प्राप्त होते हैं।

दिन के समय रविवार से शनिवार तक क्रमशः 14/12/10/8/6/4/2 मुहूर्त, कुलिक मुहूर्त होते हैं। उदाहरणतः रविवार को 14वां, सोमवार को 12वां, मंगलवार को 10वां और इसी प्रकार सभी दिनों का देखा जाता है।

रात्रि के समय रविवार से शनिवार तक क्रमशः 13/11/9/7/5/3/1 मुहूर्त, कुलिक मुहूर्त होता है।

कुलिक मुहूर्त

वार	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
दिन के लिए कुलिक मुहूर्त की संख्या	14वां	12वां	10वां	8वां	6वां	4वां	2रा
रात्रि के लिए कुलिक मुहूर्त की संख्या	13वां	11वां	9वां	7वां	5वां	3रा	1ला

(11) अशुभ ग्रह द्वारा युत नक्षत्र, उससे पहले का और उससे दूसरा नक्षत्र त्यागना चाहिए। उदाहरणतः यदि गोचर में मंगल पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में स्थित है तो पूर्वाफाल्गुनी के साथ–साथ मघा और उत्तराफाल्गुनी, तीनों नक्षत्रों को विवाह के लिए त्यागना चाहिए।

(12) जिन नक्षत्रों में सूर्य अथवा चन्द्र ग्रहण हुआ हो उन नक्षत्रों को विवाह और अन्य शुभ कार्यों के लिए ग्रहण से छ मास तक त्यागना चाहिए। (विस्तार से अध्याय–3 में देखें)

(13) अन्य वे सभी अशुभ योग जिन्हें सामान्यतः अमंगलकारी माना जाता है।

महत्वपूर्णः यदि कोई जातक ऊपरोक्त सभी अशुभ युतियों, योगों और दोषों का परित्याग करने का प्रयास करता है और शुद्ध मुहूर्त में विवाह करना चाहता है तो इस जन्म में उसका विवाह हो पाएगा, इस बात को उसे भूल जाना चाहिए। सभी को बहुमत के साथ ही जाना चाहिए। चूंकि सभी महत्वपूर्ण दस दोषों का परित्याग नहीं किया जा सकता है अतः जब भी दस दोषों में से 6 या अधिक दोष त्याग दें तो विवाह किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त यह भी कहा जाता है कि सही लग्न शुद्धि कई अशुभ प्रभावों का मार्जन कर देती है। यदि बली शुभ ग्रह विवाह के लग्न से 1/4/5/9/10 भावों में स्थित हों तो अयन, तिथि, मास, नक्षत्र आदि का अशुभ प्रभाव समाप्त हो जाता है। इसी प्रकार विवाह लग्न का स्वामी, नवांश का स्वामी, सूर्य अथवा चन्द्रमा, विवाह के लग्न से एकादश भाव में हों तो यह स्थिति अन्य प्रतिकूल स्थितियों के अशुभ प्रभाव को भी शान्त कर देती है।

स्तर 3: विवाह के लिए उपयुक्त मास नक्षत्र आदिः

मासः हरिशयन (आषाढ़ शुक्लपक्ष की एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक का वह समय जब भगवान विष्णु सोने के लिए जाते हैं) और खर मास (जब सूर्य धनु और मीन राशियों में गोचर करता है) को छोड़कर अन्य सभी मास विवाह के लिए शुभ होते हैं। अतः वृश्चिक (मध्य नवम्बर से मध्य दिसम्बरद्ध, मकर (मध्य जनवरी से मध्य फरवरी), कुंभ (मध्य फरवरी से मध्य मार्च), मेष (मध्य अप्रैल से मध्य मई), बृषभ (मध्य मई से मध्य जून), हरिशयन से पहले मिथुन (मध्य जून से हरशियन तक) सौर मासों में विवाह किया जा सकता है। जब सूर्य वृषभ राशि में गोचर करता है उस समय सबसे बडे पुत्र अथवा पुत्री का विवाह नहीं करना चाहिए।

कुछ विद्वानों का कहना है कि विवाह के लिए केवल धनु और मीन सौर मासों का ही परित्याग करना चाहिए और साल के शेष मास विवाह के लिए उपयुक्त है। इसके कारण पंजाब में कर्क, सिंह और कन्या सौर मासों में भी विवाह होते हैं तथा पहाडी क्षेत्रों में सौर मास तुला में भी विवाह होते हैं। यदि किसी क्षेत्र विशेष में ऐसा प्रचलन में है तो उसी का अनुसरण करना चाहिए।

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्त्राफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी), मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, मूल, स्वाति, मघा और हस्त, विवाह में शुभ माने जाते हैं।

आवश्यक स्थितियों में युजर्वेदियों के लिए अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र भी स्वीकार्य होते हैं।

तिथियां: 2/3/5/7/10/11/13 तिथियां अतिशुभ हैं।

वारः शुभ ग्रहों के वार अतिशुभ होते हैं, शेष वार मध्यम होते हैं।

योगः अशुभ योगों के अशुभ प्रभाव का समय, जैसा कि अध्याय 2 में बताया गया है, त्यागना चाहिए।

करणः भद्रा और स्थिर करण को त्यागना चाहिए। कुछ विद्वान बव करण को भी विवाह के लिए अशुभ मानते हैं।*

लग्नः विवाह के मुहूर्तों में लग्न शुद्धि को सबसे अधिक महत्व दिया गया है और ग्रहों के लिए कुछ शुभाशुभ स्थितियां दी गई हैं। ग्रहों की अशुभ भावों की स्थिति को त्यागने को प्रयास करना चाहिए और उनकी शुभ भावों में स्थिति को सुनिश्चित करना चाहिए।

जिन भावों में ग्रह नहीं होने चाहिएः विवाह के लग्न कुण्डली के 1/7 भावों में सूर्य, 1/6/7/8 भावों में चन्द्रमा, 1/7/8/10 भावों में मंगल, 7/8 भावों में बुध, 7/8 भावों में बृहस्पति, 3/6/7/8 भावों में शुक्र, 1/7/12 भावों में शनि, 1/7 भावों में राहु–केतु और विवाह के लग्न का स्वामी 6/8 भावों में नहीं होना चाहिए।

ग्रहों के अशुभ भाव

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू–केतु	लग्नेश
भाव	1,7	1,6,7,8	1,7,8,10	7,8	7,8	3,6,7,8	1,7,12	1,7	6,8

जहां ग्रहों को होना चाहिएः यहां कुछ ऐसी स्थितियां होती हैं जहां ग्रहों के स्थित होने से लग्न को बल प्राप्त होता है। बल को मापने की इकाई विश्वाबल है और अधिकतम बल 20 विश्वाबल होता है। ग्रहों की शुभ स्थिति और स्थिति के कारण प्रदान किया जाने वाला विश्वाबल नीचे तालिका संख्या 6.6 में दिया गया है।

* कालिदास, ज्योर्तिविदाभरणम् अध्याय 13, श्लोक 21

तालिका संख्या 6.6
ग्रहों की शुभ स्थितियां

ग्रह	शुभ भाव	विश्वबल
सूर्य	3/6/8/11	3.5
चन्द्रमा	2/3/11	5
मंगल	3/6/11	1.5
बुध	1/2/3/4/5/6/9/10/11	2
बृहस्पति	1/2/3/4/5/6/9/10/11	3
शुक्र	1/2/4/5/9/10/11	2
शनि	3/6/8/11	1.5
राहु–केतु	3/6/8/11	1.5

यह देखें कि कितने ग्रह उनके लिए बताए गये शुभ भावों में स्थित होकर लग्न के बल में योगदान दे रहे हैं। सभी ग्रहों द्वारा प्रदान बल का योग करके हमें विवाह के लग्न का बल प्राप्त होता है। यदि यह बल 15 से 20 विंश्वाबल के बीच है तो यह अतिउत्तम है, यदि 10 से 15 के बीच है तो उत्तम है, 5 से 10 के बीच है तो मध्यम है और यदि इससे कम है तो इसको त्यागना चाहिए।

नवांश का विचारः जिस राशि का अन्तिम नवांश वर्गोत्तम होता है उसको छोड़कर सभी राशियों के अन्तिम नवांश को त्यागना चाहिए। जब चन्द्रमा तुला अथवा मकर राशि में होता है तो चर लग्न और चर नवांश को भी त्यागना चाहिए। चाहे किसी भी राशि का लग्न हो यदि 7/9/3/6 राशियों के नवांश में हो तो वह मंगलकारी माना जाता है।

विवाह के लग्न एवं नवांश का बल वर के लिए मंगलकारी होता है और सप्तम भाव एवं सप्तम भाव के नवांश का बल वधू के लिए मंगलकारी होता है।

विवाह लग्न के लिए मिश्रित विचारः

जन्म राशि से 8वें और 12वें भाव की राशियों के लग्न और नवांश को त्यागना चाहिए विशेषकर तब जब जन्म लग्नेश अथवा जन्म चन्द्रेश और उनका अष्टमेश, एक–दूसरे के शत्रु हों। जब किसी जातक को जन्म लग्न अथवा जन्म का चन्द्रमा विषम राशियों में होता है तो यह स्थिति होती है। ऐसे जातकों के

लिए जन्म लग्न अथवा जन्म राशि से अष्टम भाव की राशि का लग्न एवं नवांश विशेषकर त्यागना चाहिए।

स्तर 4: त्रिबल शुद्धिः

त्रिबल शुद्धि अर्थात सूर्य, चन्द्रमा एवं बृहस्पति, इन तीनों के गोचर की स्थिति का विचार करना किसी भी जातक के विवाह मुहूर्त चयन के लिए एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है। लड़के के लिए गोचर के सूर्य एवं चन्द्रमा के बल और लड़की के लिए गोचर के चन्द्रमा एवं बृहस्पति के बल का विचार किया जाता है।

जन्म चन्द्रमा से गोचर के सूर्य का 3/6/10/11 भावों में गोचर मंगलकारी माना जाता है, 1/2/5/7/9 भावों में गोचर मध्यम अर्थात पूजा–पाठ द्वारा मंगलकारी बनाया जा सकता है और 4/8/12 भावों में गोचर अशुभ माना जाता है।

जन्म चन्द्रमा से गोचर के चन्द्रमा का 1/3/6/7/10/11 भावों में गोचर मंगलकारी माना जाता है, 2/5/9 भावों में गोचर मध्यम अर्थात पूजा–पाठ द्वारा मंगलकारी बनाया जा सकता है और 4/8/12 भावों में गोचर अशुभ माना जाता है।

जन्म चन्द्रमा से गोचर के बृहस्पति का 2/5/7/9/11 भावों में गोचर मंगलकारी माना जाता 1/3/6/10 भावों में गोचर मध्यम अर्थात पूजा–पाठ द्वारा मंगलकारी बनाया जा सकता है और 4/8/12 भावों में गोचर अशुभ माना जाता है।

तालिका संख्या 6.7

त्रिबल शुद्धि

स्थिति	सूर्य	चन्द्रमा	बृहस्पति
शुभ	3/6/10/11	1/3/6/7/10/11	2/5/7/9/11
पूज्य	1/2/5/7/9	2/5/9	1/3/6/10
अशुभ	4/8/12	4/8/12	4/8/12

यद्यपि जहां ग्रह जन्म चन्द्रमा से 4/8/12 भावों में गोचर कर रहे हों लेकिन वह स्थितिवश अपनी उच्चराशी में, स्वराशी में, मित्र राशि में, बली नवांश

में और अष्टकवर्ग में बली हों तो मंगलकारी होगें। अष्टकवर्ग के बल को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है।

इसका अर्थ यह भी है कि जब कोई ग्रह जन्म चन्द्रमा से शुभ स्थानों में संचारित होता है लेकिन स्थितिवश नीच राशि में, शत्रु की राशि में होता है और नवांश अथवा अष्टकवर्ग में निर्बली होता है तो वह अपनी शुभता खो देता है।

स्तर 5: अन्य विचार–विमर्शः

(1) सगोत्र (एक ही गोत्र के जातकों के मध्य) और सपिण्ड (पिता की सात और माता की पांच पीढिया) के मध्य विवाह त्याज्य है। यहां तक की आनुवांशिकी सम्बन्धित अनुसंधान भी ऐसे विवाह की सम्मति नहीं देते है। दुर्भाग्यवश हमारी सरकार सगोत्र विवाह को मान्य मान चुकी है।

आन्ध्र प्रदेश में जातक अपने मामा की लड़की से विवाह कर सकता है।

(2) दो सगी बहनों का विवाह दो सगे भाइयों से नहीं क़रना चाहिए।

(3) दो सगे भाइयों का विवाह एक ही दिन और एक ही मुहूर्त में नहीं करना चाहिए। लेकिन यदि वे जुड़वां भाई हों तो यह किया जा सकता है।

(4) सबसे बडे पुत्र का विवाह, सबसे बड़ी लड़की के साथ ज्येष्ठ मास (जब सूर्य वृषभ राशि में संचारित करते हैं) नहीं करना चाहिए।

(5) पुत्र के विवाह के पश्चात, परिवार की तीन पीढ़ियों की किसी भी लड़की का विवाह अगले 6 मास अथवा संवत्सर के बदलने तक, जो भी पहले हो, नहीं करना चाहिए।

(6) पुत्र अथवा पुत्री के विवाह के ऊपरान्त उस परिवार की तीन पीढ़ियों में अगले 6 मास अथवा संवत्सर के बदलने तक, जो भी पहले हो, किसी का भी चूड़ाकरण अथवा उपनयन संस्कार नहीं करना चाहिए।

(7) यदि विवाह निश्चित होने के पश्चात परिवार की तीन पीढ़ियों में से किसी की मृत्यु हो जाती है तो अगले एक मास तक विवाह नहीं करना चाहिए।

गोधूलि लग्न अथवा मुहूर्तः

यदि विवाह का सही लग्न तय करने में परेशानी हो रही हो तो गोधूलि मुहूर्त का आश्रय लिया जा सकता है जिसके विषय में कहा जाता है कि यह तिथि, नक्षत्र, करण, वार, लग्न, नवांश आदि के कई अशुभ प्रभावों को निष्फल कर देता है। गोधूलि का समय वह होता है जिस समय गायें चरागाह से घर वापस आती हैं। गोधूलि मुहूर्त किस समय से किस समय तक होता है इसके विषय में विभिन्न मत हैं। हम यहां सूर्यास्त से आधी घटी पहले (12 मिनट) और आधी घटी (12 मिनट) बाद का समय गोधूलि मुहूर्त के लिए ले रहे है।*

लेकिन किसी को भी गोधूलि मुहूर्त के अति भ्रम में नहीं रहना चाहिए। यह तभी चुनना चाहिए जब अन्य तरीकों से कोई अन्य अनुकूल समय चुनने में परेशानियां हो रही हों। गोधूलि मुहूर्त निम्नलिखित अशुभ योगों के प्रभाव को रोकने में समर्थ नहीं होता है।

(1) कुलिक दोष, क्रान्ति साम्य, चन्द्रमा की 1/6/8 भावों की स्थिति का दोष।

(2) अशुभ ग्रह से पीड़ित नक्षत्र और शनिवार का अशुभ प्रभाव।

(3) मंगल का 1/7/8 भावों में स्थित होने का दोष।

(4) गुरूवार के सूर्यास्त से पहले का और शनिवार का सूर्यास्त के बाद का गोधूलि मुहूर्त अशुभ होता है क्योंकि इस समय कुलिक अथवा अर्धयाम दोष होता है।

अतः गोधूलि मुहूर्त वह मुहूर्त है जिसे केवल अत्यन्त आवश्यक स्थितियों में ही चुनना चाहिए।

विवाह से सम्बन्धित मुहूर्तः

वर–वरण मुहूर्त (वर को विवाह के लिए स्वीकार करना):

यह शुभ वार, शुभ तिथि, शुभ योगों और उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, कृतिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा एवं पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों

* पाठकगण गोधूलि मुहूर्त के विषय में विभिन्न मतों को जानने के लिए मुहूर्त पारिजात को देखें।

अथवा विवाह के लिए अनुमोदित नक्षत्रों में किया जा सकता है। इसमें वधू के पक्ष के लोग वर के घर जाते हैं और वर को मंगलकारी वस्तुएं (जैसे कि कपड़े, फल, धन, नारियल आदि) उपहार में देते हैं और उसे अपनी कन्या से विवाह के लिए स्वीकार करते हैं।

कन्या–वरण मुहूर्त (वधू को विवाह के लिए स्वीकार करना):

यह उत्तराषाढ़ा, स्वाति, श्रवण, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा, अनुराधा, धनिष्ठा एवं कृतिका नक्षत्रों अथवा विवाह के लिए अनुमोदित नक्षत्रों में किया जा सकता है। इसमें वर पक्ष द्वारा कन्या को शुभ वस्तुएं उपहार में दी जाती हैं।

प्रेम विवाह के लिए मुहूर्तः

प्रेम विवाह के लिए तिथि, नक्षत्र, लग्नादि का विचार नहीं किया जाता है। इसमें केवल त्रिपदी चक्र शुद्धि का विचार किया जाता है जिसमें सूर्य द्वारा संचारित नक्षत्र से 5वां, 6वां, 10वां, 12वां, 13वां, 14वां, 15वां, 22वां, 23वां, 24वां, 26वां, 27वां और 28वां नक्षत्र प्रेम विवाह के लिए मंगलकारी माना जाता है।

विवाह के लिए अन्य तैयारीः

विवाह के प्रबन्ध से सम्बन्धित अन्य कार्य जैसे कि घर रंगवाना, सजावट, आभूषणों को खरीदना एवं पहनना, मण्डप की तैयारी और अन्य तैयारियों से सम्बन्धित सभी कार्य विवाह से 3/6/9 दिन पहले प्रारम्भ नहीं करने चाहिए। ये सभी कार्य, वर–वधु के लिए चन्द्र–शुद्धि का विचार करने के पश्चात विवाह से 2/4/5/7/8/11 दिन पहले प्रारम्भ करने चाहिए।

वधू प्रवेश (वर के घर में वधू का प्रथम प्रवेश):

विवाह के बाद वधू प्रवेश अर्थात वर के घर में वधू का प्रथम प्रवेश के लिए 2/4/5/6/7/8/9/10/12/14/16/17/19/21/23/25/27/29 दिन अनुकूल माने जाते हैं। एक माह से लेकर एक साल तक, विषम संख्या के

मास (3रे, 5वें आदि) में भी वधू–प्रवेश हो सकता है। एक साल के ऊपरान्त 5 वर्ष तक यह 3रे अथवा 5वें वर्ष में हो सकता है। पांच वर्षों के ऊपरान्त यह किसी भी समय किया जा सकता है।

वधू–प्रवेश का यह मुहूर्त वहीं प्रासंगिक होता है जहां विवाह के ऊपरान्त वधू–प्रवेश में बिलम्ब करने का रिवाज होता है अथवा जहां किसी कारणवश वधू–प्रवेश में अनावश्यक रूप से बिलम्ब होता है।

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा)ए सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाति नक्षत्र मंगलकारी माने जाते हैं। रिक्ता तिथि (4/9/14 तिथियां), मंगलवार और रविवार को त्यागना चाहिए।

द्विरागमनः

यह मुहूर्त उस समय से सम्बन्धित समय है जब वधू विवाह के ऊपरान्त अपने माता–पिता के घर आने के बाद दूसरी बार वर के घर में वापस जाती है।

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा)ए सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज) और मूल अच्छे माने जाते हैं।

तिथियांः 1/2/3/5/7/10/11/13 तिथियां शुभ होती हैं।

वारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार शुभ होते हैं।

लग्नः 2/3/6/7/12 राशियों के लग्न शुभ होते हैं।

समयः विवाह के ऊपरान्त (और वधू–प्रवेश के ऊपरान्त) 1/3/5/7 सालों में जब सूर्य 1/8/11 राशियों में संचरण करता है और सूर्य एवं वृहस्पति गोचर में बली होते हैं उस समय द्विरागमन मंगलकारी माना जाता है।

द्विरागमन की यात्रा के प्रारम्भ के समय शुक्र आगे नहीं होना चाहिए। (यह केवल पूर्व अथवा पश्चिम दिशा में यात्रा करने पर ही हो सकता है।)

विवाह के लिए मिलानः

कूट मिलान अथवा वर–वधू के जन्म चन्द्रमा की स्थिति पर आधारित मिलानः

सामान्यतः विवाह के मिलान के लिए आठ कूटों का विचार किया जाता है। ये कूट इस प्रकार से हैंः (1) वर्ण, (2) वश्य, (3) तारा, (4) योनि, (5) ग्रह मैत्री अथवा राशियों के स्वामियों की मित्रता, (6)गण, (7) भकूट और (8) नाड़ी तथा क्रमशः 1,2,3,4,5,6,7 एवं 8 अंक अथवा गुण दिये जाते हैं (अर्थात वर्ण के 1, वश्य के लिए 2 और इसी प्रकार अन्य के लिए)। इस प्रकार कुल अंक अथवा गुण 36 होते हैं। सही मिलान के लिए कम से कम 18 अंक आवश्यक होते हैं। इन कूट और अन्य कुछ आवश्यक बातों की विस्तृत चर्चा आगे के पृष्ठों में की गई है।

(1) वर्ण :

4/8/12 राशियां विप्र या ब्राह्मण हैं, 1/5/9 राशियां क्षत्रिय हैं, 2/6/10 राशियां वैश्य हैं और 3/7/11 राशियां शूद्र हैं। ब्राह्मण सबसे श्रेष्ठ वर्ण है और क्षत्रिय, वैश्य एवं शूद्र क्रमशः कम होते हैं। वर का वर्ण, वधू के वर्ण से श्रेष्ठ होना चाहिए और इसके लिए 1 अंक दिया जाता है। जब वधू का वर्ण श्रेष्ठ होता है तो कोई अंक नहीं दिया जाता है। समान वर्ण होने पर भी एक अंक दिया जाता है। नीचे दी गई तालिका संख्या 6. 8 देखें।

वर्ण का मिलान क्षत्रियों के लिए आवश्यक होता है।

तालिका संख्या 6.8
वर्ण मिलान तालिका

		वर की चन्द्र राशि			
		ब्राह्मण राशियां 4/8/12	क्षत्रिय राशियां 1/5/9	वैश्य राशियां 2/6/10	शूद्र राशियां 3/7/10
वधू	4/8/12	1	0	0	0
की	1/5/9	1	1	0	0
चन्द्र	2/6/10	1	1	1	0
राशि	3/7/10	1	1	1	1

(2) वश्यः

वश्य का अर्थ होता है नियंत्रण में होना। इस कूट में विभिन्न राशियों के स्वभाव का विचार करके यह देखा जाता है कि कौन सी राशि किस राशि को नियंत्रित कर सकती है।

मिथुन, कन्या, तुला, धनु के प्रथम 15 अंश एवं कुंभ राशि को मनुष्य या द्विपद, मेष, वृषभ, 15 से 30 अंश तक धनु एवं मकर के 0 से 15 अंश को चतुष्पद और कर्क, 15 से 30 अंश तक मकर, एवं मीन जल राशि वर्ग में होती हैं जबकि सिंह एंव वृश्चिक को कोई भी वर्ग आबंटित नहीं किया गया है।

वर–वधू दोनों का एक वश्य वर्ग से सम्बन्धित होना सबसे श्रेष्ठ माना जाता है और इसके लिए 2 अंक दिये जाते हैं, जब वधू की राशि, वर की राशि की वश्य होती है तो 1 अंक दिया जाता है, जब वधू की राशि, वर की राशि की भक्ष्य राशि होती है तो ½ अंक दिया जाता है। अन्य स्थितियों में शून्य अंक दिया जाता है। वश्य और भक्ष्य होने का निर्णय राशियों के स्वभाव पर होता है, उदाहरणतः मनुष्य राशियों के लिए सिंह राशि को छोड़कर सभी राशियां वश्य हैं लेकिन सभी जलचर राशियां भक्ष्य हैं। इसको और अंकों के आंबटन को ठीक प्रकार से समझने के लिए आगे दी गई तालिका संख्या 6.9 को देखें।

तालिका संख्या 6.9
वश्य मिलान

		वर की चन्द्र राशि				
		मनुष्य	चतुष्पद	जलचर	सिंह	वृश्चिक
वधु की चन्द्र राशि	मनुष्य	2	0	0	½	0
	चतुष्पद	1	2	1	½	1
	जलचर	½	1	2	1	1
	सिंह	0	0	0	2	0
	वृश्चिक	1	1	1	0	2

(3) ताराः

वर के नक्षत्र से वधू के नक्षत्र तक गिनें और प्राप्त संख्या को 9 से भाग करें। यदि शेषफल 3, 5 अथवा 7 आता है तो अशुभ होता है फलस्वरूप शून्य अंक जबकि अन्य स्थितियों में तारा शुभ होता है। तारा शुभ होने पर 1½ अंक दें।

इसी प्रकार वधू के नक्षत्र से भी वर के नक्षत्र तक गिनें और प्राप्त संख्या को 9 से भाग करें। यदि शेषफल 3, 5 अथवा 7 आता है तो अशुभ होता है फलस्वरूप शून्य अंक जबकि अन्य स्थिति में तारा शुभ होता है। तारा शुभ होने पर 1½ अंक दें।

अतः इस प्रकार दोनों के नक्षत्र से गिनने पर शुभ तारा आता है तो पूर्णांक 3 दिये जाते हैं, यदि एक शुभ और दूसरा अशुभ तारा आता है तो 1½ अंक दिये जाते हैं। अन्य स्थिति में कोई भी अंक नहीं दिया जाता है।

(4) योनिः

इस कूट में सभी नक्षत्रों को जानवरों की योनियां आबंटित की गई हैं। वर–वधू की योनि एक–दूसरे की शत्रु नहीं होनी चाहिए। नीचे नक्षत्रों को आबंटित विभिन्न योनियों और उनके विभिन्न योनियों से शत्रुता को दिया गया है।

क्रम संख्या	नक्षत्र	योनि	अतिशत्रु योनि
1	अश्विनी, शतभिषज	अश्व	महिष
2	भरणी, रेवती	गज	सिंह
3	कृतिका, पुष्य	मेष	वानर
4	रोहिणी, मृगशिरा	सर्प	नकुल
5	आर्द्रा, मूल	श्वान	मृग
6	पुनर्वसु, आश्लेषा	मार्जार	मूषक
7	मघा, पूर्वाफाल्गुनी	मूषक	मार्जार
8	उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद	गो	व्याघ्र
9	हस्त, स्वाति	महिष	अश्व

10	चित्रा, विशाखा	व्याघ्र	गौ
11	अनुराधा, ज्येष्ठा	मृग	श्वान
12	पूर्वाषाढ़ा, श्रवण	वानर	मेष
13	उत्तराषाढ़ा, अभिजित	नकुल	सर्प
14	धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद	सिंह	गज

यदि योनियां एक ही हैं तो 4 अंक, यदि वे मित्र हैं तो 3, यदि वे सम हैं तो 2, यदि वे शत्रु हैं तो 1 और यदि वे अतिशत्रु हैं तो कोई अंक नहीं दिया जाता है। अंकों के आबंटन को आगे दी गई तालिका संख्या 6.10 से समझा जा सकता है।

तालिका संख्या 6.10
योनि मिलान

वर वधू	अश्व	महिष	सिंह	हाथी	मेष	वानर	नेवला	सर्प	मृग	श्वान	मार्जार	मूषक	व्याघ्र	गौ
अश्व	4	0	1	2	3	2	2	1	3	2	3	3	1	3
महिष	0	4	1	3	3	2	2	2	2	2	2	2	1	3
सिंह	1	1	4	0	1	2	2	2	1	1	2	1	2	1
हाथी	2	2	0	4	2	2	2	2	2	2	3	2	1	2
मेष	3	3	1	2	4	0	3	1	3	2	3	2	1	3
वानर	2	2	2	2	0	4	2	1	2	2	2	2	1	2
नेवला	2	2	2	2	3	2	4	0	2	1	2	2	2	2
सर्प	1	2	2	2	1	1	0	4	1	1	1	1	2	1
मृग	3	3	1	2	3	2	2	1	4	0	2	2	1	2
श्वान	2	2	1	2	2	2	1	1	0	4	1	1	1	1
मार्जार	3	2	2	3	3	2	2	1	2	1	4	0	2	2
मूषक	3	2	1	2	2	2	2	1	2	1	0	4	2	2
व्याघ्र	1	1	2	1	1	1	2	2	1	1	2	2	4	0
गौ	3	3	1	2	3	2	2	1	2	1	2	2	0	4

योनि मिलान शूद्रों के लिए आवश्यक है।

(5) ग्रहमैत्रीः

ग्रहों का मैत्री सम्बन्ध अर्थात एक ग्रह के मित्र, सम और शत्रु ग्रहों को आगे तालिका संख्या 6.11 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 6.11
ग्रहों की मित्रता

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति	बुध	शुक्र, शनि
चन्द्रमा	बुध, सूर्य	मंगल, शनि, बृहस्पति, शुक्र	कोई नहीं
मंगल	चन्द्रमा, सूर्य, बृहस्पति	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सूर्य, शुक्र	बृहस्पति, शनि, मंगल	चन्द्रमा
बृहस्पति	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल	शनि	बुध, शुक्र
शुक्र	बुध, शनि	बृहस्पति, मंगल	सूर्य, चन्द्रमा
शनि	बुध, शुक्र	बृहस्पति	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल

वर–वधू के जन्म चन्द्रमा को लेकर उनके स्वामियों को देखें। यदि दोनों राशि स्वामी दोनों ओर से मित्र हैं अथवा दोनों का स्वामी एक ही ग्रह है, पूर्णांक 5 दिये जाते हैं। यदि एक–दूसरे के प्रति एक मित्र है एवं दूसरा सम है (उदाहरणतः बुध और शनि) तो 4 अंक देते हैं। दोनों राशि स्वामी एक–दूसरे के लिए सम हैं तो 3 अंक प्राप्त होंगे (उदाहरणतः बृहस्पति एवं शनि)। एक स्वामी, दूसरे के प्रति मित्रता रखता है जबकि दूसरा शत्रुता तो 1 अंक देते हैं (उदाहरणतः चन्द्रमा एवं बुध)। एक, दूसरे का सम होता है जबकि दूसरा शत्रु, ½ अंक देते हैं। अन्य स्थितियों में कोई भी अंक नहीं दिया जाता है। सहजता से समझने के लिए आगे दी गई तालिका संख्या 6.12 देखें।

तालिका संख्या 6.12

ग्रह–मैत्री

		वर का चन्द्र राशि का स्वामी						
		सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
वधू का चन्द्र राशि का स्वामी	सूर्य	5	5	5	4	5	0	0
	चन्द्र	5	5	4	1	4	½	½
	मंगल	5	4	5	½	5	3	½
	बुध	4	1	½	5	½	5	4
	बृहस्पति	5	4	5	½	5	½	3
	शुक्र	0	½	3	5	½	5	5
	शनि	0	½	½	4	3	5	5

टिप्पणी: सही मिलान के लिए वर–वधू, दोनों की राशियों के नवांश के स्वामियों के आपसी सम्बन्ध का भी विचार करना चाहिए।

(6) **गण:**

सभी नक्षत्रों को तीन समूहों (1) देव, (2) नर (या मनुष्य) और (3) राक्षस में बांटा गया है।

अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाति, हस्त, अश्विनी और पुष्य, इन नौ नक्षत्रों का देव गण है।

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा, इन नौ नक्षत्रों का नर या मनुष्य गण है।

मघा, आश्लेषा, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, मूल, शतमिषज, विशाखा, कृतिका और चित्रा, ये राक्षस गण हैं।

यदि वर–वधू, दोनों के गण (जन्म नक्षत्र पर आधारित) एक ही हों, पूर्णांक 6 अंक, यदि वर देव हो एवं वधू नर तो भी 6 अंक, यदि वधू देव हो एवं वर नर हो तो 5 अंक, यदि वर राक्षस एवं वधू देव हो तो 1 अंक और अन्य स्थितियों में कोई भी अंक नहीं दिया जाता है। आगे दी गई तालिका संख्या 6.13 देखें।

तालिका संख्या 6.13:
गण मिलान

		वर का गण		
		देव	मनुष्य	राक्षस
वधू	देव	6	5	1
का	मनुष्य	6	6	0
गण	राक्षस	0	0	6

यदि राशि मैत्री, योनि और भकूट का मिलान पूर्ण है तो गण मिलान न होने के ऊपरान्त भी विवाह हो सकता है। गण मिलान वैश्यों के लिए आवश्यक माना जाता है।

जहां वर–वधू की राशियों के स्वामी अथवा राशि के नवांशेष एक ही होते हैं वहां भी गण दोष अपनी अशुभता खो देता है।

(7) भकूटः

भकूट मिलान में वर–वधू की जन्म राशियों का एक–दूसरे से स्थिति का विचार किया जाता है। यदि राशियां एक–दूसरे से 2/12, 5/9 अथवा 6/8 की स्थिति में होती हैं तो ये स्थितियां अशुभ मानी जाती हैं और कोई भी अंक नहीं दिया जाता है। अन्य स्थितियों में पूर्णांक 7 दिये जाते हैं।

लेकिन अंक अथवा गुणों के विचार से पृथक निम्नलिखित स्थितियों का भी विचार करना आवश्यक है।

(क) एक ही राशि होने के विषय में: यदि वर–वधु की जन्म राशि एक ही हो यह शुभ माना जाता है बशर्ते उनके अलग–अलग नक्षत्र हों अथवा यदि नक्षत्र एक ही हो तो नक्षत्र चरण एक नहीं होना

चाहिए।

(ख) **2/12 की स्थिति के विषय में: यह स्थिति द्विर्द्वादश दोष कहलाती है और ऐसी स्थिति का परित्याग करना चाहिए।**

टिप्पणी–1: जहां वर की राशि से वधू की राशि दूसरी होती है वहां यह अशुभ माना जाता है, अन्यथा यह अशुभ नहीं है अर्थात जब वर की राशि से वधू की राशि 12 होती है।

टिप्पणी–2: वृषभ–मिथुन, कर्क–सिंह, कन्या–तुला, वृश्चिक–धनु, मकर–कुंभ और मीन–मेष राशियों के युग्मों के लिए 2/12 स्थिति को यह दोष नहीं लगता है क्योंकि ऐसी स्थितियों में राशियों के स्वामी ग्रह एक ही होते हैं अथवा एक–दूसरे के नैसर्गिक मित्र होते हैं।

अन्य युग्मों के लिए 2/12 की स्थिति अशुभ होती हैं।

(ग) **3/11 की स्थिति के विषय में:**

यह सभी स्थितियों में शुभ मानी जाती हैं।

(च) **4/10 की स्थिति के विषय में:**

सामान्यतः यह स्थिति भी शुभ मानी जाती है और पूर्णांक 7 अंक दिये जाते हैं लेकिन राशियों के निम्नलिखित युग्म, राशि स्वामियों की एक–दूसरे के प्रति शत्रुता होने के कारण अपनी शुभता खो देते हैं।

वृषभ–सिंह, कर्क–तुला, कन्या–धनु, वृश्चिक–कुंभ, मकर–मेष और मीन–मिथुन। राशियों के ये युग्म अशुभ होते हैं और यह कहा जाता है कि ये दरिद्रता के कारण बनते हैं।

(छ) **5/9 की स्थिति के विषय में:**

यद्यपि इस स्थिति में राशि स्वामी हमेशा ही नैसर्गिक मित्र होते हैं लेकिन यह नव–पंचम दोष कहलाता है और ऐसी स्थिति कोई भी अंक नहीं दिया जाता है। लेकिन सभी 5/9 स्थितियां एक जैसी नहीं होती हैं। जहां वर की राशि से वधू की राशि नवम होती है उस स्थिति की अपेक्षा जहां वर की राशि से वधू की राशि पंचम

होती है वह अधिक अशुभ कहलाती है। यह कहा जाता है कि इस दोष के कारण सन्तति सम्बन्धित समस्यायें उत्पन्न होती हैं।

(ज) 6/8 की स्थितिः

वर-वधू की राशियों की यह स्थिति 'षडाष्टक' कहलाती है और सबसे अशुभ मानी जाती है। जहां राशि स्वामी आपस में नैसर्गिक शत्रु होते हैं उनमें अधिक अशुभता होती है। जहां राशि स्वामी एक-दूसरे के मित्र होते हैं अथवा एक ही ग्रह होते हैं जैसे कि मेष-वृश्चिक, मिथुन-मकर, सिंह-मीन, तुला-वृषभ, धनु-कर्क और कुंभ-कन्या, वहां षडाष्टक दोष अपनी अशुभता खो देता है।

अशुभ षडाष्टक दोष के कारण रोग और मृत्यु भय होता है।

(झ) 1/7 की स्थितिः

वर-वधू की राशियों की यह स्थिति सदैव ही शुभ मानी जाती है और पूर्णाक 7 दिये जाते हैं। यहां तक की जब राशी स्वामी एक-दूसरे के शत्रु होते हैं तब भी कर्क-मकर और सिंह-कुंभ राशियों को छोड़कर अन्य राशियों के लिए सम-सप्तम की स्थिति शुभ मानी जाती है।

अशुभ भकूट अथवा दुष्ट-भकूट, जो भी कहिए, निम्नलिखित स्थितियों में अपनी अशुभता खो देता हैः

(1) यदि राशि स्वामी आपस में मित्र हों,

(2) यदि नाड़ी मिलान शुद्धरूप से हो रहा हो,

(3) राशियों के नवांशेश आपस में मित्र हों,

(4) शुद्ध नाड़ी मिलान के साथ-साथ वर-वधू के तारा शुभ हों,

(5) वश्य और नाड़ी, दोनों ही मिलान उचित प्रकार से हो रहे हों।

(8) नाड़ीः

यहां तीन प्रकार की नाडियां होती हैं- (1) आदि, (2) मध्य और (3) अन्त्य। जिस नक्षत्र में जातक का जन्म होता है, वह नक्षत्र जातक की

नाड़ी निश्चित करता है। नक्षत्रों द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली नाड़ियों को आगे तालिका संख्या 6.14 में दिया गया है।

तालिका संख्या 6.14
नक्षत्र एवं नाड़ी

नाड़ी	नक्षत्र
आद्या नाड़ी	अश्विनी, आर्द्रा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठा, मूल, शतभिषज, पूर्वाभाद्रपद
मध्या नाड़ी	भरणी, मृगशिरा, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद
अन्त्य नाड़ी	कृतिका, रोहिणी, आश्लेषा, मघा, स्वाति, विशाखा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, रेवती

इस कूट मिलान में वर–वधू की एक ही नाड़ी नहीं होनी चाहिए (उदाहरणतः यदि वधू का भरणी नक्षत्र एवं वर का चित्रा नक्षत्र होता है तो दोनों की एक ही नाड़ी, अर्थात मध्य नाड़ी होगी और यह नाड़ी दोष कहलायेगा)। यदि दोनों की अलग–अलग नाड़ी होती है तो पूर्णांक 8 दिये जाते हैं जबकि अन्य स्थिति में (जहां दोनों की एक ही नाड़ी होती है) कोई भी अंक नहीं दिया जाता है।

अपवादः

1. जहां वर–वधू दोनों की एक ही जन्म राशि हो लेकिन नक्षत्र अलग–अलग हों, यह नाड़ी दोष नहीं कहलाएगा (उदाहरणतः दोनों की चन्द्र राशि मिथुन हो और एक का आर्द्रा एवं दूसरे का पुनर्वसु नक्षत्र हो, अतः दोनों की आदि नाड़ी होने पर नाड़ी दोष नहीं होगा)।
2. जहां दोनों का एक ही नक्षत्र हो लेकिन राशि अलग–अलग हो (जैसे कि दोनों का कृतिका नक्षत्र हो लेकिन एक की मेष राशि हो और दूसरे की वृषभ राशि हो) तो भी नाड़ी दोष नहीं होगा।
3. जहां दोनों का नक्षत्र एक ही हो पर नक्षत्रों के चरण अलग–अलग हों तो भी नाड़ी दोष नहीं होगा।

विशेषः यदि वधू के नक्षत्र से वर का नक्षत्र द्वितीय हो तो यह अत्यधिक अशुभ माना जाता है (उदाहरणतः वधू का नक्षत्र पुनर्वसु हो और वर का नक्षत्र पुष्य हो तो यह अशुभ है)। यदि ऊपरोक्त मिलान में 18 अथवा 18 से अधिक अंक प्राप्त होते है तो विवाह आज्ञा देने योग्य होता है। जितने अधिक अंक प्राप्त होते हैं मिलान उतना ही अच्छा माना जाता है।

टिप्पणीः गुण मिलान अथवा कूट मिलान, विवाह के लिए उचित मिलान हेतु किए जाने वाली प्रक्रिया के कई खण्डों में से मात्र एक खण्ड है। आगे इस अध्याय में मिलान की पूरी प्रक्रिया की क्रमशः संक्षिप्त विवेचना दी गई है।

अन्य विचारणीय बातें:

वर्गः यह जातक–जातिका के नाम के प्रारम्भिक हिन्दी अक्षर पर आधारित है। यहां आठ प्रकार के वर्ग होते हैं जो निम्नलिखित क्रम में आते हैं:

क्र. सं.	नाम का प्रारम्भिक अक्षर	वर्ग
1.	अ, आ, इ, ई, उ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः	सर्प
2.	क, ख, ग, घ, ड.	मूषक
3.	च, छ, ज, झ त्र	मृग
4.	ट, ठ, ड, ढ, ण	मेष
5.	त, थ, द, ध, न	गरुड
6.	प, फ, ब, भ, म	बिडाल
7.	य, र, ल, व	सिंह
8.	श, ष, स, ह	श्वान

प्रत्येक वर्ग से पांचवा वर्ग उसका शत्रु वर्ग होता है। वर–वधू को एक–दूसरे के शत्रु वर्ग से सम्बन्धित नहीं होना चाहिए अर्थात वर–कन्या के नामाक्षरों के स्वामियों में शत्रुता नहीं होनी चाहिए। यदि दोनों का वर्ग एक ही होता है तो यह मंगलकारी माना जाता है।

स्त्री–दूर अथवा नक्षत्रों की आपसी दूरीः

वधू के नक्षत्र से वर के नक्षत्र को गिनें। यदि यह दूरी 9 तक होती है तो यह अशुभ मानी जाती है, 10 से 18 की दूरी मध्यम और 18 से अधिक की दूरी शुभ मानी जाती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि वधू के नक्षत्र से वर का नक्षत्र जितना अधिक दूर होगा शुभता उतनी ही अधिक होगी।

मिलान के लिए उचित प्रक्रियाः

किसी भी लड़के और लड़की की जन्मपत्रिकाओं का सही मिलान निम्नलिखित चरणबद्ध प्रक्रिया द्वारा किया जा सकता है।

चरण–1: लड़के एवं लड़की की अपनी–अपनी जन्मपत्रिकाओं में आयुष्य की सूक्ष्म परीक्षा करें।

चरण–2: लड़के के आयुष्य की सूक्ष्म परीक्षा लड़की की जन्मपत्रिका में करें (उदाहरणतः यह देखें कि क्या लड़की की जन्मपत्रिका में कोई वैधव्य योग है) और लड़की के आयुष्य की सूक्ष्म परीक्षा लड़के की जन्मपत्रिका में करें उदाहरणतः यह देखें कि क्या लड़के की जन्मपत्रिका में कोई विधुर योग है)।

चरण–3: विवाह एवं विवाह से सम्बन्धित सभी विषयों के लिए 7वें भाव, पारिवारिक सुख–सुविधा के लिए 4थे भाव, शयन सुख के लिए 12वें भाव, सन्तति के लिए 5वें भाव, कुटुम्ब के लिए 2रे भाव और इसी प्रकार अन्य विषयों के लिए अन्य भावों की सूक्ष्म परीक्षा, लड़के एवं लड़की, दोनों की जन्मपत्रिकाओं में अलग–अलग करें और देखें कि कौन–कौन से भाव पीड़ित हैं।

चरण–4: अब ऊपरोक्त विषयों को लड़के की जन्मपत्रिका में 7वें भाव को लग्न मानकर लड़की के लिए और लड़की की जन्मपत्रिका में 7वें भाव को लग्न मानकर लड़के के लिए देखें (उदाहरणतः 7वें से 7वां, 7वें से 5वां, 7वें से 4था, 7वें से 12वां और इसी प्रकार अन्य भाव भी) तथा देखें कि जो अशुभ प्रभाव चरण–3 में आ रहे थे उनकी वृद्धि हो रही है अथवा उनमें न्यूनता आ रही है।

चरण–5: दोनों की आने वाली दशाओं की विवेचना करें और उनके प्रभाव को लड़के एवं लड़की के लिए अपनी–अपनी जन्मपत्रिका के अनुसार तथा एक–दूसरे की जन्मपत्रिकाओं के अनुसार उन दशाओं का एक–दूसरे के ऊपर पडने वाले प्रभाव की विवेचना करें।

चरण–6: ऊपरोक्त चरणों को पूर्ण करने के पश्चात ही कूट–मिलान और चन्द्रराशि अथवा जन्म–नक्षत्रों पर आधारित अन्य मिलान करने चाहिए।

कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुः

1. जिसकी जन्मपत्रिका में वैधव्य योग हों उसका मिलान ऐसे व्यक्ति से करना चाहिए जिसकी जन्मपत्रिका में विधुर योग हो।

2. जिसकी जन्मपत्रिका में कोई भाव विशेष पीड़ित हो, उसका मिलान ऐसे व्यक्ति से करना चाहिए जिसकी जन्मपत्रिका में भी वह भाव पीड़ित हो। उदाहरणतः जिसकी जन्मपत्रिका के 7वें भाव में मंगल स्थित हो, उसका मिलान ऐसे व्यक्ति से करना चाहिए जिसकी जन्मपत्रिका के 7वें भाव में मंगल हो अथवा अन्य कोई अशुभ ग्रह हो। इसी प्रकार अन्य भावों के लिए भी जितना संभव हो सके इसी नियम को लगाना चाहिए। इस विषय में वैद्यनाथ ने जातक पारिजात में इशारा दिया हैः

   द्यून कुटुम्ब गतौ यदि पापौ दारवियोगजदुःख करौ तौ।
   तादृश योगज दार युतः चेत् जीवति पुत्र धनादियुतश्च।।

   अर्थात जहां 2रे और 7वें भाव में पापी ग्रह स्थित होते हैं वह जीवनसाथी से विछोह एवं दुःख का कारण होगें, लेकिन यदि ऐसे व्यक्ति के जीवनसाथी का भी ये भाव इसी प्रकार पीड़ित होते हैं तो उसकी सन्तति, धन--सम्पति और वैवाहिक जीवन अच्छा होगा।

3. जहां वैधव्य, विधुर अथवा बहुविवाह के योग होते हैं, वहां शास्त्रानुसार कहे गए परिहारों को किया जा सकता है। जैसे कि किसी का प्रतिमा–विवाह अर्थात किसी व्यक्ति विशेष से मूर्त्तरुप में विवाह होने से पूर्व लाक्षणिक विवाह हो सकता है। (विष्णु प्रतिमा से, घट से या पीपल से)

   अतः कोई भी यह देख सकता है कि विवाह के लिए मिलान उतना सरल कार्य नहीं है जितना कि लोग सोचते हैं। वैवाहिक जीवन की स्थिरता केवल मिलान की गुणवत्ता पर आधारित नहीं है बल्कि यह देश–काल–पात्र से भी प्रभावित है (अर्थात आप किस स्थान में रहते हैं, कैसे समय में रहते हैं और किन संस्कारों से आए हैं)।

अध्याय 7

दाह–संस्कार

हिन्दू धर्म में मृत्यु को जीवन का अन्त नहीं माना जाता है वस्तुतः इसको वह क्षण माना जाता है जब आत्मा इस शरीर को छोड़कर पुनः किसी नये रुप में शरीर धारण करने हेतु अथवा मोक्ष प्राप्ति के लिए यात्रा प्रारम्भ करती है। मृत्यु के ऊपरान्त मृत शरीर का संस्कार करने के पीछे यही कारण है। मृत शरीर की प्रस्थान करती हुई आत्मा को गति प्रदान करने के लिए गति–क्रिया अथवा दाह–संस्कार किया जाता है। हिन्दी की प्रसिद्ध कवियत्री महादेवी की एक कविता में मृत्यु की धारणा को सुन्दरता से वर्णित किया हुआ है। कवियत्री कहती हैं किः

जिस दिन होगा उस असीम से
मेरी लघु सीमा का मेल
देखोगे तुम देव अमरता
खेलेगी मिटने का खेल

इस कविता का सामान्य अनुवाद इस प्रकार से किया जा सकता है कि 'जिस दिन मेरी इस सीमित सीमा का उस असीमित से मिलन होगा, हे परमात्मा! उस दिन तुम अमरता को मौत का खेल खेलते हुए देखोगे।

दाह–संस्कार दो प्रकार का होता है–

(1) जब मृत शरीर उपलब्ध हो

(2) जब मृत शरीर उपलब्ध न हो

जब मृत शरीर उपलब्ध होः जब मृत शरीर उपलब्ध होता है तो दाह–संस्कार के लिए मुहूर्त चयन की आवश्यकता नहीं होती है। केवल जब किसी मृत शरीर का दाह–संस्कार पंचक के नक्षत्रों में करना पड़ता है (धनिष्ठा के तृतीय एव चतुर्थ चरण, शतभिषज, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती) तो पंचक शान्ति करनी पडती है।

किसी ब्राह्मण को पंच–रत्न दान करना अथवा पांच सांकेतिक दाह–संस्कार करना, पंचक शान्ति का एक तरीका है।

जब मृत शरीर उपलब्ध न होः यह स्थिति सामान्यतः अप्राकृतिक मृत्यु होने पर ही होती है जब या तो मृत शरीर नष्ट हो जाता है अथवा प्राप्त ही नहीं होता है। इन स्थितियों में कुशा (एक प्रकार की घास) पलाश और चावल के आटे का पुतला बनाकर उसका दाह संस्कार किया जाता है। पुत्तल–दाह अर्थात पुतले के दाह–संस्कार के लिए मुहूर्त चयन की निम्नलिखित प्रक्रिया अपनानी चाहिए।

(अ) जब मृत्यु की सूचना सूतक (अशुद्धता) के दौरान प्राप्त होती हैः

यह कहा जाता है कि स्थान विशेष की रीति–रिवाज अनुसार सूतक, मृत्यु के दस से 16 दिन के अन्दर समाप्त हो जाता है। यदि मृत्यु की सूचना इन दिनों के बीच ही प्राप्त हो जाती है तो पुत्तल–दाह, पंचक के नक्षत्रों को छोड़कर किसी भी समय किया जा सकता है।

(ब) जब मृत्यु की सूचना सूतक के पश्चात लेकिन एक वर्ष के अन्दर ही प्राप्त होती हैः

जब मृत्यु की सूचना सूतक के पश्चात अर्थात 16 दिनों के बाद लेकिन एक वर्ष पूर्ण होने से पहले प्राप्त होती है तो पुतला–दाह के मुहूर्त चयन के लिए निम्नलिखित बातों का विचार करना आवश्यक होता है।

(1) नक्षत्रः श्रवण, हस्त, स्वाति, अश्विनी और पुष्य नक्षत्र पुतला–दाह के लिए सबसे अच्छे होते हैं।

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, पुनर्वसु, विशाखा, मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा नक्षत्र पुतला–दाह के लिए मध्यम श्रेणी के नक्षत्र होते हैं।

(2) वारः रविवार, सोमवार, गुरूवार।

(3) जो त्यागना चाहिएः भद्रा त्याज्य है, दाह–संस्कार करने वाले व्यक्ति का जन्म एवं प्रत्यरि तारा (जन्मनक्षत्र से 1ला, 5वां, 10वां, 14वां, 19वां एवं 23वां) त्याज्य है और दाह–संस्कार करने वाले व्यक्ति के जन्म चन्द्रमा से गोचर के चन्द्रमा की 4/8/12 भावों की स्थिति को भी त्यागना चाहिए। शुक्रवार, मंगलवार, शनिवार,

1/6/11/13/14 तिथियां, त्रिपुष्कर योग, अधिमास, क्षय मास, परिघ, व्यतीपात, वैधृति योग, बृहस्पति एवं शुक्र का अस्त होना और शुक्लपक्ष का भी परित्याग करना चाहिए।

सभी क्रूर नक्षत्रों का (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघाद्ध, सभी तीक्ष्ण–दारुण नक्षत्रों का (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा एवं आश्लेषा) और रेवती नक्षत्र को भी त्यागना चाहिए।

(स) जब मृत्यु की सूचना एक वर्ष बाद प्राप्त होः

जब मृत्यु की सूचना एक वर्ष के ऊपरान्त प्राप्त हो तो ऐसी स्थिति में पुतला–दाह, उत्तरायण में ही करना चाहिए और पुतला–दाह के मुहूर्त चयन के लिए उन सभी बातों का विचार आवश्यकरूप से करना चाहिए जिनकी चर्चा ऊपर (ब) के अन्तर्गत की गई है।

अध्याय 8

शिक्षा सम्बन्धित मुहूर्त

इस अध्याय में सामान्य शिक्षा के प्रारम्भ के लिए और कुछ विशेष विषयों की शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए मुहूर्त चयन के विषय में चर्चा की गई है। जब तक किसी उद्देश्य विशेष को अभिव्यक्त नहीं किया जाता है, तब तक सामान्य शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए विचारणीय मुहूर्त के घटकों का ही विचार, विशेष विषयों की शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए भी किया जा सकता है।

सामान्य शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए मुहूर्तः

समयः उत्तरायण का सूर्य मंगलकारी माना जाता है। कुछ विद्वानों का कहना है कि हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक) के अतिरिक्त वर्ष का सारा समय ही शुभ होता है। अस्त बृहस्पति और शुक्र को त्यागना चाहिए।

नक्षत्रः सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी एवं पुष्य), मूल, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, मृगशिरा, चित्रा, आर्द्रा एवं आश्लेषा नक्षत्रों को अच्छा माना जाता है।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां अच्छी होती हैं।

वारः बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार सर्वाधिक अच्छे वार हैं, रविवार एवं सोमवार मध्यम हैं और शेष वारों (शनिवार एवं मंगलवार) को त्यागना चाहिए।

लग्नः चर राशियों (1/4/7/10 राशियां) का ऐसा लग्न अच्छा माना जाता है जिसके केन्द्र एवं त्रिकोण (1/4/7/ 10/5/9) भावों में शुभ ग्रह और पापी ग्रह 3/6/10/11 भावों में स्थित हों। साथ ही साथ अष्टम भाव में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए।

आयुः जन्म से गिनने पर आयु के विषम वर्षो (3रे अथवा 5वें वर्ष) में शिक्षा प्रारम्भ करना अच्छा होता है। सम वर्षो के प्रथम एवं अन्तिम तीन मास भी अच्छे होते हैं।

चन्द्र/तारा–शुद्धिः बच्चे के लिए सही चन्द्र–शुद्धि (जन्म चन्द्रमा से गोचर के चन्द्रमा की 4/8/12 भावों में स्थिति को त्यागना) और तारा–शुद्धि (3/5/7 तारा को त्यागना) करनी चाहिए।

अब हम कुछ क्षेत्र विशेष की शिक्षा पर आते हैं।

(1) गणित की शिक्षा प्रारम्भ करने के लिएः

गणित की शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए अथवा जिन विषयों में गणित का प्रभुत्व होता है, ऐसे सभी क्षेत्रों की शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए निम्नलिखित विचार करना आवश्यक है।

नक्षत्रः सभी उग्र नक्षत्र (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा), सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), मूल, कृतिका, आर्द्रा, मृगशिरा, और रेवती मंगलकारी होते हैं।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां अच्छी होती हैं।

वारः रविवार एवं बुधवार और दिन का समय सबसे श्रेष्ठ होता है।

भद्रा एवं अशुभ योगों का त्याग करें। सही चन्द्र/तारा शुद्धि अतिआवश्यक है।

(2) वेद, व्याकरण आदि की शिक्षा के लिएः

नक्षत्रः सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और आर्द्रा।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां।

वारः बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार को अधिक अच्छा मानते हुए प्राथमिकता दी जाती है।

भद्रा एवं अशुभ योगों का त्याग करें। ऐसा लग्न चुनें जिसके केन्द्र एवं त्रिकोण में शुभ ग्रह, 3/6/11 भावों में अशुभ ग्रह और अष्टम भाव रिक्त हो। 5वें और 9वें भाव का बल भी सुनिश्चित करें।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि अतिआवश्यक है।

(3) **धर्म–शास्त्र और दर्शन–शास्त्र के लिएः**

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, श्रवण, धनिष्ठा और आर्द्रा, मंगलकारी माने जाते हैं।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां अच्छी होती हैं।

वारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

भद्रा एवं अशुभ योगों का परित्याग करें। लग्न शुद्धि वैसे ही की जानी चाहिए जैसी (2) के अन्तर्गत अनुमोदित की गई है।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि अतिआवश्यक है।

(4) **धनुर्विद्या अथवा हथियार और युद्ध से सम्बन्धित शिक्षा के लिएः**

नक्षत्रः सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, आर्द्रा, ज्येष्ठा, मूल, विशाखा, स्वाति, श्रवण, शतभिषज, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी और रोहिणी नक्षत्रों को हथियार एवं युद्ध से सम्बन्धित सामाग्री के प्रयोग की शिक्षा को प्रारम्भ करने के लिए मंगलकारी माना जाता है। रविवार, मंगलवार और शुक्रवार अच्छे होते हैं तथा अन्य उन सभी बातों का विचार भी किया जाता है जिनका विचार सामान्य शिक्षा प्रारम्भ के लिए किया जाता है।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि अतिआवश्यक है।

(5) **चिकित्सा–औषधी सम्बन्धित शिक्षा अथवा ऐसी शिक्षा जो दोष अथवा अशुद्धता को दूढने में सहायता करती हैः**

नक्षत्रः सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु,

श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), मूल, आर्द्रा और आश्लेषा नक्षत्र को मंगलकारी माना जाता है।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां।

वारः रविवार, सोमवार और मंगलवार।

सही लग्न शुद्धि और चन्द्र/तारा शुद्धि की जानी चाहिए।

(6) संगीत, नृत्य, नाटक सम्बन्धित शिक्षा के लिएः

नक्षत्रः मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, हस्त, पुष्य, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज, पूर्वाफाल्गुनी, ज्येष्ठा और उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों को संगीत, नृत्य और ऐसी ही अन्य विद्याओं को सीखने के लिए अच्छा माना जाता है। राम दैवज्ञ ने मुहूर्त चिन्तामणि में नृत्य सीखने के लिए ऊपरोक्त अनुकूल नक्षत्रों की सूची में उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा और रोहिणी नक्षत्रः को भी शामिल किया है।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां।

वारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

लग्नः बली लग्न, जिसमें बुध लग्न में और चन्द्रमा बुध की राशि में स्थित हो, उसे अधिक अच्छा मानते हुए प्राथमिकता देनी चाहिए।

सम्बन्धित जातक के लिए सही चन्द्र/तारा शुद्धि अतिआवश्यक है।

(7) जैन धर्म की शिक्षा के लिएः

नक्षत्रः सभी उग्र नक्षत्र (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा), अश्विनी, विशाखा और रेवती नक्षत्र को मंगलकारी माना जाता है।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां।

वारः रविवार, मंगलवार और शुक्रवार। अपरान्ह का समय अच्छा माना जाता है।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि आवश्यक है।

(8) यवन विद्या (अर्थात उर्दू, पारसी, अरबी भाषाओं में शिक्षा):

नक्षत्रः सभी उग्र नक्षत्रों (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा), सभी तीक्ष्ण–दारुण नक्षत्रों (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा और आश्लेषा), सभी मिश्र नक्षत्रों (विशाखा एवं कृतिका) और रेवती नक्षत्र को उर्दू, अरबी अथवा पारसी भाषा सीखने के लिए अच्छा माना जाता है।

तिथियांः शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि से लेकर, 1ला, 2रा, 4था, 5वां, 10वां, 11वां, 12वां, 14वां, 20वां, 22वां एवं 25वां चन्द्रदिवस अच्छा माना जाता है।

वारः गुरूवार को छोड़कर सभी वार अच्छे माने जाते हैं।

लग्नः स्थिर लग्न जिसके लग्न में चन्द्रमा स्थित हो, अच्छा मानते हुए प्राथमिकता दी जाती है।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि अवश्य करनी चाहिए।

(9) शिल्प विद्या (मूर्ति बनाने, शिल्पकार और ऐसे ही अन्यों के लिए):

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) मंगलकारी माने जाते हैं।

तिथियांः 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां।

वारः रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

लग्नः वह बली लग्न जो बृहस्पति अथवा बुध के वर्ग में हो, अच्छा है।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि आवश्यक रुप से करनी चाहिए।

(10) कानूनी शिक्षाः

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), अश्विनी और पुष्य नक्षत्रों को कानून सम्बन्धित शिक्षा को प्रारम्भ करने के लिए अच्छा माना जाता है।

तिथियां: 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां।

वारः गुरूवार, शुक्रवार और बुधवार।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि होनी भी आवश्यक है।

(11) व्यायाम अथवा व्यायाम, खेल आदि के गुर सीखने के लिएः

नक्षत्रः सभी उग्र नक्षत्रों (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा), ज्येष्ठा, मूल और आश्लेषा को मंगलकारी माना जाता है।

तिथियां: 3/5/8/10/13/15 तिथियां।

वारः रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

मुहूर्त लग्न के केन्द्र एवं त्रिकोण में शुभ ग्रह और 3/6/11 भावों में पापी ग्रह स्थित होने चाहिए।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि होनी भी आवश्यक है।

(12) चित्रकारीः

नक्षत्रः सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, अनुराधा, चित्रा और रेवती नक्षत्र को चित्रकारी सम्बन्धित शिक्षा प्रारम्भ करने के लिए अच्छा माना जाता है।

तिथियां: 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां।

वारः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि होनी भी आवश्यक है।

आज के आधुनिक युग में शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा के विषयों में विभिन्नता और अत्यधिक जटिलता आ चुकी है। प्रत्येक विषय को सूचीबद्ध करके प्रत्येक विषय के लिए एक निश्चित मुहूर्त सूची बनाना भी कठिन है। लेकिन जैसा कि हमने इस अध्याय में चर्चित विभिन्न विषयों के मुहूर्तो में देखा है कि मुहूर्त चयन का मुख्य आधार नक्षत्र एवं वार के स्वभाव का शिक्षा के प्रकार से मिलान करना और शुभ तिथियों, योगों एवं लग्नों का चयन करके शिक्षा को एक अच्छा प्रारम्भ देना है। शिक्षा के मुहूर्त में गोचर के चन्द्रमा के बल के आंकलन के साथ-साथ बुध के बल का आंकलन भी आवश्यक रुप से करना चाहिए।

अध्याय 9

आजीविका संबंधी मुहूर्त

इस अध्याय का उद्देश्य उन कार्यों के मुहूर्तों के विषय में चर्चा करना है जिन कार्यों के द्वारा लोग अपनी आजीविका कमाते हैं।

टिप्पणीः इस अध्याय में चर्चित सभी मुहूर्तों के लिए चन्द्र शुद्धि और/अथवा तारा शुद्धि (गोचर के चन्द्रमा के बल का विचार) आवश्यक है।

वस्तुएं बेचने के लिए मुहूर्तः

वस्तुएं बेचने के लिए पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, विशाखा, कृतिका, आश्लेषा और भरणी नक्षत्रों को अच्छा माना जाता है। किसी भी जातक को शुभ तिथियों (1/2/3/5/7/10/11/13) और शुभ योगों को चुनना चाहिए। किसी भी चीज को बेचने का लग्न कुंभ नहीं होना चाहिए। लग्न के 1/4/7/10/5/9/2 भावों में शुभ ग्रह और पापी ग्रह 3/6/11 भावों में होने चाहिए।

दुकान खोलने का मुहूर्तः

रिक्ता तिथियों (4/9/14), मंगलवार और कुंभ लग्न का त्याग करें। अन्य सभी तिथियां, वार और लग्न अच्छे होते हैं। सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्त्राफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी मृदु नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) को दुकान खोलने अर्थात प्रारम्भ करने के लिए मंगलकारी माना जाता है। लग्न के 2/10/11 भावों में शुभ ग्रह होने चाहिए जिसमें शुक्र एवं चन्द्रमा के लग्नस्थ होने को प्राथमिकता दी जाती है, तथा 8/12 भावों में अशुभ ग्रह नहीं होने चाहिए। इस मुहूर्त का प्रयोग किसी भी प्रकार का व्यवसाय प्रारंभ करने के लिये प्रयोग कर सकते हैं।

घोड़ों का क्रय–विक्रय, प्रशिक्षण, सवारीः

हस्त, अश्विनी, पुष्य, रेवती, धनिष्ठा, मृगशिरा, स्वाति, शतभिषज एवं पुनर्वसु नक्षत्रों, रिक्ता तिथियों (4/9/14) और मंगलवार को छोड़कर शेष सभी तिथियों, वारों को घोड़ों के क्रय–विक्रय, उनके प्रशिक्षण और घुड़सवारी के लिए मंगलकारी माना जाता है।

घोड़ों और अन्य सभी पशुओं को प्रशिक्षण देने के लिए शनिवार और तीक्ष्ण नक्षत्रों (ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा एवं आश्लेषा) को विशेष मंगलकारी माना जाता है। ज्योतिर्निबंध कहता है कि शिक्षा प्रारम्भ करने का मुहूर्त भी घोड़ों को प्रशिक्षण देने के लिए शुभ होगा।

घुड़सवारी करने के लिए सूर्य द्वारा ग्रहीत नक्षत्र से चन्द्रमा द्वारा ग्रहीत नक्षत्र तक गिनिये। सूर्य द्वारा ग्रहीत नक्षत्र से पहले 15 नक्षत्र, घुड़सवारी के लिए अच्छे माने जाते हैं।

हाथियों का क्रय–विक्रय आदिः

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषज नक्षत्रों को हाथियों के क्रय–विक्रय के लिए अच्छा माना जाता है। यहां भी रिक्ता तिथियों (4/9/14) और मंगलवार को त्यागना चाहिए।

बकरियों, भेंसों आदि का क्रय–विक्रयः

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, विशाखा, रेवती, मूल, मृगशिरा, पुष्य, धनिष्ठा, पुनर्वसु, शतभिषज, हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित नक्षत्रों, शुभ तिथियों और रविवार, सोमवार, गुरूवार एवं शुक्रवार को बकरियों, भेंसों आदि के क्रय–विक्रय के लिए मंगलकारी माना जाता है।

पालतू पशुओं के लिएः

जानवर को पालतू बनाने के लिए शुभ ग्रहों का ऐसा लग्न (2/3/4/6/7/9/12) जिसके अष्टम भाव में कोई भी ग्रह न हो और

स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज एवं जानवर विशेष के योनि नक्षत्रों* को अच्छा माना जाता है।

किसी भी पशु के घर में प्रथम प्रवेश के समय अथवा एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने के लिए रिक्ता तिथियों (4/9/14) अष्टमी एवं अमावस्या तिथियों, मंगलवार, श्रवण, चित्रा और स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) का त्याग किया चाहिए।

भूमि का क्रय–विक्रयः

पुनर्वसु, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, मघा, मूल, आश्लेषा, विशाखा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों, नन्दा एवं पूर्णा तिथियों (1/6/11/5/10/15 तिथिया) और शुभ दिनों, विशेषकर गुरूवार एवं शुक्रवार को, भूमि के क्रय–विक्रय के लिए मंगलकारी माना जाता है।

धन सम्बन्धित लेन–देनः

स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, अश्विनी, पुष्य एवं विशाखा नक्षत्रों को, चर राशियों के लग्नों को (1/4/7/10 राशियों का लग्न) जिसके 5/8/9 भावों में कोई भी ग्रह न हो, रुपये–पैसे सम्बन्धित लेन–देन जैसे कि रुपये–पैसे लेने एवं देने, बैंक में जमा करने, जीवन बीमा पॉलिसियां आदि लेने के लिए अच्छा माना जाता है।

ऋण लेने और देने में त्याज्यः

ऋण लेने के लिए मंगलवार, वृद्धि योग (11वां योग), संक्रान्ति का दिन और रविवार एवं हस्त नक्षत्र की युति से बनने वाले 'अमृत सिद्धि योग' का त्याग करें क्योंकि ये स्थितियां ऋण चुकाने में अडचन पैदा करती हैं।

जो दिन ऋण लेने के लिए त्याज्य हैं वे ऋण को चुकाने के लिए अच्छे होते हैं।

*विभिन्न नक्षत्रों को विभिन्न योनियां दी गई हैं, जैसे कि अश्विनी एवं शतभिषज की अश्व योनि, रेवती एवं भरणी की गज योनि और इसी प्रकार अन्य नक्षत्रों की योनियां हैं। सभी नक्षत्रों की योनियों को विवाह के अध्याय में दिया गया है।

ऋण देने के लिए बुधवार का त्याग करें। बुधवार रुपये–पैसा जमा करने के लिए अच्छा होता है।

सरकारी सेवा प्रारम्भ करना:

सरकारी सेवा प्रारम्भ करने के लिए सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) सभी मृदु नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) को मंगलकारी माना जाता है। श्रवण और धनिष्ठा नक्षत्र भी स्वीकार्य होते हैं। रविवार*, बुधवार, गुरूवार, शुक्रवार और सोमवार अच्छे हैं। सप्तम भाव में बृहस्पति, 6वें भाव में शनि, 3रे, 10वें अथवा 11वें भाव में सूर्य एवं/अथवा मंगल और 4थे अथवा लग्न में शुक्र एवं/अथवा चन्द्रमा, सरकारी सेवा प्रारम्भ करने के लिए मंगलकारी माने जाते हैं। रिक्ता तिथियों (4/9/14)) और मंगलवार का त्याग करें।

ऊपरोक्त मुहूर्त्त का उपयोग अपनी सेवा के लिए सेवक रखने अथवा मालिक की सेवा प्रारम्भ करने के लिए भी किया जा सकता है। यदि मालिक एवं सेवक के राशियों के स्वामियों में मित्रता होती है और योनि मिलान ठीक प्रकार से होता है, जैसा कि अध्याय 6 में बताया है, तो यह एक अच्छी स्थिति होती है। (योनि मिलान दोनों के प्रचलित नामों के आधार पर होना चाहिए।)

मालिक का नक्षत्र, सेवक के नक्षत्र से पहले का नक्षत्र नहीं होना चाहिए जैसे कि यदि मालिक का पुनर्वसु नक्षत्र हो और सेवक का पुष्य नक्षत्र हो तो यह अच्छा नहीं माना जाएगा।

किसी भी प्रकार की सेवा में शामिल होने के समय लग्न और 10वें भाव के बल का आंकलन अवश्य करना चाहिए। सही चन्द्र शुद्धि (अर्थात जन्म चन्द्रमा से गोचर के चन्द्रमा की 4/8/12 भावों की स्थिति त्याग करके) और तारा शुद्धि (3/5/7वें तारे का त्याग करके) करनी चाहिए।

कुछ विद्वानों का मत है कि किसी भी जातक को व्यवसाय, आजीविका अथवा सेवा सम्बन्धित सभी कार्य–कलापों के लिए पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी, कृतिका, आर्द्रा, आश्लेषा और ज्येष्ठा नक्षत्रों, अशुभ योगों

---

* यद्यपि रविवार को अवकाश होता है लेकिन यदि किसी अन्य दिन भी कोई सूर्य की होरा का चयन करता है तो वह भी सही समय होगा।

(वैधृति, व्यतिपात आदि), अशुभ तिथियों (रिक्ता तिथियां), मंगलवार, बुधवार और शनिवार** को त्यागना चाहिए।

खेत जुताईः

मूल, विशाखा, मघा, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिशज, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी एवं पुष्य नक्षत्रों, सोमवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार; रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां), 6वीं तिथि और अमावस्या (30वीं तिथि) को छोड़कर सभी तिथियों को खेतों की जुताई सम्बन्धित कार्यों को प्रारम्भ करने के लिए अच्छा माना जाता है। भद्रा और 1/4/5/7/10/11 राशियों के लग्नों का त्याग करें। खेती की जुताई के समय यदि पापी ग्रह निर्बल हों, शुक्र एवं चन्द्रमा बली हों, चन्द्रमा जल तत्व राशि के नवांश में हो (अर्थात 4/8/12 राशियों के नवांश में हो) और बृहस्पति लग्न में स्थित हो तो यह स्थिति अत्यधिक मंगलकारी मानी जाती है। किसान् के लिए सही चन्द्र शुद्धि होना भी आवश्यक है। जुताई का कार्य उत्तर दिशा से प्रारम्भ करना श्रेष्ठ होता है।

बीज बुआईः

मूल, मघा, स्वाति, धनिष्ठा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी एवं पुष्यु नक्षत्र, सोमवार, बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार और 1/2/3/5/7/8/10/11/12/13/15 तिथियां बीज बुआई के लिए अच्छी होती हैं। भद्रा का त्याग करना चाहिए।

फसल कटाईः

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा, पूर्वाभाद्रपद, हस्त, कृतिका, धनिष्ठा, श्रवण, मृगशिरा, स्वाति, मघा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, पूर्वाषाढ़ा, भरणी, चित्रा एवं पुष्य नक्षत्रों, मंगलवार एवं शनिवार को छोड़कर सभी वारों को, 1/2/3/5/6/7/8/10/11/12/13/15 तिथियों और स्थिर राशियों (2/5/8/11) के लग्नों को फसल कटाई के लिए अच्छा माना जाता है।

** कालिदास, ज्योतिर्विदाभरणम् अध्याय 19, श्लोक संख्या 50।

हाथ से अथवा मशीनों द्वारा अन्न निकालना:

हाथ से अथवा आधुनिक मशीनों द्वारा, बालियों से अन्न अलग करने के लिए पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, श्रवण, मघा, ज्येष्ठा, रोहिणी, मूल, अनुराधा और रेवती नक्षत्र अच्छे होते हैं।

मुर्गी पालन:

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, स्वाति, पुनर्वसु, ज्येष्ठा, अश्विनी, आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी नक्षत्रों और शनिवार एवं मंगलवार को छोड़कर सभी वारों को मुर्गी पालन प्रारम्भ करने के लिए अच्छा माना जाता है। भद्रा, रिक्ता तिथियों और अशुभ योगों का त्याग करें।

मछली पालन:

शतभिषज, स्वाति, रोहिणी, पूर्वाषाढ़ा, भरणी एवं हस्त नक्षत्रों और मंगलवार, रविवार एवं शुक्रवार को मछली पालन प्रारम्भ करने अर्थात मछलियों को तालाब में डालने के लिए अच्छा माना जाता है। भद्रा, रिक्ता तिथियों और अशुभ योगों का त्याग करें।

बन्दरों और हिरणों को पालतू बनाने हेतु:

आर्द्रा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं मृगशिरा नक्षत्रों और सभी सौम्य वारों अर्थात सोमवार, बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार को बन्दरों एवं हिरणों को पालतू बनाने के लिए अच्छा माना जाता है। भद्रा, रिक्ता तिथियों और अशुभ योगों का त्याग करें।

हिंसक जानवरों को पालतू बनाने हेतु:

मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित, आर्द्रा, रोहिणी, ज्येष्ठा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा एवं पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रों और रविवार, मंगलवार, गुरूवार एवं शनिवार को हिंसक जानवरों (जैसे कि सिंह, बाघ आदि) को पालतू बनाने के लिए अच्छा माना जाता है।

गाय अथवा गाय के दूध सम्बन्धित व्यवसाय हेतुः

गाय अथवा गाय के दूध सम्बन्धित व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिए स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी नक्षत्र अच्छे होते हैं। साथ ही साथ शुभ दिन और शुभ तिथियां चुननी चाहिए।

भैंस, भेड़, बकरी आदि से सम्बन्धित व्यवसाय हेतुः

मूल, पुनर्वसु, पुष्य, शतभिषज, रेवती, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, धनिष्ठा एवं विशाखा नक्षत्रों और रविवार, सोमवार, शुक्रवार एवं शनिवार को भैंस, भेड़, बकरी आदि से सम्बन्धित व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिए अच्छा माना जाता है।

ऊंटों, घोड़ों, गधों और चिड़ियों सम्बन्धित व्यवसाय हेतुः

ऊंटों, घोड़ों, गधों और चिड़ियों से सम्बन्धित व्यवसाय को प्रारम्भ करने के लिए हस्त, ज्येष्ठा, अश्विनी, स्वाति, अनुराधा एवं पुनर्वसु नक्षत्र और रविवार, शुक्रवार एवं शनिवार अच्छे होते हैं।

वृक्षारोपण, बागवानी हेतुः

विशाखा, मूल, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, शतभिषज, हस्त, अश्विनी एवं पुष्य नक्षत्रों और रविवार, गुरूवार एवं शुक्रवार को, वृक्षारोपण एवं बागवानी के लिए अच्छा माना जाता है।

पेड़ लगाने के समय सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनें। सूर्य के नक्षत्र से प्रथम तीन नक्षत्र अशुभ होते हैं, अगले तीन शुभ, अगले छः अशुभ, अगले तीन शुभ, अगले छः अशुभ और अगले छः शुभ होते हैं। इसको दूसरे शब्दों में कहा जाए तो सूर्य के नक्षत्र से गिनने पर 4था, 5वां, 6वां, 13वां, 14वां, 15वां, 22वां, 23वां, 24वां, 25वां, 26वां और 27वां नक्षत्र, पेड़ लगाने का कार्य प्रारम्भ करने के लिए शुभ होता है।

फलों, फूलों, अनाज और अन्य कृषि उत्पादों के भण्डारण हेतुः

कृषि उत्पादों, फलों, फूलों, रसों और दवाई बनाने में प्रयोग आने वाले पौधों को लम्बे समय तक भण्डार में रखने के लिए सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी मित्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज) अच्छे होते हैं। भद्रा, अमावस्या एवं रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां) और अशुभ योगों का त्याग करें। रविवार, गुरूवार और शुक्रवार अच्छे होते हैं।

सामान्य रुप से सभी कृषि सम्बन्धित कार्यों हेतुः

सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी मित्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और पुरुष संज्ञक राशियों (1/3/5/7/9/11 राशियां) के लग्न, जिनके 4थे एवं 10वें भाव में शुभ ग्रह हों सभी कृषि सम्बन्धित सामान्य कार्यों के लिए अच्छे हैं।

केन्द्र में बृहस्पति, द्वितीय भाव में बुध, एकादश भाव में शुभ ग्रह और छठे भाव में अशुभ ग्रहों की स्थिति कृषि सम्बन्धित कार्यों में सफलता सुनिश्चित करती है।

सामान्य रुप से सभी व्यवसायिक कार्यों हेतुः

सामान्य रूप से सभी व्यवसायिक कार्यों के लिए सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), श्रवण, धनिष्ठा एवं पुनर्वसु नक्षत्रों को, शुभ दिनों (सोमवार, बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार) और शुभ तिथियों (1/2/3/5/7/10/11/ 13/15) को अच्छा माना जाता है। बली लग्न भाव, दशम भाव, द्वितीय भाव और एकादश भाव सफलता को सुनिश्चित करते हैं।

वाहनों सम्बन्धित कार्यों (निमार्ण, व्यवसाय आदि) हेतुः

सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), रोहिणी, ज्येष्ठा एवं विशाखा नक्षत्रों, नन्दा, जया एवं पूर्णा

तिथियों (1/6/11/3/8/13/5/10/15 तिथियां), रविवार और 2/3/6/7/9/12 राशियों के लग्नों को वाहनों से सम्बन्धित सभी कार्यों अथवा व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिए अच्छा माना जाता है।

बहुमूल्य रत्नों सम्बन्धित कार्यों (तराशना, चमकाना) हेतुः

बहुमूल्य रत्नों के तराशने एवं चमकाने के लिए भरणी, कृतिका, धनिष्ठा, ज्येष्ठा, स्वाति, रोहिणी, चित्रा, आर्द्रा, मूल एवं विशाखा नक्षत्रों, मंगलवार, शनिवार एवं रविवार और स्थिर राशियों (2/5/8/11 राशियां) के लग्न अच्छे माने जाते हैं।

स्वर्ण एवं स्वर्ण आभूषणों सम्बन्धित कार्यों हेतुः

सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), साधारण नक्षत्र (विशाखा एवं कृतिका), सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), मृगशिरा एवं चित्रा नक्षत्र, रविवार, मंगलवार, गुरूवार एवं शुक्रवार और 1/2/5/7/8/9/12 राशियों के लग्न जिनमें बृहस्पति एवं चन्द्रमा बली होकर स्थित हों, स्वर्ण सम्बन्धित सभी कार्यों के लिए अच्छे माने जाते हैं।

ऊपरोक्त मुहूर्त को चांदी के आभूषण सम्बन्धित निमार्ण/व्यवसाय के कार्यों, नकली आभूषणों और ऐसे ही उन सभी कार्यों के लिए भी प्रयोग किया जा सकता है क्योंकि आधारभूत रुप से ऊपरोक्त मुहूर्त स्वर्णकार के कार्यों के लिए है।

लेखकों के लिएः

सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), मूल, हस्त, चित्रा, मृगशिरा एवं आर्द्रा नक्षत्र, 2/3/5/6/10/11/12 तिथियां, बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार और पुरुष संज्ञक राशियों (1/3/5/7/9/11 राशियां) के लग्न को लेखन कार्य के लिए अच्छा माना जाता है। केन्द्र भावों (1/4/7/10 भाव) में बृहस्पति, द्वितीय भाव में बुध, शुभ ग्रह एकादश भाव में और पापी ग्रहों की छठे भाव की स्थिति, लेखन कार्य प्रारम्भ करने के लिए अच्छी मानी जाती है।

नाईयों के लिए:

सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं ज्येष्ठा नक्षत्रों को नाईयों द्वारा अपना व्यवसाय प्रारम्भ करने के लिए अच्छा माना जाता है। सही तारा शुद्धि (3/5/7 तारों को त्यागना) करनी चाहिए और अशुभ तिथियों, योगों एवं प्रातः काल के समय का भी त्याग करें।

मालियों के लिए:

सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), पूर्वाषाढ़ा, अश्विनी, पुष्य, मघा, चित्रा एवं मृगशिरा नक्षत्र, सोमवार, गुरूवार एवं शुक्रवार और पुरुष संज्ञक राशियों के लग्न जिनके केन्द्र में शुभ ग्रह स्थित हों, बागवानी सम्बन्धित सभी कार्यों के लिए अच्छे माने जाते हैं।

कुम्हारों के लिए:

कुम्हारों को अपना कार्य प्रारम्भ करने के लिए सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), पुनर्वसु, हस्त, ज्येष्ठा, श्रवण, स्वाति एवं रोहिणी नक्षत्रों, रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार, चर राशियों (1/4/7/10 राशियां) के लग्न, शनि की जल तत्व राशि में स्थिति और शुभ ग्रहों की केन्द्र भावों में स्थिति को अच्छा माना जाता है।

कपड़ा बनाने (धागा कातना, बुनना आदि) हेतु:

सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), रोहिणी एवं ज्येष्ठा नक्षत्रों, रविवार, सोमवार, गुरूवार एवं शुक्रवार और रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां) को छोड़कर सभी तिथियों को सूत कातने, बुनने एवं कपड़े से सम्बन्धित कारखानों के सभी कार्यों के लिए अच्छा माना जाता है।

चित्रकारी के लिए:

चित्रकारी प्रारम्भ करने के लिए सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज),

मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा एवं पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रों और रविवार, सोमवार एवं शुक्रवार को अच्छा माना जाता है।

ऐसे कार्य जिनमें चमड़े का प्रयोग होता हैः

मृगशिरा, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, रेवती, विशाखा, ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल, धनिष्ठा, हस्त एवं चित्रा नक्षत्र और रविवार, शुक्रवार एवं शनिवार, चमड़े सम्बन्धित सभी कार्यों को प्रारम्भ करने के लिए अच्छे माने जाते हैं।

उन सभी कार्यों के लिए जिनमें जानवरों, पक्षियों आदि को मारना शामिल होता है (जैसे कि मीट की दुकान खोलना आदि):

वधकर्म अर्थात जानवरो, पक्षियों को मारने के लिए सभी तीक्ष्ण नक्षत्रों (ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा एवं आश्लेषा), पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, स्वाति, विशाखा, शतभिषज एवं भरणी नक्षत्र, पापी / क्रूर ग्रहों के वार (रविवार, मंगलवार, शनिवार), क्रूर ग्रहों के ऐसे लग्न (1 / 5 / 8 / 10 / 11 राशियों के लग्न) जिनमें पापी / क्रूर ग्रह एकादश भाव में हों, अच्छा माना जाता है।

उन सभी कार्यों के लिए जिनमें पत्थर, ईंट आदि का शामिल होते हैः

सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), मृगशिरा, रेवती, चित्रा, ज्येष्ठा, श्रवण, विशाखा एवं कृतिका नक्षत्र और रविवार, गुरूवार एवं शुक्रवार उन सभी कार्यों के लिए अच्छे माने जाते हैं जिनमें पत्थर, ईंट एवं इसी प्रकार की अन्य चीजों का प्रयोग शामिल होता है।

चोरी, डकैती और इसी प्रकार के कार्यों हेतुः

पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, सभी तीक्ष्ण नक्षत्र (ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा एवं आश्लेषा), मघा नक्षत्र को छोड़कर सभी उग्र नक्षत्र (तीनों पूर्वा एवं भरणी), चित्रा एवं विशाखा नक्षत्र और रिक्ता एवं जया तिथियां (4 / 9 / 14 / 3 / 8 / 13) चोरकर्म अर्थात चोरी डकैती आदि कार्यों के लिए अच्छी मानी जाती हैं।

मदिरा बनाने और बेचने हेतुः

सभी तीक्ष्ण नक्षत्रों (ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा एवं आश्लेषा), सभी उग्र नक्षत्रों (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा) और शतभिषज नक्षत्र को मदिरा बनाने और बेचने के लिए अच्छा माना जाता है।

हथियार एवं गोला–बारुद बनाने और बेचने हेतुः

सभी तीक्ष्ण नक्षत्रों (ज्येष्ठा, मूल, आर्द्रा एवं आश्लेषा), सभी उग्र नक्षत्रों (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा), अश्विनी, मृगशिरा, विशाखा और कृतिका नक्षत्र को हथियार एवं गोला–बारुद बनाने और बेचने के लिए अच्छा माना जाता है।

नृत्य कर्म (नाच सीखने अथवा नाच का मंचन) हेतुः

सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, हस्त, धनिष्ठा, शतभिषज, ज्येष्ठा और पुष्य नक्षत्रों को नाच सीखने और मंच पर नाच प्रस्तुत करने के लिए अच्छा माना जाता है। बुध की राशियों का लग्न (3/6 राशियां) जिसमें चन्द्रमा एवं बुध लग्न में हो और चतुर्थ भाव शुभ ग्रह युक्त हो, अच्छा माना जाता है।

झूठ पकड़ने वाली मशीन में लोगों के परीक्षण हेतुः

जन्म नक्षत्र से 1ले, 10वें, 16वें, 18वें, 23वें एवं 25वें नक्षत्र का परित्याग करते हुए हस्त, श्रवण, पूनर्वसु, ज्येष्ठा एवं शतभिषज नक्षत्र को चोरों, अपराधियों आदि का झूठ पकड़ने वाली मशीन द्वारा परीक्षण करने अथवा ऐसे लोगों से पूछताछ करने के लिए अच्छा माना जाता है। भद्रा, 8वीं एवं 14वीं तिथियों, शनिवार, मंगलवार, जन्ममाह और सूर्य एवं चन्द्रमा की जन्मचन्द्रमा से अष्टम भाव की स्थिति का त्याग करें। इसके लिए चर अथवा द्विस्वभाव राशियों के लग्न और नवांश का चयन करना चाहिए। गोचर के चन्द्रमा एवं बृहस्पति के बल को आवश्यक रुप से सुनिश्चित करना चाहिए और सही तारा शुद्धि भी की जानी चाहिए।

अध्याय 10

गृह निर्माण और गृह–प्रवेश

गृह निर्माण की समस्या कुछ जटिल है अतः इसकी विवेचना निम्नलिखित क्रम में करनी चाहिए।

1. एक घर का शुभ और अशुभ स्वभाव।
2. नींव की खुदाई और निर्माण के लिए सही समय का चयन।

घर का शुभ और अशुभ स्वभावः

यह बहुत ही जटित क्षेत्र है और यहां इसकी चर्चा संक्षेप में की गई है। इसमें अधिकतर गणनायें भूमि के आकार और क्षेत्रफल पर आधारित होती हैं जिसे पिण्ड कहा जाता है। निम्नलिखित इकाइयों को लें:

6 अक्षत (चावल का एक साबुत दाना) की लम्बाई के बराबर एक अंगुल की लम्बाई होती है।

24 अंगुल की लम्बाई एक हस्त (हाथ) होती है। सामान्यतः एक हस्त (हाथ) 18 इंच के बराबर लिया जाता है।

4 हस्त की लम्बाई एक धनुष के बराबर होती है। (यदि एक हस्त = 18 इंच तो एक धनुष 3 फुट का होगा)

जिस भूमि के टुकड़े पर कोई जातक मकान का निर्माण करना चाहता है उसकी लम्बाई और चौड़ाई को धनुष एवं अंगुलियों में नापकर उसके क्षेत्रफल की गणना करें।

क्षेत्रफल = लम्बाई x चौड़ाई

इस प्रकार प्राप्त क्षेत्रफल 'पिण्ड' कहलाता है और यह अन्य गणनाओं का आधार बनेगा। इस गणना को उदाहरण से समझने के लिए हम एक 1350 धनुष (45 ग 30 धनुष का भूमि का टुकडा) का पिण्ड लेते हैं।

(क) आय की गणनाः

भूमि के पिण्ड को 9 से गुना करके प्राप्त गुणनफल को 8 से भाग दें, जो शेषफल आएगा वह आय दर्शायेगा। शेषफल के अंक पर आधारित अलग–अलग आयों के नाम इस प्रकार से हैं:

1. ध्वज,
2. धूम्र (धूम),
3. सिंह,
4. श्वान,
5. वृषभ (वृष),
6. गर्दभ (खर),
7. गज (हस्ती),
8. ध्वंस (ध्वाङ्क्ष)।

इन आठों प्रकार की आयों में से विषम संख्या की आय अर्थात 1. ध्वजा, 3. सिंह 5. वृषभ और 7. गज आय को शुभ माना जाता है और अन्यों को अशुभ माना जाता है।

अन्य प्रकार से आय की शुभता का निर्णय दरवाजे की दिशा के आधार पर भी होगा। 'ध्वजा आय' सभी दिशाओं के लिए शुभ है, 'सिंह आय' पश्चिम दिशा को छोड़कर सभी दिशाओं के लिए शुभ है, 'गज आय' तभी शुभ है जब दरवाजा पश्चिम दिशा की ओर हो और 'वृषभ आय' तब शुभ है जब दरवाजे का मुंह पूरब दिशा की ओर होता है।

इसके अतिरिक्त ध्वजा ब्राह्मणों के लिए, सिंह क्षत्रियों के लिए, गज वैश्यों के लिए और वृषभ शूद्रों के लिए मंगलकारी माना जाता है।

उदाहरणः पिण्ड 1350 धनुष लेने पर।

आय = 1350 x 9 = 12150,

12150 / 8 = 1518 और शेषफल 6 बचता है।

अतः आय, गर्दभ आय आती है जो अशुभ आय है।

(ख) घर का नक्षत्रः

पिण्ड को 8 से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग दें, शेषफल की संख्या अश्विनी नक्षत्र से गिनने पर घर के नक्षत्र को बतायेगी।

ऊपरोक्त उदाहरण द्वारा नक्षत्र की गणना

घर का नक्षत्र = 1350 x 8 = 10800,

10800 / 27 = 400 और शेषफल 0 अर्थात 27 बचता है।

अतः घर का नक्षत्र अश्विनी से 27वां नक्षत्र अर्थात रेवती नक्षत्र है।

टिप्पणीः

1. यदि गृहस्वामी का नक्षत्र और घर का नक्षत्र एक ही होता है तो यह बहुत ही अशुभ होता है।
2. घर का नक्षत्र, गृहस्वामी के नक्षत्र से पहले का नक्षत्र नहीं होना चाहिए। उदाहरणतः यदि घर का नक्षत्र मृगशिरा है और गृहस्वामी का नक्षत्र आर्द्रा है तो यह अतिअशुभ है।
3. गृहस्वामी के नक्षत्र और घर के नक्षत्र का मिलान उसी प्रकार से किया जाता है जिस प्रकार विवाह के लिए होता है लेकिन इसमें नाड़ी दोष अशुभ नहीं माना जाता है। इसमें दोनों की एक ही नाड़ी होने पर, नाड़ी मिलान वहुत ही शुभ माना जाता है। शास्त्रानुसारः

   सर्व विवाह् वर्ज्ययें, विपरीता तु नाड़िका।
   एका नाड़ी यदा याति, हन्यत्सर्व न चिन्तयेत।।

(ग) व्ययः

ऊपरोक्त प्रकार से प्राप्त घर के नक्षत्र की संख्या को 8 से भाग करें, जो शेषफल आएगा वह घर के व्यय को सूचित करेगा। व्यय को, आय से कम होना चाहिए। हमारे उदाहरण में नक्षत्र की संख्या 27 है, इसको 8 से भाग करने पर 3 शेषफल आता है। अतः घर का व्यय 3 है। आय गणना करने पर 6 आई थी, अतः घर की आय, व्यय से अधिक है जो अच्छी स्थिति है।

(च) द्रव्य (सम्पति) और ऋणः

पिण्ड को 8 से गुणा करें और गुणनफल को 12 से भाग करें, जो शेषफल आएगा वह द्रव्य (सम्पति) को सूचित करेगा।

पिण्ड को 3 से गुणा करें और गुणनफल को 7 से भाग करें, जो शेषफल आएगा वह ऋण को सूचित करेगा।

इस प्रकार की गणना से प्राप्त द्रव्य, ऋण से अधिक होना चाहिए।

उदाहरणः

द्रव्य = 1350 x 8 = 10800,

10800 / 12 = 900 और शेषफल 0 अर्थात 12 आता है। अतः द्रव्य 12 है।

ऋण = 1350 x 3 = 4050

4050 / 7 = 578 और शेषफल 4 आता है। अतः ऋण 4 है।

चूंकि घर का द्रव्य, ऋण से अधिक है अतः यह शुभ है।

(छ) घर की आयुः

पिण्ड को 8 से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 120 से भाग करें, जो शेषफल आएगा वह घर की आयु को बतायेगा। घर की आयु जितनी अधिक होगी वह घर उतना ही शुभ माना जाता है।

उदाहरणः

घर की आयु 1350 x 8 = 10800,

10800 / 120 = 90 और शेषफल 0 अर्थात 120 आता है।

120 साल अधिकतम आयु है जो बहुत ही अच्छी है।

(छ) वार, तिथि, योगः

पिण्ड को 9 से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 7 से भाग करें, शेषफल की संख्या रविवार से गिनने पर वार अथवा दिन को बतायेगी।

पिण्ड को 8 से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 15 से भाग करें, शेषफल की संख्या तिथि को बतायेगी।

पिण्ड को 4 से गुणा करें और प्राप्त गुणनफल को 27 से भाग करें, शेषफल की संख्या विषकुंभ से गिनने पर योग को बतायेगी।

यदि वार, तिथि और योग शुभ हों तो यह बहुत ही मंगलकारी माना जाता है।

उदाहरणः

वारः 1350 x 9 = 12150, 12150 / 7 = 1735 और शेषफल 5 आता है। अतः वार, गुरूवार होगा।

तिथिः 1350 x 8 = 10800, 10800 / 15 = 720 और शेषफल 15 आता है। अतः तिथि पूर्णा होगी।

योगः 1350 x 4 = 5400, 5400 / 27 = 200 और शेषफल 0 आता है। अतः वैधृति योग होगा।

यहां वार और तिथि शुभ हैं, जबकि योग अशुभ है।

ऊपरोक्त सभी गणनाओं को करने के पश्चात यह देखना चाहिए कि शुभ प्रभाव अधिक हैं अथवा अशुभ प्रभाव अधिक हैं। यदि अशुभ प्रभाव अधिक हों तो ऐसे पिण्ड का त्याग करना ही अच्छा होगा और अन्य पिण्ड के विषय में सोचना चाहिए।

कुछ अन्य विचारणीय विषयः

जिस गांव अथवा नगर में जातक बसना चाहता है उसको आठ भागों में विभाजित करें, आठ भाग अर्थात आठ दिशायें और नवां केन्द्र का क्षेत्र। जिन जातकों की चन्द्र राशि वृषभ, सिंह, मकर और मिथुन होती है उनको गांव अथवा नगर के केन्द्र में वास नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार वृश्चिक राशी वालों को पूर्व दिशा, मीन राशी वालों को दक्षिण–पूर्व दिशा, कन्या राशी वालों को दक्षिण दिशा, कर्क राशी वालों को दक्षिण–पश्चिम दिशा, धनु राशी वालों को पश्चिम दिशा, तुला राशी वालों को उत्तर–पश्चिम दिशा, मेष राशी वालों को उत्तर दिशा और कुंभ राशी वालों को उत्तर–पूर्व दिशा को त्यागना चाहिए।

गृह–निर्माणः

घर के निर्माण में किए जाने वाले बहुत सारे कार्य–कलाप होते हैं जैसे कि नींव रखने के लिए खुदाई करना, नींव रखना, घर का निर्माण प्रारम्भ करना, छत रखना, दरवाजे लगाना और इसी प्रकार अन्य कार्य। यहां एक–एक करके प्रत्येक कार्य के लिए मुहूर्त चयन करने की प्रक्रिया को बताने का प्रयास किया गया है।

(अ) नींव रखने के लिए खुदाईः

यह केवल भूमि खोदने से सम्बन्धित है और यथार्थ में नींव रखने से भिन्न है। इसके लिए निम्नलिखित का विचार करना आवश्यक होता है:

(1) जब सूर्य सिंह, कन्या एवं तुला राशियों में गोचर करता है उस समय खुदाई अग्नि कोण (दक्षिण–पूर्व दिशा) से, जब सूर्य वृश्चिक, धनु एवं मकर राशियों में गोचर करता है उस समय खुदाई ईशान कोण (उत्तर–पूर्व दिशा) से, जब सूर्य कुंभ, मीन एवं मेष राशियों में गोचर करता है उस समय वायव्य कोण (उत्तर–पश्चिम दिशा) से और जब सूर्य वृषभ, मिथुन एवं कर्क राशियों में गोचर करता है उस समय खुदाई नैऋत्य कोण (दक्षिण–पश्चिम दिशा) से प्रारम्भ करनी चाहिए। यह राहु–मुख अथवा 'शेषनाग' का विचार करना कहलाता है। इसके लिए निम्नलिखित चक्र का अवलोकर करें।

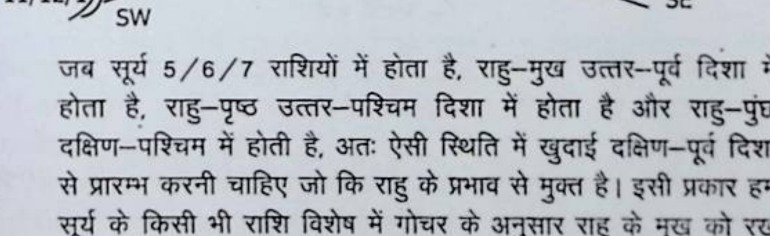

जब सूर्य 5/6/7 राशियों में होता है, राहु–मुख उत्तर–पूर्व दिशा में होता है, राहु–पृष्ठ उत्तर–पश्चिम दिशा में होता है और राहु–पुंछ दक्षिण–पश्चिम में होती है, अतः ऐसी स्थिति में खुदाई दक्षिण–पूर्व दिशा से प्रारम्भ करनी चाहिए जो कि राहु के प्रभाव से मुक्त है। इसी प्रकार हम सूर्य के किसी भी राशि विशेष में गोचर के अनुसार राहु के मुख को रख सकते हैं और यह ज्ञात कर सकते हैं कि कौन सी दिशा राहु के प्रभाव में नहीं है।

2. किसी भी स्थिति में भूमि की खुदाई तब नहीं करनी चाहिए जब पृथ्वी सो रही होती है। यह कहा जाता है कि पृथ्वी, सूर्य संक्रान्ति से 5वें, 7वें, 9वें, 10वें, 21वें और 24वें दिन सोती है।

   दूसरी स्थिति में जिस दिन चन्द्रमा का नक्षत्र, सूर्य के नक्षत्र से 5वां, 7वां, 9वां, 12वां, 19वां अथवा 26वां होता है तो उस दिन पृथ्वी सोती है और उस दिन विशेष में भूमि की खुदाई नहीं करनी चाहिए।

3. खुदाई के लिए, नीचे की ओर देखने वाले नक्षत्रों मूल, आश्लेषा, विशाखा, कृतिका, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा और निर्माण करने के लिए सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), मृदु नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), शतभिषज, स्वाति, धनिष्ठा, हस्त और पुष्य को शुभ माना जाता है। शुभ तिथियों, शुभ योगों और चर लग्नों (1/4/7/10 राशियों के लग्न) को शुभ माना जाता है। चुना गया नक्षत्र मंगल और शनि से युत नहीं होना चाहिए।

(आ) नींव रखनाः

नींव रखना, नींव खोदने से भिन्न है। अधिकतर शास्त्रीय ग्रन्थ नींव का पत्थर रखने के लिए उत्तर–पूर्व (ईशान कोण) अथवा दक्षिण–पूर्व (आग्नेय कोण) दिशा का अनुमोदन करते हैं।

दक्षिण पूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत प्रथमम् ।
शेषाः प्रदक्षिणेन स्तम्भाः चैव समुत्थाप्याः ।।
– वृहत् संहिता 52/110

ततः पुण्याह घोषेण शिलान्यासं प्रकल्पयेत् ।
ऐशानमादितः कृत्वा प्राग्दाक्षिण्येन विन्यसेत् ।।
– महर्षि गर्ग

नींव रखने के लिए सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) सर्वश्रेष्ठ होते हैं। इनके अतिरिक्त निर्माण के लिए अनुमोदित अन्य नक्षत्र जैसे कि मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, शतभिषज, स्वाति, धनिष्ठा, हस्त और पुष्य नक्षत्र भी अच्छे होते हैं। किसी भी जातक को शुभ तिथि, योग और स्थिर लग्न का चयन करना चाहिए। मंगलवार के अतिरिक्त सभी दिन शुभ होते हैं।

स्तंभ रोपण अर्थात खम्भे खडे करने के लिए ऊपर की ओर देखने वाले नक्षत्रों (आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद और रोहिणी) को मंगलकारी माना जाता है।

(इ) निर्माण प्रारम्भ करना:

1. मास: फाल्गुन, श्रावण, मार्गशीर्ष, पौष और वैशाख चन्द्रमास भी अच्छे होते हैं बशर्ते सूर्य द्विस्वभाव राशियों (3,6,9,12 राशियां) में गोचर न कर रहा हो।

   कुछ शास्त्रविदों (आचार्यो) जैसे कि कालिदास का यह मत है कि क्षेत्र विशेष में प्रचलित रिवाजों के अनुसार चन्द्रमास एक शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से दूसरी शुक्लपक्ष की प्रतिपदा तक अथवा एक पूर्णमासी से दूसरी पूर्णमासी तक हो सकता है,* जबकि मुहूर्त चिन्तामणि में राम दैवज्ञ कृष्णपक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाले चन्द्रमास अर्थात पूर्णमासी से पूर्णमासी तक के चन्द्रमास का ही अनुमोदन करते हैं।**

   कुछ अन्य शास्त्रमर्मज्ञों (आचार्यों) का मत है कि चन्द्रमास चैत्र जब सूर्य मेष राशि में हो, चन्द्रमास ज्येष्ठ जब सूर्य वृषभ राशि में हो, चन्द्रमास आषाढ़ जब सूर्य कर्क राशि में हो, चन्द्रमास भाद्रपद जब सूर्य सिंह राशि में हो, चन्द्रमास अश्विन जब सूर्य तुला राशि में हो, चन्द्रमास कार्तिक जब सूर्य वृश्चिक राशि में हो, चन्द्रमास पौष जब सूर्य मकर राशि में हो और चन्द्रमास माघ जब सूर्य मकर अथवा कुंभ राशि में हो, तो वह समय घर के निर्माण कार्य को प्रारम्भ करने के लिए मंगलकारी होता है। यहां भी पुनः इस बात पर बल दिया गया है कि उस समय विशेष को त्यागना चाहिए जब सूर्य मिथुन, कन्या, धनु अथवा मीन राशियों में गोचर करता है।

2. नक्षत्र: सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी मृदु नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), शतभिषज, स्वाति, धनिष्ठा, हस्त और पुष्य नक्षत्रों को घर के निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के लिए अच्छा माना जाता है। इनमें से

*कालिदास – ज्योतिर्विदाभरणम् अध्याय 16, श्लोक 5।

**राम दैवज्ञ, मुहूर्त्त चिन्तामणि अध्याय 12, श्लोक 16।

जो भी नक्षत्र चुना जाऐ उसमें कोई भी पापी ग्रह स्थित नहीं होना चाहिए और उसे सप्तशलाका चक्र (जिसकी अध्याय 6 में चर्चा की है) में पापी ग्रहों के वेध से भी पीड़ित नहीं होना चाहिए।

वास्तु चक्रः

सूर्य के नक्षत्र से गिनने पर प्रथम 7 नक्षत्र अशुभ होते हैं, अगले 11 नक्षत्र शुभ होते हैं और फिर अगले 10 नक्षत्र अशुभ होते हैं। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि शुभ परिणाम प्राप्त करने के लिए सूर्य द्वारा ग्रहीत नक्षत्र से 8वें, 9वें, 10वें, 11वें, 12वें, 13वें, 14वें, 15वें, 16वें, 17वें अथवा 18वें नक्षत्र को निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के लिए चुनना चाहिए। यह वास्तु चक्र शुद्धि भी कहलाता है।

3. तिथि, योग आदिः

रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां), अमावस्या और अष्टमी का त्याग करें। शेष सभी तिथियां अच्छी होती हैं।

भद्रा और अशुभ योगों का त्याग करें। मंगलवार सबसे अधिक अशुभ है। अन्य दिन अच्छे हैं। यहां तक कि स्थिर वार होने के कारण रविवार और धीमी गति के ग्रह का दिन होने के कारण शनिवार भी अच्छा माना जाता है।

4. लग्न शुद्धिः

चर राशियों (1/4/7/10 राशियां) के लग्न का त्याग करें। शुभ ग्रह 8वें एवं 12वें भाव को छोड़कर किसी भी भाव में बली होकर स्थित होने चाहिए। अशुभ ग्रहों को 3/6/11 भावों में होना चाहिए।

द्वार की दिशा के आधार पर अनुमोदित मास, नक्षत्र, तिथि आदिः

घर के द्वार की दिशा के आधार पर कुछ तिथियां, नक्षत्र, मास आदि अधिक अनुकूल अथवा प्रतिकूल हो जाते हैं। इसके लिए निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार करने की आवश्यकता होती हैः

यदि द्वार का मुख पूर्व अथवा पश्चिम दिशा में होता है तो कुंभ, कर्क, सिंह एवं मकर सौरमासों के साथ फाल्गुन, श्रावण एवं पौष चन्द्रमासों को श्रेष्ठ मानते

हैं। यदि द्वार का मुख उत्तर अथवा दक्षिण दिशा में होता है तो मेष, वृषभ, तुला एवं वृश्चिक सौरमासों के साथ वैशाख एवं मार्गशीष चन्द्रमासों को अधिक मंगलकारी माना जाता है। द्विस्वभाव राशियों में सूर्य सर्वदा वर्जित है।

जिन मकानों का द्वार का मुख पूर्व अथवा पश्चिम दिशा में होता है उनके लिए कृतिका नक्षत्र से सात नक्षत्र और अनुराधा से सात नक्षत्रों का त्याग करें क्योंकि ये या तो द्वार के आगे पड़ेंगे या द्वार के पीछे पडेंगे। इसी प्रकार जिन मकानों का द्वार उत्तर अथवा दक्षिण दिशा में होता है उनके लिए मघा से सात और धनिष्ठा से सात नक्षत्र का त्याग करें अर्थात उन नक्षत्रों का जो द्वार के बिल्कुल सामने पड़ते हैं और उन नक्षत्रों का जो द्वार के बिल्कुल विपरीत दिशा में पड़ते हैं त्याग करना चाहिये।

पूर्व

कृतिका रोहिणी मृग. आर्द्रा पुनर्वसु पुष्य आश्लेषा

भरणी		घा
अश्विनी		पू.फाल्गुनी
रेवती		उ.फाल्गुनी
उ.भाद्रपद	उत्तर —— दक्षिण	हस्त
पू.भाद्रपद		चित्रा
शतभिषज		स्वाति
धनिष्ठा		विशाखा

श्रवण अभिजित उ.षाढ़ा पू.षाढ़ा मूल ज्येष्ठा अनुराधा

पश्चिम

जिस मकान के द्वार का मुख पूर्व दिशा में होता है उसके लिए कृष्णपक्ष की नवमी से शुक्लपक्ष की चतुर्दशी, जिस मकान के द्वार का मुख दक्षिण दिशा में होता है उसके लिए अमावस्या से कृष्णपक्ष की अष्टमी, जिस मकान के द्वार का मुख पश्चिम दिशा में होता है उसके लिए शुक्लपक्ष की नवमी से कृष्णपक्ष की चतुर्दशी और जिस मकान के द्वार का मुख उत्तर दिशा में होता है उसके लिए पूर्णिमा से शुक्लपक्ष की अष्टमी को अच्छा माना जाता है और शेष तिथियों का त्याग करना चाहिए।

गृहस्वामी के ज़न्म चन्द्रमा से गोचर के ग्रहों की विवेचनाः

गोचर के चन्द्रमा का बली होना अतिआवश्यक है। गृहस्वामी के जन्म चन्द्रमा से गोचर के चन्द्रमा की 3/6/10/11/1/7 भावों की स्थिति और उच्च अथवा स्वराशि अथवा मित्रराशि की स्थिति को मंगलकारी माना जाता है। इसके बल का आंकलन अष्टकवर्ग के बिन्दुओं से भी किया जा सकता है।

यदि निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के समय चन्द्रमा कमजोर हो, अस्त हो, नीच का हो अथवा जन्म चन्द्रमा से अशुभ भावों (4/8/12) में स्थित हो तो इसे गृहस्वामी की भार्या के लिए अमंगलकारी माना जाता है। यदि निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के समय सूर्य कमजोर हो अथवा नीच का हो तो यह गृहस्वामी के लिए अच्छा नहीं होता है। इसी प्रकार यदि निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के समय बृहस्पति कमजोर हो तो यह गृहस्वामी के पुत्रों के लिए अच्छा नहीं होता है। निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के समय शुक्र की निर्बलता सम्पति की हानि का कारण बनती है। अतः मकान का निर्माण कार्य प्रारम्भ करने के समय सूर्य, चन्द्रमा, बृहस्पति और शुक्र के बल का विचार अवश्य करना चाहिए।

निर्माण के मुहूर्त से सम्बन्धित कुछ अन्य शुभाशुभ योगः

1. घर की आयु

   यदि निर्माण के लग्न में बृहस्पति हो, सूर्य छठें भाव में हो, बुध सप्तम भाव में हो, शुक्र चतुर्थ भाव में हो और शनि तृतीय भाव में हो तो उस घर की आयु बहुत लम्बी होती है।

   इसी प्रकार, निर्माण के लग्न में शुक्र, तृतीय भाव में सूर्य, छठें भाव में मंगल और पंचम भाव में बृहस्पति का होना घर की लम्बी आयु के लिए अच्छा होता है।

   लग्न में शुक्र, दशम में बुध, एकादश में सूर्य और केन्द्र में बृहस्पति, घर की आयु बढ़ायेंगे।

   चतुर्थ भाव में बृहस्पति, दशम भाव में चन्द्रमा और एकादश भाव में मंगल एवं शनि भी घर की लम्बी आयु के लिए अच्छे माने जाते हैं।

2. सम्पति देने वाले योगः

   निर्माण के लग्न में उच्च का शुक्र स्थित हो।

निर्माण के लग्न कुंडली में चतुथ भाव में उच्च का बृहस्पति हो।

निर्माण के लग्न कुंडली में एकादश भाव मे उच्चं का शनि हो।

ऊपरोक्त तीनों योग गृहस्वामी हो सम्पति देंगे।

3. यदि निर्माण कार्य प्रारम्भ होने के समय कोई ग्रह शत्रु नवांश का होकर सप्तम अथवा दशम भाव में स्थित हो और वर्णस्वामी* निर्बल हो तो गृहस्वामी एक वर्ष के अन्दर घर का अधिकार खो देगा।

4. यदि बृहस्पति –उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, पुष्य, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा अथवा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में स्थित हो और यदि निर्माण कार्य गुरूवार को प्रारम्भ होता है तो यह योग घर में रहने वालों को सामर्थ्य और सन्तति देगा।

5. यदि शुक्र –अश्विनी, चित्रा, विशाखा, आर्द्रा, धनिष्ठा अथवा शतभिषज नक्षत्र में स्थित हो और निर्माण कार्य शुक्रवार को प्रारम्भ हाता है तो यह योग गृहस्वामी को सम्पति और समृद्धि देता है।

6. यदि मंगल –हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ा अथवा मूल नक्षत्र में स्थित हो और निर्माण कार्य मंगलवार को प्रारम्भ होता है तो यह योग गृहस्वामी के बच्चों के लिए परेशानी का कारण बनेगा और ऐसा घर आग से सम्बन्धित हानि के लिए उद्यत होगा।

   मंगलवार अपने आप में ही निर्माण प्रारम्भ करने के लिए अशुभ माना जाता है और यदि मंगल भी ऊपरोक्त नक्षत्रों में स्थित हो तो यह अशुभता की वृद्धि करेगा।

7. यदि बुध –अश्विनी, रोहिणी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा अथवा हस्त नक्षत्र में स्थित हो और निर्माण कार्य बुधवार को प्रारम्भ होता है तो यह योग गृहस्वामी को खुशियां और सन्तति देगा।

8. यदि शनि –पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, ज्येष्ठा, अनुराधा, स्वाति अथवा भरणी नक्षत्र में स्थित हो और निर्माण कार्य शनिवार को प्रारम्भ होता है तो यह योग बुरी आत्माओं से भय देगा।

---

*ब्राह्मणों के लिए शुक्र एवं बृहस्पति, क्षत्रियों के लिए सूर्य एवं मंगल, वैश्यों के लिए चन्द्रमा, शूद्र के लिए बुध और इन जातियों से बाहर के लोगों के लिए शनि को वर्ण स्वामी लिया जाता है।

*राम देवज्ञ, मुहूर्त्त चिन्तामणी अध्याय 5, श्लोक 43।

(ई) छत डालनाः

किसी भी मकान की छत डालने में कम अथवा अधिक जो भी हो सामान्यतः उन सभी का विचार किया जाता है जिनका विचार निर्माण के लिए किया जाता है। छत डालने के लिए नक्षत्र पंचक को विशेषकर त्यागा जाता है अर्थात धनिष्ठा के अन्तिम चरण को, शतभिषज, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती नक्षत्र को पूर्ण रुप से त्यागना चाहिए।

(उ) द्वार की दिशा और द्वार स्थापनः

कपाट अथवा मुख्य द्वार की दिशाः

कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशियों में जन्मे जातको के लिए पूर्वी दिशा के द्वार को; वृषभ, कन्या एवं मकर राशियों राशियों में जन्मे जातको के लिए दक्षिणी दिशा के द्वार को; मिथुन, तुला एवं कुंभ राशियों में जन्मे जातको के लिए पश्चिमी दिशा के द्वार को और मेष, सिंह एवं धनु राशियों राशियों में जन्मे जातको के लिए उत्तरी दिशा के द्वार को मंगलकारी माना जाता है। यहां द्वार का अभिप्राय मुख्य द्वार से है।

कुछ ज्योतिषमर्मज्ञ 5/8/12 राशियों में जन्मे जातकों के लिए पूर्व, 4/6/1. राशियों में जन्मे जातकों के लिए दक्षिण, 3/7/9 राशियों में जन्मे जातकों के लिए पश्चिम और 1/2/11 राशियों में जन्मे जातकों के लिए उत्तर दिशा को, मुख्यद्वार के लिए मंगलकारी दिशा मानते हैं।*

द्वार लगाने का समयः

द्वार की स्थापना के लिए सभी मित्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), ज्येष्ठा, स्वाति और पुंनर्वसु नक्षत्र को, शुभ दिनों को (सोमवार, बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार) और 3/6/2/5/8/11 राशियों का लग्न जिसके केन्द्र में शुभ ग्रह हों, मंगलकारी माना जाता है।

कुछ अन्य विचारणीय तथ्यः

द्वार की सही दिशा का चुनाव करने के पश्चात, भूमि के पूर्वी दिशा में स्नानघर, दक्षिण–पूर्व दिशा में रसोइघर, दक्षिण–पश्चिम दिशा में शयन

* कालिदास –ज्योतिर्विदाभरणम् अध्याय 16, श्लोक 4।

कक्ष, पश्चिम दिशा में भोजन का कक्ष, उत्तर–पश्चिम दिशा में अनाज का संचय कक्ष, उत्तर दिशा में भण्डार और उत्तर–पूर्व दिशा में पूजा कक्ष का होना अधिक अच्छा होता है।

किसी भी घर में पूर्व एवं दक्षिण–पूर्व दिशा के मध्य में दूध–दही का संचय कक्ष, दक्षिण–पूर्व एवं दक्षिण दिशा के मध्य घी का संचय कक्ष, दक्षिण एवं दक्षिण–पश्चिम के मध्य टायलट, दक्षिण–पश्चिम एवं पश्चिम के मध्य अध्ययन कक्ष, पश्चिम एवं उत्तर–पश्चिम के मध्य रोने, दुःख प्रकट करने अथवा तनाव को दूर करने के लिए कक्ष, उत्तर–पश्चिम एवं उत्तर के मध्य शयन कक्ष, उत्तर एवं उत्तर–पूर्व के मध्य चिकित्सा कक्ष और उत्तर–पूर्व एवं पूर्व के मध्य भण्डार कक्ष होना मंगलकारी माना जाता है।

यदि किसी के पास भूमि और धन की अल्पता हो तो वह अपनी क्षमता के अनुसार निर्माण कर सकता है।

अल्पे शक्ति भुवो यथारुचि गृहं कुर्यात्

द्वार बनाने और लगाने के लिए:

घर के दरवाजे बनाने और लगाने के लिए सूर्य द्वारा ग्रहीत नक्षत्र से गिनने पर प्रथम चार नक्षत्र शुभ, अगले दो अशुभ, अगले चार शुभ, अगले दो अशुभ, अगले चार शुभ, अगले दो अशुभ, अगले चार शुभ और शेष पांच नक्षत्र अशुभ माने जाते हैं। दूसरे शब्दों में सूर्य द्वारा ग्रहीत नक्षत्र से गिनने पर 1/2/3/4/7/8/9/10/13/14/15/16/19/20/21/22वां नक्षत्र मंगलकारी माना जाता हैं।

(ओ) ऊपरी तल:

आजकल अधिकतर भवन बहुमंजिले होते हैं। भूतल से ऊपर के तलों के निर्माण के लिए श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज, हस्त, आर्द्रा, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, पुष्य, स्वाति एवं कृतिका नक्षत्र को; बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार; और शुभ योगों को मंगलकारी माना जाता है। 3/6/9/12/2/5/8/11 राशियों का लग्न जिसके केन्द्र में शुभ ग्रह और 3/6/10/11 भावों में पापी ग्रह हों मंगलकारी माना जाता है। गृहस्वामी के लिए उचित चन्द्र शुद्धि एवं/अथवा तारा शुद्धि होना आवश्यक है।

यदि कोई जातक अपने घर में कुआं अथवा भूमि से पानी निकालने के लिए हैंडपम्प लगवाना चाहता हो तो इसके लिए पूर्व, उत्तर–पूर्व, उत्तर एवं

पश्चिम दिशायें अधिक अच्छी होती हैं। अन्य दिशाओं में कुआं अथवा हैण्डपम्प आदि का होना अधिक अनुकूल नहीं होगा। दिनमान को चार बराबर भागों में विभक्त करें। किसी भी ऋतु में दिन के द्वितीय अथवा तृतीय भाग में घर की छाया कुंए पर नहीं पडनी चाहिए।

विभिन्न कक्षों के लिए अनुकूल दिशायें

उत्तर–पूर्व पूर्व दक्षिण–पूर्व

	पूजाकक्ष	भण्डार	स्नानघर	दूध–दही का भण्डार कक्ष	रसोइघर	
	चिकित्सा कक्ष				घी का भण्डार कक्ष	
उ त्त	भण्डार				शयन कक्ष	द क्षि
र	शयन कक्ष				प्रसाधन कक्ष (टायलट आदि)	ण
	अनाज का भण्डार कक्षं	रोने का कक्ष (कोप भवन)	भोजन का कक्ष	अध्ययन कक्ष	हथियार एवं आयुद्ध भण्डार	

उत्तर–पश्चिम पश्चिम दक्षिण–पश्चिम

उत्तर–पूर्व पूर्व दक्षिण–पूर्व

पूजाकक्ष	भण्डार	स्नानघर	दूध–दही का भण्डार कक्ष	रसोइघर
चिकित्सा कक्ष				घी का भण्डार कक्ष
भण्डार				शयन कक्ष
शयन कक्ष				प्रसाधन कक्ष (टायलट आदि)
अनाज का भण्डार कक्ष	रोने का कक्ष	भोजन का कक्ष	अध्ययन कक्ष	हथियार एवं आयुद्ध भण्डार

उत्तर–पश्चिम पश्चिम दक्षिण–पश्चिम

नव–निर्मित घर में प्रवेशः

नव निर्मित घर में प्रवेश करने के लिए निम्नलिखित विचार करना आवश्यक होता हैः

1. घर में प्रवेश से पहले मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा अथवा शतभिषज नक्षत्र में उचित 'वास्तु–पूजा' और 'हवन' करना चाहिए। पहले उचित धार्मिक प्रक्रियायें पूर्ण करनी चाहिए और इनको करने के पश्चात ही नव–निर्मित घर में प्रवेश करना चाहिए।

2. जब सूर्य उत्तरायण होते हैं अर्थात गोचर में मकर राशि से मिथुन राशि के बीच होते हैं और माघ, फाल्गुन, वैशाख एवं ज्येष्ठ चन्द्रमास चल रहा हो तो वह समय नव–निर्मित घर में गृह–प्रवेश के लिए मंगलकारी माना जाता है। जब बृहस्पति और शुक्र अस्त स्थिति में हो, बृहस्पति सिंहस्थ अथवा मकरस्थ हो तथा सूर्य मीन राशि में हो तो उस समय विशेष को त्यागना चाहिए।

3. सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और वे सभी नक्षत्र जो मुख्य द्वार की दिशा में पड़ते हैं, नव–निर्मित घर में गृह–प्रवेश के लिए शुभ माने जाते हैं।

   कृतिका से आश्लेषा तक के नक्षत्रों की पूर्व दिशा, मघा से विशाखा तक के नक्षत्रों की दक्षिण दिशा, अनुराधा से श्रवण तक के नक्षत्रों की पश्चिम दिशा और धनिष्ठा से भरणी तक के नक्षत्रों की उत्तर दिशा होती है। अतः घर के मुख्य द्वार की जो दिशा होती है उस की दिशा के नक्षत्र भी उस घर में गृह–प्रवेश के लिए अनुकूल होते हैं। उदाहरण के लिए किसी घर के मुख्य द्वार का मुख पश्चिम दिशा में हो तो अनुराधा से श्रवण तक के सभी नक्षत्र उस घर में गृह–प्रवेश के लिए अनुकूल होंगे।

4. 2/3/5/6/7/8/10/11/12/13/15 तिथियों को गृह–प्रवेश के लिए अच्छा माना जाता है। मंगलवार और रविवार को छोड़कर सभी वार शुभ होते हैं। भद्रा और क्रान्ति–साम्य का त्याग करें। (क्रान्ति–साम्य विवाह वाले अध्याय में बताया गया है)

5. स्थिर अथवा द्विस्वभाव राशियों के लग्न (2/5/8/11/3/6/9/12 राशियां) अथवा गृहस्वामी के जन्म चन्द्रमा से या लग्न से 3/6/10/11 भाव की राशियों के लग्न को गृह–प्रवेश के लिए शुभ माना जाता है। लग्न से 1/7/10/5/9/2/3/11 भावों में शुभ ग्रह, 3/6/11 भावों में पापी ग्रह हों और 4/8 भावों में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। लग्न की राशि गृहस्वामी के जन्म चन्द्रमा की राशि अथवा लग्न से अष्टम भाव की राशि नहीं होनी चाहिए।

6. जब जन्म कुण्डली का लग्नेश, नक्षत्रेश और दशास्वामी गोचर में निर्बल हों तो उस समय गृह–प्रवेश नहीं करना चाहिए। गोचर में चन्द्रमा का पापी ग्रहों से पीड़ित होना भी अनुकूल नहीं होता है।

7. गृहस्वामी के लिए उचित चन्द्र और तारा बल होना एक आवश्यक शर्त है। यदि कोई पूरे परिवार के सदस्यों के लिए ही चन्द्र और तारा बल का विचार करता है तो यह अधिक उत्तम स्थिति होती है।

कुछ अन्य विचारणीय बिन्दुः

सूर्य द्वारा गृहीत नक्षत्र से 6/7/8/9/10/11/12/13/22/23/24/25/26/27वां नक्षत्र मंगलकारी माना जाता है और अन्य नक्षत्रों को त्यागना चाहिए। यह 'कुंभ चक्र शुद्धि' भी कहलाता है।

गृह–प्रवेश लग्न से पूर्व मुखी मुख्य द्वार वाले घर के लिए सूर्य का 8/9/10/11/12 भावों में, दक्षिण मुखी मुख्य द्वार वाले घर के लिए सूर्य का 5/6/7/8/9 भावों में, पश्चिम मुखी मुख्य द्वार वाले घर के लिए सूर्य का 2/3/4/5/6 भावों में और उत्तर मुखी मुख्य द्वार वाले घर के लिए सूर्य का 11/12/1/2/3 भावों में होना मंगलकारी माना जाता है।

पूर्व मुखी घर में गृह–प्रवेश के लिए पूर्णा तिथियों (5/10/15) को, दक्षिण मुखी घर में गृह–प्रवेश के लिए नन्दा तिथियों (1/6/11) को, पश्चिम मुखी घर में गृह–प्रवेश के लिए भद्रा तिथियों (2/7/12) को और उत्तर मुखी घर में गृह–प्रवेश के लिए जया तिथियों (3/8/13) को अच्छा माना जाता है।

	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर
सूर्य की स्थिति सुनिश्चित करें	8/9/10/ 11/12 भावों में	5/6/7/ 8/9 भावों में	2/3/4/ 5/6 भावों में	11/12/1/ 2/3 भावों में
चुनी जाने वाली तिथियां	5/10/15 तिथियां	1/6/11 तिथियां	2/7/12 तिथियां	3/8/13 तिथियां

पुराने घर में प्रवेश के लिए:

पुराने घर अर्थात खरीदे घर, किराये के घर अथवा मरम्मत किये हुए घर में प्रवेश के लिए वैशाख, ज्येष्ठ, माघ, फाल्गुन, मार्गशीर्ष, कार्तिक और श्रावण चन्द्रमासों को मंगलकारी माना जाता है। यहां बृहस्पति एवं शुक्र के अस्त होने और बृहस्पति की सिंह अथवा मकर राशि की स्थिति का विचार करने की कोई आवश्यकता नहीं होती है।

तिथि, नक्षत्र लग्नादि अन्य सभी का विचार उसी प्रकार किया जाता है जिस प्रकार से इनका विचार नव–निर्मित घर में गृह–प्रवेश के लिए किया जाता है। जिन नक्षत्रों की अनुशंसा नव–निर्मित घर में प्रवेश करने के लिए की गई है, उनके अतिरिक्त शतभिषज, पुष्य, स्वाति और धनिष्ठा नक्षत्रों को भी पुराने घर में गृह–प्रवेश के लिए चुना जा सकता है।

अध्याय 11

यात्रा

यात्रा में, तय की जाने वाली दूरी, यात्रा के उद्देश्य अथवा यात्रा के लिए चुने गए मार्ग के आधार पर वर्गीकरण करने पर यात्रायें कई प्रकार की हो सकती हैं। तय की जाने वाली दूरी के आधार पर यात्रा को लम्बी यात्रा और छोटी यात्रा के रुप में वर्गीकृत किया जा सकता है। इसी प्रकार यात्रा, युद्ध के उद्देश्य के लिए, व्यापार के उद्देश्य के लिए, तीर्थ स्थानों में तीर्थ करने के लिए अथवा नियमित कार्यक्रम की हो सकती है। मार्ग के आधार पर यात्रा को स्थल यात्रा, समुद्री यात्रा अथवा वायु यात्रा में वर्गीकृत जा सकता है। नियमित कार्यक्रम के अनुसार की जाने वाली यात्रा (रूटीन यात्रा) के लिए मुहूर्त की आवश्यकता नहीं होती है।

इस अध्याय में सर्वप्रथम यात्रा प्रारम्भ करने के सही समय के चयन हेतु सामान्य विचार की व्याख्या की गई हैं जो सभी प्रकार की यात्राओं में लागू होता है। इसके पश्चात किसी भी यात्रा विशेष के लिए विचारणीय विषयों की संक्षेप में चर्चा की गई है।

सभी प्रकार की यात्राओं के लिए सामान्य विचारः

1. पंचांग शुद्धिः

   आधारभूत रुप से इसमें यात्रा के लिए सही नक्षत्र, तिथि, योग, वार और करण का चयन करना शामिल है।

   (अ) नक्षत्रः

   हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा और पुनर्वसु, इन नौ नक्षत्रों को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) मध्यम श्रेणी के नक्षत्र हैं। अन्य नक्षत्रों को त्यागना चाहिए।

यदि किसी कारणवश अन्य नक्षत्रों में यात्रा करना आवश्यक हो तो तीनों पूर्वा नक्षत्रों की प्रथम 16 घटी (6 घण्टे 24 मिनट), भरणी की प्रथम 7 घटी (2 घण्टे 48 मिनट), कृतिका की प्रथम 21 घटी (8 घण्टे 24 मिनट), मघा की प्रथम 11 घटी (4 घण्टे 24 मिनट) और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा एवं आश्लेषा की प्रथम 14 घटी (5 घण्टे 36 मिनट) के समय को छोडना चाहिए। यह मत राम दैवज्ञ द्वारा मुहूर्त चिन्तामणि में दिया गया है।

तालिका संख्या 11.1

शुभ नक्षत्र	हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा और पुनर्वस				
मध्यम नक्षत्र	उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी				
अन्य नक्षत्र	तीनों पूर्वा	कृतिका	मघा	भरणी	स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा एवं आश्लेषा
त्याज्य घटी (घण्टे)	16 घटी (6 घण्टे 24 मिनट)	21 घटी (8 घण्टे 24 मिनट)	11 घटी (4घण्टे 24 मिनट)	7 घटी (2 घण्टे 48 मिनट)	14 घटी (5 घण्टे 36 मिनट)

आर्द्रा, शतभिषज, चित्रा और मूल पूर्ण रुप से त्याज्य हैं।*

नक्षत्र शूल अथवा किसी दिशा विशेष की यात्रा में त्याज्य नक्षत्रः

पूर्व दिशा की यात्रा में ज्येष्ठा, दक्षिण दिशा की यात्रा के लिए पूर्वाभाद्रपद, पश्चिम दिशा की यात्रा के लिए रोहिणी और उत्तर दिशा की यात्रा के लिए उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र को त्यागना चाहिए। यात्रा जहां से प्रारम्भ की जाती है वहां

* ज्योतिर्विदाभरणम् में कालिदास शतभिषज नक्षत्र को मध्यम मानते है, अतः यात्रा के लिए अनुमोदित है।

से यात्रा की दिशा का निर्धारण होता है। उदाहरण के लिए यदि कोई जातक दिल्ली से मुम्बई की यात्रा करना चाहता है तो उसके लिए यह दक्षिण दिशा की यात्रा होगी और जो जातक मुम्बई से दिल्ली की यात्रा करना चाहता है उसके लिए यह उत्तर दिशा की यात्रा होगी।

दिशा विशेष में दिन एवं रात के एक तिहाई भाग विशेष में यात्रा प्रारम्भ करने के लिए त्याज्य नक्षत्रः

दिन की पूरी अवधि को तीन बराबर भागों में विभक्त करें और इसी प्रकार रात्रि की पूरी अवधि को भी तीन बराबर भागों में विभक्त करें और निम्नलिखित नियमों का पालन करें::

(अ) दिन के प्रथम एक तिहाई भाग में यात्रा प्रारम्भ करने के लिए स्थिर और साधारण नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, विशाखा एवं कृतिका) का त्याग करें।

(ब) दिन के द्वितीय एक तिहाई भाग में यात्रा प्रारम्भ करने के लिए तीक्ष्ण–दारूण नक्षत्रों (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा एवं आश्लेषा) का त्याग करें।

(स) दिन के तृतीय एक तिहाई भाग में यात्रा प्रारम्भ करने के लिए लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) का त्याग करें।

(क) रात्रि के प्रथम एक तिहाई भाग में यात्रा प्रारम्भ करने के लिए मित्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) का त्याग करें।

(ख) रात्रि के द्वितीय एक तिहाई भाग में यात्रा प्रारम्भ करने के लिए उग्र नक्षत्रों (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा) का त्याग करें।

(ग) रात्रि के तृतीय एक तिहाई भाग में यात्रा प्रारम्भ करने के लिए चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज) का त्याग करें।

ऊपरोक्त नियमों के ऊपर एक नियम यह है कि श्रवण, हस्त, पुष्य और मृगशिरा नक्षत्र किसी भी समय यात्रा प्रारम्भ करने के लिए अच्छे होते हैं।

(आ) तिथिः

दोनों पक्षों की 2/3/5/7/10/11/13 तिथियां और कृष्णपक्ष की प्रथम तिथि (अर्थात कृष्ण प्रतिपदा) को अच्छा माना जाता है।

दूसरे शब्दों में रिक्ता तिथियां (4/9/14 तिथियां), अमावस्या, पूर्णिमा, शुक्ल प्रतिपदा और 6/8/12 तिथियां त्याज्य होती हैं।

(इ) करणः

भद्रा (अर्थात विष्टि करण) का त्याग करें।

(ई) वार अर्थात दिनः

गुरूवार एवं शुक्रवार सर्वश्रेष्ठ वार होते हैं, रविवार, सोमवार एवं बुधवार मध्यम होते हैं और शेष वारों (अर्थात शनिवार एवं मंगलवार) का त्याग करना चाहिए।

'वार शूल' अर्थात दिशा विशेष के लिए अशुभ वारः

पूर्व दिशा की यात्रा के लिए सोमवार एवं शनिवार, दक्षिण–पूर्व दिशा की यात्रा के लिए सोमवार एवं गुरूवार, दक्षिण दिशा की यात्रा के लिए गुरूवार, दक्षिण–पश्चिम दिशा की यात्रा के लिए रविवार एवं शुक्रवार, पश्चिम दिशा की यात्रा के लिए रविवार एवं शुक्रवार, उत्तर–पश्चिम दिशा की यात्रा के लिए मंगलवार, उत्तर दिशा के लिए मंगलवार एवं बुधवार और उत्तर–पूर्व दिशा की यात्रा के लिए शनिवार एवं बुधवार का त्याग करें। यात्रा की दिशा का निर्णय, यात्रा प्रारम्भ होने के स्थान से होता है। किसी भी दिशा विशेष में त्याज्य वार और नक्षत्रों को संक्षेप में आगे तालिका संख्या 11.2 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 11.2

दिशायें	पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण	दक्षिण–पश्चिम	पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर	उत्तर–पूर्व
त्याज्य वार	सोमवार, शनिवार	सोमवार, गुरूवार	गुरूवार	रविवार, शुक्रवार	रविवार, शुक्रवार	मंगलवार	मंगलवार, बुधवार	शनिवार, बुधवार
त्याज्य नक्षत्र	ज्येष्ठा	–	पूर्वा भाद्रपद	–	रोहिणी	–	उत्तरा फाल्गुनी	–

(उ) योगः

अशुभ योगों, विशेषकर व्यतीपात, वैधृति और परिघ के प्रथम आधे भाग को त्यागना चाहिए।

2. **अशुभ योगः**

यात्रा के लिए वार, विथि, नक्षत्र आदि की युति से बनने वाले अशुभ योगों को, जिनकी चर्चा अध्याय 3 में की गई है, त्यागना चाहिए, जैसे कि मृत्यु योग, दग्ध योग, कक्रच योग, संवर्तक योग, विष, हुतासन और यमघण्ट आदि योग।

3. **चन्द्र–निवासः**

मेष, सिंह एवं धनु राशियों में स्थित चन्द्रमा का वास पूर्व में, वृषभ, कन्या एवं मकर राशियों में स्थित चन्द्रमा का वास दक्षिण में, मिथुन, तुला एवं कुंभ राशियों में स्थित चन्द्रमा का वास पश्चिम में और कर्क, वृश्चिक एवं मीन राशियों में स्थित चन्द्रमा का वास उत्तर दिशा में होता है। किसी भी यात्रा में चन्द्रमा का सामने अथवा दाहिनी ओर होना मंगलकारी माना जाता है जबकि पीछे अथवा बाईं ओर के चन्द्रमा को अमंगलकारी माना जाता है।

पूर्व
1/5/9 राशियां

उत्तर
4/8/12 राशियां

दक्षिण
2/6/10 राशियां

पश्चिम
3/7/11 राशियां

यदि कोई जातक पूर्व दिशा की यात्रा करना चाहता है तो 1/5/9 राशियों का चन्द्रमा उसके आगे होगा, 2/6/10 राशियों का चन्द्रमा उसके दाहिनी ओर होगा, 3/7/11 राशियों का चन्द्रमा उसके पीछे होगा और 4/8/12 राशियों का चन्द्रमा उसके बाईं ओर होगा। इसी प्रकार अन्य दिशाओं के लिए भी चन्द्रमा की स्थिति को ज्ञात किया जा सकता है। विभिन्न दिशाओं की यात्रा के लिए चन्द्रमा की शुभाशुभ स्थितियों को ज्ञात करनें के लिए आगे दी गई तालिका संख्या 11.3 को देखें।

चन्द्रमा की शुभाशुभ स्थितियां

यात्रा की दिशा	चन्द्रमा एवं लग्न की शुभ स्थितियां	चन्द्रमा एवं लग्न की अशुभ स्थितियां
पूर्व	1/5/9/2/6/10 राशियां	3/7/11/4/8/12 राशियां
दक्षिण	2/6/10/3/7/11 राशियां	4/8/12/1/5/9 राशियां
पश्चिम	3/7/11/4/8/12 राशियां	1/5/9/2/6/10 राशियां
उत्तर	4/8/12/1/5/9 राशियां	2/6/10/3/7/11 राशियां

टिप्पणीः जिन राशियों का चन्द्रमा जिस दिशा विशेष के लिए शुभ माना जाता है, उन राशियों का लग्न भी उस दिशा के लिए शुभ माना जाता है।

4. सम्मुख शुक्र (अथवा शुक्र सामने):

जब शुक्र का भोगांश, उस समय के सूर्य के भोगांश से कम होता है तो वह पूर्व में उदय होता है (अर्थात जब यह वक्री गति का होकर उदय होता है)। जब शुक्र का भोगांश, उस समय के सूर्य के भोगांश से अधिक होता है तो वह पश्चिम में उदय होता है (अर्थात जब यह सीधी गति का होकर उदय होता है)। यात्रा में शुक्र के सामने होने की स्थिति को त्यागना चाहिए। इसका भावार्थ यह है कि जब शुक्र पूर्व में उदय होता है तो पूर्व दिशा की यात्रा और जब पश्चिम में उदय होता है तो पश्चिम दिशा की यात्रा को त्यागना चाहिए।

एक अन्य तरीका शुक्र के नक्षत्र विशेष के गोचर पर आधारित हैं। कृतिका से आश्लेषा नक्षत्र तक सभी नक्षत्र पूर्व दिशा में पड़ते हैं, मघा से विशाखा तक सभी नक्षत्र दक्षिण दिशा में पड़ते हैं, अनुराधा से श्रवण तक सभी नक्षत्र पश्चिम में पड़ते हैं और धनिष्ठा से भरणी तक सभी नक्षत्र उत्तर दिशा में पड़ते हैं। शुक्र जिस नक्षत्र में होता है उसके द्वारा इंगित दिशा विशेष की यात्रा को त्यागना चाहिए। सामान्यतः शुक्र किसी भी दिशा विशेष में तीन मास तक अथवा वक्री होने की स्थिति में इससे भी अधिक समय तक रहेगा। अतः आकस्मिक स्थितियों में शुक्र के सामने रहने की स्थिति का विचार करना आवश्यक नहीं होता है।

टिप्पणीः किसी को भी आकस्मिक स्थिति में पंचाग शुद्धि (अर्थात सही नक्षत्र, तिथि, योग, वार एवं करण को चुनना), दिक शुद्धि (अर्थात दिशा

विशेष के लिए अशुभ दिन एवं वार को त्यागना), 'लग्न शुद्धि' और सही 'चन्द्र/तारा शुद्धि' करने के पश्चात ही यात्रा प्रारम्भ करनी चाहिए। आकस्मिक स्थिति में अन्य घटकों के विचार को नकारा जा सकता है।

5. परिघ–दण्डः

ऐसा कहा जाता है कि उत्तर–पश्चिम से दक्षिण–पूर्व दिशा को जोड़ता हुआ एक अवरोध अथवा दण्ड निवास करता है जैसा कि ऊपरोक्त चित्र में दिखाया गया है। जब चन्द्रमा इस परिघ–दण्ड के एक ओर रहता है तो केवल उसी ओर की दिशाओं में यात्रा करना अच्छा होता है। किसी को भी यात्रा में इस अवरोध शक्ति को लांघना नहीं चाहिए। इसको साधारण शब्दों में कहें तो जब चंद्रमा धनिष्ठा से अश्लेषा तक के नक्षत्रों में गोचर करता है तो वह समय विशेष पूर्व अथवा उत्तर दिशा में यात्रा करने के लिए अच्छा होता है और दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा में यात्रा करने के लिए अच्छा नहीं होता है। इसी प्रकार जब चन्द्रमा मघा से श्रवण तक के नक्षत्रों में गोचर करता है तो वह समय विशेष दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा में यात्रा करने के लिए अच्छा होता है और पूर्व अथवा उत्तर दिशा की यात्रा के लिए अच्छा नहीं होता है।

6. योगिनी निवासः

यह कहा जाता है कि योगिनी का वास 1/9 तिथियों को पूर्व दिशा में, 3/11 तिथियों को दक्षिण–पूर्व दिशा में, 5/13 तिथियों को दक्षिण दिशा में, 4/12 तिथियों को दक्षिण–पश्चिम दिशा में, 6/14 तिथियों को

पश्चिम दिशा में, 7/15 तिथियों को उत्तर–पश्चिम दिशा में, 2/10 तिथियों में उत्तर दिशा में और 8/30 तिथियों को उत्तर–पूर्व दिशा में होता है।

यात्रा में योगिनी का सामने होनें अथवा बांई ओर होने की स्थिति को त्यागना चाहिए। सही अर्थ में यह किसी दिशा विशेष की यात्रा के लिए किन्ही तिथियों का त्याग करने के लिए है जिसे आगे दी गई तालिका संख्या 11.4 द्वारा आसानी से समझा जा सकता है।

तालिका संख्या 11.4

योगिनी (किसी दिशा विशेष में यात्रा के लिये शुभाशुभ तिथियां)

योगिनी निवास	पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण	दक्षिण–पश्चिम	पश्चिम	उत्तर–पश्चिम	उत्तर	उत्तर–पूर्व
तिथियां	1/9	3/11	5/13	4/12	6/14	7/15	2/10	8/30
यात्रा हेतु शुभ दिशायें	पश्चिम, उत्तर	उत्तर–पश्चिम, उत्तर–पूर्व	उत्तर, पूर्व	उत्तर–पूर्व, दक्षिण–पूर्व	पूर्व, दक्षिण	दक्षिण–पूर्व, दक्षिण–पश्चिम	दक्षिण, पश्चिम	दक्षिण–पश्चिम, उत्तर–पश्चिम
यात्रा हेतु त्याज्य दिशायें	पूर्व, दक्षिण	दक्षिण–पूर्व, दक्षिण–पश्चिम	दक्षिण, पश्चिम	दक्षिण–पश्चिम, उत्तर–पश्चिम	पश्चिम, उत्तर	उत्तर–पश्चिम, उत्तर–पूर्व	उत्तर, पूर्व	उत्तर–पूर्व दक्षिण–पूर्व

7. यात्रा में राहु का विचारः

किसी भी समय विशेष में, राहु द्वारा ग्रहीत नक्षत्र 'कर्त्तरी' कहलाता है, कर्त्तरी से 15वां नक्षत्र 'ग्रस्त' कहलाता है, राहु द्वारा ग्रहीत नक्षत्र से आगे के 13 नक्षत्र (अर्थात वे 13 नक्षत्र जिन पर राहु अपनी वक्री गति में पहले ही गोचर कर चुका होता है) 'जीव–पक्ष' कहलाते है और राहु द्वारा ग्रहीत नक्षत्र से पीछे के 13 नक्षत्र (अर्थात वह 13 नक्षत्र जिन पर राहु गोचर करेगा) 'मृत–पक्ष' कहलाते हैं। उदाहरण के लिए यदि राहु मूल नक्षत्र में स्थित है तो मूल कर्त्तरी होगा, पूर्वाषाढ़ा से रोहिणी 'जीव–पक्ष' कहलायेगा, मृगशिरा 'ग्रस्त' कहलाएगा और आर्द्रा से आश्लेषा तक 'मृत–पक्ष' कहलाएगा। यात्रा में चन्द्रमा 'मृत पक्ष' के नक्षत्रों में स्थित नहीं होना चाहिए। यहां तक कि 'ग्रस्त' और 'कर्त्तरी' नक्षत्रों को भी त्यागना चाहिए।

युद्ध और विवाद के लिए विशेषः युद्ध अथवा विवाद सम्बन्धित यात्राओं में आक्रमण करने वाला अथवा वादी का प्रतिनिधित्व चन्द्रमा द्वारा किया जाता है। जिस पर आक्रमण होता है अथवा जिस पर अभियोग होता है, (प्रतिवादी) उसका प्रतिनिधित्व सूर्य द्वारा किया जाता है।

यदि युद्ध अथवा विवाद सम्बन्धित यात्रा के प्रारम्भ होने के समय सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही जीव–पक्ष में होते हैं तो दोनों पक्षों में समझौता अथवा संधि होती है।

यदि सूर्य 'जीव–पक्ष' में और चन्द्रमा 'मृत–पक्ष' में हो तो जिस पर आक्रमण होता है अथवा जिस पर अभियोग होता है, उसकी विजय होती है।

इसी प्रकार जब चन्द्रमा 'जीव–पक्ष' में और सूर्य 'मृत–पक्ष' में हो तो उसमें आक्रमण करने वाला अथवा वादी विजयी होगा।

जहां सूर्य एवं चन्द्रमा दोनों ही 'मृत–पक्ष' में होते हैं वहां आक्रमण करने वाले एवं जिस पर आक्रमण होता है, दोनों ही समाप्त हो जाते हैं।

8. काल–पाश का विचारः

यह पुनः सप्ताह के किसी दिन विशेष को किसी दिशा विशेष के लिए त्यागने से सम्बन्धित है। सप्ताह के सभी दिनों में दिन एवं रात्रि के समय काल और पाश के निवास को आगे तालिका संख्याा 11.5 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 11.5 काल–पाश निवास

सप्ताह के दिन		रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरूवार	शुक्रवार	शनिवार
दिन के समय	काल	उत्तर	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम	दक्षिण–पश्चिम	दक्षिण	दक्षिण–पूर्व	पूर्व
	पाश	दक्षिण	दक्षिण–पूर्व	पूर्व	उत्तर–पूर्व	उत्तर	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम
रात्रि के समय	काल	दक्षिण	दक्षिण–पूर्व	पूर्व	उत्तर–पूर्व	उत्तर	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम
	पाश	उत्तर	उत्तर–पश्चिम	पश्चिम	दक्षिण–पश्चिम	दक्षिण	दक्षिण–पूर्व	पूर्व

जिस दिन जिस दिशा विशेष में काल और पाश का वास होता है उस दिन उस दिशा की यात्रा को त्यागना चाहिए। उदाहरणतः रविवार को उत्तर एवं दक्षिण दिशा की, सोमवार को उत्तर–पश्चिम एवं दक्षिण–पूर्व की यात्रा को त्यागना चाहिए और इसी तरह अन्य वारों को भी देख सकते हैं।

9. अयन का विचारः

जब सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही उत्तरायण (अर्थात मकर से मिथुन राशि तक) में होते हैं तो वह समय उत्तर अथवा पूर्व दिशा की यात्रा के लिए अच्छा होता है। जब सूर्य और चन्द्रमा दोनों ही दक्षिणायण (अर्थात कर्क से धनु राशि तक) में होते हैं तो वह समय दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा की यात्रा के लिए अच्छा होता है। जब सूर्य दक्षिणायण में होता है एवं चन्द्रमा उत्तरायण में होता है तो उन दिनों दिन का समय दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा की और रात्रि का समय उत्तर अथवा पूर्व दिशा की यात्रा प्रारम्भ करने के लिए श्रेष्ठतर होता है। इसी प्रकार जब सूर्य उत्तरायण में होता है एवं चन्द्रमा दक्षिणायण में होता है तो उन दिनों दिन का समय उत्तर अथवा पूर्व दिशा की और रात्रि का समय दक्षिण अथवा पश्चिम दिशा की यात्रा प्रारम्भ करने के लिए श्रेष्ठतर होता है।

10. व्यक्ति विशेष के लिए विचारः

(अ) ताराः किसी भी जातक को यात्रा के लिए 'जन्म', विपत, प्रत्यरि और 'वध' तारा को त्यागना चाहिए। इसी बात को दूसरे शब्दों में कहें तो किसी भी जातक को अपने जन्म नक्षत्र से 1ले, 3रे, 5वें, 7वें, 10वें, 12वें, 14वें, 16वें, 19वें, 21वें, 23वें और 25वें नक्षत्र को यात्रा के लिए त्यागना चाहिए। यह एक महत्वपूर्ण शर्त है।

(आ) चन्द्र शुद्धिः जन्म चन्द्रमा से यात्रा के समय गोचर का चन्द्रमा 3/6/10/11/1/7 स्थितियों में होना चाहिए। जन्म चन्द्रमा से यात्रा के समय के चन्द्रमा की 4/8/12 स्थिति को विशेषकर त्यागना चाहिए। अन्य स्थितियां मध्यम होती हैं। अष्टकवर्ग में बली चन्द्रमा सभी अशुभ प्रभावों को समाप्त कर देगा।

(इ) किसी भी जातक के लिए 'घात' अथवा अशुभ मास, वार, नक्षत्र, तिथि आदि उसके जन्म चन्द्रमा की राशि पर आधारित होते हैं। किसी भी जातक की राशि विशेष अथवा जन्म चन्द्रमा की राशि पर आधारित अशुभ मास, नक्षत्र, तिथि, वार, लग्न और राशियों को आगे तालिका संख्या 11.6 में दिखाया गया है। ये 'घात' (हानि पहुंचाने वाली स्थिति) कहलाते हैं और इन्हें यात्रा में त्यागना चाहिए।

जुआ, राजा से भेंट और स्थान परिवर्तन में भी घात को त्यागना चाहिए। घात का विचार विवाह में नहीं किया जाता है।

इस तालिका को इस प्रकार से पढना पडेगा। मेष राशि के जातक अथवा जिस जातक का जन्म चन्द्रमा मेष राशि में हो उसे कार्तिक मास, मेष का चन्द्रमा, रविवार, मघा नक्षत्र पूर्ण रुप से, कृतिका का प्रथम चरण, नन्दा तिथियां (1/6/11 तिथियां) और मेष लग्न को यात्रा के लिए त्यागना चाहिए। इसी प्रकार अन्य राशियों के जातकों के लिए भी इसे देखा जा सकता है।

11. यात्रा के लिए लग्नः

यात्रा के सही लग्न को निश्चित करने के लिए निम्नलिखित घटकों का विचार अवश्य करना चाहिए:

(अ) कुंभ लग्न और किसी भी राशि के कुंभ नवांश का सदैव त्याग करें। मीन राशि के लग्न और नवांश को भी अमंलकारी माना जाता है।

(आ) किसी दिशा विशेष की ओर यात्रा करने के लिए उन राशियों के लग्नों को मंगलकारी माना जाता है जो राशियां उस दिशा विशेष को इंगित करती हैं, जैसे कि पूर्व के लिए 1/5/9 राशियां, दक्षिण के लिए 2/6/10 राशियां, पश्चिम के लिए 3/7 राशियां (11 त्याज्य) और उत्तर के लिए 4/8/12 राशियां मंगलकारी मानी जाती हैं।

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृतिका, विशाखा, ज्येष्ठा एवं चित्रा, ये बारह नक्षत्र, 4/8/12/14 तिथियां और मंगलवार एवं शुक्रवार 'कुल' कहलाते हैं तथा इन नक्षत्रों, तिथियों एवं वारों में प्रारम्भ हुए युद्ध अथवा वाद–विवाद में जिस पर आक्रमण होता है अथवा प्रतिवादी विजयी होगा। किसी पर आक्रमण करने अथवा न्यायालय में मुकदमा दर्ज करने के लिए इनको त्यागना चाहिए। तालिका संख्या 11.7 देखें।

'जीवपक्ष' और 'मृतपक्ष' का विचार करना भी महत्वपूर्ण होता है। इनकी चर्चा पिछले अध्याय में पहले से ही कर दी गई है।

अन्य मुहूर्तों की तरह इसमें भी सही चन्द्र/तारा शुद्धि महत्वपूर्ण है।

तालिका संख्या 11.7

नाम	नक्षत्र	तिथियां	वार	परिणाम
अकुल	स्वाति, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी (12)	1, 3, 5, 7, 9, 11, 13, 15	रविवार, सोमवार, गुरूवार, शनिवार	आक्रमण करने वाले अथवा वादी की विजय
कुला–कुल	मूल, आर्द्रा, अभिजित, शतभिषज (4)	2, 6, 10	बुधवार	समझौता
कुल	पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृतिका, विशाखा, ज्येष्ठा एवं चित्रा	4, 8, 12,14	मंगलवार शुक्रवार	जिस पर आक्रमण होता है अथवा प्रतिवादी की विजय

आक्रमण करने वाले अथवा वादी पक्ष की विजय हेतु मुहूर्त में योगः

जब निम्नलिखित योग मुहूर्त लग्न में होते हैं तो ये योग आक्रमण करने वाले अथवा वादी पक्ष को विजय की ओर अग्रसर करती हैं।

1. सूर्य 3रे भाव में, चन्द्रमा 10वें भाव में, शनि एवं मंगल 6वें भाव में, शुक्र 5वें भाव में, बुध 4थे भाव में और बृहस्पति लग्न में।

(इ) जहां जन्म लग्नेश और जन्म चन्द्रेश शुभ ग्रह हों वहां उनके लग्न और उनकी लग्न में स्थिति, यात्रा के लिए मंगलकारी मानी जाती है। उदाहरण के लिए यदि किसी जातक का वृषभ लग्न और मिथुन राशि है, उसको यात्रा के लिए बुध अथवा शुक्र की राशियों के लग्न को चुनना चाहिए और इसी प्रकार बुध/शुक्र का यात्रा के लग्न में स्थित होना मंगलकारी माना जाएगा।

(ई) यात्रा में वर्गोत्तम लग्न और वर्गोत्तम चन्द्रमा बहुत ही मंगलकारी माना जाता है। शुभ ग्रहों का केन्द्र एवं त्रिकोण और अशुभ ग्रहों का 3/6/10/11 भावों में स्थित होना अच्छा माना जाता है।

(उ) जन्म लग्न अथवा जन्म राशि से अष्टम भाव की राशि के लग्न को त्यागना चाहिए। यात्रा के लग्न से चन्द्रमा का 1/6/8/12 भावों में, शनि का 10वें भाव में, शुक्र का 7वें भाव में, यात्रा लग्नेश का 6/7/8/12 भावों में होना अशुभ है।

किस घटक को अधिक महत्त्व दिया जाना चाहिएः

यदि कोई जातक ऊपरोक्त वर्णित सभी घटकों का विचार करता है तो वह केवल एक ही यात्रा को करने में सक्षम हो पाएगा जो उसकी 'अन्तिम यात्रा' होगी। किसी भी जातक को प्राथमिकताएं तय करनी चाहिएं और शुभ प्रभावों के बहुतायत के आधार पर निर्णय करना चाहिए।

ऊपर वर्णित सभी स्थितियों में से चन्द्र/तारा शुद्धि, सम्मुख चन्द्र, वार एवं नक्षत्र शूल को त्यागने और सही लग्न शुद्धि के विचार को अधिक महत्त्व देना चाहिए।

यात्रा विशेष के लिए विचारः

ऊपर वर्णित सभी प्रकार की यात्राओं में लागू होने वाले सामान्य विचारों के अतिरिक्त, यात्रा विशेष के लिए निम्नलिखित विचार आवश्यक हैं।

तालिका संख्या 11.6

जन्म चन्द्रराशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
अशुभ चन्द्रमास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	आषाढ	श्रावण	भाद्रपद	अश्विन
अशुभ दिन	रविवार	शनिवार	सोमवार	बुधवार	शनिवार	शनिवार	गुरुवार	शुक्रवार	शुक्रवार	मंगलवार	गुरुवार	शुक्रवार
चन्द्रमा की अशुभ स्थिति	मेष	कन्या	कुंभ	सिंह	मकर	मिथुन	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुंभ
अशुभ नक्षत्र-पूर्ण	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	शत-भिषज	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
अशुभ नक्षत्र-चरण	कृतिका -1	चित्रा -2	शत-भिषज -3	मघा -3	धनिष्ठा -1	आर्द्रा -3	मूला -2	रोहिणी -4	पूर्वा-भाद्रपद -3	मघा -4	मूल -4	पूर्वा-भाद्रपद -3
अशुभ तिथि	1/6/11	5/10/15	2/7/12	2/7/12	3/8/13	5/10/15	4/9/14	1/6/11	3/8/13	4/9/14	3/8/13	5/10/15
अशुभ लग्न	1	2	4	7	10	12	6	8	9	11	3	5

दूरी – लम्बी, मध्यम और छोटी यात्रायें:

1. लम्बी यात्राओं के लिए आषाढ़, श्रावन एवं भाद्रपद मासों; बृहस्पति एवं शुक्र की अस्त स्थिति और हरिशयन (आषाढ़ शुक्ल एकादशी से कार्तिक शुक्ल एकादशी तक) को त्यागना चाहिए।
2. होलान्त पक्ष (अर्थात फाल्गुन शुक्लपक्ष) को सभी प्रकार की यात्राओं के लिए त्यागना चाहिए।
3. लम्बी यात्राओं के लिए क्षय एवं अधिकमास' और चन्द्रमा के निर्बल होने के समय (कृष्णपक्ष की दशमी से शुक्लपक्ष की पंचमी तक) को त्यागना चाहिए।

स्थल मार्ग की लम्बी यात्रा तब प्रारम्भ नहीं करनी चाहिए जब सूर्य द्विस्वभाव राशियों (अर्थात 3/6/9/12 राशियों) में स्थित हो।

जल मार्ग की लम्बी यात्रा तब प्रारम्भ नहीं करनी चाहिए जब सूर्य वृषभ, सिंह अथवा वृश्चिक राशि में स्थित हो।

विदेश यात्राः बृहस्पति एवं शुक्र की अस्त स्थिति और क्षय एवं अधिकमास को किसी विदेश विशेष की प्रथम यात्रा के लिए त्यागना चाहिए।

तीर्थयात्राः बृहस्पति एवं शुक्र की अस्त स्थिति, सिंहस्थ बृहस्पति, वक्री बृहस्पति और नीच राशिगत बृहस्पति को तीर्थयात्रा के लिए त्यागना चाहिए। लेकिन यह दोष 'हरिद्वार' और 'गया' की यात्रा के लिए नहीं होगा।

व्यवसाय हेतु यात्राः व्यवसाय के लिए की जाने वाली यात्रा में 2रे, 10वें और 11वें भाव के बल को सुनिश्चित करना चाहिए, अर्थात इनको बली होना चाहिए।

युद्ध, विवादादि हेतु यात्राः

प्राचीन काल में इस प्रकार की यात्रा बहुत प्रचलन में थी क्योंकि अधिकतर युद्ध मैदानों में ही लडे जाते थे और लडाई के मैदानों तक पहुंचने से पहले सेना को कई दिनों तक पैदल यात्रा करनी पडती थी। इसके लिए जो विचार उस समय महत्वपूर्ण थे उन विचारों ने आधुनिक परिवेश में अपना अभिप्राय खो दिया है क्योंकि आधुनिक काल में सेना के आगे बढ़ने का निर्णय शीघ्र (कम अवधि–सूचना) में लिए जाते हैं।

अतः इस विषय की यहां संक्षिप्त चर्चा की गई है और जिन घटकों की यहां चर्चा की गई है उन का प्रयोग न केवल 'कब आक्रमण किया जाए' के लिए किया जा सकता है अपितु न्यायालय में मुकदमा दर्ज करने के लिए अथवा अन्य किसी भी प्रकार के विवाद में भी किया जा सकता है।

1. कुल – अकुल – कुलाकुल नक्षत्र, तिथियां और वारः

स्वाति, भरणी, आश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त, अनुराधा, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी, ये बारह नक्षत्र, विषम तिथियां (अर्थात 1/3/5/7/9/11/13/15 तिथियां) और रविवार, सोमवार, गुरूवार एवं शनिवार, ये चार वार, 'अकुल' कहलाते हैं। यदि कोई युद्ध अथवा वाद–विवाद अकुल नक्षत्रों, तिथियों और वारों में प्रारम्भ होता है तो आक्रमण करने वाला अथवा वादी जीतेगा। इसका यह अर्थ हुआ कि ये नक्षत्र, तिथियां और वार आक्रमण करने एवं न्यायालय में मुकदमा दर्ज करने के लिए अच्छे होते हैं।

मूल, शतभिषज, आर्द्रा एवं अभिजित, ये चार नक्षत्र, 2/6/10 तिथियां और बुधवार 'कुलाकुल' हैं और इन नक्षत्रों, तिथियों एवं वारों में प्रारम्भ हुआ युद्ध अथवा वाद–विवाद, समझोते की ओर अग्रसर होता है।

2. बृहस्पति लग्न में, चन्द्रमा 8वें भाव में और सूर्य 6वें भाव में।
3. बृहस्पति लग्न में, शनि 3रे भाव में, मंगल 6वें भाव में और सूर्य 11वें भाव में।
4. बृहस्पति लग्न में और सभी ग्रह 2रे अथवा 11वें भाव में।
5. सूर्य लग्न में, चन्द्रमा 7वें भाव में और बृहस्पति, शुक्र एवं बुध 2रे भाव में।
6. शुक्र लग्न में, बुध 2रे भाव में और सूर्य 3रे भाव में।
7. सूर्य लग्न में, शनि 6वें भाव में और चन्द्रमा 10वें भाव में।
8. शनि एवं मंगल लग्न में, बुध 11वें भाव में और शुक्र 10वें भाव में।
9. मंगल एवं शनि 3/6/11 भावों में और बुध, बृहस्पति एवं शुक्र बली हो।
10. बृहस्पति लग्न में, चन्द्रमा 7वें भाव में, बुध एवं शुक्र 4थे भाव में और सभी अशुभ/पापी ग्रह 3रे भाव में।
11. बृहस्पति लग्न में, चन्द्रमा 7वें भाव में, बुध एवं शुक्र 10वें भाव में और शनि एवं मंगल 3रे भाव में।
12. बृहस्पति एवं चन्द्रमा लग्न में, सूर्य 6वें भाव में, बुध 5वें भाव में, शनि 10वें भाव में और शुक्र 4थे भाव में।
13. बलवान बुध लग्न में, बृहस्पति केन्द्र में और निर्बली चन्द्रमा 3/6/9/12 भावों में।
14. अशुभ/पापी ग्रह 7/8/9 भावों को छोड़कर किन्हीं अन्य भावों में और 4/3/11 भावों में स्थित शुक्र केन्द्र में स्थित बृहस्पति से दृष्ट हो तो आक्रमण करने वाले अथवा वादी को विजय एवं सम्पति देगा।
15. बुध 4/6/10 भावों में स्थित होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट हो और अशुभ/पापी ग्रह 1/7/12 भावों को छोड़कर किन्हीं अन्य भावों में स्थित हों।
16. बृहस्पति लग्न में और 10/11 भावों के अशुभ/पापी ग्रह, आक्रमण करने वाले को राजधानी में विजय देते हैं।
17. 7वें भाव में बुध एवं शुक्र और 4वें भाव में चन्द्रमा भी ऊपरोक्त (16) प्रकार का ही परिणाम देते हैं।

18. बृहस्पति लग्न में, शुक्र 6वें भाव में और चन्द्रमा 8वें भाव में।
19. बुध एवं शुक्र 4थे भाव में और चन्द्रमा 7वें भाव में।
20. चन्द्रमा 4थे भाव में बुध और शुक्र की शुभ कर्तृरी में।
21. शुक्र लग्न में, बृहस्पति 7वें भाव में, मंगल 6वें भाव में, बुध 4थे भाव में और शनि 3रे भाव में।
22. गुरूवार के दिन यदि सभी ग्रह 1/4/3/6/10/11 भावों में स्थित हों।
23. मंगल 3रे भाव में, शुक्र 8वें भाव में, बुध 7वें भाव में, सूर्य 6वें भाव में और बृहस्पति लग्न में, तथा
24. बृहस्पति, शुक्र एवं सूर्य 3रे अथवा 4थे भाव में और शनि एवं मंगल 6वें भाव में।

ये 24 योग आक्रमण करने वाले अथवा वादी को विजय देते हैं। इन्हें रामदैवज्ञ, कृत मुहूर्त चिन्तामणि से लिया गया है।

प्रस्थान अथवा यात्रा की सांकेतिक शुरूआतः

जब यात्रा के लिए सही मुहूर्त चयन के पश्चात भी किसी को ऐसा लगता है कि उस चुने हुए समय में यात्रा प्रारम्भ करने में कुछ देरी हो सकती है अथवा आकस्मिक कारणों से चुने हुए मुहूर्त के समय यात्रा नहीं हो सकती है तो ऐसी स्थिति में जातक यात्रा में ले जाने वाले सामान में से एक वस्तु को अथवा अपनी किसी प्रिय वस्तु को चुने मुहूर्त के समय घर से बाहर कुछ दूरी पर रख सकता है और तब अपने सुविधायुक्त समय पर यात्रा प्रारम्भ कर सकता है। सामान अथवा वस्तु को उसी दिशा में रखना चाहिए, जिस दिशा में यात्रा की जानी है। यह 'प्रस्थान' कहलाता है और विभिन्न आचार्यों द्वारा इसके लिए अनुमोदित दूरी 10 धनुष (1 धनुष 6 फुट के बराबर होता है) से लेकर 500 धनुष तक है।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि पूर्ण की जाने वाली शर्तें बहुत सारी है लेकिन किसी को भी शुभ प्रभाव की बहुतायत होने के आधार पर सही चयन करना चाहिए। इस अध्याय को समाप्त करते हुए किसी भी दिशा विशेष की यात्रा में वर्जित नक्षत्रों, वारों, तिथियों, लग्नों, राशियों और ग्रहों की स्थितियों के सार को शीघ्र बोध के लिए आगे तालिका संख्या 11.8 में दिया गया है।

तालिका संख्या 11.8
(यात्रा विशेष में त्याज्य)

त्याज्य दिशायें	त्याज्य नक्षत्र	त्याज्य दिन		त्याज्य तिथियां	चन्द्रमा एवं लग्न हेतु त्याज्य राशियां	त्याज्य ग्रह स्थिति (ललाटिक योग)
		वार शूल	काल पाश			
पूर्व	ज्येष्ठा	सोम शनि	मंगल शनि	1/9	3/7/11/4/8/12	लग्न में सूर्य
दक्षिण–पूर्व	–	सोम गुरू	सोम शुक्र	3/11	–	11वें या 12वें भाव में शुक्र
दक्षिण	पूर्वाभाद्रपद	गुरू	रवि गुरू	5/13	4/8/12/1/5/9	10वें भाव में मंगल
दक्षिण–पश्चिम	–	रवि शुक्र	बुध	4/12	–	8वें या 9वें भाव में राहु
पश्चिम	रोहिणी	रवि शुक्र	मंगल शनि	6/14	1/5/9/2/6/10	7वें में शनि
उत्तर–पश्चिम	–	मंगल	सोम शुक्र	7/15	–	5वें या 6वें भाव में चन्द्रमा
उत्तर	उत्तरा–फाल्गुनी	मंगल बुध	रवि गुरू	2/10	2/6/10/3/7/11	4थे भाव में बुध
उत्तर–पूर्व	–	बुध शनि	बुध	8/30	–	2रे या 3रे भाव में बृहस्पति

अध्याय 12

राज्याभिषेक और उससे सम्बन्धित मुहूर्त

राज्याभिषेक और/अथवा शपथ ग्रहण समारोहः

राज्याभिषेक अथवा मंत्रीपद आदि की शपथ ग्रहण समारोह के लिए, सूर्य उत्तरायण में स्थित होना (जो कि सूर्य का मकर से मिथुन राशियों में गोचर का समय है और सामान्यतः जनवरी मध्य से जुलाई मध्य का समय है), बृहस्पति, शुक्र एवं मंगल का उदित अवस्था में होना तथा सूर्य, मंगल, जन्म लग्नेश, मुहूर्त लग्नेश, वर्तमान दशा का स्वामी (ये सभी गोचर में अपनी उच्च राशि, मूल त्रिकोण राशि, स्वराशि, मित्र राशि, बली नवांश, शुभ षडवर्ग अथवा अष्टकवर्ग में बली होने पर बली होते हैं), इन सभी का बली होना शुभ माना जाता है।

किसी भी जातक को राज्याभिषेक अथवा शपथ ग्रहण समारोह के लिए सूर्य की मीन राशि की स्थिति, रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां), मंगलवार, रात्रि का समय, और दक्षिणायण (कर्क से धनु राशियों तक) के सूर्य को त्यागना चाहिए।

नक्षत्रः राज्याभिषेक अथवा शपथ ग्रहण समारोह के लिए सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा एवं रोहिणी), ज्येष्ठा और श्रवण नक्षत्र अच्छे माने जाते हैं।

वारः रविवार, सोमवार, गुरूवार और शुक्रवार श्रेष्ठ हैं।

तिथियांः रिक्ता तिथियों (4/9/14 तिथियां) को छोड़कर सभी तिथियां शुभ हैं।

लग्नः शीर्षोदय राशियों (मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुंभ) का लग्न अथवा जन्म चन्द्रमा से 3/6/10/11 भावों की राशियों का लग्न अथवा जन्म लग्न अच्छा माना जाता है। राज्याभिषेक के लग्न से शुभ ग्रहों का केन्द्र

(1/4/7/10 भाव), त्रिकोण (5/9 भाव) और 2/3/11 भावों में स्थित होना अच्छा माना जाता है। 3/6/11 भावों में स्थित अशुभ/पापी ग्रह शुभ फल देते हैं।

लग्न में स्थित अशुभ/पापी ग्रह, राजा की बिमारी का कारण होगा; अष्टम भाव में स्थित अशुभ/पापी ग्रहों के कारण पुत्रों को परेशानी हो सकते है; 2/12 भावों में स्थित अशुभ/पापी ग्रह आर्थिक संकट का कारण हो सकते हैं; 4/7 भावों में स्थित अशुभ/पापी ग्रहों के कारण अधिपत्य अथवा सिंहासन की हानि हो सकती है और दशम भाव में स्थित अशुभ/पापी ग्रह राजा को जडबुद्धि या आलसी बनाते हैं। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि राजा, प्रधानमंत्री अथवा मंत्री के रुप में शपथ लेने के लिए समय विशेष के चयन से पूर्व सभी भावों की विवेचना और उनके क्षेत्र विशेष में पडने वाले प्रभाव का सही ढंग से अध्ययन करना पडेगा। मुहूर्त लग्न के 6/8/12 भावों में स्थित चन्द्रमा राजा की आयु के लिए अच्छा नहीं होगा। केन्द्रों में स्थित शुभ ग्रह हमेशा ही अच्छा फल देंगे।

चन्द्र–तारा शुद्धिः उचित तारा शुद्धि और/अथवा चन्द्र शुद्धि आवश्यक है।

राजा अथवा वरिष्ठ अधिकारियों से भेंटः

राजा, मंत्रियों, वरिष्ठ अधिकारियों और इसी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों से मिलने के लिए सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित) एवं धनिष्ठा और रविवार, गुरुवार एवं शुक्रवार को मंगलकारी माना जाता है। साथ ही जातक को शुभ तिथियों और योगों को चुनना चाहिए।

प्रचलित मुद्रा के नोट, टकसाल के सिक्के आदि छापने के लिएः

प्रचलित मुद्रा के नोट, टकसाल के सिक्के एवं धन के विनिमय सम्बन्धित अन्य कार्यों के लिए सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), रविवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार, पूर्णा तिथियों (5/10/15 तिथियां) और जया तिथियों (3/8/13 तिथियां) को

शुभ माना जाता है। बृहस्पति एवं शुक्र की अस्त स्थिति, 'बाल्यावस्था' और 'वृद्धावस्था' को भी त्यागना चाहिए। भद्रा का भी त्याग करें।

शत्रुओ और विरोधियों को दण्डित करने के लिएः

सभी उग्र–क्रूर नक्षत्रों (पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, भरणी एवं मघा) और सभी तीक्ष्ण–दारुण नक्षत्रों (मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा एवं आश्लेषा); अशुभ ग्रहों के दिन (रविवार, मंगलवार एवं शनिवार), जया एवं रिक्ता तिथियों (3/8/13/4/9/14 तिथियां) और अशुभ ग्रहों के लग्न (1/5/8/10/11 राशियों के लग्न) को अनुकूल माना जाता है।

कवच धारण करने के लिए (आधुनिक परिवेश में गोली अवरोधी जाकिट पहनने, गोली अवरोधी वाहन का उपयोग प्रारम्भ करने अथवा व्यक्तिगत सुरक्षा रक्षक रखने के लिए):

गोली अवरोधी जाकिट पहनने एवं गोली अवरोधी कार का उपयोग प्रारम्भ करने के लिए चित्रा, पुनर्वसु, श्रवण, अनुराधा, रेवती, अश्विनी एवं सभी स्थिर नक्षत्रो (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) और गुरूवार, शुक्रवार, शनिवार एवं रविवार को अच्छा माना जाता है। साथ ही साथ शुभ तिथियों, योगों और करणों का चयन करना चाहिए। सही चन्द्र शुद्धि और/अथवा तारा शुद्धि अनिवार्य है।

इस मुहूर्त्त का उन सभी कार्यों में भी प्रयोग किया जा सकता है जिन कार्यों को कोई राजा, मंत्री अथवा कोई जातक अपनी व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए करता है, जैसे कि व्यक्तिगत सुरक्षा गार्ड की नियुक्ति आदि।

'कवच' पहनते समय गोचर के चन्द्रमा से शुभ ग्रहों का 4/7/10 भावों में और अशुभ ग्रहों का 6/11 भावों में स्थित होना अच्छा माना जाता है।

सेना के शिविर के लिएः

स्थिर नक्षत्रो (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), श्रवण एवं धनिष्ठा; शुभ दिन (सोमवार, बुधवार, गुरूवार एवं शुक्रवार) और रिक्ता तिथियों (4/9/14

तिथियां) को छोड़कर सभी तिथियों को सेना के शिविर और इससे सम्बन्धित अन्य कार्यों के मुहूर्तों के लिए अच्छा माना जाता है।

मिसाइलों को सेना में शामिल करने और प्रयोग के लिए तैयार रखने हेतुः

श्रवण, हस्त, आर्द्रा, ज्येष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पुष्य, धनिष्ठा, सभी स्थिर नक्षत्रो (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी) और सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) को मंगलकारी माना जाता है। रेवती, चित्रा, पुष्य, हस्त एवं श्रवण नक्षत्रों, अशुभ ग्रहों के दिन (रविवार, मंगलवार एवं शनिवार), जया एवं रिक्ता तिथियों (3/8/13/4/9/14 तिथियां) और स्थिर राशियों (2/5/8/11 राशियां) के लग्न के साथ अशुभ/पापी ग्रहों की 3/6/10/11 भावों में स्थिति को सेना में आग्नेय हथियारों को शामिल करने और उनको प्रयोग के लिए तैयार रखने के लिए शुभ माना जाता है।

सेना के आगे बढ़ने की योजना बनाने के लिएः

भरणी, रोहिणी, पुष्य, आश्लेषा, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, धनिष्ठा, उत्तराभाद्रपद एवं रेवती नक्षत्रों, जया तिथियों (3/8/13 तिथियां) और रविवार एवं मंगलवार को सेना के आगे बढ़ने सम्बन्धित सभी योजनाओं के लिए मंगलकारी माना जाता है।

'विजय यात्रा' (अर्थात दुश्मन पर आक्रमण करने के लिए यात्रा प्रारम्भ करने हेतु) सम्बन्धित मुहूर्तों के लिए यात्रा के अध्याय को देखें।

अध्याय 13
अन्य मुहूर्त

इस अध्याय में कुछ अन्य महत्वपूर्ण मुहूर्तों को दिया गया है जो पूर्व के अध्यायों के अन्तर्गत नहीं आये थे जैसे कि नवीन वस्त्र–आभूषण पहनना, दवाई खाना, कुंआ खोदना और ऐसे ही अन्य कार्यों से सम्बन्धित मुहूर्त।

वस्त्र और आभूषण पहनना:

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी क्षिप्र–लघु नक्षत्र (हस्त, हश्विनी, पुष्य), रेवती, चित्रा, अनुराधा, स्वाति, पुनर्वसु, धनिष्ठा और विशाखा नक्षत्र।

तिथियांः रिक्ता तिथियों और अमावस्या का त्याग करें।

दिनः रविवार, सोमवार, गुरूवार और शुक्रवार अच्छे माने जाते हैं।

योगः व्यतीपात और वैधृति योगों का त्याग करें।

भद्रा और तिथि–वार–नक्षत्र के संयोग से बनने वाले अशुभ योगों को भी त्यागना चाहिए।

सही चन्द्र/तारा शुद्धि भी आवश्यक है।

एक विवाहित स्त्री को नये कपड़े अथवा आभूषण रविवार को और उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, रोहिणी, पुनर्वसु एवं पुष्य नक्षत्रों में नहीं पहनने चाहिए।

दवाई खाने के लिएः

नक्षत्रः दवाई खाने के लिए सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा), सभी चर नक्षत्रों

(स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज) और मूल नक्षत्र को मंगलकारी माना जाता है।

तिथियांः 1/2/3/5/7/10/11/13 तिथियां शुभ हैं।

दिनः सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

लग्नः द्विस्वभाव राशियों (3/6/9/12 राशियां) का ऐसा लग्न जो शुभ ग्रहों से युक्त हों और जिससे 7वें, 8वें एवं 12वें भाव में कोई ग्रह नहीं हो। यदि दीर्घायु के योग भी बन रहे हों तो यह अतिरिक्त लाभ दायक होगा।

दवा लेने में जन्म नक्षत्र को हमेशा त्यागना चाहिए।

रोगमुक्त स्नान अथवा बिमारी से ठीक होने के बाद नहानाः

नक्षत्रः अश्विनी, भरणी, कृतिका, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषज और पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र।

तिथियांः रिक्ता तिथियां (4/9/14 तिथियां) मंगलकारी मानी जाती हैं।

दिनः रविवार, मंगलवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार अच्छे हैं।

लग्नः किसी भी जातक के बिमारी से ठीक होने के बाद नहाने के लिए चर राशियों (1/4/7/10 राशियां) का ऐसा लग्न जिसके केन्द्र एवं त्रिकोण में अशुभ/पापी ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, राहू, केतु) हों और मंगल निर्बल हो, शुभ माना जाता है।

विभिन्न नक्षत्रों में रोगोत्पति अथवा रोग प्रारम्भ होने का फलः

जिस समय विशेष में रोग प्रारम्भ होता है वह समय विशेष ही रोग के समाप्त होने के समय को भी निश्चित करता है। आगे तालिका संख्या 13.1 में यह दिखाया गया है कि किसी नक्षत्र विशेष में रोगी होने पर जातक कितने दिनों में ठीक हो पाएगा (इसमें शोध की आवश्यकता है)।

तालिका संख्या 13.1
(रोगोत्पति और रोगमुक्ति)

नक्षत्र जिनमें बिमारी प्रारम्भ हुआ है	ठीक होने में लिया जाने वाला समय
स्वाति, ज्येष्ठा, तीनों पूर्वा, आर्द्रा, आश्लेषा	मृत्यु (स्वस्थता नहीं)
रेवती, अनुराधा	स्वस्थ होने में बिलम्ब
भरणी, श्रवण, शतभिषज, चित्रा	11 दिन
विशाखा, हस्त, धनिष्ठा	15 दिन
मूल, कृतिका, अश्विनी	9 दिन
मघा	20 दिन
उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, पुष्य, पुनर्वसु, रोहिणी	7 दिन
मृगशिरा, उत्तराषाढ़ा	30 दिन
भरणी, आश्लेषा, मूल, कृतिका, विशाखा, आर्द्रा, मघा	यदि जातक को सांप ने काटा है तो उसकी मृत्यु होगी।

यदि किसी जातक को रोग आर्द्रा, आश्लेषा, ज्येष्ठा, शतभिषज, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपद, विशाखा, कृतिका नक्षत्रों; अशुभ दिनों (रविवार, मंगलवार एवं शनिवार) और 4/6/9/12/14 तिथियों को प्रारम्भ होता है तो ऐसा जातक जीवित नहीं रहेगा अथवा उसे बहुत गंभीर रोग होगा।

'शान्ति कर्म' (अर्थात धार्मिक क्रिया द्वारा अशुभ योगों के अशुभ प्रभाव को कम करना):

नक्षत्रः शान्ति कर्म अथवा धार्मिक क्रिया द्वारा अशुभ प्रभावों को कम करने के लिए सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी चर नक्षत्रों (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण; धनिष्ठा एवं शतभिषज) अनुराधा और मघा को मंगलकारी माना जाता है।

इसके लिए शुभ तिथियों और योगों को चुनना चाहिए। लग्न से 10वें भाव में सूर्य एवं 4थे भाव में चन्द्रमा होना चाहिए और लग्न के बृहस्पति को प्राथमिकता

देनी चाहिए। बृहस्पति–शुक्र की अस्त स्थिति का त्याग करना चाहिए। यह शान्ति कर्म उन सभी जातकों पर लागू होता है जिनका जन्म गण्डात और अन्य दोषों में हुआ हो ।

राम दैवज्ञ के मतानुसार जिन बच्चों का जन्म, नक्षत्र, तिथि अथवा लग्न गण्डात में हो, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्रों में हो; शूल, व्यतीपात, व्याघात, वज्र, गण्ड एवं वैधृति योगों में हो; तिथि क्षय में हो; सक्रान्ति के दिन का जन्म हो; अमावस्या एवं कृष्णा चतुर्दशी का जन्म हो; दग्ध एवं मृत्यु योग (जैसा कि अध्याय 3 में बताया है) का हो और भद्रा का हुआ हो, उन बच्चों के लिए 'शान्ति–कर्म' करना चाहिए। जो बच्चा ऊपरोक्त योगों में जन्मा हो उसके लिए यदि सही शान्ति नहीं होगी तो वह अरिष्ट से पीड़ित रहेगा।

इसके अतिरिक्त यदि किसी बच्चे का जन्म नक्षत्र, उसके माता–पिता अथवा भाई–बहनों का नक्षत्र भी होता है (अर्थात एक सा नक्षत्र है) तो उसके लिए भी 'शान्ति–कर्म' की आवश्यकता होती है।

समझौते, सन्धि के लिए:

पुष्य, अनुराधा एवं पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, 8वीं, 12वीं तिथि एवं तैतिल करण और सोमवार, गुरूवार, शुक्रवार एवं बुधवार को समझौते या सन्धि करने के लिए अच्छा माना जाता है।

शुक्र द्वारा दृष्ट लग्न मंगलकारी माना जाता है।

न्यायालय में मुकदमा दर्ज करने के लिए:

अध्याय 11 के अन्तर्गत 'विजय यात्रा' के लिए मुहूर्त देखें।

पत्राचार, आय–व्यय के ब्यौरा आदि के लिए:

नक्षत्रः सभी लघु नक्षत्रों (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी स्थिर नक्षत्रों (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी मैत्र नक्षत्रों (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और पुनर्वसु एवं श्रवण नक्षत्र को पत्राचार सम्बन्धित कार्यों को प्रारम्भ करने अथवा आय–व्यय सम्बन्धित कार्य (लेखांकन, टैक्स रिटर्न भरना) प्रारम्भ करने के लिए और पुस्तकें रखने सम्बन्धित कार्यों के लिए मंगलकारी माना जाता है।

तिथियांः 1/2/3/5/7/10/11/13 तिथियां।

दिनः रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

लग्नः शुभ ग्रहों का लग्न जिसके केन्द्र एवं त्रिकोण में शुभ ग्रह हो और 8वे अथवा 12वें भाव में कोई भी ग्रह नहीं हो।

बच्चा गोद लेने के लिएः

नक्षत्रः हस्त, अश्विनी, पुष्य, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा और धनिष्ठा।

तिथियांः 1/2/3/5/7/10/11/13 तिथियां।

दिनः रविवार, मंगलवार, गुरूवार और शुक्रवार।

सही लग्न शुद्धि की जानी चाहिए। शिशु को गोद लेने के लिए शुभ ग्रहों का ऐसा लग्न चुनना चाहिए जिसके 5वें, 9वें और 10वें भाव में शुभ ग्रह हों।

जमीन–जायदाद के बंटवारे के लिएः

भाई–बहनों में जमीन–जायदाद के बंटवारे के लिए निम्नलिखित विचार आवश्यक हैं।

नक्षत्रः सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी चर नक्षत्र (स्वाति, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा एवं शतभिषज), मृगशिरा, चित्रा और रेवती नक्षत्र।

तिथियांः 2/3/5/7/10/11/13 तिथियां।

दिनः रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

लग्नः ठीक प्रकार से शुद्ध शुभ ग्रहों का लग्न चुनना चाहिए।

आवेदन (नौकरी, पार्टी टिकट आदि) करने के लिएः

नौकरी अथवा पार्टी टिकट के लिए आवेदन भरने हेतु निम्नलिखित का विचार आवश्यक है।

नक्षत्रः सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी)।

तिथियां: 2/3/5/7/10/11/13/15 तिथियां।

दिनः रविवार, सोमवार, गुरूवार और शुक्रवार।

उचित चन्द्र/तारा शुद्धि आवश्यक है।

उच्च अधिकार सम्पन्न व्यक्तियों से भेंट के लिएः

नक्षत्रः सभी लघु नक्षत्र (हस्त, अश्विनी, पुष्य एवं अभिजित), सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), सभी मैत्र नक्षत्र (मृगशिरा, रेवती, चित्रा एवं अनुराधा) और श्रवण एवं धनिष्ठा नक्षत्र।

तिथियां: 2/3/5/7/10/11/13 तिथियां।

दिनः रविवार, सोमवार, बुधवार, गुरूवार और शुक्रवार।

ऐसे वर्गोतम लग्न को अधिक महत्व दिया ज़ाना चाहिए जिसके 1/4/7/10/5/9 भावों में शुभ ग्रह और 3/6/11 भावों में अशुभ/पापी ग्रह हों।

उचित चन्द्र/तारा शुद्धि आवश्यक है।

कुंआ, ट्यूबवैल, टंकी आदि को खोदने के लिएः

नक्षत्रः सभी स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), अनुराधा, हस्त, धनिष्ठा, शतभिषज, मघा, पूर्वाषाढ़ा, रेवती, पुष्य और मृगशिरा नक्षत्र।

शुभ तिथियों और शुभ दिनों को चुनना चाहिए। जब अशुभ/पापी ग्रह गोचर में निर्बल हों एवं लग्न में बृहस्पति और/अथवा बुध हो, शुक्र 10वें भाव में हो और चन्द्रमा जल तत्व राशि में हो तो वह समय कुंआ, ट्यूबवैल, जल-भण्डारण हेतु टंकी आदि को खोदने और निर्माण के लिए अच्छा होता है।

'अग्निहोत्र' अथवा 'हवन', यज्ञादि के लिए:

हिन्दू धर्म में अग्नि को किसी भी जातक द्वारा भगवान को दी गई 'आहुति' को भगवान तक पहुंचाने वाला माना जाता है। इसको किए जाने की प्रक्रिया को 'हवन' कहते हैं। अग्निहोत्र को उत्तरायण और मिश्र–साधारण नक्षत्र (विशाखा एवं कृतिका), स्थिर नक्षत्र (उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद एवं रोहिणी), रेवती, मृगशिरा, ज्येष्ठा और पुष्य नक्षत्र में अच्छा माना जाता है।

जातक को रिक्ता तिथियो (4/9/14 तिथियां) को त्यागना चाहिए और उस समय को भी त्यागना चाहिए जब चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति एवं शुक्र, नीच राशियों में स्थित हों, अस्त हों, शत्रु की राशि में हों अथवा ग्रह युद्ध में हारे हुए हों।

कर्क, मकर, कुंभ और मीन राशियों का ऐसा लग्न शुभ माना जाता है जिसमें मंगल लग्न में, या सूर्य, चन्द्रमा, मंगल एवं बृहस्पति 1/3/4/5/6/7/9/10/11 भावों में और अशुभ/पापी ग्रह 3/6/10/11 भावों में स्थित हों। अष्टम भाव में कोई भी ग्रह नहीं होना चाहिए। इसके अतिरिक्त धनु लग्न में बृहस्पति, मेष लग्न में मंगल, 7वें अथवा 10वें भाव में स्थित मंगल, 3/6/11 भावों में स्थित चन्द्रमा अथवा सूर्य – ये योग भी 'अग्निहोत्र' के लिए अच्छे माने जाते हैं।

अग्नि वासः हवन के दिन की तिथि संख्या और वार संख्या को जोउकर उसमें एक और जोडें। लब्धि में 4 का भाग दें। यदि शेष शून्य या तीन आए तो अग्नि का वास पृथ्वी में तथा शुभकारक होता है। शेष –एक बचे तो अग्निवास आकाश में तथा दो बचे तो पाताल में होता है, जो अशुभ है। यदि गुरूवार को पंचमी के दिन हवन करना है तो {तिथि संख्या (5) + वार संख्या (5) + 1}/4 शेष बचा तीन–अतः शुभ हुआ।

अध्याय 14

दशा, अष्टकवर्ग और ताजिक योगों का प्रयोग

कुछ अन्य घटक भी हैं जिनका जन्म पत्रिका अथवा वर्षकुण्डली में प्रामाणिक प्रयोग है, जैसे कि अष्टकवर्ग, दशा और ताजिक योग। इस अध्याय में मुहूर्त में इनके कुछ संभावित प्रयोगों को दिया गया है जो उन सभी व्यक्तियों के लिए लाभप्रद हो सकते हैं जो इन क्षेत्रों में शोध करना चाहते हैं।

अष्टकवर्गः

अष्टकवर्ग आठ विभिन्न बिन्दुओं से ग्रहों की शुभाशुभ स्थितियों का अध्ययन है। उदाहरण के लिए, जब हम सूर्य का अष्टकवर्ग कहते हैं तो इसका अर्थ होता है कि सूर्य की मौलिक स्थिति और लग्न सहित अन्य छः ग्रहों (चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र एवं शनि) से सूर्य की शुभ स्थितियों का अध्ययन। अष्टकवर्ग हमें यह बताता है कि क्या ग्रह 'अ' अन्य ग्रह 'ब' से अनुकूल स्थिति में है और क्या ग्रह 'अ' अन्य ग्रहों में से अधिकतर ग्रहों से अनुकूल स्थिति में है। यहां इसका मुहूर्त में प्रयोग करने का संकेत मिलता है। जन्मपत्रिका को आधार लेकर गोचर के ग्रहों के बल का निर्णय करने में अष्टकवर्ग का प्रयोग पहले से ही होता आया है। शास्त्रीय ग्रन्थकार तो इस सीमा तक कहते हैं कि यदि एक ग्रह, जन्म चन्द्रमा से प्रतिकूल स्थिति में भी क्यों न स्थित हो, यदि वह अष्टकवर्ग में बली है तो शुभ फल देगा। यह इसलिए है क्योंकि अष्टकवर्ग केवल जन्म चन्द्रमा से ही अनुकूल स्थिति नहीं देखेगा अपितु जन्मपत्रिका में आठ बिन्दुओं से भी देखेगा। अष्टकवर्ग के इस प्रयोग को शास्त्रीय ग्रन्थकारों ने पहले ही सराहा है और इसका मुहूर्त में प्रवेश नया नहीं है।

इस अध्याय में अष्टकवर्ग का प्रयोग मुहूर्त कुण्डली में करने का प्रयास किया गया है। इसको दूसरे शब्दों में कहें तो अष्टकवर्ग का आधार यहां मुहूर्त कुण्डली है न कि जन्मकुण्डली। मुहूर्त के उद्देश्य के लिए, एक जातक मुहूर्त कुण्डली से 'भिन्नाष्टक वर्ग' और 'सर्वाष्टक वर्ग' बना सकता हैं और तब

निम्नलिखित नियमों का अनुसरण कर सकता है।

(1) मुहूर्त लग्न और किये जाने वाले कार्य से सम्बन्धित भाव को सर्वाष्टकवर्ग में बली होना चाहिए। उदाहरण के लिए विवाह के मुहूर्त में लग्न और सप्तम भाव के बल को सर्वाष्टकवर्ग में सुनिश्चित करना चाहिए। किसी व्यवसाय को प्रारम्भ करने के लिए लग्न, 10वें, 11वें ओर 2रे भाव के बल को सर्वाष्टकवर्ग में सुनिश्चित करना चाहिए तथा दशम भाव की अपेक्षा एकादश भाव में आवश्यक रुप से अधिक अंक होने चाहिए। इसी प्रकार हम अन्य मुहूर्तों के लिए भी इस नियम का विस्तार सकते हैं।

(2) भिन्नाष्टक वर्ग में लग्नेश, सम्बन्धित भावेश और चन्द्रमा के शुभ बिन्दुओं को उनके सम्बन्धित अष्टकवर्ग में विशेषतः देखना चाहिए। इसका अर्थ है कि इन ग्रहों को, अधिकतर ग्रहों और लग्न से शुभ स्थिति में होना चाहिए। जैसे कि विवाह के लिए हम लग्नेश, सप्तमेश और चन्द्रमा के भिन्नाष्टक वर्ग के बल को देख सकते हैं।

(3) लग्नेश के भिन्नाष्टक वर्ग में यदि सम्बन्धित भावेश शुभ बिन्दु प्रदान करता है तो यह एक सकारात्मक संकेत है क्योंकि इसका सही अर्थ यह है कि लग्नेश सम्बन्धित भावेश से शुभ स्थिति में स्थित है। जैसे कि शपथ ग्रहण मुहूर्त में लग्नेश की दशमेश से शुभ स्थिति में स्थित होना एक सकारात्मक चीज है। इसी प्रकार, दशमेश का लग्नेश से अनुकूल स्थिति भी एक सकारात्मक बिन्दु है। इसको इस प्रकार से भी कहा जा सकता है कि "सम्बन्धित भावेश के भिन्नाष्टक वर्ग में लग्नेश को शुभ बिन्दु प्रदान करना चाहिए।" इसी प्रकार लग्नेश के भिन्नाष्टक वर्ग में भी सम्बन्धित भावेश को शुभ बिन्दु प्रदान करना चाहिए।

(4) जन्म कुण्डली के सर्वाष्टकवर्ग में जो राशि सर्वाधिक बली हो उस राशि के लग्न को मुहूर्त लग्न के रुप में भी चुना जा सकता है अथवा ऐसा लग्न भी चुना जा सकता है जिससे किये जाने वाले कार्य से सम्बन्धित भाव में वह बली राशि आती हो।

दशाः

जन्म कुण्डली में अधिकतर विंशोतरी दशा का ही प्रयोग होता है और इसके बदले रुप को ही सीमित संदर्भ–समय के साथ वर्ष–कुण्डली में प्रयोग

किया जाता है। जब कोई बच्चा पैदा होता है तो जिस दशा एवं अर्न्तदशा में वह जन्म लेता है वह उसके जीवन में एक निर्णायक घटक होती है। इसके अतिरिक्त आने वाली दशायें यह निर्णय करती है कि वह जातक किस दिशा में जाएगा और वह किन–किन मंगलकारी अथवा अमंगलकारी स्थितियों का सामना करेगा। मुहूर्त में हम दशा की समय अवधि को गिने बिना केवल प्रारम्भिक दशा–अर्न्तदशा का ही प्रयोग कर सकते हैं (क्योंकि विंशोत्तरी दशा 120 वर्षों की होती है और मुहूर्त के लिए यह समय कम करना पडेगा)। मुहूर्त कुण्डली में चन्द्रमा के भोगांशों के आधार पर, यह गणना में लिए बिना कि यह कितने दिन तक रहेगी, प्रारम्भिक दशा की गणना की जाती है।

प्रारम्भिक दशा/अन्तर्दशा का प्रयोगः

मुहूर्त कुण्डली में चन्द्रमा के भोगांश के आधार पर दशा/अन्तर्दशा की गणना करें। इसके समाप्त होने के समय को छोड़ दें। केवल दशा स्वामी और अन्तर्दशा स्वामी को अपनी गणना में लें और सुनिश्चित करें कि वह दशा/अन्तर्दशा लग्न और सम्बन्धित भाव के लिए शुभ दशा है। उदाहरण के लिए विवाह की मुहूर्त कुण्डली में दशा/अर्न्तदशा का विवाह के अनुकूल भावों से सम्बन्ध होना चाहिए। व्याख्या के नियम जन्म कुण्डली के समान ही होंगे।

आने वाली दशाओं का प्रयोगः

जहां हम उस समय अन्तराल को पहचान सकते हैं जितने समय अन्तराल के लिए मुहूर्त लागू है वहां हम आने वाली दशाओं का भी प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरण के लिए शपथ ग्रहण मुहूर्त में हम जानते हैं कि एक प्रधानमंत्री अथवा एक मुख्यमंत्री अधिकतम पांच वर्षों के लिए सत्ता में रह सकता है। हम इन पांच वर्षों के समय को विंशोतरी दशा के अनुरुप ही विभिन्न ग्रहों की दशाओं में बांट सकते हैं और आने वाली दशाओं के अनुसार अनुकूल अथवा प्रतिकूल घटनाओं का अध्ययन कर सकते हैं। लेकिन अधिकतर अंन्य मामलों में हम यह करने की स्थिति में नहीं होंगें।

अतः मुहूर्त में दशा के प्रयोग का अधिक महत्व, किये जाने वाले कार्य विशेष के सम्बन्ध में प्रारम्भिक दशा/अन्तर्दशा को अनूकूल बनाने की सीमा तक है क्योंकि अरिष्ट का निर्णय करने के लिए किसी भी कार्य विशेष की मुहूर्त कुण्डली का विश्लेषण करने में यह एक निर्णायक भूमिका निभाएगा।

ताजिक योगों का प्रयोगः

ताजिक योग मुख्य रुप से **'लग्नेश'** (अर्थात लग्न का स्वामी) और 'कार्येश' (अर्थात कार्य विशेष से सम्बन्धित भाव का स्वामी) के उस आपसी सम्बन्ध पर आधारित होते हैं जो कार्य के परिणाम को अनुकूल अथवा प्रतिकूल दिशा में अग्रसर करते हैं। विशेषकर लग्नेश और सम्बन्धित भाव के स्वामी के मध्य बनने वाला 'इत्थशाल योग' (अर्थात दो ग्रह आपस में ताजिक दृष्टि में हों और धीमी गति का ग्रह भोगांशों में तेज गति के ग्रह से आगे हो) मुहूर्त कुण्डली में अतिरिक्त लाभ बढ़ाने वाला हो सकता है। इन योगों को यहां विस्तार से समझाना इस किताब की सीमा से बाहर का विषय है। मुहूर्त के उद्देश्य के लिए केवल यह ही कहा जा सकता है कि मुहूर्त कुण्डली में लग्नेश और कार्येश के मध्य इत्थशाल एक धनात्मक बिन्दु है। इसी प्रकार नकरात्मक योगों की उपस्थिति, नकारात्मक परिणामों की ओर अग्रसर कर सकती है।

आओ कुछ शपथ ग्रहण मुहूर्त के उदाहरणों को लेते हैं और यह देखेते हैं कि दशा एवं ताजिक योगों का प्रयोग कैसे किया जा सकता है।

ताजिक योगों को विस्तार से अध्ययन करने और समझने के लिए डा. के. एस. चरक की पुस्तक 'वर्षफल' देख सकते हैं।

कुण्डली 1:
वी. पी. सिंह के शपथ ग्रहण का मुहूर्त
दिनांकः 02.12.1989, समयः 12:25 घण्टे, स्थानः दिल्ली

			बृ. (व)
लग्न			के.
रा., शु., चं.			
श.	सू., बु.	मं.	

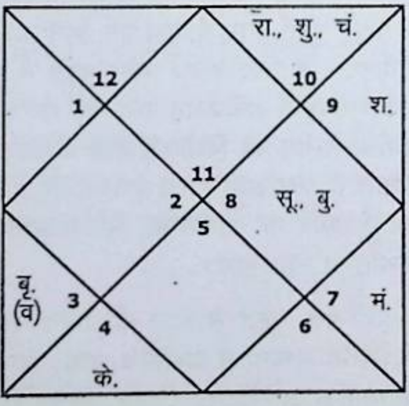

लग्न – 11° 23"	सूर्य – 16° 22"	चन्द्रमा – 00° 37"
मंगल – 25° 18"	बुध – 28° 12"	बृह.(व) – 15° 16"
शुक्र – 00° 49"	शनि – 18° 30"	राहु – 25° 08"
केतु – 25° 08"		

भोग्य दशाः सूर्य/राहु

जैसा कि हम ऊपरोक्त कुण्डली में देखते हैं कि लग्नेश शनि और दशमेश मंगल 'इशराफ योग' (अलगाव की दृष्टि) बना रहे हैं और इसके अतिरिक्त लग्नेश एक वक्री ग्रह बृहस्पति से (भोगांशों में) निकटतक दृष्टि में स्थित हैं, जो ताजिक में 'रद्द योग' कहलाता है। अतः इस कुण्डली में लग्नेश, न दशमेश के साथ कोई अनुकूल योग बना रहा है और न ही किसी अन्य शुभ ग्रह के साथ अनुकूल 'इत्थशाल योग' बना रहा है।

अब भोग्य दशा को देखते हैं। सूर्य की महादशा और राहु की अन्तर्दशा, भोग्यदशा है। वर्गोतम नवांश का होकर 10वें भाव में स्थित सूर्य की महादशा अच्छी है लेकिन महादशा नाथ सूर्य, अष्टमेश बुध के साथ युति करके 'पाप कर्तरी' योग में स्थित है जो एक नकारात्मक बिन्दु है। अन्तर्दशा के स्वामी राहु को देखें। यह द्वादश भाव में स्थित होकर मंगल के निकटतम अंशों से दृष्ट है।

यह पाठकों पर छोड़ा जाता है कि वह नवांश और दशमांश कुण्डली बनायें और महादशा स्वामी एवं अन्तर्दशा स्वामी की स्थिति को देखें।

वी. पी. सिंह की सरकार अभिजित नक्षत्र, रिक्ता तिथि, विष्टि करण और वृद्धि योग में बनी थी जो अपना कार्यकाल पूर्ण करने में असमर्थ रही। जो लग्न चुना गया था वह जन्म लग्न से अष्टम भाव की राशि थी और चन्द्रमा, जन्म चन्द्रमा से चतुर्थ भाव में गोचर कर रहा था जो एक अन्य नकारत्मक बिन्दु है। किसी भी जातक को मुहूर्त में शुभ/अशुभ अधिकतम पडने वाले प्रभावों को देखना चाहिए, जो इस मामले में अशुभ थे।

आओ अब अष्टकवर्ग का विचार करके इसी कुण्डली की विश्लेषण करते हैं। सर्वाष्टकवर्ग और विभिन्न ग्रहों के भिन्नाष्टक बिन्दुओं को नीचे दिया गया है।

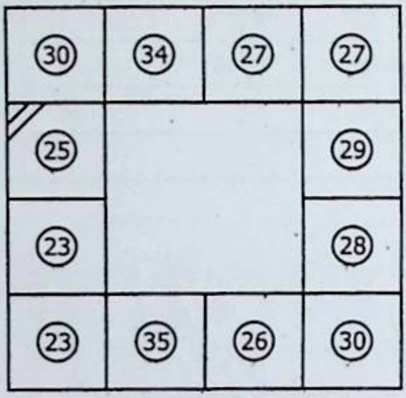

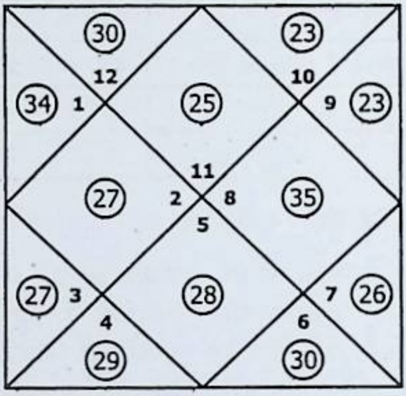

ग्रह	भिन्नाष्टक बिन्दु	ग्रह	भिन्नाष्टक बिन्दु
सूर्य	5	बृहस्पति	4
चन्द्रमा	4	शुक्र	4
मंगल	2	शनि	4
बुध	6		

सर्वाष्टक वर्ग में लग्न 25 बिन्दुओं के साथ मध्यम बली है और दशम भाव 35 बिन्दुओं के साथ बहुत बली है। एकादश भाव में दशम भाव की अपेक्षा कम बिन्दु हैं जो एक नकारात्क बिन्दु है। भिन्नाष्टक वर्ग का विचार करने पर हम देखते हैं कि दशमेश मंगल के पास केवल 2 शुभ बिन्दु ही हैं। अतः सर्वाष्टक वर्ग में हम बली और निर्बल बिन्दुओं के साथ दोनों की मिश्रित स्थितियों को देख सकते हैं।

कुण्डली 2:
मुलायम सिंह यादव का शपथ ग्रहण मुहूर्त
दिनांकः 04.12.1993, समयः 11:34 घण्टे, स्थानः लखनऊ

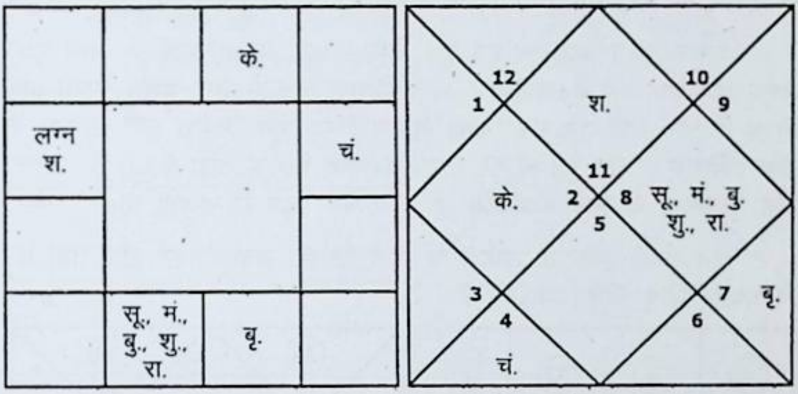

दिन – शनिवार; तिथि – पंचमी; नक्षत्र – आश्लेषा; योग – इन्द्र; करण – तैतिल; तिथि–वार से मृत्यु योग बनता है।

लग्न – 03° 02"	सूर्य – 18° 20"	चन्द्रमा – 17° 38"
मंगल – 24° 27"	बुध – 02° 16"	बृहस्पति – 11° 07"
शुक्र – 07° 48"	शनि – 01° 01"	राहु – 09° 12"
केतु – 09° 12"		

भोग्य दशाः बुध / बुध

लग्नेश शनि और दशमेश मंगल कोई भी अनुकूल ताजिक योग नहीं बना रहे हैं। लग्नेश शनि की निकटतम दृष्टि (अंशों में) अष्टमेश बुध के साथ है।

भोग्य महादशा एवं अन्तर्दशा बुध की है जो पंचमेश और अष्टमेश होकर दशम भाव में, शत्रु वर्गों में स्थित है जिसे अनुकूल नहीं माना जा सकता है। बुध मंगल की राशि, चन्द्रमा की होरा, मंगल के द्रेष्कोण, शुक्र के सप्तांश, चन्द्रमा के नवांश, मंगल के द्वादशांश और शुक्र के त्रिशांश का होकर अधिकतर अशुभ ग्रहों के वर्ग में है। साथ ही साथ महादशा एवं अन्तर्दशा नाथ बुध दशम भाव में 'पाप–कर्तरी' में स्थित है।

इस मुहूर्त का लग्न, स्थिर लग्न होने से अच्छा लग्न है जिसमें बली होकर लग्नेश शनि स्थित है जो निर्बल बृहस्पति (जो नवांश एवं दशांश में नीच का है) से दृष्ट है। इनकी सरकार बहुत संकट की स्थितियों से बचती हुई अन्त में दबाव के अधीन हो गई। यह सरकार ड़ेढ वर्ष में ही गिर गई थी।

अशुभ नक्षत्र आश्लेषा एवं शुभ तिथि पंचमी जो शनिवार के साथ एक अशुभ योग बना रही है। एक ऐसा लग्न जिसके केन्द्र में सभी अशुभ/पापी ग्रह स्थित थे और सभी शुभ ग्रह निर्बल (बृहस्पति एवं शुक्र, नवांश एवं दशमांश में नीच राशिगत थे और बुध भी नवांश एवं दशमांश में शत्रु राशि में था) थे, उसके पास मुख्यमंत्री के लम्बे कार्यकाल की संभावनायें नहीं हो सकती थी।

अब आओ इसी को अष्टकवर्ग में देखते हैं। सर्वाष्टकवर्ग और ग्रहों के भिन्नाष्टक बिन्दु नीचे दियो गए हैं।

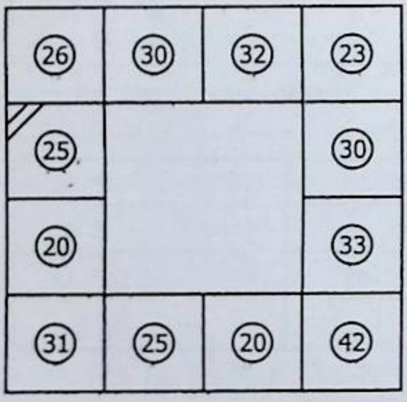

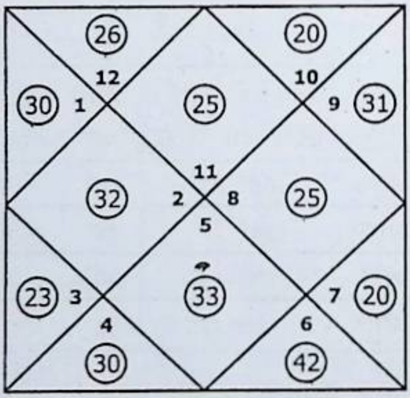

ग्रह	भिन्नाष्टक बिन्दु	ग्रह	भिन्नाष्टक बिन्दु
सूर्य	4	बृहस्पति	2
चन्द्रमा	6	शुक्र	3
मंगल	3	शनि	3
बुध	5		

सर्वाष्टक वर्ग में लग्न के पास 25 बिन्दु हैं और यह मध्यम बली है तथा दशम भाव में भी '25' बिन्दु हैं अतः यह भी मध्यम बली है। भिन्नाष्टक वर्ग में दशमेश के पास केवल '3' बिन्दु होने के कारण यह निर्बली है। दशम एवं एकादश भाव का सम्बन्ध अच्छा है क्योंकि सर्वाष्टक वर्ग के एकादश भाव में

दशम भाव से अधिक बिन्दु हैं। इस कुण्डली में अष्टम भाव सबसे अधिक बली है जो पुनः एक नकारात्मक बिन्दु है।

कुण्डली 3:
स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री के शपथ ग्रहण की मुहूर्त कुण्डली
दिनांकः 09.06.1964, समयः 11:20 घण्टे, स्थानः दिल्ली

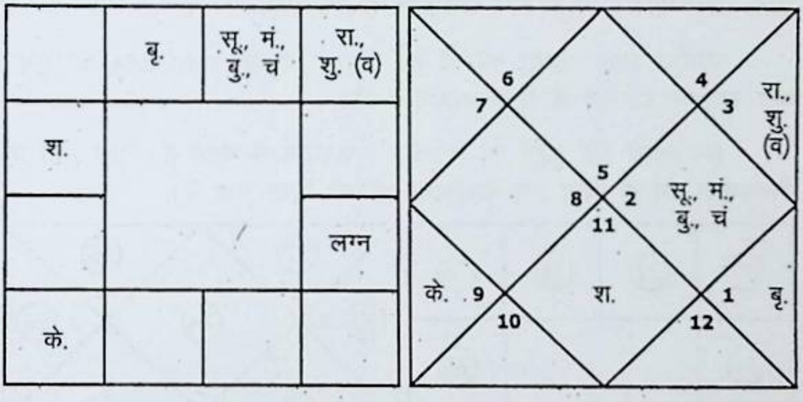

नक्षत्र – रोहणी (शुभ); तिथि – कृष्ण चतुर्दशी (रिक्ता तिथि); योग – अतिगण्ड (अशुभ); दिन – मंगलवार (अशुभ); करण – शकुनि (अशुभ)

लंग्न – 12° 03"	सूर्य – 25° 04"	चन्द्रमा – 11° 42"
मंगल – 00° 44"	बुध – 05° 58"	बृहस्पति – 20° 10"
शुक्र (व) – 11° 12"	शनि – 11° 39"	राहु – 08° 45"
केतु – 08° 45"		

भोग्य दशाः चन्द्रमा/मंगल

लग्नेश सूर्य और दशमेश शुक्र कोई दृष्टि सम्बन्ध अथवा ताजिक योग नहीं बना रहे हैं। लग्नेश सूर्य द्वादशेश चन्द्रमा के साथ निकटतम ताजिक दृष्टि में है। दशमेश राहु–केतु अक्ष में स्थित होकर एकादश भाव में वक्री है और षष्टेश एवं सप्तमेश शनि के साथ निकटम अंशों से दृष्ट होकर 'रद्द योग' (क्योंकि शुक्र वक्री है) बना रहा है जो एक अशुभ योग है।

महादशा नाथ चन्द्रमा द्वादशेश यद्यपि उच्च राशि में स्थित है लेकर अमावस्या के निकट होने के कारण निर्बल है। अन्तर्दशा नाथ मंगल दिग्बली

होकर स्थित है और इस कुण्डली का योगकारक ग्रह है। लेकिन चन्द्रमा और मंगल की एक ही भाव में युति और उनकी दशाओं से यह आशा नहीं की जा सकती है कि वे स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा परिणाम देंगें।

इसके अतिरिक्त पंचांग के घटकों को देखें। एक शुभ नक्षत्र रोहिणी को छोड़कर, सभी घटक अत्यधिक अशुभ हैं। एक अत्यधिक अशुभ तिथि, अशुभ योग, अशुभ करण, अशुभ दिन अमंगलकारी सिद्ध हुए।

स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री का देहान्त दिनांक 11.01.1966 को हुआ, अतः लगभग ड़ेढ बर्ष के लिए प्रधानमंत्री रहे।

अब आओ इस मुहूर्त की विवेचना अष्टकवर्ग में करते हैं। नीचे ग्रहों के भिन्नाष्टक वर्ग के बिन्दु और सर्वाष्टक वर्ग को दिया गया है।

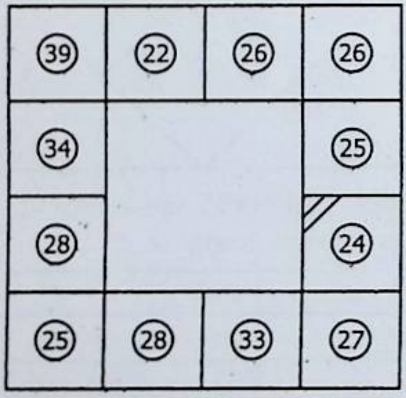

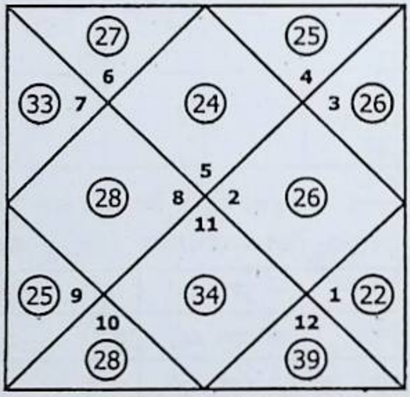

ग्रह	भिन्नाष्टक बिन्दु	ग्रह	भिन्नाष्टक बिन्दु
सूर्य	5	वृहस्पति	4
चन्द्रमा	3	शुक्र	4
मंगल	4	शनि	4
बुध	4		

सर्वाष्टक वर्ग में लग्न के पास '24' बिन्दु हैं अतः यह निर्बल है तथा दशम भाव भी '26' बिन्दुओं के साथ सामान्य से कम बली है। कोई भी यह देख सकता है कि इस कुण्डली में अधिकतम बिन्दुओं के साथ सबसे बली भाव, अष्टम भाव है और यह एक शुभ संकेत नहीं है। दशमेश शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग में '4' बिन्दुओं के साथ मध्यम बली है। अतः यहां कई कमजोर बिन्दु हैं।

जिन तीन कुण्डलियों की विवेचना हमने ऊपर की है उन तीनों कुण्डलियों के सर्वाष्टक वर्ग में मुहूर्त का लग्न निर्बल था और दो कुण्डलियों में दशम भाव निर्बल था (वी. पी. सिंह के मामले में दशम भाव बली था)। तीनों कुण्डलियों के दशमेश भिन्नाष्टक वर्ग में सामान्य से कम बली थे।

अध्याय 15
मुहूर्त का चयन कैसे करें

यदि कोई जातक ऐसे क्षण को ढूंढने का प्रयास करता है जो शास्त्रीय ग्रन्थों में वर्णित सभी शर्तों को पूर्ण करता हो तो वह उस अन्धे व्यक्ति की तरह ही असफल रहेगा जो एक अन्धेरे कमरे में उस काली बिल्ली को ढूंढने का प्रयास करता है, जो वहां नहीं है। उन आचार्यों का भी यह अभिप्राय कदापि नहीं था इसलिए उन्होने कुछ विकल्प दिये हैं और इसलिए ही उन्होंने कुछ स्थानों में मुहूर्तों के विभिन्न घटकों के तुलनात्मक महत्व को कहा है। यह अध्याय मुहूर्त निर्णय करने के लिए प्रयोग किये जाने वाले उस चरणबद्ध तरीके को बतायेगा जिसे उस समय प्रयोग करना पड़ता है जब किसी जातक के पास पर्याप्त समय हो और तब भी जब पर्याप्त समय न हो अर्थात जब समय सीमित हो।

मुहूर्त निर्णय, जब पर्याप्त समय होः

चरण 1: उत्सुक व्यक्ति से यह पूछें कि जिस कार्य विशेष हेतु आपके द्वारा मुहूर्त का निर्णय किया जाना है उसके लिए उसके पास कितना समय है। वह आपको कुछ मास, सप्ताह अथवा दिनों का समय दे सकता है।

चरण 2: मानो वह आपको एक मास का समय देता है, माना कि फरवरी मास। दूसरा चरण यह होगा कि फरवरी मास के उन दिनों का परित्याग करें जिन दिनों उस व्यक्ति के जन्म चन्द्रमा से गोचर का चन्द्रमा 4/8/12 की स्थिति में हो और उन दिनों को भी जब 'तारा' अशुभ हो। आप पाओगे कि इस प्रक्रिया से फरवरी मास के लगभग आधे दिन बाहर निकल जाएंगे।

चरण 3: अब शेष बचे दिनों में से यह देखें कि किन दिनों में उत्सुक व्यक्ति द्वारा बताये गये कार्य के लिए सही नक्षत्र, तिथि, वार, योग, करण

उपलब्ध हैं। यदि सभी अनुकूल नहीं हैं तो नक्षत्र एवं तिथि को अधिक महत्व देते हुए अधिकतम शुभ घटकों वाले दिनों का चयन कीजिए। यदि 'अमृत सिद्धि योग' अथवा 'सर्वार्थ सिद्धि योग' जैसे शुभ योग भी हों तो यह एक अतिरिक्त लाभदायक स्थिति होगी।

चरण 4: इस प्रकार जब आपको दिन प्राप्त हो जाएगा तो अपनी इच्छानुसार प्रयोग के लिए आपके पास उस दिन के बारह लग्न उपलब्ध होंगे। यदि उत्सुक व्यक्ति दिन के किसी निश्चित भाग विशेष में ही कार्य करने की इच्छा व्यक्त करता है तो आपकी च्वाइस भी सीमित हो सकती है। इस सीमा के अन्दर ही कार्य विशेषानुसार लग्न शुद्धि करें। यह देखना हमेशा ही लाभदायक होता है कि सही नवांश को चुना जाए और लग्न एवं कार्य से सम्बन्धित भाव के अनुकूल ही भोग्यदशा हो।

इसके अतिरिक्त आपको यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि मुहूर्त लग्नेश कार्य के सम्बन्धित भाव के स्वामी से अनुकूल ताजिक दृष्टि में हो जैसा कि अध्याय 14 में बताया गया है।

मुहूर्त निर्णय, जब पर्याप्त समय न हो:

जहां जिस समय–सीमा के अन्तर्गत मुहूर्त का निर्णय करना हो वह सीमित हो; और मुहूर्त चयन करने वाले के पास उस समय–सीमा में सही नक्षत्र, तिथि अथवा वार प्राप्त करना संभव न हो तो इसके लिए निम्नलिखित प्रक्रिया का सुझाव दिया जाता है:–

चरण 1: नक्षत्र के स्थान पर दिन के उस भाग का प्रयोग करें जिस भाग का स्वामित्व उस नक्षत्र विशेष के पास होता है, जिस नक्षत्र विशेष में कार्य प्रारम्भ करना होता है। यदि हम दिन के समय को पंद्रह भागों में बांटते हैं और इसी प्रकार रात को भी पंद्रह भागों में बांटते हैं तो हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि दिन एवं रात के किस भाग का स्वामित्व उस नक्षत्र के पास है जो सम्बन्धित कार्य विशेष के लिए अनुकूल है। विभिन्न मुहूर्तों के स्वामी नक्षत्रों को नीचे तालिका संख्या 15.1 में दिया गया है।

तालिका संख्या 15.1

दिन का भाग	मुहूर्त्त स्वामी	रात का भाग	मुहूर्त्त का स्वामी
1	आर्द्रा	1	आर्द्रा
2	आश्लेषा	2	पूर्वाभाद्रपद
3	अनुराधा	3	उत्तराभाद्रपद
4	मघा	4	रेवती
5	धनिष्ठा	5	अश्विनी
6	पूर्वाषाढ़ा	6	भरणी
7	उत्तराषाढ़ा	7	कृतिका
8	अभिजित	8	रोहिणी
9	रोहिणी	9	मृगशिरा
10	ज्येष्ठा	10	पुनर्वसु
11	विशाखा	11	पुष्य
12	मूल	12	श्रवण
13	शतभिषज	13	हस्त
14	उत्तराफाल्गुनी	14	चित्रा
15	पूर्वाफाल्गुनी	15	स्वाति

अतः जब कोई जातक किसी कार्य विशेष को स्थिर नक्षत्र में प्रारम्भ करना चाहता है और ऐसा नक्षत्र निकट भविष्य में उपलब्ध न हो तो वह दिन के उस भाग का प्रयोग कर सकता है जिस भाग का स्वामित्व स्थिर नक्षत्र के पास होता है, जो कि दिन का 7वां, 9वां, 14वां अथवा रात का 3रा या 8वां भाग है।

टिप्पणीः यदि कोई नक्षत्र किसी दिशा विशेष की यात्रा के लिए त्याज्य है तो उस नक्षत्र द्वारा शासित दिन के भाग को भी उस दिशा में यात्रा के लिये त्यागना चाहिए।

चरण 2: वार के स्थान पर 'होरा' का प्रयोग करें। इसका सामान्य विचार अध्याय 2 में पहले ही बता दिया है। वह यह है कि यदि कोई जातक किसी कार्य

विशेष को गुरूवार को प्रारम्भ करना चाहता है तो वह उस कार्य को किसी भी दिन, बृहस्पति की होरा में भी प्रारम्भ कर सकता है। जिस दिशा विशेष की यात्रा में जो वार विशेष वर्जित होता है, किसी भी दिन उस वार के स्वामी की होरा को भी उस दिशा की यात्रा में त्यागना चाहिए।

चरण 3: चन्द्र शुद्धि अथवा तारा शुद्धि अथवा गोचर के चन्द्रमा की अपनी राशि, मित्र राशि, बली नवांश या बली अष्टकवर्ग में से कम से कम किसी एक को सुनिश्चित करें।

चरण 4: जितना भी संभव हो सके जैसी भी लग्न शुद्धि किसी कार्य विशेष के लिए अनुमोदित की गयी है वैसी करनी चाहिए।

इसके साथ ही साथ कोई भी जातक सही भोग्य दशा, लग्नेश एवं कार्य से सम्बन्धित भाव विशेष के स्वामी के मध्य शुभ ताजिक दृष्टि और सर्वाष्टक वर्ग में कार्य से सम्बन्धित भाव के बल को सुनिश्चित कर सकता है।

तत्काल मुहूर्तः

कभी–कभी दिन भी निश्चित होता है और किसी को उसी दिन का सही मुहूर्त चयन करने के लिए कहा जाता है। ऐसे मामलों में व्यक्ति को वह लग्न चुनना चाहिए जिसमें लग्न एवं कार्य विशेष से सम्बन्धित भाव सर्वाष्टक वर्ग में बली हों और साथ ही साथ शुभ ताजिक योग एवं शुभ भोग्य दशा (जैसा कि अध्याय 14 में बताया है) भी सुनिश्चित करनी चाहिए।

यहां जिस बात पर बात पर बल दिया गया है वह यह है कि आवश्यक मामले में केवल लग्न शुद्धि करें और लग्न शुद्धि करने के लिए शास्त्रीय ग्रन्थों में दिए गए विचारों के अतिरिक्त ऊपरोक्त घटकों को भी इसमें शामिल करें। किसी को भी अधिकतम अनुकूल घटकों के समय को चुनना चाहिए।

टिप्पणीः 'तत्काल मुहूर्त' का स्वभाव 'तत्काल भोजन' (फास्ट फूड) की तरह ही है, जिसका अधिक प्रयोग पाचन तन्त्र में असंतुलन उत्पन्न कर देता है। 'तत्काल मुहूर्त' का प्रयोग केवल उन स्थितियों में ही करना चाहिए जब कोई अन्य विकल्प उपलब्ध न हो।

अभिजित मुहूर्त का प्रयोगः

दिन का आठवां मुहूर्त अभिजित मुहूर्त कहलाता है। इसकी अवधि अर्थात इसका भोगकाल कुल 48 मिनट* का होता है जो स्थानीय दोपहर से 24 मिनट पहले प्रारम्भ होकर स्थानीय दोपहर से 24 मिनट पश्चात समाप्त हो जाता है।

अभिजित मुहूर्त को बहुत अधिक मंगलकारी माना जाता है और कहा जाता है कि यह मुहूर्त के अन्य घटकों द्वारा उत्पन्न अशुभ प्रभाव को समाप्त कर देता है। उन स्थितियों में जहां कोई जातक प्रतीक्षा नहीं कर सकता है, वह अभिजित मुहूर्त को चुन सकता है। आधुनिक जातकों के पास यह एक विकल्प उपलब्ध है और जिसे आपातकाल में प्रयोग किया जा सकता है।

* अभिजित मुहूर्त का ठीक–ठीक समय 'दिनमान' के ऊपर निर्भर करता है। जब दिनमान की अवधि 12 घण्टों से कम होती है तो अभिजित मुहूर्त (अथवा दिन के अन्य कोई भी मुहूर्त) की अवधि भी उसी अनुपात में कम हो जाएगी।

अध्याय 16

घटनाओं का अध्ययन

विभिन्न ग्रन्थों में दिए गये ज्योतिष के नियमों को व्यवहारिक घटनाओं में लगा कर उनकी उपयोगिता और महत्व को देखना पडेगा। यहां हम यह देखने के लिए कि कैसे किसी प्रयोजन विशेष का समय अर्थात मुहूर्त, उस प्रयोजन विशेष के भाग्य का निर्णय करता है, कुछ घटनाओं की विवेचना करना चाहेंगे। ये घटनायें न केवल पंचांग के घटकों एवं लग्न के महत्व को उजागर करेंगी अपितु ग्रहण, युति, वेध, दशा और ऐसे कई अन्य घटकों के प्रयोग को भी दिखाऐंगी।

घटना.1 परखनली शिशु, सफल गर्भाधान

आधुनिक स्थितियों में जब गर्भ में भ्रूण का स्थानान्तरण किया जाता है अर्थात जब बाहर निशेचित हुए अण्डे को स्त्री के गर्भ में स्थापित किया जाता है उस समय शास्त्रीय ग्रन्थों में दिए गए आधान अथवा गर्भ धारण मुहूर्त को लगा सकते हैं। यहां हम उस भ्रूण स्थानान्तरण का समय दे रहे हैं जिसके परिणाम स्वरुप एक बालक का जन्म हुआ।

श.	के.	सू., शु., बु. (व)	
			लग्न मं.
	चं बृ. (व)	रा.	

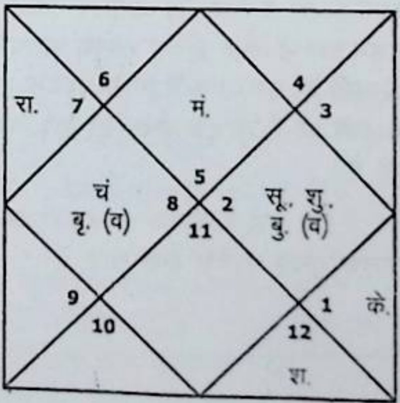

दिनांक – 12–06–1995; समय – 11.05 प्रातः; स्थान – मुम्बई; तिथि -- शुक्ल चतुर्दशी (दोपहर 1 बजकर 26 मिनट तक); वार – सोमवार; नक्षत्र – अनुराधा (दोपहर 3 बजकर 53 मिनट तक); योग – साध्य; करण – वणिज।

लग्न – 04° 53"	सूर्य – 27° 01"	चन्द्रमा – 13° 36"
मंगल – 14° 38"	बुध(व) – 16° 56"	बृह.(व) – 15° 22"
शुक्र – 08° 06"	शनि – 00° 28"	राहु – 10° 57"
केतु – 10° 57"		

पंचांग के घटकः

रिक्ता तिथि होने के कारण तिथि अशुभ है। अनुराधा नक्षत्र आधान मुहूर्त के लिए अधिकतम अनुकूल नक्षत्रों में से एक है। योग, करण और वार भी बहुत शुभ हैं। अतः एक अशुभ तिथि के अतिरिक्त पंचांग के अन्य सभी घटक शुभ हैं। इसके अतिरिक्त वार एवं नक्षत्र 'सर्वार्थ सिद्धि योग' बना रहे हैं जो एक शुभ योग है।

लग्नः

उस समय पूर्वी क्षितिज में 04°. 53" का सिंह लग्न उदय हो रहा था। यह स्थिर लग्न है जो स्थिर नवांश का होकर इसे आधान के लिए बहुत ही अनुकूल बना रहा है। अतः लग्न का कार्य की प्रवृत्ति से मिलान ठीक प्रकार से हो रहा है। इसके अतिरिक्त लग्न में एक पुरूष ग्रह मंगल स्थित है जो इस लग्न के लिए योग कारक है और यह वर्गोतम नवांश में स्थित है। लग्नेश सूर्य, कुण्डली के दशम भाव में स्थित होकर पंचमेश बृहस्पति से दृष्ट है। लग्नेश और पंचमेश दोनों ही बली हैं। इस लग्न में मंगल, चन्द्रमा एवं बृहस्पति वर्गोत्तम हैं और शुक्र नवांश में उच्च का है जो इस समय को भ्रूण स्थानान्तरण के लिए बहुत ही अनुकूल बना रहे हैं।

इस केस में दिनांक 17–02–1996 को प्रातः 10 बजकर 55 मिनट पर एक बालक मुम्बई में पैदा हुआ था।

घटना 2: परखनली शिशु, भ्रूण का असफल स्थानान्तरण

यहां हम गर्भ में भ्रूण के असफल स्थानान्तरण की घटना के विवरण दे रहे हैं। इस घटना में पुरूष की जन्म राशि मिथुन और स्त्री की जन्म राशि मकर थी।

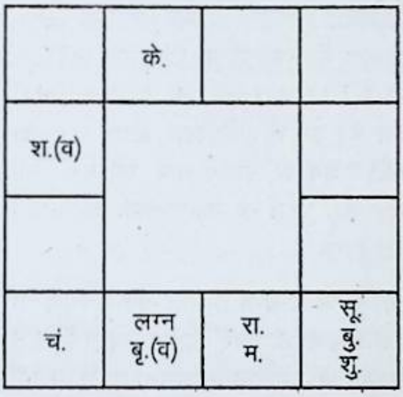

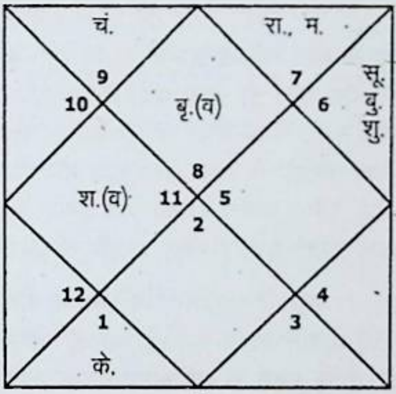

दिनांक – 02–10–1995; समय – 11.13 प्रातः; स्थान – मुम्बई; तिथि – नवमी (प्रातः 7 बजे से प्रारम्भ); वार – सोमवार (शुभ वार); नक्षत्र – पूर्वाषाढा (अशुभ नक्षत्र); योग – अतिगण्ड (प्रातः 9 बजकर 20 मिनट से प्रारम्भ); करण – बालव (शुभ करण)

लग्न – 18° 39"	सूर्य – 14° 46"	चन्द्रमा – 23° 06"
मंगल – 23° 05"	बुध(व) – 20° 44"	बृह.(व) – 16° 51"
शुक्र – 26° 08"	शनि(व)– 26° 13"	राहु – 02° 49"

पंचांग के घटकः

इस मुहूर्त में अत्यधिक अशुभ तिथि (अर्थात रिक्ता तिथि) और अत्यधिक अशुभ नक्षत्र पूर्वाषाढ़ा था जो आधान मुहूर्त के लिए अनुकूल नहीं माना जाता है।

नवमी तिथि के प्रारम्भिक 10 घण्टे अत्यधिक अशुभ होते हैं (इस पुस्तक के पृष्ठा संख्या का अवलोकन करें)।

अतिगण्ड योग के प्रारम्भिक 2 घण्टे 24 मिनट अत्यधिक अशुभ होते हैं (इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या का अवलोकन करें) अर्थात एक अत्यधिक प्रतिकूल योग था। वार और करण शुभ थे। सोमवार और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र की युति से

'उत्पात योग' बनता है जो अशुभ माना जाता है (इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या 42 और 43 का अवलोकन करें)।

लग्नः

ऐसे स्थिर लग्न का चयन जिसमें पंचमेश बृहस्पति स्थित था, एक अच्छा चुनाव था। लेकिन लग्नेश मंगल राहु–केतु अक्ष में कुण्डली के 12वें भाव में स्थित है और साथ ही साथ पंचमेश बृहस्पति से 2/12 के सम्बन्ध में है जिसे किसी भी स्थिति में अनुकूल नहीं कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त, पंचम भाव का 'पाप कर्तरी' में होना और 12वें भाव (अर्थात पंचम से अष्टम भाव, जो बच्चे की आयु इंगित करता है) का पाप प्रभाव में होना इस मुहूर्त के नकारात्मक घटक हैं। अतः हमारे पास मिश्रित प्रभावों से प्रभावित लग्न है।

उस दिन गोचर का चन्द्रमा स्त्री के जन्म चन्द्रमा अर्थात मकर राशि से 12वें भाव में गोचर कर रहा था जो गोचर के चन्द्रमा के लिए एक प्रतिकूल स्थिति है। चूंकि मुहूर्त के अधिकतर घटक नकारात्मक थे, अतः सकारात्मक परिणाम की आशा नहीं की जा सकती थी।

घटना 3: नौकरी प्रारम्भ

यह घटना एक ऐसे जातक से सम्बन्धित है जिसने एक महाविद्यालय में एडहॉक आधार पर प्राध्यापक के रुप में नौकरी प्रारम्भ की जो उसके जीवन का सबसे अधिक अपमानित होने का अनुभव सिद्ध हुआ।

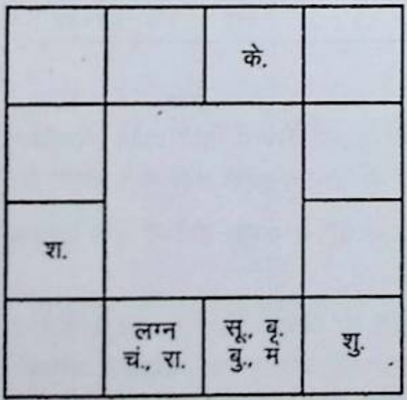

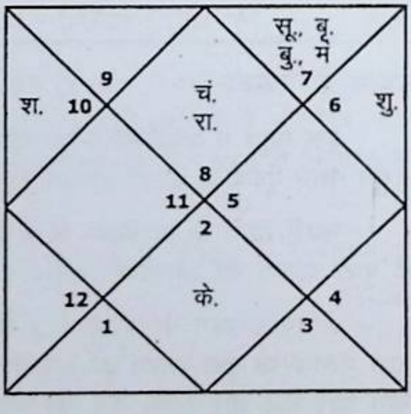

दिनांक – 19–10–1993; समय – 10.00 प्रातः; स्थान – दिल्ली; तिथि – पंचमी (आश्विनी शुक्ल); वार – मंगलवार ; नक्षत्र – ज्येष्ठा; योग – शोभन; करण – बव

लग्न – 17° 31"	सूर्य – 02° 02"	चन्द्रमा – 22° 55"
मंगल – 21° 22"	बुध(व) – 26° 10"	बृहस्पति – 01° 26"
शुक्र – 10° 10"	शनि – 29° 55"	राहु – 09° 46"
केतु – 09° 46"		

पंचांग के घटकः

तिथि, योग और करण शुभ हैं। वार अशुभ है, नक्षत्र ज्येष्ठा यद्यपि अशुभ नक्षत्रों की श्रेणी का है लेकिन नौकरी प्रारम्भ करने के लिए अनुकूल माना जाता है क्योंकि यह भगवान इन्द्र द्वारा शासित है। अतः पंचांग के घटक अपने आप में अनुकूल थे। अब निम्नलिखित को देखें:

1. मंगलवार और पंचमी की युति 'दग्ध योग' बनाती है जो एक अशुभ योग है।
2. मंगलवार और ज्येष्ठा नक्षत्र की युति 'मुदगर योग' बनाती है जो एक अशुभ योग है।
3. आश्विनी मास में, वृश्चिक राशि मास शून्य राशि होती है और यहां चन्द्रमा एवं लग्न दोनों ही वृश्चिक राशि में हैं।
4. दिनांक 04–06–1993 को ज्येष्ठा नक्षत्र में पूर्ण चन्द्र ग्रहण हुआ था और ऐसा कोई भी नक्षत्र जिसमें पूर्ण ग्रहण पड़ा हो अगले छः मास तक किसी भी मुहूर्त में त्यागना चाहिए।

अतः यह देखा जा सकता है कि प्रत्यक्ष रुप से मंगलकारी दिखने वाले पंचांग के घटक कुछ गंभीर दोषों से पीड़ित थे और कोई भी इन सूक्ष्म बिन्दुओ से अनभिज्ञ रहकर सफलता की आशा नहीं कर सकता है।

लग्नः

लग्न, स्थिर और शीर्षोदय राशि का था जो नौकरी प्रारम्भ करने के लिए अच्छा माना जाता है। लग्नेश एवं दशमेश का 12वें भाव में स्थित होना, केन्द्र एवं

त्रिकोण में कोई भी शुभ ग्रह स्थित न होना, लग्न एवं चन्द्रमा का पीड़ित होना और शुभ ग्रहों का निर्बल (नीच का शुक्र एवं अस्त बृहस्पति) होना इस मुहूर्त को निर्बल बना रहे हैं। दशमेश सूर्य और दशमेश की राशि का स्वामी शुक्र दोनों ही नीच के हैं। साथ ही साथ दशमेश सूर्य, लग्न कुण्डली के अतिरिक्त, नवांश कुण्डली एवं दशमांश कुण्डली में भी नीच का है जो कर्म स्थान को निर्बल बना रहा है।

इस जातक का जन्म नक्षत्र पुष्य था और नौकरी प्रारम्भ करने के दिन सही चन्द्र एवं तारा शुद्धि थी। लेकिन एक निर्बल लग्न और नौकरी प्रारम्भ करने के दिन बनने वाले अन्य कुछ अत्यधिक अशुभ योगों ने इसे उसके जीवन का सबसे अधिक अपमानित होने का अनुभव बना दिया।

घटना 4 – विवाह मुहूर्त

यह एक असन्तोष पूर्ण विवाह का मामला है जिसमें विवाह के तुरन्त बाद ही सम्बन्धों में तनाव प्रारम्भ हो गया जो विवाह को पृथक्करण की ओर ले गया। जन्म कुण्डली में वैवाहिक तनाव के लिए योग पहले से ही उपस्थित थे और विवाह के समय ने आग में घी का काम किया।

		के.	
श.			
मं.	सू., बु. चं, शु. रा.	बृ.	लग्न

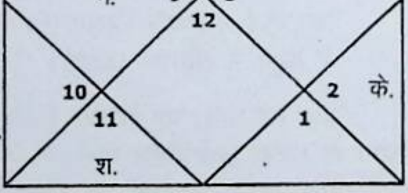

दिनांक – 11/12–12–1993; **समय** – लगभग 01.00 प्रातः; **स्थान** – दिल्ली; **तिथि** – कृष्ण चतुर्दशी; **वार** – शनिवार; **नक्षत्र** – अनुराधा; **योग** – सुकर्मा; **करण** – विष्टि (भद्रा);

ग्रह	नक्षत्र	पद	ग्रह	नक्षत्र	पद	ग्रह	नक्षत्र	पद
सूर्य	ज्येष्ठा	3	चन्द्रमा	अनुराधा	1	मंगल	मूला	1
बुध	अनुराधा	4	बृहस्पति	स्वाति	2	शुक्र	ज्येष्ठा	1
शनि	धनिष्ठा	3	राहु	अनुराधा	4	केतु	रोहिणी	2

पंचाग के घटक:

तिथि और वार अत्यधिक अशुभ हैं लेकिन युति होने पर एक शुभ योग बना रहे हैं जिसे **'सिद्धि योग'** कहते हैं। अनुराधा नक्षत्र विवाह के लिए एक शुभ नक्षत्र है लेकिन वह इस मामले में दो गंभीर दोषों से पीड़ित है:

(1) इसमें राहु और बुध दोनों के स्थित होने से यह युति दोष से पीड़ित है,

(2) अनुराधा नक्षत्र से 15वां नक्षत्र केतु द्वारा ग्रहीत है इसलिए वह जामित्र दोष बना रहा है।

अशुभ ग्रहों द्वारा बनने वाले युति और जामित्र दोषों को विवाह में विशेषतः अमंगलकारी माना जाता है। साथ ही साथ, विवाह के समय भद्रा भी थी।

लग्न:

विवाह के लग्न में शुक्र का तीसरे भाव में स्थित होना शुभ नहीं माना जाता है। यहां केन्द्र और त्रिकोण में कोई भी शुभ ग्रह नहीं था। सप्तम भाव मंगल द्वारा दृष्ट था और सप्तमेश बृहस्पति नीच नवांश में स्थित होकर सम्बन्धित भाव को निर्बल बना रहा था। मुहूर्त का लग्नेश बुध अंशों में राहु के निकटतम होकर तृतीय भाव में स्थित है।

दशा:

विवाह के समय चन्द्रमा के भोगांश को लेने पर भोग्य महादशा और अन्तर्दशा दोनों ही शनि की थी। शनि, जो पंचमेश और षष्ठेश होकर मुहूर्त कुण्डली के छठे भाव में अष्टमेश मंगल के नक्षत्र में स्थित है, अतः इससे अच्छे परिणाम देने की आशा नहीं की जा सकती है।

त्रिबल शुद्धिः

विवाह के मुहूर्त में हमें गोचर के चन्द्रमा, सूर्य और बृहस्पति के बल को सुनिश्चित करना होता है। इस मामले में पुरुष की जन्म राशि मिथुन थी और स्त्री की कुंभ थी। अतः चन्द्रमा अनुकूल स्थिति (पुरुष के जन्म चन्द्रमा से 6वें और स्त्री के जन्म चन्द्रमा से 10वें भाव में) में गोचर कर रहा था। वैसे चन्द्रमा नीच का होकर सूर्य के निकटम अंशों में था।

सूर्य, पुरुष के जन्म चन्द्रमा से 6वें भाव में स्थित था जो एक अनुकूल स्थिति है।

बृहस्पति स्त्री के जन्म चन्द्रमा से 9वें भाव में स्थित था जो पुनः गोचर के बृहस्पति के लिए एक अनुकूल स्थिति है। लेकिन बृहस्पति यहां अपने नीच नवांश में गोचर कर रहा था तथा विशेष बात यह है कि पुरुष एवं स्त्री दोनों के लिए ही उनकी जन्म कुण्डलियों में बृहस्पति सप्तमेश था और मुहूर्त लग्न का भी सप्तमेश था।

प्रतिकूल प्रभावों की अधिक प्रबलता, प्रतिकूल परिणाम की ओर ले गई।

घटना 5 – विवाह मुहूर्त

यह एक ऐसा मामला है जिसमें विवाह की रात में ही वर के पिता का देहान्त हो गया और विवाह समारोह 'सूतक' के समय ही मनाया गया।

चंद्र.	केतु		
शनि			लग्न मंगल (26°25")
	बृह.	बु., शु. रा.(21°20") सू.(27°20")	

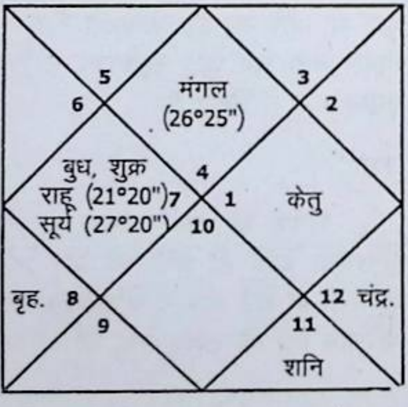

दिनांक – 13–11–1994; समय – रात्रि 10:30 एवं 11:00 के मध्य; स्थान – दिल्ली; तिथि – एकादशी (नन्दा तिथि); वार – रविवार; नक्षत्र – उत्तरा भाद्रपद; योग – हर्षण; करण – विष्टि (भद्रा)

ग्रह	नक्षत्र	पद	ग्रह	नक्षत्र	पद	ग्रह	नक्षत्र	पद
सूर्य	विशाखा	3	चन्द्रमा	उत्तरा भाद्रपद	2	मंगल	आश्लेषा	3
बुध	स्वाति	1	बृहस्पति	विशाखा	4	शुक्र	स्वाति	2
शनि	शतभिषज	2	राहु	विशाखा	1	केतु	भरणी	3

पंचांग के घटक:

व्यक्तिगत रुप से करण को छोड़कर पंचांग के सभी घटक शुभ थे। रविवार और एकादशी (नन्दा तिथि) की युति से 'मृत्यु योग' बनता है जो अशुभ योग है। नक्षत्र एवं योग शुभ थे लेकिन कोई नक्षत्र जिसमें हर्षण योग समाप्त होता है पात दोष से पीड़ित होता है, जिसका विवाह में त्याग किया जाना चाहिए। यहां उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र इस दोष से पीड़ित हो रहा है। कुल मिलाकर देखें तो यहां मिश्रित प्रभाव था।

लग्नः

नीच के मंगल द्वारा युक्त कर्क लग्न, अशुभ ग्रह केन्द्रों में, सप्तमेश अष्टम भाव में मंगल से दृष्ट और सप्तम भाव भी मंगल से दृष्ट, ये सभी किसी भी प्रकार से सकारात्मक परिणाम की ओर इशारा नहीं करते हैं। मुहूर्त लग्नेश चन्द्रमा, नवम भाव में 'पाप कर्तरी' में स्थित होकर नवमेश बृहस्पति से दृष्ट था, अतः मिश्रित प्रभाव में था। जिस बात की ओर यहां विशेष ध्यान देना आवश्यक है वह यह है पिता का कारक अर्थात सूर्य, राहू के निकटम अंशों में युति करके, निकटम अंशों में स्थित मंगल से दृष्ट है। नवम भाव का पाप कर्तरी में होना और नवमेश का अस्त होना प्रतिकूल सिद्ध हुआ।

दशाः

भोग्य महादशा नाथ शनि और अन्तर्दशा नाथ केतु क्रमशः अष्टम एवं दशम भाव में स्थित होकर नवम भाव को 'पाप कर्तरी' योग में पीड़ित कर रहे हैं।

कुल मिलाकर यह मुहूर्त एक आनन्ददायक कार्य के सम्पन्न होने का इशारा नहीं करता है। रात्रि के भोजन के समय वर के पिता को दिल का दौरा पड़ा और वह उसी रात परलोक सिधार गए।

घटना 6 – डी.डी–3 चैनल

दूरदर्शन के तीसरे चैनल (जो अपने प्रसिद्ध नाम डी.डी–3 से जाना जाता है) ने अपना परीक्षण प्रसारण 03–09–1995 को सांय 06:00 बजे प्रारम्भ किया और औपचारिक रुप से इसका उद्घाटन 14–11–1995 सांय 06:00 बजे हुआ था। आज तक, किसी भी स्तर पर इस चैनल के कार्य को संतोषजनक नहीं कहा जा सकता है। इस घटना के अध्ययन में हम देखेंगे कि किस प्रकार इसकी असफलता, इसके प्रारम्भ होने के समय में दृष्टिगोचर हो रही थी।

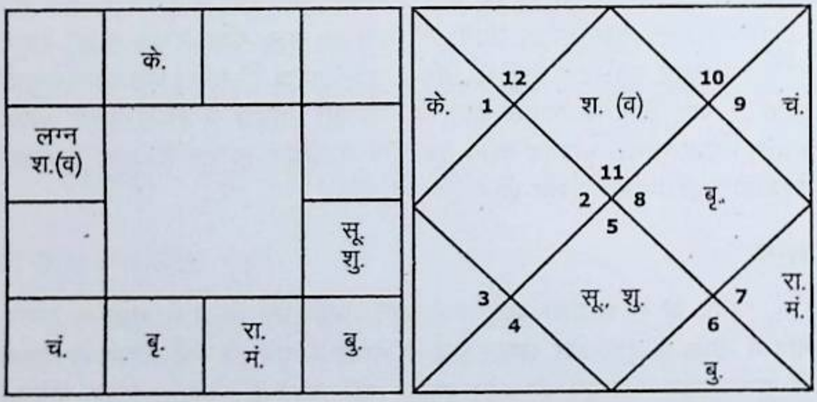

परीक्षण सेवा

दिनांक – 03–09–1995; **समय** – 06.00 सांयः; **स्थान** – दिल्ली; **तिथि** – नवमी (रिक्ता); **वार** – रविवार; **नक्षत्र** – मूल (तीक्ष्ण दारूण); **योग** – प्रीति (शुभ); **करण** – कौलव (शुभ)

लग्न – 04° 50"	सूर्य – 16° 45"	चन्द्रमा – 01° 54"
मंगल – 03° 43"	बुध – 13° 01"	बृहस्पति – 13° 14"
शुक्र – 20° 27"	शनि(व) – 28° 23"	राहु – 03° 46"
केतु – 03° 46"		

पंचांग के घटकः

तिथि और नक्षत्र अत्यधिक अशुभ थे। योग और करण शुभ थे। तिथि और नक्षत्र का अशुभ प्रभाव कुछ हद तक कम हो गया था क्योंकि रविवार एवं मूल नक्षत्र एक साथ होने पर एक शुभ योग बनाते हैं जो 'सर्वार्थ सिद्धि' योग कहलाता है।

लग्नः

यहां कार्य से सम्बन्धित भाव लग्न, दशम एवं तीसरा भाव होंगे। यहां हमारे पास स्थिर नवांश का स्थिर लग्न है जिसमें लग्नेश शनि, वक्री होकर स्थित है और सूर्य एवं योगकारक शुक्र से दृष्ट है। अतः लग्न बली है। दशम भाव, द्वितीयेश एवं एकादशेश बृहस्पति से युक्त है। इस मुहूर्त के शुभ होने में सर्वाधिक बाधा तृतीयेश एवं दशमेश मंगल के राहु–केतु से पीड़ित होने के कारण आई (राहु एवं मंगल की निकटता उनके अंशों से देखें)। लेकिन यह दशमेश पुनः 'शुभ कर्तरी' में स्थित है। अतः कमजोरी होने के ऊपरान्त भी कुछ बली बिन्दु भी हैं जिन्होने इसके बन्द होने को कुछ समय तक के लिए रोका।

दशाः

चन्द्रमा धनु राशि में 01° 54' का है जो केतु की महादशा, शुक्र की अन्तर्दशा और राहु की प्रत्यन्तर दशा देता है। महादशा एवं प्रत्यन्तर दशा नाथ दशमेश को पीड़ित कर रहे हैं, अन्तर्दशा नाथ शुक्र योगकारक है लेकिन अस्त एवं पीड़ित है।

सामूहिक रुप से सभी घटकों को देखने पर इसे बहुत ही अच्छा मुहूर्त नहीं कहा जा सकता है लेकिन यह पूर्णरुप से आशाहीन मामला भी नहीं है। यहां कुछ बली घटक भी हैं।

इसी प्रकार के परिणाम डी.डी.–3 के औपचारिक उद्घाटन के समय से भी देखे जा सकते हैं जो 14–11–1995 को सांय 06:00 बजे हुआ था। दिन मंगलवार – एक अशुभ दिन, सप्तमी जो अपने आप में एक शुभ तिथि है लेकिन मंगलवार के साथ एक अशुभ योग बनाती है जिसे विष एवं हुताशन योग कहते हैं, आश्लेषा नक्षत्र – एक अशुभ नक्षत्र, यद्यपि मंगलवार के साथ 'सर्वार्थ सिद्धि योग' बनाता है, शुक्ल योग– एक शुभ योग और एक शुभ करण। जिज्ञासु पाठक उस समय की कुण्डली बना सकते हैं और विश्लेषण करके यह देख सकते हैं कि

डी.डी.–3 एक सफल चैनल क्यों सिद्ध नहीं हुआ।

टिप्पणीः अन्त में डी.डी.–3 चैनल दिनांक 16–01–1998, समय 0012 घण्टे को बन्द कर दिया गया था।

घटना 7: – पी.वी. नरसिम्हा राव – प्रधानमंत्री के रुप में शपथ ग्रहण

हमने इस शपथ ग्रहण मुहूर्त को यहां इसलिए शामिल किया है क्योंकि जब पी.वी. नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री बने थे तो उस समय किसी भी व्यक्ति को उनसे यह आशा नहीं थी कि वे अपना पांच साल का कार्यकाल पूर्ण कर पाऐंगे। लेकिन हर प्रकार की अडचनों के ऊपरान्त भी वह अपना कार्यकाल पूर्ण करने में सफल हुए। मुहूर्त यह स्पष्ट रुप से बताता है कि कैसे उन्होंने वह प्राप्त किया, जिसे प्राप्त करने की आशा उनसे नहीं थी।

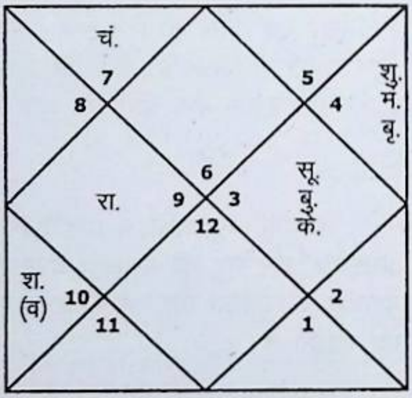

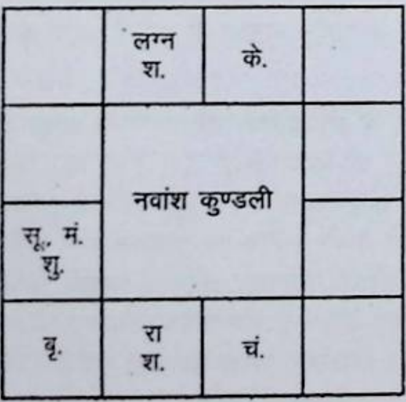

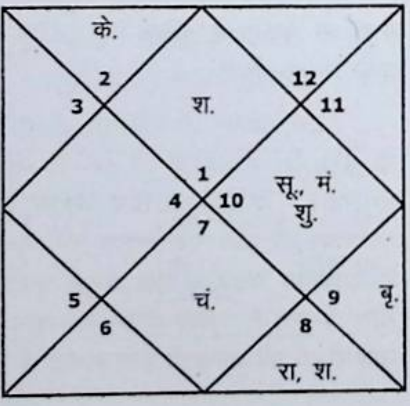

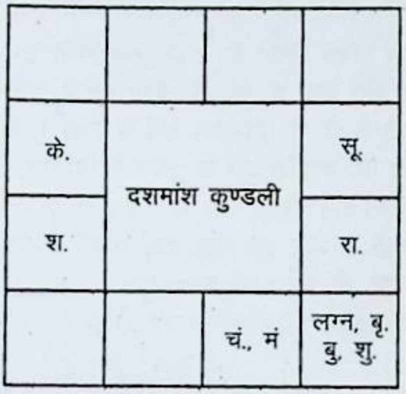

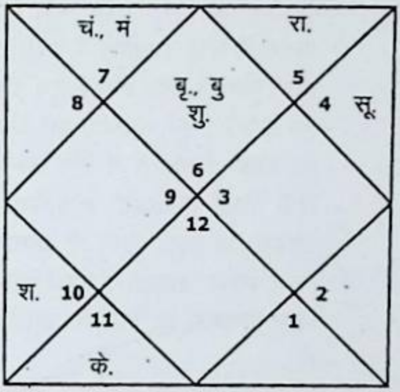

दिनांक – 21–06–1991; समय – 12.56 घण्टे; स्थान – दिल्ली; तिथि – शुक्ल दशमी (पूर्णा तिथि); वार – शुक्रवार (शुभ दिन); नक्षत्र – चित्रा (मष्दु मैत्र नक्षत्र); योग – परिघ (अशुभ योग); करण – गर (शुभ करण)

लग्न – 13° 01"	सूर्य – 05° 42"	चन्द्रमा – 01° 07"
मंगल – 21° 33"	बुध – 10° 45"	बृहस्पति – 18° 46"
शुक्र – 20° 15"	शनि(व)– 12° 09"	राहु – 25° 22"
केतु – 25° 22"		

पंचांग के घटकः

यह एक अत्यधिक शुभ पूर्णा तिथि थी, एक मैत्र नक्षत्र चित्रा, एक शुभ दिन शुक्रवार और अशुभ योग एवं शुभ करण था। सामूहिक रुप से पंचांग के घटक अपने आप में अत्यधिक मंगलकारी थे। एक छोटा सा दोष तिथि एवं वार की युति से बनने वाला योग था (हुताशन योग) ।

लग्नः

इस मुहूर्त का मुख्य बल इसके लग्न में स्थित है। अब हम इन बलों की एक–एक करके व्याख्या करेंगे।

(1) शपथ ग्रहण मुहूर्त में लग्न, शपथ लेने वाले व्यक्ति को; दशम भाव, उसके कर्मों को; चतुर्थ भाव उसके सिंहासन अथवा कुर्सी को और सप्तम भाव उसकी छवि को दर्शाता है। इस मुहूर्त कुण्डली में लग्नेश एवं दशमेश

बुध, स्वगृही होकर दशम भाव में स्थित है। यह नवांश कुण्डली में मित्र के नवांश में और दशमांश में उच्च का होकर स्थित है। दशम भाव बली सूर्य द्वारा युक्त है और एक अशुभ ग्रह केतु द्वारा भी युत है। इसी प्रकार, यदि हम चतुर्थेश एवं सप्तमेश को देखते हैं तो वह एकादश भाव में उच्च राशि का होकर स्वनवांश में और लग्नेश एवं दशमेश बुध के नक्षत्र में स्थित है। सभी केन्द्रों के स्वामी अत्यधिक बली थे। एक विशेष बात यह भी है कि जातक का जन्म लग्न भी कन्या ही है और हम यहां देख सकते हैं कि जिस समय जातक ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली उस समय जातक की जन्म कुण्डली का लग्नेश, चतुर्थेश, सप्तमेश एवं दशमेश भी गोचर में बली थे।

(2) मुहूर्त कुण्डली, उसकी नवांश एवं दशमांश कुण्डली, इन तीनों कुण्डलियों में ही लग्न एवं दशम भाव का आपस में सम्बन्ध बन रहा था। मुहूर्त कुण्डली में लग्नेश एवं दशमेश बुध बली होकर दशम भाव में स्थित है। नवांश कुण्डली में लग्नेश और दशमेश आपस में परिवर्तन करके स्थित हैं। दशमांश कुण्डली में लग्नेश और दशमेश बुध अपनी उच्चराशि में स्थित होकर लग्न में स्थित है।

(3) दशमांश कुण्डली को देखें। इसका लग्न तीन शुभ ग्रहों से युक्त है और सभी ग्रह शुभ भावों के स्वामी हैं।

(4) तुला राशि में 01° 07' का चन्द्रमा है जो मंगल की महादशा, बुध की अन्तर्दशा और राहु की प्रत्यन्तर दशा देता है। महादशा नाथ मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश था और एकादश भाव में उच्च के नवांश और लग्नेश एवं दशमेश के नक्षत्र में स्थित होकर नीच भंग राज योग बना रहा था। प्रत्येक व्यक्ति इस बात को जानता है कि अति अप्रिय स्थितियों में जातक प्रधानमंत्री बना था। इसी बात को गोचर का चन्द्रमा भी प्रतिबिम्बित कर रहा है जो शपथ ग्रहण के समय जातक के जन्म चन्द्रमा से अष्टम भाव में गोचर कर रहा था। कुण्डली का अष्टम भाव, आकस्मिक उत्थान या पतन अर्थात अचानक उंचाइयों पर पहुंचने और अचानक पतन के गर्त में गिरने को दर्शाता है।

अन्तर्दशा नाथ बुध लग्नेश एवं दशमेश होकर दशम भाव में बली स्थिति में बैठा था। प्रत्यन्तर दशा नाथ राहु 'सिंहासन स्थान' अथवा चतुर्थ, भाव में स्थित होकर राज्याभिषेक के समय की ओर इशारा कर रहा था।

अतः हम यहां देख सकते हैं कि लग्न का बल ऐसा था जो बहुत ही मुश्किल से देखने को मिलता है और उसका परिणाम भी उतना ही अच्छा था जितना कि एक अच्छे मुहूर्त से आशा की जा सकती है।

घटना 8: केन्द्र की प्रथम भाजपा सरकार

आजकल एक प्रासंगिक प्रश्न राजनीति में यह है कि 'छोटे समय अन्तराल के लिए प्रधानमंत्री बनने का रिकार्ड बनाने हेतु एक मुहूर्त को कितना बुरा होना चाहिए।' इसका उत्तर, केन्द्र में बनने वाली प्रथम भाजपा सरकार द्वारा उपलब्ध कराया गया। अटल बिहारी वाजपेयी के शपथ ग्रहण मुहूर्त का विवरण नीचे दिया गया है।

के. श.	चं. मं. बु.(व)	सू.	शु.
	लग्न कुण्डली		
			लग्न
बृ.(व)			रा.

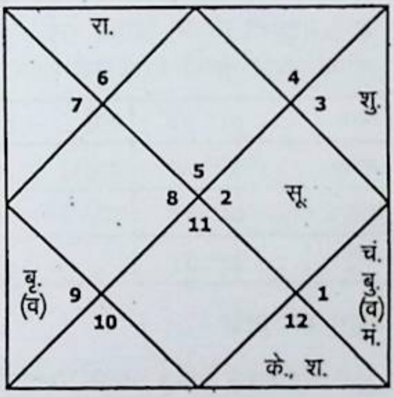

	लग्न		
	नवांश कुण्डली		रा.
सू. के.			मं.
बु.	बृ. शु.	श.	चं.

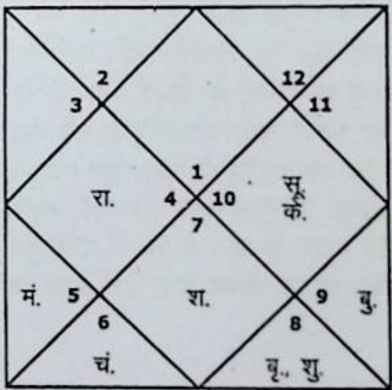

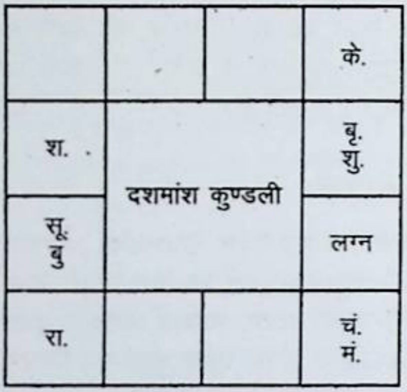

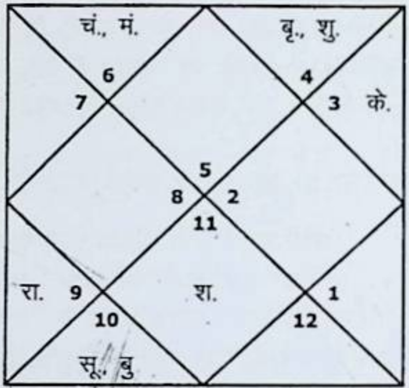

दिनांक – 16–05–1996; समय – 12.05 घण्टा; स्थान – दिल्ली; तिथि – कृष्ण चतुर्दशी (रिक्ता तिथि); वार – गुरूवार; नक्षत्र – भरणी (सबसे अधिक अशुभ नक्षत्रों में से एक नक्षत्र); योग – सौभाग्य; करण – शकुनि

लग्न – 01° 37"	सूर्य – 01° 52"	चन्द्रमा – 17° 31"
मंगल – 16° 16"	बुध(व) – 29° 58"	बृह(व) – 23° 39"
शुक्र – 04° 11"	शनि – 10° 25"	राहु – 22° 55"
केतु – 22° 55"		

पंचांग के घटकः

यह सबसे अधिक अशुभ रिक्ता तिथियों में से एक तिथि थी जो गुरूवार के साथ युति करके 'मृत्यु योग' बना रही थी। एक अत्यधिक अशुभ नक्षत्र, जो 'उग्र–क्रूर' एवं 'जघन्य' नक्षत्र कहलाता है और इसका स्वामी देवता यम (अर्थात मृत्यु का देवता) है। शपथ ग्रहण के दिन भरणी नक्षत्र मंगल द्वारा भी पीड़ित था जो इसकी अयोग्यता में वृद्धि कर रहा है। इसके अतिरिक्त गुरूवार एवं भरणी नक्षत्र का संयोग भी एक अशुभ बना रहा था जो 'पद्म योग' कहलाता है। चूंकि जातक का जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा है, भरणी नक्षत्र जातक के लिए एक 'विपत तारा' है। पंचांग के अन्य घटकों में योग शुभ था और करण अशुभ था। यह एक बुरा दिन था जो प्रारब्ध द्वारा एक अच्छे व्यक्ति के ऊपर थोपा गया था।

लग्नः

(1) लग्न स्थिर एवं शीर्षोदय है और जातक के जन्म लग्न एवं जन्म चन्द्रमा से दशम भाव की राशि का है। ये सकारात्मक तथ्य हैं। लेकिन यहां लग्न गण्डात में स्थित है और 'सप्तशलाका चक्र' में मंगल एवं चन्द्रमा के वेध से पीड़ित है (इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या 84, 85 का अवलोकन करें)। लग्नेश बली होकर दशम भाव में स्थित है लेकिन अष्टम भाव से शनि (षष्ठेश एवं सप्तमेश) द्वारा दृष्ट है। साथ ही साथ लग्नेश मुहूर्त लग्न, नवांश और दशमांश कुण्डलियों में शत्रु की राशि में स्थित है।

(2) यहां दशम भाव पर अष्टम भाव से शनि, अशुभ प्रभाव डाल रहा है और दशमेश का लग्न एवं लग्नेश से कोई सम्बन्ध नहीं बन रहा है।

(3) चतुर्थेश जो 'सिंहासन' अथवा कुर्सी का प्रतिनिधित्व कर रहा है द्वादशेश चन्द्रमा के साथ नवम भाव में पाप कर्तरी में स्थित है और दो वक्री ग्रहों के प्रभाव में है।

केन्द्रों में कोई भी शुभ ग्रह न होने, दो अशुभ/पापी ग्रहों का 8वें भाव में स्थित होने और चन्द्रमा का बुरी तरह पीड़ित होने से भविष्य में होने वाली घटना की छाया स्पष्ट थी।

दशाः

शुक्र की महादशा, मंगल की अन्तर्दशा और बृहस्पति की प्रत्यन्तर दशा, मुहूर्त कुण्डली में भोग्य दशा थी। दशमेश की महादशा शुभ थी, पीड़ित मंगल की अन्तर्दशा अनुकूल नहीं थी और पंचमेश एवं अष्टमेश बृहस्पति, जो पंचम भाव में वक्री होकर स्थित था, उसकी अन्तरदशा को भी अनुकूल दशा नहीं कहा जा सकता है।

इसी प्रकार कोई भी जातक नवांश एवं दशमांश कुण्डलियों की भी विवेचना कर सकता है जो उस समय विशेष में किए गए कार्य के लिए सकारात्मक इशारा नहीं करती हैं।

सारांशः

जिन आठ घटनाओं की चर्चा हमने यहां की है उनमें हमने यह दिखाने का प्रयास किया है कि मुहूर्त का चुनाव करना कोई सरल कार्य नहीं है क्योंकि हमेशा ही किसी न किसी महत्वपूर्ण तथ्य के अनदेखा होने का खतरा बना रहता है और अधिकतर जातक के पास जो समय उपलब्ध होता है वह मुहूर्त के चयन को भी सीमित कर देता है। लेकिन एक चीज बहुत ही स्पष्ट है और वह यह कि चाहे कोई जातक मुहूर्त का चयन स्वयं करे अथवा प्रारब्ध द्वारा उस पर थोपा जाए, यह हमेशा ही किए जाने वाले किसी भी कार्य के भाग्य को प्रतिबिम्बित करता है।

अध्याय 17

निष्कर्ष

इस पुस्तक में मुहूर्त सम्बन्धित सभी सूचनाओं को इस प्रकार से प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है कि जिसके द्वारा ज्योतिष का कोई भी छात्र इसे आसानी से समझ सके। हम अपने इस प्रयास में किस सीमा तक सफल हुए हैं यह पाठकों के लिए है कि वे इसका निर्णय करें। इस पुस्तक में जिन बातों पर मुख्यरुप से बल देने का प्रयास है वह इस प्रकार से हैं:

(अ) किसी भी कार्य को करने के समय के निर्धारण हेतु उसको प्रभावित करने वाले विभिन्न घटकों से छात्रों का परिचय।

(ब) इन सभी घटकों को एकत्रित करके एक कार्य विशेष के लिए मुहूर्त प्राप्त करना और

(स) किसी भी व्यक्ति विशेष के लिए किसी कार्य विशेष के अनुसार योग्य मुहूर्त का चयन।

क्योंकि सभी अनुकूल स्थितियों को प्राप्त करना बहुत कठिन है, हमने मुहूर्त के विभिन्न घटकों को दिये जाने वाले तुलनात्मक महत्व को भी विस्तृत रुप से बताने का प्रयास किया है।

सीमायें:

यद्यपि असंभव नहीं है लेकिन फिर भी व्यवहारिक रूप से एक मुहूर्त का परीक्षण करना बहुत ही कठिन है। उदाहरण के लिए यदि कोई जातक यह जांचना चाहता है कि जो मुहूर्त विवाह के लिए निश्चित किया था, उसने अनुकूल अथवा प्रतिकूल परिणाम दिया है तो यथार्थ में विवाह के समय का वैवाहिक जीवन पर पडने वाले प्रभाव की प्रमाणिकता जानने के लिए उसे उस व्यक्ति के वैवाहिक जीवन का निरीक्षण करना पडेगा। इस अनुसन्धान को विश्वसनीय बनाने के लिए उसे इस प्रक्रिया को कई मामलों में बार–बार लगाना होगा। इसी

कारण से हम कुछ शपथ ग्रहण मुहूर्तो के अतिरिक्त अन्य व्यवहारिक रुप से प्रमाणिक मुहूर्तो के उदाहरण देने में समर्थ नहीं हैं।

साथ ही साथ, इस प्रयास में कि इस पुस्तक को ज्योतिषशास्त्र के अध्ययन को आरम्भ करने वाला नया छात्र भी सरलता से समझ सके, मुहूर्त के कुछ जटिल क्षेत्रों को हमने या तो पूर्ण रूप से ही छोड़ दिया अथवा उनका वर्णन संक्षेप में किया है। जिज्ञासु छात्र इस विषय को विस्तृत रुप से जानने एवं पढ़ने के लिए राम दैवज्ञ कृत मुहूर्त चिन्तामणि, कालिदास कृत ज्योतिर्विद् आभरणम्, वराह मिहिर कृत वृहत संहिता और ऐसे ही अन्य शास्त्रीय ग्रन्थों का अवलोकन कर सकते हैं।

एक जातक को क्या नहीं भूलत्ता चाहिएः

जन्म कुण्डली बैंक की एक पास बुक की तरह ही है जिसमें जातक के पिछले जन्मों के कर्मो के आधार पर फलों के लेखे–जोखे का विवरण होता है। मुहूर्त कुण्डली इस प्रकार होती है जैसे कि किसी जातक ने अपने खाते में कुछ धन जमा किया हो। यदि कोई व्यक्ति अपने खाते में जमा रुपयों से मानों एक लाख रुपये अधिक निकाल चुका है तो अपने खाते में पांच हजार रुपये मात्र जमा करने से उस व्यक्ति की ऋणग्रस्तता समाप्त नहीं हो पाएगी। यही बात किसी भी व्यक्ति के पूर्व कर्मो पर आधारित प्रारब्ध (जन्म कुण्डली) और स्वयं निर्मित थोडे समय के प्रारब्ध (अर्थात मुहूर्त) पर भी सही सिद्ध होती है। अतः जहां कि अपने पूर्व कर्मो के आधार पर किसी का प्रारब्ध विवाह सम्बन्धित परेशानियों से पीड़ित होना निश्चित है, सही प्रकार से चुना गया एक मुहूर्त उन परेशानियों में केवल थोडा सा ही परिवर्तन कर सकता है। लेकिन यह निश्चित रुप से अनुकूल दिशा की ओर एक कदम होता है और इसलिए महत्वपूर्ण है। यह पूर्व में लिए गए ऋण की एक किस्त चुकाने जैसा है। यह उस ऋण की पहली किस्त भी हो सकती है, अन्तिम किस्त भी हो सकती है अथवा बीच की कोई भी किस्त हो सकती है लेकिन यह निश्चित रूप से सही दिशा में उठाया गया एक कदम होता है। अतः एक जातक को कोई भी कार्य, इस प्रश्न की चिन्ता किए हुए बिना कि 'यह कितना अधिक सुधार कर सकता है', कार्य के अनुरूप सही ढंग से चुने गए मुहूर्त में ही करना चाहिए।

Bookkish.com Bookstore
UG-1, Madhu Vihar Market, IP Extn.,
Patparganj, Delhi - 110092., India.
9958138227

हमारे अन्य प्रकाशनः

प्रो० वी.के. चौधरी	• ज्योतिष स्वयं सीखिये
एस.बी.आर. मिश्र	• नाड़ी ज्योतिष
	• ज्योतिष शास्त्र में प्रश्न-शास्त्र
	• ज्योतिष शास्त्र में दशा फल सिद्धान्त
एस. के. दुग्गल	• षड्बल - गणना एवम् प्रयोग
एम. एस. मेहता	• वर्षफल
	• कुण्डली विवेचन तथा फलित सिद्धान्त
एम. एस. मेहता राजेश चन्द्र डडवाल	• अष्टकवर्गः फलित की आधुनिक विधियाँ
एल.सी. शर्मा	• फलित ज्योतिष के तीन स्तम्भ {मुहूर्त, विवाह और संतान}
	• फलित ज्योतिष, मूल सिद्धान्त व फलादेश
सी.एस. पटेल	• ज्योतिष शास्त्र में नवांश वर्ग
के.टी. शुभाकरण	• नक्षत्र फल
पं० वेणी माधव गोस्वामी	• लाल डायरी
	• उपाय मार्त्तण्ड
	• सामुद्रिक की लाल किताब के फरमान {1939, संस्करण}
पं० लक्ष्मीकांत वशिष्ठ	• लाल किताब गुटका
जी.एस. अग्रवाल	• सुगम वैदिक ज्योतिष

सागर पब्लिकेशन्स
72, जनपथ, वेद मेन्शन, नई दिल्ली–110001
दूरभाषः 011 23320648, 23328245 मोबाइलः +91 9312237900 (व्हाट्सएप)
ई–मेलः s.sagarpublications@gmail.com
वेबसाईटः www.sagarpublications.com

ISBN: 978-81-7082-165-6

मूल्यः ₹ 210/-